Vol.-13 Issue-49 Oct.-Dec., 2024

# CHHAVI

## National Journal of Higher Education

ISSN :- 2319-9679

REFEREED

January 2025

SERIC

Dr. Rajendra Shrimali
Editor in Chief
09414742973
09413471252

Published by :-

**Shubham Education, Research & Information Centre**

B/H KARNI MATA TEMPLE, O/S JASSUSAR GATE, BIKANER-334004, RAJ

E-mail : shrimalidrrajendra@gmail.com Website : www.chhavinjhe.in

CHHAVI National Journal of Higher Education (ISSN : 2319-9679)

## OUR ADVISORY BOARD

**DR. CHANCHAL B.**
Texas U S A

**PROF. SHAD AHMAD KHAN**
Sultanate of Oman

**DR. BIMLA RAI**
Thimphu Bhutan

**SANDEEP JOSHI**
N.C.T.E.,New Delhi

**DR. SUJATA BH**
N.C.E.R.T. Mysore

**DR. SANTOSH SHARMA**
Educationist, Jodhpur

**DR. DINESH CHAND**
U.G.C., New Delhi

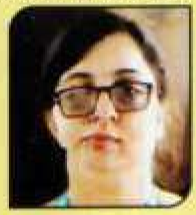
**DR. REKHA LALWANI**
Educationist, Jhalawar

## OUR EDITORIAL BOARD

**DR. OM PRAKASH MEHRARA**
Dupty Registrar & Educationist, Hanumangarh

**DR. SANTOSH K. MAHARSHI**
Educationist, Sujangarh, Churu

**DR. POONAM**
Educationist, Jhunjhunu

**DR. KRIPASHANKER SHARMA**
Educationist, Lal Kothi, Jaipur

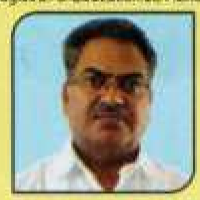
**DR. PAWAN K. GUPTA**
Director & Educationist, Jaipur

**Sh. P.D. YADAV**
Chairmen & Educationist, Sikar

**DR. SANJAY SHARMA**
Chairman & Educationist, Bissau, Jhunjhunu

**DR. RAVI BIJARNIA**
Director & Educationist, Sikar

**DR. SUBHASH CHANDRA SAINI**
Principal & Educationist, Dundlod, Jhunjhunu

**DR. JYOTI SHARMA**
Educationist, Ajmer

**DR. DEEPIKA SHARMA**
Educationist, Jaipur

**DR. HEMLATA SHUKLA**
Educationist, Aklera, Jhalawad

**DR. POOJA BAGRI**
Educationist, Ajmer

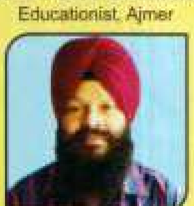
**Dr. Kashmir Singh Khunda**
Educationist, Amritsar, Punjab

**DR. JAKIR HUSAIN ANSARI**
Educationist, Hindoli, Bundi

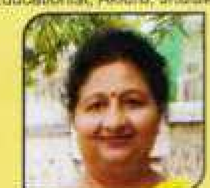
**DR. PRATIMA GUPTA**
Educationist, Jaipur

**DR. BHARTI SANKHLA**
Educationist, Bikaner

**DR. UMA JOSHI**
Educationist, Dewani, Churu

**DR. VIMLA KHATRI**
Educationist, Bikaner

**DR. RANJEET KHINCHI**
Educationist, Hindoli, District-Bundi

# हमारे सदस्यगण


# CHHAVI National Journal of Higher Education

ISSN :- 2319-9679

Published by

## International Education & Research Centre, Bikaner



1. डॉ. आशु सिंह, आई.एफ.एस., बीकानेर
2. श्री पी.डी. यादव, नीम का थाना, सीकर
2. डॉ. कमलाकान्त यादव, वाराणसी
3. डॉ. रूपा यादव, हरियाणा
4. डॉ. नमामीशंकर आचार्य, बीकानेर
5. डॉ. उषा गोदारा, हनुमानगढ़
7. डॉ. मोहन सिंह शेखावत, झुन्झुनूं
8. डॉ. नरेन्द्र सिंह शेखावत, सीकर
9. श्री रवि बिजारणिया, सीकर
10. श्री जगवीर सिंह खंगारोत, पाली
11. डॉ. श्रीराम, हनुमानगढ़
12. डॉ. अनुराधा बिस्सु, हनुमानगढ़
13. डॉ. (श्रीमती) सुखपाल कौर, बीकानेर
14. डॉ. गुरमीत सिंह, हनुमानगढ़
15. डॉ. प्रहलाद सोनी, राजसमंद
16. डॉ. श्रवण कुमार शर्मा, चूरू
17. डॉ. संजय शर्मा, बिसाऊ, झुन्झुनूं
18. डॉ. निहालचन्द, घड़साना
19. डॉ. रेणु शर्मा, बीकानेर
20. डॉ. जयश्री शर्मा, बीकानेर
21. डॉ. सुनील कुमार शर्मा, जयपुर
22. डॉ. गणेश शर्मा, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर
23. डॉ. (श्रीमती) विद्यावती, चूरू
24. डॉ. बी.एल. सैनी, श्रीमाधोपुर, सीकर
25. श्री ओंकार सिंह राठौड़, नागौर
26. डॉ. मोहम्मद उस्मानी, जोधपुर
27. डॉ. सुनीता डूडी, श्रीगंगानगर
28. डॉ. प्रवीण कुमार जैन, प्रतापगढ़
29. डॉ. संजू श्रीमाली, बीकानेर
30. डॉ. कृष्णा आचार्य, बीकानेर
31. डॉ. ओम प्रकाश मेहराडा, अनूपगढ़
32. डॉ. नवनीत सिंह भदौरिया, बीकानेर
33. डॉ. प्रेम कंवर चारण, रतनगढ़
34. डॉ. प्रकाश चान्दावत, अजमेर
35. डॉ. ललित श्रीमाली, उदयपुर
36. डॉ. अरूण शर्मा, बाँसवाड़ा
37. डॉ. गिरीराज भोजक, लाडनूं
38. डॉ. विभा पारीक, जयपुर–बीकानेर
39. डॉ. अंजली पारीक, जयपुर
40. डॉ. मनोज झाझड़िया, झुझुंनू
41. डॉ. प्रभुसिंह सारण, सरदारशहर
42. डॉ. पूजा बागड़ी, अजमेर
43. डॉ. राजेश बाबू, जोधपुर
44. डॉ. विजय कुमार, संगरिया, हनुमानगढ़
45. डॉ. सुमन जोशी, बीकानेर
46. डॉ. सरोज अरोड़ा खत्री, बीकानेर
47. डॉ. बृजरतन जोशी, बीकानेर
48. डॉ. आर.पी. सैनी, जयपुर
49. डॉ. सरोज चौधरी, सरदारशहर
50. डॉ. नरेन्द्र श्रीमाली, बीकानेर

## CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 1. | उच्च माध्यमिक विद्यालयों में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा कानून के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में अध्ययन – **Banwari Lal Karwasara** | 1–2 |
| 2. | उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर योग के प्रभाव का अध्ययन – **Hari Singh, Dr. Kapil Dev** | 3–5 |
| 3. | भारतीय दर्शन में ज्ञान का सम्प्रत्यय **Jai Singh, Dr. Kapil Dev** | 6–8 |
| 4. | **Present Secnario of MSME sector in Hanumangarh – Muktamani Bansal, Dr. Anupriya Jain** | 9–15 |
| 5. | जोधपुर महाराजा विजयसिंह की सनद बहियों के प्रमाण – डॉ. जयश्री तंवर, सुनीता देवी | 16–18 |
| 6. | श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन– सावित्री सिंगवाल | 19–22 |
| 7. | डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक और शैक्षिक विचारों का अध्ययन – मनीराम, डॉ. प्रीति ग्रोवर | 23–25 |
| 8. | बहुविषयक उपागम की ITEP में भूमिका – सीमा शर्मा, डॉ. गुलाबधर द्विवेदी | 26–28 |
| 9 | पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति एवं क्रियान्वयन का अध्ययन – शशिकला मिश्रा, डॉ. पुनीत कुमार पंड्या | 29–30 |
| 10. | व्यक्ति विकास में साहित्य व कलाओं की भूमिका – डॉ. दीपक मीणा | 31–33 |
| 11. | समाजिक परिवर्तन की महिला विकास कार्यक्रमों का योगदान : राजस्थान के संदर्भ में – डॉ. अर्चना कुमारी मीना | 34–35 |
| 12. | कवि निराला के काव्य में प्रगतिशील चेतना – डॉ. महेश आमेटा | 36–38 |
| 13. | अष्टांग योग का मानव जीवन पर प्रभाव – डॉ. हरेन्द्र कुमार शर्मा | 39–41 |
| 14. | भटनेर दुर्ग साम्प्रदायिक सद्भावना का केन्द्र – पुष्पा, डॉ. अनिल कुमार सिहाग | 42–44 |

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 15. | नारी विषयक समाचारों की सनसनी खेज प्रस्तुति – डॉ. किरण त्रिवेदी | 45–47 |
| 16. | Development of the Scientific View of Educational Life - Dr. Savita Gupta | 48–50 |
| 17. | वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में नवाचार की भूमिका का अध्ययन – प्रो. (डॉ.) विक्रम सिंह औलख | 51–54 |
| 18. | Economic Impact of Waste Management Programs in Uttar Pradesh - Prerna Singh, Tashu, Snehil | 55–60 |
| 19. | Multicultural Education under NEP 2020 : Future Direction - Yogeshwar Singh Yadav | 61–66 |
| 20. | सामाजिक मूल्यों की स्थापना और संरक्षण में व्यंग्य का महत्व और योगदान – कान्ता विश्नोई | 67–70 |
| 21. | भक्तिभाव और गुरु–प्रेम की कवयित्री रानाबाई – घनश्याम सोनी | 71–75 |
| 22. | शिक्षा का दार्शनिक दृष्टिकोण एवं भारतीय दर्शन में ईश्वर की अवधारणा – अम्बालाल जेदिया | 76–78 |
| 23. | माध्यमिक स्तर पर खेल तथा शिक्षा का सामाजिक, राजनीतिक यातायात एवं परिवहन में सामाजिक मनोविज्ञान का प्रभावात्मक अध्ययन – निकेता सोलंकी | 79–81 |
| 24. | Comparative Analysis of Solar Conversion Efficiency in Third Generation Photovoltaic Cells : Method, Tools and Techniques - Bhawesh Bhaskar Soni | 82–89 |
| 25. | विवाह के बदलते प्रतिमान वर्तमान भारतीय समाज के परिपेक्ष में – किशन भाम्बु | 90–91 |
| 26. | संत केशवानंद जी : मरुभूमि के समाजसेवी तपस्वी का समाजशास्त्रीय विश्लेषण – डॉ. महेश चन्द गुर्जर | 92–95 |
| 27. | दक्षिण के राष्ट्रकूटों का राजस्थान से सम्बन्ध का अध्ययन – डॉ. मातु सिंह राठौड़ | 96–100 |
| 28. | कोटा संभाग के मूकबधिर विद्यार्थियों की दुश्चिंता और निर्देशन आवश्यकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन – जया नरेला, डॉ. अमित कुमार दवे | 101–105 |

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 29. | राजस्थान में नंद घर योजना की चुनौतियों का अध्ययन– वनफूल दाधीच, डॉ. हरीश मेनारिया | 106–113 |
| 30. | भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का विश्लेषणात्मक अध्ययन – डॉ. विरमा राम देवासी | 114–121 |
| 31. | प्राचीन दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता – रानी ओझा, डॉ. जितेन्द्र कुमार तिवारी, डॉ. सावित्री सिंगवाल | 122–123 |
| 32. | किशोर विद्यार्थियों के शारीरिक क्षमता का अध्ययन– आशा जैन, डॉ. ममता कुमावत | 124–127 |

# हमारे सदस्यगण


# CHHAVI National Journal of Higher Education

ISSN :- 2319-9679

Published by

## International Education & Research Centre, Bikaner


1. डॉ. आशु सिंह, आई.एफ.एस., बीकानेर
2. श्री पी.डी. यादव, नीम का थाना, सीकर
2. डॉ. कमलाकान्त यादव, वाराणसी
3. डॉ. रूपा यादव, हरियाणा
4. डॉ. नमामीशंकर आचार्य, बीकानेर
5. डॉ. उषा गोदारा, हनुमानगढ़
7. डॉ. मोहन सिंह शेखावत, झुन्झुनूं
8. डॉ. नरेन्द्र सिंह शेखावत, सीकर
9. श्री रवि बिजारणिया, सीकर
10. श्री जगवीर सिंह खंगारोत, पाली
11. डॉ. श्रीराम, हनुमानगढ़
12. डॉ. अनुराधा बिस्सु, हनुमानगढ़
13. डॉ. (श्रीमती) सुखपाल कौर, बीकानेर
14. डॉ. गुरमीत सिंह, हनुमानगढ़
15. डॉ. प्रहलाद सोनी, राजसमंद
16. डॉ. श्रवण कुमार शर्मा, चूरू
17. डॉ. संजय शर्मा, बिसाऊ, झुन्झुनूं
18. डॉ. निहालचन्द, घड़साना
19. डॉ. रेणु शर्मा, बीकानेर
20. डॉ. जयश्री शर्मा, बीकानेर
21. डॉ. सुनील कुमार शर्मा, जयपुर
22. डॉ. गणेश शर्मा, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर
23. डॉ. (श्रीमती) विद्यावती, चूरू
24. डॉ. बी.एल. सैनी, श्रीमाधोपुर, सीकर
25. श्री औंकार सिंह राठौड़, नागौर
26. डॉ. मोहम्मद उस्मानी, जोधपुर
27. डॉ. सुनीता डूडी, श्रीगंगानगर
28. डॉ. प्रवीण कुमार जैन, प्रतापगढ़
29. डॉ. संजू श्रीमाली, बीकानेर
30. डॉ. कृष्णा आचार्य, बीकानेर
31. डॉ. ओम प्रकाश मेहराडा, अनूपगढ़
32. डॉ. नवनीत सिंह भदौरिया, बीकानेर
33. डॉ. प्रेम कंवर चारण, रतनगढ़
34. डॉ. प्रकाश चान्दावत, अजमेर
35. डॉ. ललित श्रीमाली, उदयपुर
36. डॉ. अरूण शर्मा, बाँसवाड़ा
37. डॉ. गिरीराज भोजक, लाडनूं
38. डॉ. विभा पारीक, जयपुर–बीकानेर
39. डॉ. अंजली पारीक, जयपुर
40. डॉ. मनोज झाझड़िया, झुझुंनू
41. डॉ. प्रभुसिंह सारण, सरदारशहर
42. डॉ. पूजा बागड़ी, अजमेर
43. डॉ. राजेश बाबू, जोधपुर
44. डॉ. विजय कुमार, संगरिया, हनुमानगढ़
45. डॉ. सुमन जोशी, बीकानेर
46. डॉ. सरोज अरोड़ा खत्री, बीकानेर
47. डॉ. बृजरतन जोशी, बीकानेर
48. डॉ. आर.पी. सैनी, जयपुर
49. डॉ. सरोज चौधरी, सरदारशहर
50. डॉ. नरेन्द्र श्रीमाली, बीकानेर

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 1. | उच्च माध्यमिक विद्यालयों में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा कानून के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में अध्ययन – **Banwari Lal Karwasara** | 1–2 |
| 2. | उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर योग के प्रभाव का अध्ययन – **Hari Singh, Dr. Kapil Dev** | 3–5 |
| 3. | भारतीय दर्शन में ज्ञान का सम्प्रत्यय **Jai Singh, Dr. Kapil Dev** | 6–8 |
| 4. | **Present Secnario of MSME sector in Hanumangarh – Muktamani Bansal, Dr. Anupriya Jain** | 9–15 |
| 5. | जोधपुर महाराजा विजयसिंह की सनद बहियों के प्रमाण – डॉ. जयश्री तंवर, सुनीता देवी | 16–18 |
| 6. | श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन– सावित्री सिंगवाल | 19–22 |
| 7. | डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक और शैक्षिक विचारों का अध्ययन – मनीराम, डॉ. प्रीति ग्रोवर | 23–25 |
| 8. | बहुविषयक उपागम की ITEP में भूमिका – सीमा शर्मा, डॉ. गुलाबधर द्विवेदी | 26–28 |
| 9 | पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति एवं क्रियान्वयन का अध्ययन – शशिकला मिश्रा, डॉ. पुनीत कुमार पंड्या | 29–30 |
| 10. | व्यक्ति विकास में साहित्य व कलाओं की भूमिका – डॉ. दीपक मीणा | 31–33 |
| 11. | समाजिक परिवर्तन की महिला विकास कार्यक्रमों का योगदान : राजस्थान के संदर्भ में – डॉ. अर्चना कुमारी मीना | 34–35 |
| 12. | कवि निराला के काव्य में प्रगतिशील चेतना – डॉ. महेश आमेटा | 36–38 |
| 13. | अष्टांग योग का मानव जीवन पर प्रभाव – डॉ. हरेन्द्र कुमार शर्मा | 39–41 |
| 14. | भटनेर दुर्ग साम्प्रदायिक सद्भावना का केन्द्र – पुष्पा, डॉ. अनिल कुमार सिहाग | 42–44 |

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 15. | नारी विषयक समाचारों की सनसनी खेज प्रस्तुति – डॉ. किरण त्रिवेदी | 45–47 |
| 16. | Development of the Scientific View of Educational Life - Dr. Savita Gupta | 48–50 |
| 17. | वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में नवाचार की भूमिका का अध्ययन – प्रो. (डॉ.) विक्रम सिंह औलख | 51–54 |
| 18. | Economic Impact of Waste Management Programs in Uttar Pradesh - Prerna Singh, Tashu, Snehil | 55–60 |
| 19. | Multicultural Education under NEP 2020 : Future Direction - Yogeshwar Singh Yadav | 61–66 |
| 20. | सामाजिक मूल्यों की स्थापना और संरक्षण में व्यंग्य का महत्व और योगदान – कान्ता विश्नोई | 67–70 |
| 21. | भक्तिभाव और गुरु–प्रेम की कवयित्री रानाबाई – घनश्याम सोनी | 71–75 |
| 22. | शिक्षा का दार्शनिक दृष्टिकोण एवं भारतीय दर्शन में ईश्वर की अवधारणा – अम्बालाल जेदिया | 76–78 |
| 23. | माध्यमिक स्तर पर खेल तथा शिक्षा का सामाजिक, राजनीतिक यातायात एवं परिवहन में सामाजिक मनोविज्ञान का प्रभावात्मक अध्ययन – निकेता सोलंकी | 79–81 |
| 24. | Comparative Analysis of Solar Conversion Efficiency in Third Generation Photovoltaic Cells : Method, Tools and Techniques - Bhawesh Bhaskar Soni | 82–89 |
| 25. | विवाह के बदलते प्रतिमान वर्तमान भारतीय समाज के परिपेक्ष में – किशन भाम्बु | 90–91 |
| 26. | संत केशवानंद जी : मरुभूमि के समाजसेवी तपस्वी का समाजशास्त्रीय विश्लेषण – डॉ. महेश चन्द गुर्जर | 92–95 |
| 27. | दक्षिण के राष्ट्रकूटों का राजस्थान से सम्बन्ध का अध्ययन – डॉ. मातु सिंह राठौड़ | 96–100 |
| 28. | कोटा संभाग के मूकबधिर विद्यार्थियों की दुश्चिंता और निर्देशन आवश्यकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन – जया नरेला, डॉ. अमित कुमार दवे | 101–105 |

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 29. | राजस्थान में नंद घर योजना की चुनौतियों का अध्ययन– वनफूल दाधीच, डॉ. हरीश मेनारिया | 106–113 |
| 30. | भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का विश्लेषणात्मक अध्ययन – डॉ. विरमा राम देवासी | 114–121 |
| 31. | प्राचीन दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता – रानी ओझा, डॉ. जितेन्द्र कुमार तिवारी, डॉ. सावित्री सिंगवाल | 122–123 |
| 32. | किशोर विद्यार्थियों के शारीरिक क्षमता का अध्ययन– आशा जैन, डॉ. ममता कुमावत | 124–127 |

# हमारे सदस्यगण


# CHHAVI National Journal of Higher Education

ISSN :- 2319-9679

Published by

## International Education & Research Centre, Bikaner


1. डॉ. आशु सिंह, आई.एफ.एस., बीकानेर
2. श्री पी.डी. यादव, नीम का थाना, सीकर
2. डॉ. कमलाकान्त यादव, वाराणसी
3. डॉ. रूपा यादव, हरियाणा
4. डॉ. नमामीशंकर आचार्य, बीकानेर
5. डॉ. उषा गोदारा, हनुमानगढ़
7. डॉ. मोहन सिंह शेखावत, झुन्झुनूं
8. डॉ. नरेन्द्र सिंह शेखावत, सीकर
9. श्री रवि बिजारणिया, सीकर
10. श्री जगवीर सिंह खंगारोत, पाली
11. डॉ. श्रीराम, हनुमानगढ़
12. डॉ. अनुराधा बिस्सु, हनुमानगढ़
13. डॉ. (श्रीमती) सुखपाल कौर, बीकानेर
14. डॉ. गुरमीत सिंह, हनुमानगढ़
15. डॉ. प्रहलाद सोनी, राजसमंद
16. डॉ. श्रवण कुमार शर्मा, चूरू
17. डॉ. संजय शर्मा, बिसाऊ, झुन्झुनूं
18. डॉ. निहालचन्द, घड़साना
19. डॉ. रेणु शर्मा, बीकानेर
20. डॉ. जयश्री शर्मा, बीकानेर
21. डॉ. सुनील कुमार शर्मा, जयपुर
22. डॉ. गणेश शर्मा, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर
23. डॉ. (श्रीमती) विद्यावती, चूरू
24. डॉ. बी.एल. सैनी, श्रीमाधोपुर, सीकर
25. श्री औंकार सिंह राठौड़, नागौर
26. डॉ. मोहम्मद उस्मानी, जोधपुर
27. डॉ. सुनीता डूडी, श्रीगंगानगर
28. डॉ. प्रवीण कुमार जैन, प्रतापगढ़
29. डॉ. संजू श्रीमाली, बीकानेर
30. डॉ. कृष्णा आचार्य, बीकानेर
31. डॉ. ओम प्रकाश मेहराडा, अनूपगढ़
32. डॉ. नवनीत सिंह भदौरिया, बीकानेर
33. डॉ. प्रेम कंवर चारण, रतनगढ़
34. डॉ. प्रकाश चान्दावत, अजमेर
35. डॉ. ललित श्रीमाली, उदयपुर
36. डॉ. अरूण शर्मा, बाँसवाड़ा
37. डॉ. गिरीराज भोजक, लाडनूं
38. डॉ. विभा पारीक, जयपुर–बीकानेर
39. डॉ. अंजली पारीक, जयपुर
40. डॉ. मनोज झाझड़िया, झुझुंनू
41. डॉ. प्रभुसिंह सारण, सरदारशहर
42. डॉ. पूजा बागड़ी, अजमेर
43. डॉ. राजेश बाबू, जोधपुर
44. डॉ. विजय कुमार, संगरिया, हनुमानगढ़
45. डॉ. सुमन जोशी, बीकानेर
46. डॉ. सरोज अरोड़ा खत्री, बीकानेर
47. डॉ. बृजरतन जोशी, बीकानेर
48. डॉ. आर.पी. सैनी, जयपुर
49. डॉ. सरोज चौधरी, सरदारशहर
50. डॉ. नरेन्द्र श्रीमाली, बीकानेर

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 1. | उच्च माध्यमिक विद्यालयों में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा कानून के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में अध्ययन – **Banwari Lal Karwasara** | 1–2 |
| 2. | उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर योग के प्रभाव का अध्ययन – **Hari Singh, Dr. Kapil Dev** | 3–5 |
| 3. | भारतीय दर्शन में ज्ञान का सम्प्रत्यय **Jai Singh, Dr. Kapil Dev** | 6–8 |
| 4. | **Present Secnario of MSME sector in Hanumangarh – Muktamani Bansal, Dr. Anupriya Jain** | 9–15 |
| 5. | जोधपुर महाराजा विजयसिंह की सनद बहियों के प्रमाण – डॉ. जयश्री तंवर, सुनीता देवी | 16–18 |
| 6. | श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन– सावित्री सिंगवाल | 19–22 |
| 7. | डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक और शैक्षिक विचारों का अध्ययन – मनीराम, डॉ. प्रीति ग्रोवर | 23–25 |
| 8. | बहुविषयक उपागम की **ITEP** में भूमिका – सीमा शर्मा, डॉ. गुलाबधर द्विवेदी | 26–28 |
| 9 | पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति एवं क्रियान्वयन का अध्ययन – शशिकला मिश्रा, डॉ. पुनीत कुमार पंड्या | 29–30 |
| 10. | व्यक्ति विकास में साहित्य व कलाओं की भूमिका – डॉ. दीपक मीणा | 31–33 |
| 11. | समाजिक परिवर्तन की महिला विकास कार्यक्रमों का योगदान : राजस्थान के संदर्भ में – डॉ. अर्चना कुमारी मीना | 34–35 |
| 12. | कवि निराला के काव्य में प्रगतिशील चेतना – डॉ. महेश आमेटा | 36–38 |
| 13. | अष्टांग योग का मानव जीवन पर प्रभाव – डॉ. हरेन्द्र कुमार शर्मा | 39–41 |
| 14. | भटनेर दुर्ग साम्प्रदायिक सद्भावना का केन्द्र – पुष्पा, डॉ. अनिल कुमार सिहाग | 42–44 |

| CONTENTS | | |
|---|---|---|
| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |



| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 15. | नारी विषयक समाचारों की सनसनी खेज प्रस्तुति – डॉ. किरण त्रिवेदी | 45–47 |
| 16. | Development of the Scientific View of Educational Life - Dr. Savita Gupta | 48–50 |
| 17. | वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में नवाचार की भूमिका का अध्ययन – प्रो. (डॉ.) विक्रम सिंह औलख | 51–54 |
| 18. | Economic Impact of Waste Management Programs in Uttar Pradesh - Prerna Singh, Tashu, Snehil | 55–60 |
| 19. | Multicultural Education under NEP 2020 : Future Direction - Yogeshwar Singh Yadav | 61–66 |
| 20. | सामाजिक मूल्यों की स्थापना और संरक्षण में व्यंग्य का महत्व और योगदान – कान्ता विश्नोई | 67–70 |
| 21. | भक्तिभाव और गुरु–प्रेम की कवयित्री रानाबाई – घनश्याम सोनी | 71–75 |
| 22. | शिक्षा का दार्शनिक दृष्टिकोण एवं भारतीय दर्शन में ईश्वर की अवधारणा – अम्बालाल जेदिया | 76–78 |
| 23. | माध्यमिक स्तर पर खेल तथा शिक्षा का सामाजिक, राजनीतिक यातायात एवं परिवहन में सामाजिक मनोविज्ञान का प्रभावात्मक अध्ययन – निकेता सोलंकी | 79–81 |
| 24. | Comparative Analysis of Solar Conversion Efficiency in Third Generation Photovoltaic Cells : Method, Tools and Techniques - Bhawesh Bhaskar Soni | 82–89 |
| 25. | विवाह के बदलते प्रतिमान वर्तमान भारतीय समाज के परिपेक्ष में – किशन भाम्बु | 90–91 |
| 26. | संत केशवानंद जी : मरुभूमि के समाजसेवी तपस्वी का समाजशास्त्रीय विश्लेषण – डॉ. महेश चन्द गुर्जर | 92–95 |
| 27. | दक्षिण के राष्ट्रकूटों का राजस्थान से सम्बन्ध का अध्ययन – डॉ. मातु सिंह राठौड़ | 96–100 |
| 28. | कोटा संभाग के मूकबधिर विद्यार्थियों की दुश्चिंता और निर्देशन आवश्यकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन – जया नरेला, डॉ. अमित कुमार दवे | 101–105 |

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| **29.** | राजस्थान में नंद घर योजना की चुनौतियों का अध्ययन– वनफूल दाधीच, डॉ. हरीश मेनारिया | **106–113** |
| **30.** | भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का विश्लेषणात्मक अध्ययन – डॉ. विरमा राम देवासी | **114–121** |
| **31.** | प्राचीन दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता – रानी ओझा, डॉ. जितेन्द्र कुमार तिवारी, डॉ. सावित्री सिंगवाल | **122–123** |
| **32.** | किशोर विद्यार्थियों के शारीरिक क्षमता का अध्ययन– आशा जैन, डॉ. ममता कुमावत | **124–127** |

# हमारे सदस्यगण


# CHHAVI National Journal of Higher Education

ISSN :- 2319-9679

Published by

## International Education & Research Centre, Bikaner


1. डॉ. आशु सिंह, आई.एफ.एस., बीकानेर
2. श्री पी.डी. यादव, नीम का थाना, सीकर
2. डॉ. कमलाकान्त यादव, वाराणसी
3. डॉ. रूपा यादव, हरियाणा
4. डॉ. नमामीशंकर आचार्य, बीकानेर
5. डॉ. उषा गोदारा, हनुमानगढ़
7. डॉ. मोहन सिंह शेखावत, झुन्झुनूं
8. डॉ. नरेन्द्र सिंह शेखावत, सीकर
9. श्री रवि बिजारणिया, सीकर
10. श्री जगवीर सिंह खंगारोत, पाली
11. डॉ. श्रीराम, हनुमानगढ़
12. डॉ. अनुराधा बिस्सु, हनुमानगढ़
13. डॉ. (श्रीमती) सुखपाल कौर, बीकानेर
14. डॉ. गुरमीत सिंह, हनुमानगढ़
15. डॉ. प्रहलाद सोनी, राजसमंद
16. डॉ. श्रवण कुमार शर्मा, चूरू
17. डॉ. संजय शर्मा, बिसाऊ, झुन्झुनूं
18. डॉ. निहालचन्द, घड़साना
19. डॉ. रेणु शर्मा, बीकानेर
20. डॉ. जयश्री शर्मा, बीकानेर
21. डॉ. सुनील कुमार शर्मा, जयपुर
22. डॉ. गणेश शर्मा, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर
23. डॉ. (श्रीमती) विद्यावती, चूरू
24. डॉ. बी.एल. सैनी, श्रीमाधोपुर, सीकर
25. श्री औंकार सिंह राठौड़, नागौर
26. डॉ. मोहम्मद उस्मानी, जोधपुर
27. डॉ. सुनीता डूडी, श्रीगंगानगर
28. डॉ. प्रवीण कुमार जैन, प्रतापगढ़
29. डॉ. संजू श्रीमाली, बीकानेर
30. डॉ. कृष्णा आचार्य, बीकानेर
31. डॉ. ओम प्रकाश मेहराडा, अनूपगढ़
32. डॉ. नवनीत सिंह भदौरिया, बीकानेर
33. डॉ. प्रेम कंवर चारण, रतनगढ़
34. डॉ. प्रकाश चान्दावत, अजमेर
35. डॉ. ललित श्रीमाली, उदयपुर
36. डॉ. अरूण शर्मा, बाँसवाड़ा
37. डॉ. गिरीराज भोजक, लाडनूं
38. डॉ. विभा पारीक, जयपुर–बीकानेर
39. डॉ. अंजली पारीक, जयपुर
40. डॉ. मनोज झाझड़िया, झुझुंनू
41. डॉ. प्रभुसिंह सारण, सरदारशहर
42. डॉ. पूजा बागड़ी, अजमेर
43. डॉ. राजेश बाबू, जोधपुर
44. डॉ. विजय कुमार, संगरिया, हनुमानगढ़
45. डॉ. सुमन जोशी, बीकानेर
46. डॉ. सरोज अरोड़ा खत्री, बीकानेर
47. डॉ. बृजरतन जोशी, बीकानेर
48. डॉ. आर.पी. सैनी, जयपुर
49. डॉ. सरोज चौधरी, सरदारशहर
50. डॉ. नरेन्द्र श्रीमाली, बीकानेर

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 1. | उच्च माध्यमिक विद्यालयों में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा कानून के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में अध्ययन – **Banwari Lal Karwasara** | 1–2 |
| 2. | उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर योग के प्रभाव का अध्ययन – **Hari Singh, Dr. Kapil Dev** | 3–5 |
| 3. | भारतीय दर्शन में ज्ञान का सम्प्रत्यय **Jai Singh, Dr. Kapil Dev** | 6–8 |
| 4. | **Present Secnario of MSME sector in Hanumangarh – Muktamani Bansal, Dr. Anupriya Jain** | 9–15 |
| 5. | जोधपुर महाराजा विजयसिंह की सनद बहियों के प्रमाण – डॉ. जयश्री तंवर, सुनीता देवी | 16–18 |
| 6. | श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन– सावित्री सिंगवाल | 19–22 |
| 7. | डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक और शैक्षिक विचारों का अध्ययन – मनीराम, डॉ. प्रीति ग्रोवर | 23–25 |
| 8. | बहुविषयक उपागम की ITEP में भूमिका – सीमा शर्मा, डॉ. गुलाबधर द्विवेदी | 26–28 |
| 9 | पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति एवं क्रियान्वयन का अध्ययन – शशिकला मिश्रा, डॉ. पुनीत कुमार पंड्या | 29–30 |
| 10. | व्यक्ति विकास में साहित्य व कलाओं की भूमिका – डॉ. दीपक मीणा | 31–33 |
| 11. | समाजिक परिवर्तन की महिला विकास कार्यक्रमों का योगदान : राजस्थान के संदर्भ में – डॉ. अर्चना कुमारी मीना | 34–35 |
| 12. | कवि निराला के काव्य में प्रगतिशील चेतना – डॉ. महेश आमेटा | 36–38 |
| 13. | अष्टांग योग का मानव जीवन पर प्रभाव – डॉ. हरेन्द्र कुमार शर्मा | 39–41 |
| 14. | भटनेर दुर्ग साम्प्रदायिक सद्भावना का केन्द्र – पुष्पा, डॉ. अनिल कुमार सिहाग | 42–44 |

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 15. | नारी विषयक समाचारों की सनसनी खेज प्रस्तुति – डॉ. किरण त्रिवेदी | 45–47 |
| 16. | Development of the Scientific View of Educational Life - Dr. Savita Gupta | 48–50 |
| 17. | वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में नवाचार की भूमिका का अध्ययन – प्रो. (डॉ.) विक्रम सिंह औलख | 51–54 |
| 18. | Economic Impact of Waste Management Programs in Uttar Pradesh - Prerna Singh, Tashu, Snehil | 55–60 |
| 19. | Multicultural Education under NEP 2020 : Future Direction - Yogeshwar Singh Yadav | 61–66 |
| 20. | सामाजिक मूल्यों की स्थापना और संरक्षण में व्यंग्य का महत्व और योगदान – कान्ता विश्नोई | 67–70 |
| 21. | भक्तिभाव और गुरु–प्रेम की कवयित्री रानाबाई – घनश्याम सोनी | 71–75 |
| 22. | शिक्षा का दार्शनिक दृष्टिकोण एवं भारतीय दर्शन में ईश्वर की अवधारणा – अम्बालाल जेदिया | 76–78 |
| 23. | माध्यमिक स्तर पर खेल तथा शिक्षा का सामाजिक, राजनीतिक यातायात एवं परिवहन में सामाजिक मनोविज्ञान का प्रभावात्मक अध्ययन – निकेता सोलंकी | 79–81 |
| 24. | Comparative Analysis of Solar Conversion Efficiency in Third Generation Photovoltaic Cells : Method, Tools and Techniques - Bhawesh Bhaskar Soni | 82–89 |
| 25. | विवाह के बदलते प्रतिमान वर्तमान भारतीय समाज के परिपेक्ष में – किशन भाम्बु | 90–91 |
| 26. | संत केशवानंद जी : मरुभूमि के समाजसेवी तपस्वी का समाजशास्त्रीय विश्लेषण – डॉ. महेश चन्द गुर्जर | 92–95 |
| 27. | दक्षिण के राष्ट्रकूटों का राजस्थान से सम्बन्ध का अध्ययन – डॉ. मातु सिंह राठौड़ | 96–100 |
| 28. | कोटा संभाग के मूकबधिर विद्यार्थियों की दुश्चिंता और निर्देशन आवश्यकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन – जया नरेला, डॉ. अमित कुमार दवे | 101–105 |

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 29. | राजस्थान में नंद घर योजना की चुनौतियों का अध्ययन– वनफूल दाधीच, डॉ. हरीश मेनारिया | 106–113 |
| 30. | भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का विश्लेषणात्मक अध्ययन – डॉ. विरमा राम देवासी | 114–121 |
| 31. | प्राचीन दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता – रानी ओझा, डॉ. जितेन्द्र कुमार तिवारी, डॉ. सावित्री सिंगवाल | 122–123 |
| 32. | किशोर विद्यार्थियों के शारीरिक क्षमता का अध्ययन– आशा जैन, डॉ. ममता कुमावत | 124–127 |

# हमारे सदस्यगण


## CHHAVI National Journal of Higher Education

ISSN :- 2319-9679

Published by

## International Education & Research Centre, Bikaner



| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | डॉ. आशु सिंह, आई.एफ.एस., बीकानेर | 2. | श्री पी.डी. यादव, नीम का थाना, सीकर |
| 2. | डॉ. कमलाकान्त यादव, वाराणसी | 3. | डॉ. रूपा यादव, हरियाणा |
| 4. | डॉ. नमामीशंकर आचार्य, बीकानेर | 5. | डॉ. उषा गोदारा, हनुमानगढ़ |
| 7. | डॉ. मोहन सिंह शेखावत, झुन्झुनूं | 8. | डॉ. नरेन्द्र सिंह शेखावत, सीकर |
| 9. | श्री रवि बिजारणिया, सीकर | 10. | श्री जगवीर सिंह खंगारोत, पाली |
| 11. | डॉ. श्रीराम, हनुमानगढ़ | 12. | डॉ. अनुराधा बिस्सु, हनुमानगढ़ |
| 13. | डॉ. (श्रीमती) सुखपाल कौर, बीकानेर | 14. | डॉ. गुरमीत सिंह, हनुमानगढ़ |
| 15. | डॉ. प्रहलाद सोनी, राजसमंद | 16. | डॉ. श्रवण कुमार शर्मा, चूरू |
| 17. | डॉ. संजय शर्मा, बिसाऊ, झुन्झुनूं | 18. | डॉ. निहालचन्द, घड़साना |
| 19. | डॉ. रेणु शर्मा, बीकानेर | 20. | डॉ. जयश्री शर्मा, बीकानेर |
| 21. | डॉ. सुनील कुमार शर्मा, जयपुर | 22. | डॉ. गणेश शर्मा, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर |
| 23. | डॉ. (श्रीमती) विद्यावती, चूरू | 24. | डॉ. बी.एल. सैनी, श्रीमाधोपुर, सीकर |
| 25. | श्री औंकार सिंह राठौड़, नागौर | 26. | डॉ. मोहम्मद उस्मानी, जोधपुर |
| 27. | डॉ. सुनीता डूडी, श्रीगंगानगर | 28. | डॉ. प्रवीण कुमार जैन, प्रतापगढ़ |
| 29. | डॉ. संजू श्रीमाली, बीकानेर | 30. | डॉ. कृष्णा आचार्य, बीकानेर |
| 31. | डॉ. ओम प्रकाश मेहराडा, अनूपगढ़ | 32. | डॉ. नवनीत सिंह भदौरिया, बीकानेर |
| 33. | डॉ. प्रेम कंवर चारण, रतनगढ़ | 34. | डॉ. प्रकाश चान्दावत, अजमेर |
| 35. | डॉ. ललित श्रीमाली, उदयपुर | 36. | डॉ. अरूण शर्मा, बाँसवाड़ा |
| 37. | डॉ. गिरीराज भोजक, लाडनूं | 38. | डॉ. विभा पारीक, जयपुर–बीकानेर |
| 39. | डॉ. अंजली पारीक, जयपुर | 40. | डॉ. मनोज झाझड़िया, झुझुंनू |
| 41. | डॉ. प्रभुसिंह सारण, सरदारशहर | 42. | डॉ. पूजा बागड़ी, अजमेर |
| 43. | डॉ. राजेश बाबू, जोधपुर | 44. | डॉ. विजय कुमार, संगरिया, हनुमानगढ़ |
| 45. | डॉ. सुमन जोशी, बीकानेर | 46. | डॉ. सरोज अरोड़ा खत्री, बीकानेर |
| 47. | डॉ. बृजरतन जोशी, बीकानेर | 48. | डॉ. आर.पी. सैनी, जयपुर |
| 49. | डॉ. सरोज चौधरी, सरदारशहर | 50. | डॉ. नरेन्द्र श्रीमाली, बीकानेर |

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 1. | उच्च माध्यमिक विद्यालयों में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा कानून के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में अध्ययन – **Banwari Lal Karwasara** | 1–2 |
| 2. | उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर योग के प्रभाव का अध्ययन – **Hari Singh, Dr. Kapil Dev** | 3–5 |
| 3. | भारतीय दर्शन में ज्ञान का सम्प्रत्यय **Jai Singh, Dr. Kapil Dev** | 6–8 |
| 4. | **Present Secnario of MSME sector in Hanumangarh – Muktamani Bansal, Dr. Anupriya Jain** | 9–15 |
| 5. | जोधपुर महाराजा विजयसिंह की सनद बहियों के प्रमाण – डॉ. जयश्री तंवर, सुनीता देवी | 16–18 |
| 6. | श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन– सावित्री सिंगवाल | 19–22 |
| 7. | डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक और शैक्षिक विचारों का अध्ययन – मनीराम, डॉ. प्रीति ग्रोवर | 23–25 |
| 8. | बहुविषयक उपागम की ITEP में भूमिका – सीमा शर्मा, डॉ. गुलाबधर द्विवेदी | 26–28 |
| 9 | पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति एवं क्रियान्वयन का अध्ययन – शशिकला मिश्रा, डॉ. पुनीत कुमार पंड्या | 29–30 |
| 10. | व्यक्ति विकास में साहित्य व कलाओं की भूमिका – डॉ. दीपक मीणा | 31–33 |
| 11. | समाजिक परिवर्तन की महिला विकास कार्यक्रमों का योगदान : राजस्थान के संदर्भ में – डॉ. अर्चना कुमारी मीना | 34–35 |
| 12. | कवि निराला के काव्य में प्रगतिशील चेतना – डॉ. महेश आमेटा | 36–38 |
| 13. | अष्टांग योग का मानव जीवन पर प्रभाव – डॉ. हरेन्द्र कुमार शर्मा | 39–41 |
| 14. | भटनेर दुर्ग साम्प्रदायिक सद्भावना का केन्द्र – पुष्पा, डॉ. अनिल कुमार सिहाग | 42–44 |

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 15. | नारी विषयक समाचारों की सनसनी खेज प्रस्तुति – डॉ. किरण त्रिवेदी | 45–47 |
| 16. | Development of the Scientific View of Educational Life - Dr. Savita Gupta | 48–50 |
| 17. | वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में नवाचार की भूमिका का अध्ययन – प्रो. (डॉ.) विक्रम सिंह औलख | 51–54 |
| 18. | Economic Impact of Waste Management Programs in Uttar Pradesh - Prerna Singh, Tashu, Snehil | 55–60 |
| 19. | Multicultural Education under NEP 2020 : Future Direction - Yogeshwar Singh Yadav | 61–66 |
| 20. | सामाजिक मूल्यों की स्थापना और संरक्षण में व्यंग्य का महत्व और योगदान – कान्ता विश्नोई | 67–70 |
| 21. | भक्तिभाव और गुरु–प्रेम की कवयित्री रानाबाई – घनश्याम सोनी | 71–75 |
| 22. | शिक्षा का दार्शनिक दृष्टिकोण एवं भारतीय दर्शन में ईश्वर की अवधारणा – अम्बालाल जेदिया | 76–78 |
| 23. | माध्यमिक स्तर पर खेल तथा शिक्षा का सामाजिक, राजनीतिक यातायात एवं परिवहन में सामाजिक मनोविज्ञान का प्रभावात्मक अध्ययन – निकेता सोलंकी | 79–81 |
| 24. | Comparative Analysis of Solar Conversion Efficiency in Third Generation Photovoltaic Cells : Method, Tools and Techniques - Bhawesh Bhaskar Soni | 82–89 |
| 25. | विवाह के बदलते प्रतिमान वर्तमान भारतीय समाज के परिपेक्ष में – किशन भाम्बु | 90–91 |
| 26. | संत केशवानंद जी : मरुभूमि के समाजसेवी तपस्वी का समाजशास्त्रीय विश्लेषण – डॉ. महेश चन्द गुर्जर | 92–95 |
| 27. | दक्षिण के राष्ट्रकूटों का राजस्थान से सम्बन्ध का अध्ययन – डॉ. मातु सिंह राठौड़ | 96–100 |
| 28. | कोटा संभाग के मूकबधिर विद्यार्थियों की दुश्चिंता और निर्देशन आवश्यकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन – जया नरेला, डॉ. अमित कुमार दवे | 101–105 |

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 29. | राजस्थान में नंद घर योजना की चुनौतियों का अध्ययन– वनफूल दाधीच, डॉ. हरीश मेनारिया | 106–113 |
| 30. | भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का विश्लेषणात्मक अध्ययन – डॉ. विरमा राम देवासी | 114–121 |
| 31. | प्राचीन दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता – रानी ओझा, डॉ. जितेन्द्र कुमार तिवारी, डॉ. सावित्री सिंगवाल | 122–123 |
| 32. | किशोर विद्यार्थियों के शारीरिक क्षमता का अध्ययन– आशा जैन, डॉ. ममता कुमावत | 124–127 |

# हमारे सदस्यगण

## CHHAVI National Journal of Higher Education

ISSN :- 2319-9679

Published by

**International Education & Research Centre, Bikaner**

1. डॉ. आशु सिंह, आई.एफ.एस., बीकानेर
2. श्री पी.डी. यादव, नीम का थाना, सीकर
2. डॉ. कमलाकान्त यादव, वाराणसी
3. डॉ. रूपा यादव, हरियाणा
4. डॉ. नमामीशंकर आचार्य, बीकानेर
5. डॉ. उषा गोदारा, हनुमानगढ़
7. डॉ. मोहन सिंह शेखावत, झुन्झुनूं
8. डॉ. नरेन्द्र सिंह शेखावत, सीकर
9. श्री रवि बिजारणिया, सीकर
10. श्री जगवीर सिंह खंगारोत, पाली
11. डॉ. श्रीराम, हनुमानगढ़
12. डॉ. अनुराधा बिस्सु, हनुमानगढ़
13. डॉ. (श्रीमती) सुखपाल कौर, बीकानेर
14. डॉ. गुरमीत सिंह, हनुमानगढ़
15. डॉ. प्रहलाद सोनी, राजसमंद
16. डॉ. श्रवण कुमार शर्मा, चूरू
17. डॉ. संजय शर्मा, बिसाऊ, झुन्झुनूं
18. डॉ. निहालचन्द, घड़साना
19. डॉ. रेणु शर्मा, बीकानेर
20. डॉ. जयश्री शर्मा, बीकानेर
21. डॉ. सुनील कुमार शर्मा, जयपुर
22. डॉ. गणेश शर्मा, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर
23. डॉ. (श्रीमती) विद्यावती, चूरू
24. डॉ. बी.एल. सैनी, श्रीमाधोपुर, सीकर
25. श्री औंकार सिंह राठौड़, नागौर
26. डॉ. मोहम्मद उस्मानी, जोधपुर
27. डॉ. सुनीता डूडी, श्रीगंगानगर
28. डॉ. प्रवीण कुमार जैन, प्रतापगढ़
29. डॉ. संजू श्रीमाली, बीकानेर
30. डॉ. कृष्णा आचार्य, बीकानेर
31. डॉ. ओम प्रकाश मेहराडा, अनूपगढ़
32. डॉ. नवनीत सिंह भदौरिया, बीकानेर
33. डॉ. प्रेम कंवर चारण, रतनगढ़
34. डॉ. प्रकाश चान्दावत, अजमेर
35. डॉ. ललित श्रीमाली, उदयपुर
36. डॉ. अरूण शर्मा, बाँसवाड़ा
37. डॉ. गिरीराज भोजक, लाडनूं
38. डॉ. विभा पारीक, जयपुर–बीकानेर
39. डॉ. अंजली पारीक, जयपुर
40. डॉ. मनोज झाझड़िया, झुझुंनू
41. डॉ. प्रभुसिंह सारण, सरदारशहर
42. डॉ. पूजा बागड़ी, अजमेर
43. डॉ. राजेश बाबू, जोधपुर
44. डॉ. विजय कुमार, संगरिया, हनुमानगढ़
45. डॉ. सुमन जोशी, बीकानेर
46. डॉ. सरोज अरोड़ा खत्री, बीकानेर
47. डॉ. बृजरतन जोशी, बीकानेर
48. डॉ. आर.पी. सैनी, जयपुर
49. डॉ. सरोज चौधरी, सरदारशहर
50. डॉ. नरेन्द्र श्रीमाली, बीकानेर

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 1. | उच्च माध्यमिक विद्यालयों में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा कानून के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में अध्ययन – **Banwari Lal Karwasara** | 1–2 |
| 2. | उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर योग के प्रभाव का अध्ययन – **Hari Singh, Dr. Kapil Dev** | 3–5 |
| 3. | भारतीय दर्शन में ज्ञान का सम्प्रत्यय **Jai Singh, Dr. Kapil Dev** | 6–8 |
| 4. | **Present Secnario of MSME sector in Hanumangarh – Muktamani Bansal, Dr. Anupriya Jain** | 9–15 |
| 5. | जोधपुर महाराजा विजयसिंह की सनद बहियों के प्रमाण – डॉ. जयश्री तंवर, सुनीता देवी | 16–18 |
| 6. | श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन– सावित्री सिंगवाल | 19–22 |
| 7. | डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक और शैक्षिक विचारों का अध्ययन – मनीराम, डॉ. प्रीति ग्रोवर | 23–25 |
| 8. | बहुविषयक उपागम की **ITEP** में भूमिका – सीमा शर्मा, डॉ. गुलाबधर द्विवेदी | 26–28 |
| 9 | पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति एवं क्रियान्वयन का अध्ययन – शशिकला मिश्रा, डॉ. पुनीत कुमार पंड्या | 29–30 |
| 10. | व्यक्ति विकास में साहित्य व कलाओं की भूमिका – डॉ. दीपक मीणा | 31–33 |
| 11. | समाजिक परिवर्तन की महिला विकास कार्यक्रमों का योगदान : राजस्थान के संदर्भ में – डॉ. अर्चना कुमारी मीना | 34–35 |
| 12. | कवि निराला के काव्य में प्रगतिशील चेतना – डॉ. महेश आमेटा | 36–38 |
| 13. | अष्टांग योग का मानव जीवन पर प्रभाव – डॉ. हरेन्द्र कुमार शर्मा | 39–41 |
| 14. | भटनेर दुर्ग साम्प्रदायिक सद्भावना का केन्द्र – पुष्पा, डॉ. अनिल कुमार सिहाग | 42–44 |

| CONTENTS | | |
|---|---|---|
| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 15. | नारी विषयक समाचारों की सनसनी खेज प्रस्तुति – डॉ. किरण त्रिवेदी | 45–47 |
| 16. | Development of the Scientific View of Educational Life - Dr. Savita Gupta | 48–50 |
| 17. | वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में नवाचार की भूमिका का अध्ययन – प्रो. (डॉ.) विक्रम सिंह औलख | 51–54 |
| 18. | Economic Impact of Waste Management Programs in Uttar Pradesh - Prerna Singh, Tashu, Snehil | 55–60 |
| 19. | Multicultural Education under NEP 2020 : Future Direction - Yogeshwar Singh Yadav | 61–66 |
| 20. | सामाजिक मूल्यों की स्थापना और संरक्षण में व्यंग्य का महत्व और योगदान – कान्ता विश्नोई | 67–70 |
| 21. | भक्तिभाव और गुरु–प्रेम की कवयित्री रानाबाई – घनश्याम सोनी | 71–75 |
| 22. | शिक्षा का दार्शनिक दृष्टिकोण एवं भारतीय दर्शन में ईश्वर की अवधारणा – अम्बालाल जेदिया | 76–78 |
| 23. | माध्यमिक स्तर पर खेल तथा शिक्षा का सामाजिक, राजनीतिक यातायात एवं परिवहन में सामाजिक मनोविज्ञान का प्रभावात्मक अध्ययन – निकेता सोलंकी | 79–81 |
| 24. | Comparative Analysis of Solar Conversion Efficiency in Third Generation Photovoltaic Cells : Method, Tools and Techniques - Bhawesh Bhaskar Soni | 82–89 |
| 25. | विवाह के बदलते प्रतिमान वर्तमान भारतीय समाज के परिपेक्ष में – किशन भाम्बु | 90–91 |
| 26. | संत केशवानंद जी : मरुभूमि के समाजसेवी तपस्वी का समाजशास्त्रीय विश्लेषण – डॉ. महेश चन्द गुर्जर | 92–95 |
| 27. | दक्षिण के राष्ट्रकूटों का राजस्थान से सम्बन्ध का अध्ययन – डॉ. मातु सिंह राठौड़ | 96–100 |
| 28. | कोटा संभाग के मूकबधिर विद्यार्थियों की दुश्चिंता और निर्देशन आवश्यकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन – जया नरेला, डॉ. अमित कुमार दवे | 101–105 |

CONTENTS


| S. No. | AUTHOR(S) NAME AND TITLE | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 29. | राजस्थान में नंद घर योजना की चुनौतियों का अध्ययन– वनफूल दाधीच, डॉ. हरीश मेनारिया | 106–113 |
| 30. | भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का विश्लेषणात्मक अध्ययन – डॉ. विरमा राम देवासी | 114–121 |
| 31. | प्राचीन दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता – रानी ओझा, डॉ. जितेन्द्र कुमार तिवारी, डॉ. सावित्री सिंगवाल | 122–123 |
| 32. | किशोर विद्यार्थियों के शारीरिक क्षमता का अध्ययन– आशा जैन, डॉ. ममता कुमावत | 124–127 |

# उच्च माध्यमिक विद्यालयों में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा कानून के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति पर पड़ने वाले प्रभाव के सन्दर्भ में अध्ययन

**Banwari lal Karwasra**
Lecturer
Shri Balaji Mahavidyalay
Sadhasar Nokha Bikaner
Email- banwari010789@gmail. com

**सारांश–**

शिक्षा का अधिकार कानून 2009 को लागू हुआ। काफी समय हो गया है, किन्तु अब तक देश के कमजोर वर्ग के करोड़ो बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्राप्त नहीं हो सकी है। इस अधिनियम के तहत आर्थिक रूप से कमजोर बालकों को शिक्षण संस्थाओं में 25 प्रतिशत प्रवेश दिया जाना आवश्यक है। यह जानने का प्रयास किया जाना आवश्यक है कि विद्यार्थियों की इसके प्रति अभिवृति का क्या प्रभाव है?

अतः निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा कानून के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति का अध्ययन मुख्य उद्येश्य को लेते हुए प्रस्तुत शोध कार्य किया गया है। जिसमें स्वनिर्मित अभिभावक अभिवृति मापनी का उपयोग कर 40 विद्यालयों के 600 विद्यार्थियों से ऑकड़ों का संकलन किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा कानून के प्रति विद्यार्थियों की कुल अभिवृति एवं समस्त आयामों यथा शिक्षा का अधिकार कानून से संबंधित सूचना एवं जानकारी के प्रति अभिवृति विद्यालय प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति अभिवृति सामाजिक सहभागिता विद्यालय प्रबंध समिति के प्रति अभिवृति एवं शिक्षकों के व्यवहार के प्रति अभिवृति के प्राप्तांक का मान औसत स्तर से अधिक है।

**प्रयुक्त शब्दावली–**

प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक के अन्तर्गत मुख्यतः निम्न शब्द प्रयुक्त हुए है–

शिक्षा का अधिकार व अभिवृति

**प्रस्तावना–**

पिछले लम्बे अंतराल व जद्दोजहद के बाद आखिरकार शिक्षा का अधिकार कानून 2009 सरकार के सूचना के बाद पूरे भारतवर्ष में जम्मू कश्मीर को छोड़कर 1 अप्रैल 2010 को लागू हो गया।

जिसके तहत भारत का प्रत्येक बच्चा जिसकी आयु 6–14 वर्ष के मध्य है उसे निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार है।

आज यह अधिकार वास्तव में पिछले सवा–सौ साल पहले शुरू हुए आन्दोलन का एक फल है। आजादी की लड़ाई के दौरान मैकाले की शिक्षा प्रणाली को समाप्त करके देश की जनता की जरूरतों के अनुरूप एक नयी प्रणाली खड़ी करने का सपना रखा गया था।

1947–68 में राज्य द्वारा पोषित पूंजीवाद का निश्चित चरण रहा जिसने सार्वजनिक क्षेत्र निजी क्षेत्र पर हावी रहा। 1968–91 के मध्य राज्य निर्मित पूंजीवाद ने संकट कालीन चरण को जन्म दिया। जिसने सार्वजनिक व निजी क्षेत्र का संतुलन बदला।

**अध्ययन का औचित्य–**

किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगिता के पहलुओं पर निर्भर करती है। धीरे–धीरे वह विकास की ओर अग्रसर होता है। उसमें शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक विकास भी होता है और उसे इस संसार के अस्तित्व की जानकारी होने लगती है।

प्राणियों की श्रेणी में मनुष्य को इंसान बनाने का श्रेय शिक्षा को दिया जाता है। शिक्षा जीवन की आवश्यकता है। आज का बालक तनाव, कुण्ठा, चिंता, निराशा आदि नकारात्मक प्रवृतियों को दल–दल में धसता जा रहा है जिससे उसका जीवन प्रभावित हो रहा है।

**अध्ययन के उद्देश्य–**

1. शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के प्रति विद्यार्थियों में अभिवृति का अध्ययन करना

2. महिला व पुरूष विद्यार्थियों में शिक्षा के अधिकार के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना

3. ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र में विद्यार्थियों में शिक्षा के अधिकार के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना

**अध्ययन का परिकल्पनाएँ–**

अनुमान के आधार पर शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाएं है–

1. विद्यार्थियों में शिक्षा का अधिकार कानून 2009 की जानकारी नहीं होने से उनमें अभिवृति की कमी है।

2. बालक व बालिकाओं में शिक्षा के अधिकार के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों में शिक्षा अधिकार के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं है।

**शोध अध्ययन की परिसीमाएँ–**

प्रस्तुत शाोध को 40 विद्यालयों के 600 विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा गया है।

**शोध प्रविधि–**

वर्तमान शोध में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है। सर्वेक्षण विधि का संबंध वर्तमान से होता है तथा इसके अन्तर्गत अनुसंधान के विषय का स्तर निर्धारित करने का प्रयास करते है।

**न्यादर्श–**

वर्तमान शोध में न्याय दर्श के चुनाव में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है।

**उपकरण–**

स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया है।

**सांख्यिकी–**

शोधकर्ता ने निम्न प्रयोग किया

1. प्रतिशत
2. मध्यमान
3. मानक विचलन
4. टी–मान

**निष्कर्ष**– कोई भी शोध कार्य तभी सफल माना जा सकता है जबकि उसकी शिक्षा के क्षेत्र में उपादेयता हो। प्रस्तुत अध्ययन निःशुल्क तथा अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा के अधिकार के प्रति अध्यापकों तथा अभिभावकों के दृष्टिकोण का पता लगाने के लिए किया गया था।

**सन्दर्भ–**

**शिक्षा का अधिकार कानून 2009**

6–14 वर्ष के सभी बालक बालिकाओं को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने हेतु भारतीय संसद ने एक कानून बनाया जिसे शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के रूप में लोकसभा द्वारा 4 अगस्त 2009 को **The right of children to and compulsory education bill** पारित किया गया तथा इसे राज्यसभा द्वारा 20 जुलाई 2009 को पारित किया गया।

यह उल्लेख अनुच्छेद 45 में किया गया। इस अधिनियम के तहत संविधान के अनुच्छेद 21–ए के अन्तर्गत बच्चों को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा के मूल अधिकार को क्रियान्वयन का प्रावधान किया गया। इस कानून का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिक करना था।

निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम 1 अप्रैल 2010 को सम्पूर्ण देश में लागू किया गया जम्मू कश्मीर को छोड़कर।

भारत शिक्षा को बच्चों के लिए मौलिक अधिकार के रूप में घोषित करने वाला विश्व का 135वां देश है जबकि शिक्षा का अधिकार कानून 2009 में कुल 7 अध्याय, 38 धाराएँ व 1 अनुसूची शामिल की गई है।

प्रधानमंत्री के सम्बोधन मात्र से ही अस्तित्व में आने वाला यह भारत का पहला अधिनियम है। किसी राज्य में स्थापित किसी विद्यालय के संबंध में राज्य सरकार उतरदायी है।

**संदर्भ ग्रंथ–**

1. अग्निहोत्री रविन्द्र 1994 आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएं एवं समाधान राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर।

2. अग्रवाल जे.सी. 2008 टीचर ऐजुकेशन थ्योरी एण्ड प्रेटिक्स दो आब हाउस दिल्ली।

3. अग्रवाल सुभाष एवं कंचन 2006 मेकिंग टीचर एजुकेशन एण्ड प्रोफेशन कांप्रेस सोविनियर युनियन ऑफ इलाहाबाद।

4. जेकब आर डी एण्ड रजाविद 1992 एन इन्टोडेक्शन टू रिसर्च इन एजुकेशन हाल्ट राइन चार्ट एण्ड वेन्सटन इन न्यूर्याक।

# उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर योग के प्रभाव का अध्ययन

**Dr. Kapil Dev**
(Assistant Professor)
Tantia University
Sri Ganganagar (Rajasthan)

**Hari Singh**
Research Scholar
Tantia University
Sri Ganganagar (Rajasthan)

**सारांश**

योग प्रारंभ से ही हिन्दू परम्परा का अभिन्न अंग रहा है सबसे प्राचीन कही जाने जाने वाली सिन्धु सभ्यता में भी इसके अस्तित्व के प्रमाण मिले हैं जिसमें ध्यान की मुद्रा को दर्शाया गया है हम ध्यान के माध्यम से मन को एकाग्र व पाशविक वृतियों को खीचना सीखते हैं यदि मन पर व्यक्ति का नियंत्रण है तो वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। मन को एकाग्र करने का अभिप्राय किसी एक मनवान्छित विषयवस्तु पर अपना ध्यान केन्द्रित करना है। ध्यान केन्द्रित करने की समयावधि प्रारंभ में कम और फिर अधिक होती जाती है विद्यार्थी जीवन में तो इसके चमत्कारिक प्रभाव देखने को मिलते है। प्रातः काल में योग करने से छात्रो में समरण शक्ति व एकाग्रता में वृद्धि होती है तथा प्रतिदिन योगाभ्यास करने से मन मस्तिष्क में संतुलन व दृढता प्राप्त होती है जिससे छात्रों में बेहतर सोच का विकास होता है एवं उनके सोचने का नजरिया सकारात्मक बना रहता है।

**मूलशब्द** – छात्र, योग शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य

**प्रस्तावना**

हमारी हिन्दू परम्परा का योग प्रारंभ से ही महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है इसका प्रभाव मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में देखने को मिलता है जैसे शारीरिक, मानसिक,अध्यात्मिक व सामाजिक आदि। सभी धर्मों के सम्प्रदायों ने इसके महत्व को स्वीकार किया है ।

आधुनिक युग में योग शिक्षा का महत्व काफी बढ़ गया है आज की व्यस्त दिनचर्या व भौतिक संसाधनों के प्रति मन की बढती पिपासा ने व्यक्ति के मन मस्तिश्क की शांति को भंग कर दिया है जिससे वह तनाव ग्रस्त व रोग ग्रस्त हो गया है इसी कारण उसका सामाजिक दायरा दिन प्रतिदिन सिकुड़ता ही जा रहा है जिससे वह स्वयं तक ही सिमित होकर रह गया है इसी कारण आपसी सम्बन्ध व दिनचर्या पूर्ण रूप से तनावपूर्ण व अव्यवस्थित ढंग से जीने के लिए योग एक पूर्ण समाधान के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत होकर आया है। समाज में निरंतर बदती प्रतिस्पर्धा के करण मनुष्य अपने आप को मानसिक रूप से और विकसित करना चाह रहा है और यह सब योग शिक्षा से ही मनुष्य अपने मन –मस्तिस्क को आधुनिक शिक्षा व क्रिया कलाप के लायक बना सकता है।

**योग शिक्षा का महत्व**

योग हमारा एक प्राचीन शास्त्र भी रहा है जिसमे शारीरिक,मानसिक व अध्यात्मिक समस्याओं के समाधान के साथ–साथ अन्य समस्याओं का समाधान भी मिलता है यह उस सागर के समान है जिसकी गहराइयों में जाकर आप जो खोजोगे वो आपको बहुत अधिक मात्रा में प्राप्त होगा। योग के द्वारा मनुष्य अपने चंचल मन को एकाग्र कर सकता है जो बहुत सारी समस्याओं की जड़ है । मन को प्रारंभ में एक अड़ियल घोड़े के समान नियंत्रित करना पड़ता है।

प्रारंभ में थोडा कठिन लगता है परन्तु बाद में धीरे–धीरे इसका अभ्यास हो जाता है। विद्यार्थी जीवन के लिए तो मन को नियंत्रित करना सम्पूर्ण जीवन की सफलता की नींव के समान हैं यदि विद्यार्थी का मन नियंत्रित है तो उसे शिक्षण विषय को याद करने में ज्यादा समय नहीं लगेगा तथा वह परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करेगा वहीं दूसरी तरफ अन्य विद्यार्थी जिनका मन नियंत्रित नहीं है वो परीक्षा में फेल हो जाते हैं। सामाजिक कार्यों में भी यही नियम लागू होता है।

**योग और शिक्षा**

योग और शिक्षा का छात्रों के जीवन में विशेष महत्व है जब बच्चा अपनी शिक्षा का प्रारंभ करता है तब से ही योग से उसके शारीरिक,मानसिक और बौद्धिक पक्ष प्रभावित होते हैं पहले के छात्रों के शारीरिक पक्ष पर ही विशेष बल दिया जाता था, जो मनोवैज्ञानिक पक्ष था वह पूर्णतः अछूता था। परन्तु जैसे–जैसे शिक्षा का विकास हुआ तो शोधकर्ताओं ने जाना कि विद्यार्थी के लिए जितना शारीरिक पक्ष महत्वपूर्ण है उससे ज्यादा छात्र का मानसिक पक्ष महत्वपूर्ण है और ये दोनों योग के माध्यम से प्रभावित होते हैं। जैसे–जैसे योग का चलन स्कूलों और कालेजों में चला है लोगों,छात्रों व अध्यापकों ने इसकी उपयोगिता को समझा है तथा यह आने वाले समय में एक वैज्ञानिक विषय के रूप में जरुर विकसित होगा एवं हमारे स्कूल व कालेजों में विशेष भूमिका निभाएगा।

**मानसिक स्वास्थ्य**

जिस परिवेश में बालक अपना ज्यादा समय व्यतीत करता है उसका प्रभाव उसके मन –मस्तिष्क पर जरुर पड़ता है जैसे घर, स्कूल, आस–पड़ोस आदि जब बालक अन्य जगह पर जाता है जो उसके विचार व तौर–तरीकों से विभिन्न होती है और वह उस जगह या परिवेश के हिसाब से स्वंय को ढाल लेता है इसे मनोवैज्ञानिक भाषा में अनुकूलन कहते हैं जो उसके मानसिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ होने का सूचक है।

**अध्ययन का औचित्य**

विद्यार्थी के लिए जितना शारीरिक रूप से स्वस्थ होना जरुरी है उतना ही उसका मानसिक रूप से स्वस्थ रहना जरुरी है जिस प्रकार कमजोर जड़ वाला वृक्ष आंधी या तूफान को सह नहीं पाता है अंत में वह जमीन पर गिर जाता है। उसी प्रकार कमजोर बीमार छात्र कभी भी बड़ी उपलब्धि को प्राप्त नहीं कर सकता। यदि छात्र को अपने जीवन में नई ऊँचाईयों को छूना है तो उसे शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहना जरुरी है और यह सब योग शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है।

**तकनीकी पदों का परिभाषीकरण**

उच्च माध्यमिक स्तर (किशोरावस्था) इसमें वो छात्र हैं जो कक्षा 6 से कक्षा 8 तक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं उन्हें किशोरावस्था का छात्र कहा जाएगा और उस स्तर को उच्च माध्यमिक स्तर कहा जाएगा।

योग शिक्षा छात्रों के स्वर्णिम भविष्य की वो मजबूत नींव है जो उनको जीवन भर मजबूती प्रदान करती है तथा उनके शारीरिक ,मानसिक और बौद्धिक क्षेत्र को विशेष रूप से प्रभावित करती है अतः इसका छात्रों के जीवन पर यह प्रभाव पड़ता है कि वे जीवन में बड़ी सफलता को प्राप्त करते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है छात्र के जीवन में कैसी भी परिस्थितियाँ क्यों न आ जायें अपने मानसिक संतुलन को बनाये रखना।

**शासकीय विद्यालय**

शासकीय विद्यालय उन्हें कहा जाता है जिन्हें सरकार द्वारा चलाया जाता है व उनकी प्रामाणिकता सरकार द्वारा प्राप्त होती है।

**अशासकीय विद्यालय**

ये वो विद्यालय है जिनका संचालन किसी निजी संस्था या व्यक्ति के हाथ में होता है इनकी प्रामाणिकता भी सरकार द्वारा होती है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

इस अध्ययन का विशेष उद्देश्य यह की किशोरावस्था के छात्रों पर योग शिक्षा के प्रभाव का उनके शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक पक्ष पर कितना प्रभाव हुआ है उसका अध्ययन करना हम इस अध्ययन को निम्न बिंदू के द्वारा प्रदर्शित कर सकते हैं–

1. शासकीय व अशासकीय किशोरावस्था के छात्रों में योग शिक्षा का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शासकीय व अशासकीय किशोरावस्था के स्तर की छात्राओं में मानसिक स्वास्थ्य पर योग शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शासकीय किशोरावस्था स्तर के छात्र व छात्राओं में मानसिक स्वास्थ्य पर योग शिक्षा के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. अशासकीय किशोरावस्था स्तर के छात्र और छात्राओं में मानसिक स्वास्थ पर योग शिक्षा के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**अध्ययन की परिकल्पनाएं**

अनुसन्धानकर्ता के द्वारा यह परिकल्पना की गई

कि किशोरावस्था स्तर के विद्यार्थी में योग शिक्षा के प्रभाव का उनके मानसिक,शारीरिक व बौध्दिक क्षमता पर पड़ने प्रभाव का अध्ययन करना।

**न्यादर्श**

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने हरियाणा राज्य के पलवल जिले के शासकीय एवं गैर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 50–50 विद्यार्थियों को चुना है।

**उपकरण**

प्रस्तुत शोध में योगेन्द्र सिंह द्वारा निर्मित मानसिक स्वस्थ्य परिक्षण सूची का प्रयोग किया गया है।

**परिकल्पनाओं से प्राप्त निष्कर्ष**

1. आंकड़ों के विश्लेषण में यह पाया गया कि शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ पर योग शिक्षा के प्रभाव में सार्थक अंतर पाया गया इसलिए परिकल्पना अस्वीकृत की गई।

2. आंकड़ों के विश्लेषण में यह पाया गया कि शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के छात्रों के मानसिक स्वास्थ पर योग शिक्षा के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया इसलिए परिकल्पना स्वीकृत की गई।

3. आंकड़ों के विश्लेषण में यह पाया गया कि शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के छात्राओं के मानसिक स्वास्थ पर योग शिक्षा के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया इसलिए परिकल्पना स्वीकृत की गई।

4. आंकड़ों के विश्लेषण में यह पाया गया कि शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ पर योग शिक्षा के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया इसलिए परिकल्पना स्वीकृत की गई।

5. आंकड़ों के विश्लेषण में यह पाया गया कि अशासकीय विद्यालयों के छात्र –छात्राओं के मानसिक स्वास्थ पर योग शिक्षा के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया इसलिए परिकल्पना स्वीकृत की गई।

**निष्कर्ष**

उपरोक्त आधार पर हम कह सकते है की योग का किशोरावस्था पर विशेष प्रभाव पड़ता है छात्रों का कोई पक्ष हो शायद ही जो इससे अछूता रहा हो चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक हो या आध्यात्मिक हो छात्रों की लगभग सभी समस्याओं का समाधान योग के माध्यम से किया जा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि योग का किशोरावस्था पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

1. प्रो.महेश प्रसाद सिलोड़ी, विभागाध्यक्ष योग विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत वि.वि.,नई दिल्ली, 2020 किताब महल पब्लिशर्स ISBN-978-93-87253-83-4 प्रष्ठ संख्या 20–21

2. कुलदीप वर्मा एवं पूजा रानी, व्यक्तित्व के सर्वागीण विकास में अष्टांग योग मार्ग का योगदान Vol. 7 year 2016 ISSN 2277-9809 online 2348 -9359 (print)

3. प्रोफेसर कृष्ण कांत शर्मा 1,उपमा राय 2. उपनिषद योग एवं पतंजलि योग का तुलनात्मक अध्ययन, SVDV/VD/2015/Sept-8, year 2020, VVRG NO -381546

4. डॉ इंदु अरोड़ा, तनाव प्रबंधन पर योग और ध्यान का प्रभाव, Academic Social Research RNI -1276610 ISSN No -2456-2645 Page -115 -125 July to sept.

5. शिखा बनर्जी, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक थकान पर योग के प्रभाव का अध्ययन ,JRU,PART -A, 16-18, 2013 ISSN -0970-5910

6. डॉक्टर शालिनी मिश्रा, बौद्ध धर्म में योग के तत्व एक अध्ययन, Academic Social Research , ISSN -2456-2645, VOL. -7, No. - 2021,Oct. -Dec. , Page 5-10 , Imp. Factor 4.928

7. डॉ संदीप ठाकरे, पतंजलि योग दर्शन में वर्णित अष्टांग योग : एक विवेचन, PRRRJ , E-ISSN -2320-0871, 17 June 2017

8. ज्योति शर्मा 1,प्रोफेसर गणेश शंकर गिरी 2,वशिष्ठ संहिता में यम और नियम का स्वरूप एक अध्ययन, IJHR, ISSN -2455-2232, Vol. -6, ISSUE-5,2020, Page No. -50-60

9. असीम कुलश्रेष्ठ, पातंजल योग सूत्र में अध्यात्म की वैज्ञानिक प्रक्रिया Interdisciplinary International Journal , 2015, Vol. -6, Page No. 10-20

# भारतीय दर्शन में ज्ञान का सम्प्रत्यय

**Dr. Kapil Dev**
(Assistant Professor)
Tantia University
Sri Ganganagar (Rajasthan)

**Jai Singh**
Research Scholar
Tantia University
Sri Ganganagar (Rajasthan)



**सारांश**

भारतीय चिंतन परम्परा में ज्ञान और विज्ञान दो अलग–2 सम्प्रत्यय हैं। जिस प्रकार जीवन दिशा की दो धाराएँ हैं–श्रेय मार्ग और प्रेय मार्ग। उसी प्रकार इस मार्ग पर प्रेरित बुद्धि के भी दो रुप हैं– (1) ज्ञान बुद्धि और (2) विज्ञान बुद्धि। अमरकोप के अनुसार मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर बुद्धि को 'ज्ञान' कहते हैं– जबकि शिल्प और शास्त्र की ओर उन्मुख बुद्धि को 'विज्ञान'–

''मोक्षे धीर्ज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।
मुक्तिकैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम ।।

किन्तु बोलचाल की भाषा में प्रत्येक जानकारी ज्ञान है तो किसी क्षेत्र में सुव्यवस्थित जानकारी विज्ञान। भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण से ज्ञान जीवन का आधार है। यह मुक्ति का साधन है। योग और मोक्ष दोनों के लिए ही ज्ञान आवश्यक है। यद्यपि सभी भारतीय दार्शनिक ज्ञान के महत्व को स्वीकार करते हैं फिर भी ज्ञान विषयक उनके सिद्धान्त में मतैक्य नहीं है जिसका कारण है उनका अपना अलग–2 तत्वमीमांसीय विचार। वस्तुतः भारतीय ज्ञानमीमांसा तत्वमीमांसा का साधन है। अतः प्रत्येक भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाय ने अपने तत्वमीमांसीय निष्कर्ष के अनुरुप ही अपनी ज्ञानमीमांसीय विवेचनाएँ प्रस्तुत की हैं, यथा– सांख्य–योग एवं अद्वैत वेदान्त दर्शन ज्ञान को द्रव्य रुप मानते हैं तो चार्वाक, न्याय वैशेषिक और प्रभाकर मीमांसक गुण रूप। ये ज्ञान को द्रव्य का आगन्तुक लक्षण मानते हैं परन्तु विशिष्ट अद्वैत दर्शन तथा जैन दर्शन ज्ञान को द्रव्य का स्वरुप लक्षण स्वीकार करते हैं जबकि भट्ट मीमांसा दर्शन के अनुसार ज्ञान न तो द्रव्य है, और न गुण है, यह क्रिया है। शून्यवादी बौद्ध दर्शन का मत है कि ज्ञान न तो दव्य है न गुण है और न ही क्रिया है अपितु वह शून्य है परन्तु यह शून्यता अभाव नही है बल्कि यह वाणी से परे होना है।


**प्रस्तावना**

ज्ञान एक सरल मानसिक प्रत्यय है। प्रायः अग्रेंजी भाषा में ज्ञान शब्द के लिए 'नालेज' प्रयुक्त होता है किन्तु दार्शनिक दृष्टि से यह शब्द भारतीय सन्दर्भ मे ज्ञान का सही अर्थ प्रकट नही कर पाता क्योंकि नालेज का अर्थ जानना होता है जबकि ज्ञान सिर्फ जानकारी न होकर सभी प्रकार के दुखों से मुक्ति–मोक्ष का मार्ग है। ''ज्ञानात् मुक्तिः ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः'' ऐसा भारतीय दर्शन वेदान्त का उद्घोष है। पुनः 'नालेज' पद के सन्दर्भ में सत्यता असत्यता का प्रश्न नही हो सकता। 'नालेज' सदैव सत्यता को सूचित करता है। ट्रू नालेज' एक पुनरुक्ति और 'फाल्स नालेज' एक आत्म व्याघाती पद कहा जायेगा जबकि भारतीय सन्दर्भ मे ज्ञान वैध–अवैध हो सकता है। यथार्थ ज्ञान को प्रमा एंव अयथार्थ ज्ञान को अप्रमा कहा गया है। इस लिए नालेज शब्द प्रमा का समानार्थी कहा जा सकता है, ज्ञान का नहीं।

भारतीय दार्शनिक परम्परा में ज्ञान, बोध, विज्ञान, प्रमा, प्रज्ञा आदि शब्दों का प्रयोग कहीं–2 समान अर्थ मे हुआ है जबकि कहीं इनमें अन्तर भी स्पष्ट हुआ है। भारतीय दर्शन में ज्ञान के तीन संघटक तत्व हैं ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान के साधन (प्रमाण) जिन्हे शब्दान्तर से प्रमाता, प्रमेय और प्रमाण भी कहा गया है। इन तीनों तत्वो को सम्मिलित रुप से त्रिपुटी ज्ञान कहते हैं।

यद्यपि ज्ञान के स्वरुप को लेकर भारतीय दर्शनों में अनेक तरह की व्याख्याए हुई हैं फिर भी सभी भारतीय दर्शन यह मानते हैं कि ज्ञान वह है जो विषय वस्तु को प्रकाशित करे। ज्ञान वस्तुओ के स्वरुप का प्रकाशक होता है।

**ज्ञानोत्पत्ति एवं स्वरुपः** ज्ञान की उत्पत्ति के सन्दर्भ मे भिन्न–2 दर्शन अपना स्वतन्त्र मत रखते हैं। न्याय

वैशेषिक दर्शन का मानना है कि ज्ञान मन के माध्यम से उत्पन्न होता है, मन ही ज्ञान का कारण है।

न्याय दर्शन में ज्ञान को बुद्धि और उपलब्धि का पर्यायवाची कहा गया है–

बुद्धिस्रुपवलब्धिर्ज्ञानमित्यनर्थान्तरम।

वैशेषिक दर्शन में भी इनको पर्यायवाची ही कहा गया है। प्रशस्तपाद ने ज्ञान, बुद्धि, उपलब्धि के साथ–2 प्रत्यय को भी पर्यायवाची कहा है– बुद्धिःउपलब्धिज्ञानम् प्रत्यय इति पर्यायः।'

**सांख्य**–योग दर्शन में ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि–वृत्ति के माध्यम से होती है। सांख्य दार्शनिक ज्ञान की उत्पत्ति की व्याख्या करते हुए कहते है कि ज्ञान–प्रक्रिया में पहले इन्द्रिय के माध्यम से विषय का सम्बन्ध मन से होता है, तत्पश्चात मन इन विषय सम्वेदनों को बुद्धि तक पहुँचाता है। विषय के सम्पर्क में आकर बुद्धि विषय का आकार ग्रहण कर लेती है। इस प्रकार बुद्धि का विषयकार हो जाना ही 'वृत्ति' है। किन्तु यह 'वृत्ति' ज्ञान नही है। जब बुद्धि–वृत्ति पुरुष के प्रकाश से प्रकाशित होती है तब ज्ञान उत्पन्न होता है।'

**ज्ञान के प्रकार**– प्रायः सम्पूर्ण ज्ञान को दो प्रकार का माना गया है–प्रमा एवं अप्रमा।

प्रमा का अर्थ यथार्थ ज्ञान या अनुभूति होता है जबकि अप्रमा अयथार्थ अनुभव को कहते हैं। 'यथार्थ **अनुभूति प्रमा**

इन्ही को वैध और अवैध ज्ञान भी कहते हैं। वैशेषिक दर्शन में इन्हे विद्या एवं अविद्या कहा गया है।

**सांख्य**–योग दर्शन में ज्ञान अथवा वृत्ति के पाँच भेद बताये गये हैं।'' (1) प्रमा (2) विपर्यय (भ्रम) (3) विकल्प (संशय) (4) निद्रा (स्वप्न) और (5) स्मृति। इनमें यथार्थ ज्ञान प्रमा है और शेष चार अप्रमा रुप हैं।''

न्याय दर्शन में ज्ञान के भेद को लेकर मतभेद प्रकट होता है। श्री सतीश चन्द्र चटर्जी कें अनुसार न्याय दर्शन में ज्ञान के दो प्रकार हैं– (1) अनुभूति रुप ज्ञान और (2) स्मृति रुप ज्ञान। अनुभूति के दो प्रकार हैं–प्रमा और अप्रमा। प्रमा चार तरह का होती है– प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति और शब्द। अप्रमा के तीन रुप हैं– संशय, विपर्यय और तर्क। स्मृति' प्रमा और अप्रमा की कोटि से बाहर का ज्ञान है। इसके दो भेद हो सकते हैं–यथार्थ और अयथार्थ। किन्तु डा० श्री नारायण मिश्र उपर्युक्त वर्गीकरण से सहमत नही हैं उनके अनुसार स्मृति अप्रमा के अन्तर्गत है।

वैशेषिक दर्शन में ज्ञान के दो वर्ग हैं– (1) विद्या और (2) अविद्या। विद्या प्रमा रुप है और अविद्या अप्रमा रुप। विद्या चार प्रकार की है–प्रत्यक्ष, अनुमिति, स्मृति और आर्षज्ञान– ''विद्यापि चतुर्विधा प्रत्यक्ष लैंगिक स्मृत्यार्षलक्षण ।''

अविद्या के भी चार भेद हैं– संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय तथा स्वप्न– तत्रविद्या चतुर्विधा संशय विपर्ययानध्यवसाय स्वप्न लक्षणा। (वही)

मीमांसा दर्शन में महर्षि जैमिनी कृत मीमांसा सूत्र के शाबर भाष्य पर आधारित दो प्रस्थान ख्यात हैं–प्रभाकर मीमांसा तथा भट्ट मीमांसा जिनके प्रवर्तक क्रमशः प्रभाकर मिश्र एवं कुमारिल भट्ट हैं।

प्रभाकर के मत में ज्ञान के दो रुप हैं– भावरुप ज्ञान और अभाव रुप ज्ञान। भावरुप ज्ञान दो तरह का होता है– प्रमा रुप साक्षत् ज्ञान अथवा अनुभूति जन्यज्ञान एवं अप्रमा रुप असाक्षात् ज्ञान अथवा अनानुभूत ज्ञान या स्मृति।

साक्षात ज्ञान प्रमा के पाँच प्रकार है– प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति, शाब्दी प्रमा एवं अर्थापत्ति। असाक्षात ज्ञान (अप्रमा) के अन्तर्गत स्मृति, संशय एवं स्वप्न को माना गया है।''

कुमारिल भट्ट मतानुसार भी ज्ञान प्रमा एवं अप्रमा रुप है। प्रमा रुप ज्ञान के छः भेद हैं– प्रत्यक्ष अनुमिति, उपमिति, शाब्दी प्रमा, अर्थापत्ति एवं अनुपलब्धि। अप्रमा रुप ज्ञान पाँच प्रकार का होता है–स्मृति, संशय, विपर्यय (भ्रम) तथा संवाद (अनुवाद)।

वेदान्तः वेदान्त दर्शन में ज्ञान के दो रुप हैं–यथार्थज्ञान या प्रमा और मिथ्या ज्ञान यानी अप्रमा।

अबाधित एवं अनधिगत ज्ञान ही यर्थाथ ज्ञान है– अनधिगताबाधित विषय ज्ञानत्वम।

यर्थाथ ज्ञान या प्रमा के छः रुप है प्रत्यक्ष प्रमा, अनुमिति, उपमिति, शाब्दी प्रमा, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि। मिथ्या ज्ञान अप्रमा है जिसके दो रुप हैं–विपर्यय या भ्रम और स्वप्न। वेदान्त दर्शन, न्याय दर्शन के विपरीत स्मृति को प्रमा रुप स्वीकार करता है–स्मृति साधरणं त्वबाधित विषयज्ञानत्वम।''

अद्वैत वेदान्त दर्शन में पारमार्थिक और व्यावहारिक ज्ञान का भी भेद किया गया है। पारमार्थिक दृष्टि से ज्ञान में ज्ञाता–ज्ञेय का अभेद होता है और यह अबाधित होने से यथार्थ ज्ञान होता है जबकि व्यावहारिक ज्ञान में ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान का भेद सदैव बना रहता है तथा ब्रह्म ज्ञान होने

पर व्यावहारिक ज्ञान का खण्डन हो जाता है इसलिए इसे यथार्थ ज्ञान नहीं कहा जा सकता।

जैन दर्शन में ज्ञान का अर्थ है विषय की चेतना। यह ज्ञान अथवा चेतना जीव का गुण है। जैन दार्शनिक ग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र के अनुसार ज्ञान पाँच प्रकार का होता है– मति, श्रुति, अवधि, मनः पर्याय और केवल ज्ञान– मतिश्रुताविधमनः पर्ययकेवलानिज्ञानम।

ये सम्यक ज्ञान कहे गये हैं जबकि मिथ्या ज्ञान भी होता है जिसके तीन रुप है– संशय, विपर्यय, (भ्रम) अनध्यवसाय (अनिश्चय)।

बौद्ध दर्शन मे योगाचार विज्ञानवाद सम्प्रदाय के अनुसार एक मात्र विज्ञान की ही सत्ता है। ज्ञान अथवा विज्ञान मात्र ही सत्य है– विज्ञप्तिमात्रता सिद्धिः ।

यह विज्ञान चौतन्य स्वरुप तो है किन्तु वेदान्त दर्शन की तरह शुद्ध शाश्वत चौतन्य स्वरुप न होकर विज्ञप्तिका प्रवाह मात्र है। यह स्थायी न होकर प्रतिक्षण परिवर्तन शील है। इसलिए इसे विज्ञप्ति कहते है।

बौद्ध शून्यतावादी सम्प्रदाय विज्ञान अथवा विज्ञप्ति को भी अन्तिम सत्य नही मानते। उसके अनुसार हमारा समस्त व्यावहारिक ज्ञान आभास मात्र है। परमार्थ रुप मे शून्यता (निषेध) ही सत्य है इस लिए बौद्ध मत ज्ञान की व्यावहारवादी व्याख्या ही प्रस्तुत करता है।

बौद्ध मत मे ज्ञान के दो रुप है–सम्यक् ज्ञान और मिथ्या ज्ञान। सम्यक् ज्ञान ही प्रमा है और मिथ्या ज्ञान अप्रमा।

धर्म कीर्ति के अनुसार सम्यक ज्ञान के दो लक्षण हैं– अविसवादित्व एंव अज्ञातप्रकाशकत्व ।''

सम्यक् ज्ञान ही सभी पुरुषार्थों की सिद्धि का साधन है–सम्यक्ज्ञानपूर्विका सर्वपुरुषार्थ सिद्धिरिति । सम्यक् ज्ञान के दो रुप हैं–प्रत्यक्ष और अनुमिति। अप्रमा रुप मिथ्या ज्ञान के अन्तर्गत संशय और विपर्यय (स्वप्न आदि) आते हैं जो सम्यक् ज्ञान के विरुद्ध धर्मी है। ये भ्रमित करने वाला ज्ञान है। शेरवात्स्की के अनुसार यह ज्ञान चेतन प्राणियों के लिए उनकी आकाँक्षाओं और इच्छाओं का वंचक होता है–यह भ्रमित करने वाला है इसीलिए मिथ्या ज्ञान कहलाता है।''

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय दर्शन में ज्ञान की अनेक प्रकार से व्याख्या की गई है किन्तु एक निश्चित सर्वमान्य परिभाषा में ज्ञान को नही बाँधा जा सका है। यथार्थ ज्ञान को प्रमा एवं अयथार्थ ज्ञान को अप्रमा कहा गया है एवं इनकी विस्तृत विवेचना व्यावाहारिक एवं पारमर्थिक दृष्टिकोण से की गई है।

**सन्दर्भ सूची**–


1. अमरकोप–प्रथमकाण्ड पंचमवर्ग श्लोक–6
2. न्यायसूत्र–वास्यायन भाप्य–1६1६16
3. न्यायसूत्र–1६1६15
4. वैशेषिक दर्शन 1६1६6
5. न्याय कन्दली प्रशस्तपाद भाप्य पृ०–171
6. सांख्य दर्शन–1 / 155
7. सुपमा टीका, सां० का0–5
8. अद्वैत चिन्ताकौस्तुभ–3६4
9. वैशेपिक सूत्र 9, 2, 11–12
10. सांख्यदर्शन–2 / 33
11. सांख्य तत्व कौमुदी–5
12. प्रशस्तपाद भाष्यम्
13 वही
14. डा0 नीलिमा सिंहा–भारतीय ज्ञान मीमांसा–पृष्ठ–10
15. वही पृष्ठ–11
16. वेदान्त परिभापा
17. वही
18. तत्त्वार्थ सूत्र–9
19. प्रमाणवार्तिक–1 / 7
20. शेरबात्स्की बौद्ध न्याय–पृ०–70
21. वही।

# Present scenario of MSME sector in Hanumangarh

**Dr. Anupriya Jain**
Assistant Professor
Department of Commerce
Faculty of Commerce and
Management, Tantia University,
SriGanganagar.

**Muktamani Bansal**
Scholar
Tantia University
Sri Ganganagar (Rajasthan)

This paper examines the role of micro, small and medium enterprises in increasing employment and economic growth of district Hanumangarh. This paper examines various policies, initiatives and interventions aimed at promoting and supporting the development of these sectors, Additionally, it analyzes the impact of such interventions on the overall growth, competitiveness and sustainability of the MSME sector in Rajasthan. To provide insight into the dynamics of government-MSME interactions in this context, the study employs a combination of qualitative and quantitative research methods, including literature review, data analysis and case studies. The findings of this research contribute to a better understanding of the factors influencing the development of this sector in Hanumangarh and provide recommendations for future policy interventions.

**Keywords:** MSMEs enterprises, Employment, Development, Policies, Hanumangarh, Rajasthan

**Introduction**

"MSME Sector" plays an important role in the Indian economy. A catalyst for the country's socio-economic transformation, the sector is important in meeting the national objectives of generating employment, reducing poverty and discouraging rural-urban migration. These enterprises help in creating a thriving entrepreneurial ecosystem, besides promoting the use of indigenous technologies. The sector has shown steady growth over the years, but has done so in a constrained environment that often results in inefficient resource use.

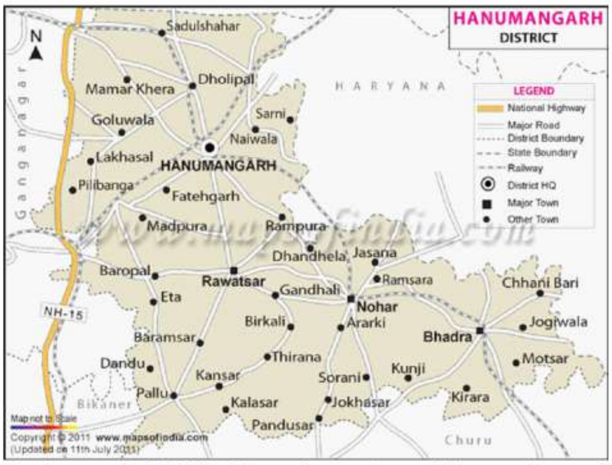


**Role of MSMEs in the Growth of Hanumangarh:**

**Contributing to the Gross Domestic Product (GDP):** The collective output of MSMEs in Hanumangarh contributes to the GDP of the state, thereby enhancing economic growth and prosperity.

**Promoting entrepreneurship:** MSMEs provide opportunities for aspiring entrepreneurs in Hanumangarh, encouraging them to set up and grow their businesses, thereby promoting entrepreneurial culture.

**Supporting local communities:** MSMEs in Hanumangarh contribute to the well-being of local communities by creating employment, increasing income levels and improving living standards.

**Strengthening the industrial ecosystem:** MSMEs in Hanumangarh strengthen the industrial ecosystem by creating supply chain linkages, supporting larger industries and promoting a conducive business environment.

**Encouraging regional development:** The growth and success of MSMEs in Hanumangarh drives regional development by attracting investments, improving infrastructure and creating a multiplier effect on the local economy.

**Challenges Faced by MSMEs in Hanumangarh**

Despite their significant contribution, MSMEs in Hanumangarh face various challenges. These challenges include limited access to finance, inadequate infrastructure, lack of skilled workforce, compliance-related burdens and technical barriers. Overcoming these challenges requires policy support, targeted interventions and collaborative efforts of the government, financial institutions, industry associations and other stakeholders.

**COVID-19 Impact and Recovery on MSMES in Hanumangarh**

The year 2022 marked the recovery phase for MSMEs from the disruptions caused by the COVID-19 pandemic. MSMEs faced significant challenges during the pandemic, including supply chain disruptions, lower demand and financial constraints. However, with government support and industry resilience, MSMEs in Rajasthan, including Hanumangarh, gradually resumed operations and adapted to the new normal by focusing on digital transformation and adopting innovative business models.

**Opportunities in the MSME Sector in Hanumangarh**

**1.Government Initiatives:** The government of India has introduced several schemes and initiatives to promote and support the growth of MSMEs. Entrepreneurs in Hanumangarh can benefit from these programs, such as Make in India, Startup India, and Digital India, to access funding, infrastructure development, and market expansion opportunities.

**2. Local Resources and Raw Materials:** Hanumangarh is rich in agricultural resources, including cotton, grains, and vegetables. MSMEs can leverage these local resources to develop agro-based industries, food processing units, and textile manufacturing, thus creating employment opportunities and adding value to the local economy.

**3. Digital Transformation:** The increasing penetration of digital technologies presents opportunities for MSMEs in Hanumangarh to enhance their competitiveness. Adopting e-commerce platforms, digital marketing strategies, and online payment systems can help businesses expand their customer base, improve operational efficiency, and explore new markets.

**4. Skill Development Programs:** Collaborations between industry bodies, educational institutions, and government agencies can facilitate skill development programs tailored to the needs of MSMEs in Hanumangarh. These programs can equip the local workforce with the necessary technical, managerial, and entrepreneurial skills, thus enhancing productivity and driving innovation.

While the MSME sector in Hanumangarh faces various challenges, including limited access to finance, infrastructural constraints, skill gaps, and market limitations, it also presents numerous opportunities for growth and development. Leveraging government initiatives, local resources, digital transformation, and skill development programs can help MSMEs overcome challenges and unlock their potential, contributing to the overall economic prosperity of Hanumangarh. The challenges faced by MSMEs in Hanumangarh, including limited access to finance, skilled workforce shortage, infrastructure deficiencies, technological constraints, limited market reach, regulatory compliance, and limited access to business support services, require attention and concerted efforts from various stakeholders. Addressing these challenges necessitates policy interventions, financial support, skill development programs, improved infrastructure, and streamlined regulatory processes. By tackling these challenges, Hanumangarh can create a conducive environment for the growth and sustainability of MSMEs, fostering economic development and generating employment opportunities in the region.

**Importance of the proposed research work**

MSMEs enterprises are important because they help in increasing employment and economic growth of India. It improves the growth of the country by increasing the urban and rural area. The present study is limited to micro, small and medium enterprises of Rajasthan. This work will be limited to Hanumangarh district only. The district will be selected on the basis of maximum and minimum number of MSMEs.

**Classification of MSMEs Sector**

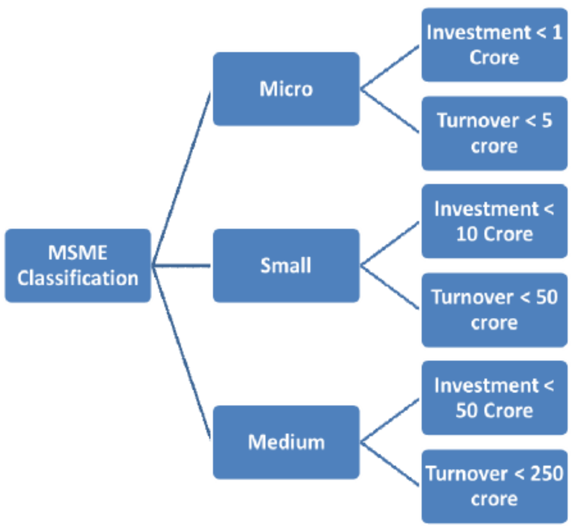


**Operative Period for MSME**

The operative period refers to the duration during which an enterprise is considered as an MSME and eligible for the associated benefits and support. In Hanumangarh, the operative period for an MSME is determined by the provisions set forth by the Government of India and the state government of Rajasthan. As of the current regulations, the following operative period criteria apply:

**Micro Enterprises:** An enterprise remains classified as a micro-enterprise for a period of up to five years from the date of its incorporation or registration. This period allows micro-enterprises to avail themselves of the specific incentives and benefits provided to this category.

**Small Enterprises:** A small enterprise retains its classification for a period of up to ten years from the date of its incorporation or registration. During this period, small enterprises can access the tailored support measures and advantages available to them.

Medium Enterprises: A Medium enterprises maintain their classification for a period of up to fifteen years from the date of their incorporation or registration. This extended operative period enables medium-sized enterprises to capitalize on the benefits and assistance programs tailored to their specific needs.

**Objectives of MSME Study**

The study of Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) is crucial for gaining insights into the dynamics, challenges, and opportunities within this significant sector of the economy. The objectives of an MSME study outline the specific aims and desired outcomes of the research, aiming to provide a comprehensive understanding of MSMEs and inform policies and interventions. This note explores the key objectives of studying MSMEs, emphasizing the importance of generating knowledge and facilitating the growth and sustainability of these enterprises.

**1. Assessing Economic Impact:** One of the primary objectives of an MSME study is to assess the economic impact of these enterprises at various levels. It involves measuring their contribution to employment generation, GDP growth, export potential, and overall economic development. The study examines the role of MSMEs in reducing regional disparities, fostering entrepreneurship, and promoting inclusive growth. By understanding their economic significance, policymakers can design targeted interventions to enhance their impact and potential.

**2. Identifying Challenges and Opportunities:** An MSME study aims to identify the challenges faced by these enterprises and uncover opportunities for growth and development. It delves into the barriers hindering the growth of MSMEs, such as limited access to finance, inadequate infrastructure, technological constraints, and regulatory complexities. By recognizing these challenges, the study provides insights for policymakers, financial institutions, and industry associations to design appropriate support mechanisms and interventions

to address these issues effectively.

**3. Analyzing Sectoral Dynamics:** MSMEs operate across diverse sectors, and studying their dynamics within specific industries is essential. The study aims to analyze sector-specific trends, challenges, and opportunities. It examines the unique characteristics of MSMEs in sectors such as manufacturing, services, trade, and agriculture. By understanding the sectoral dynamics, policymakers can tailor strategies and policies to enhance the competitiveness of MSMEs in each industry, fostering growth and innovation.

**4. Facilitating Policy Formulation:** An objective of an MSME study is to provide evidence-based insights for policymakers to develop effective policies and interventions. The study generates knowledge and analysis that can guide policymakers in designing supportive measures to address the specific needs of MSMEs. This includes formulating policies related to access to finance, infrastructure development, skill enhancement, technology adoption, market linkages, and regulatory frameworks. The aim is to create an enabling environment that fosters the growth and sustainability of MSMEs.

**5. Promoting Knowledge** Sharing and Capacity Building: An MSME study seeks to generate knowledge and insights that can be shared with various stakeholders, including MSME owners, industry associations, financial institutions, and academia. It aims to facilitate capacity building by providing valuable information, best practices, and case studies. By disseminating knowledge and fostering collaboration, the study contributes to enhancing the entrepreneurial ecosystem, encouraging learning, and promoting innovation among MSMEs.

**Hypothesis of MSME Study**

A hypothesis forms the foundation of any research study, providing a framework for investigation and generating insights. In the context of Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs), hypotheses help in exploring and understanding the various aspects of these enterprises. This note discusses the hypotheses commonly examined in MSME studies, highlighting their significance in uncovering insights into the dynamics and challenges faced by small-scale enterprises.

**Hypothesis 1:** Financial Access and Performance: The hypothesis suggests that the level of financial access and availability of credit significantly impact the performance of MSMEs. It posits that MSMEs with better access to finance and appropriate credit facilities are more likely to exhibit higher growth rates, profitability, and operational efficiency. The hypothesis also explores the relationship between financial inclusion, capital structure, and the ability of MSMEs to invest in technology, innovation, and human capital.

**Hypothesis 2:** Technological Adoption and Competitiveness: This hypothesis examines the link between technological adoption and the competitiveness of MSMEs. It suggests that MSMEs that embrace technology and digital tools have a higher likelihood of enhancing productivity, improving product quality, expanding market reach, and gaining a competitive edge. The hypothesis explores the factors influencing the adoption of technology, the barriers faced by MSMEs in adopting technology, and the impact of technological advancements on the overall performance of these enterprises.

**Hypothesis 3:** Entrepreneurial Orientation and Innovation: This hypothesis explores the relationship between entrepreneurial orientation and innovation in MSMEs. It suggests that enterprises with a higher degree of entrepreneurial orientation, characterized by risk-taking, proactiveness, and innovativeness, are more likely to exhibit higher levels of innovation. The hypothesis examines the factors influencing entrepreneurial orientation, the role of entrepreneurial mindset in fostering innovation, and the impact of innovation on the growth and sustainability of MSMEs.

**Hypothesis 4:** Regulatory Environment and Business Performance: This hypothesis focuses on

the relationship between the regulatory environment and the performance of MSMEs. It suggests that a favorable regulatory framework, characterized by transparent procedures, ease of doing business, and supportive policies, positively impacts the growth, competitiveness, and sustainability of MSMEs. The hypothesis explores the role of regulations in facilitating or hindering business operations, compliance costs, and the overall business environment for MSMEs.

**Hypothesis 5:** Market Dynamics and Growth Potential: This hypothesis examines the impact of market dynamics on the growth potential of MSMEs. It suggests that MSMEs operating in dynamic and expanding markets have higher growth prospects compared to those in stagnant or declining markets. The hypothesis explores factors such as market size, market competition, customer preferences, and market access barriers that influence the growth trajectories of MSMEs.

**Methodolgy**

This study is to conduct secondary research on MSME industry to identify the major challenges faced by the enterprises and the constraints currently faced by these enterprises and to suggest policy measures that can improve the MSME sector, So that these enterprises can be established and empower them. The study of MSMEs employs a multifaceted approach, combining qualitative and quantitative research methodologies. It involves collecting data through surveys, interviews, case studies, and secondary sources to gather comprehensive information on various aspects, including business operations, financials, market dynamics, innovation, and workforce. The data is then analyzed using statistical tools, econometric models, and qualitative frameworks to derive meaningful insights and trends.

**Result of Hypothesis**

**1. Economic Contribution:** MSMEs play a vital role in the global economy. According to the International Council for Small Business (ICSB), MSMEs account for over 90% of all businesses worldwide and contribute to more than 50% of total employment. In many developing countries, including India, MSMEs are the primary source of income for millions of people and contribute significantly to GDP.

**2. Job Creation:** MSMEs are known for their ability to generate employment opportunities, particularly at the local level. According to the World Bank, MSMEs are responsible for creating approximately 7 out of 10 jobs in developing economies. They are often labor-intensive and provide employment opportunities for individuals with varying skill levels, contributing to poverty alleviation and inclusive growth.

**3. Innovation and Entrepreneurship:** MSMEs are a hotbed of innovation and entrepreneurship. Due to their small size and agility, these enterprises are often more adaptable and open to experimentation. They drive innovation through product development, process improvements, and the adoption of new technologies. MSMEs also contribute to the overall entrepreneurial ecosystem by fostering a culture of creativity, risk-taking, and entrepreneurial spirit.

**4. Resilience and Economic Stability:** MSMEs are known for their resilience, particularly during times of economic uncertainty and crisis. They tend to be more adaptable to market fluctuations and can quickly adjust their operations to changing conditions. During economic downturns, MSMEs have demonstrated their ability to sustain business operations, retain employment, and contribute to local economic stability.

**5. Access to Finance and Credit:** One of the key challenges faced by MSMEs is limited access to finance and credit facilities. Small enterprises often struggle to meet the collateral requirements of traditional lending institutions, leading to a lack of capital for expansion and growth. Addressing this challenge and providing easier access to finance for MSMEs can unlock their full potential and drive economic growth.

**6. Technology Adoption and Digital**

**Transformation:** In recent years, the digital revolution has provided new opportunities for MSMEs to thrive. The adoption of digital technologies and online platforms has enabled small businesses to reach a wider customer base, streamline operations, and enhance productivity. MSMEs that embrace digital transformation are better positioned to compete in the global marketplace and capitalize on emerging trends.

**7. Policy Support and Government Initiatives:** Governments across the world recognize the importance of MSMEs and have introduced various policies and initiatives to support their growth. These include providing financial incentives, facilitating access to credit, promoting entrepreneurship education and training, simplifying regulatory procedures, and creating business development programs. Such initiatives are aimed at creating an enabling environment for MSMEs to flourish and contribute to economic development.

**Strength for MSMEs in Hanumangarh**

Hanumangarh, a district located in the northwestern state of Rajasthan, possesses several strengths that contribute to its overall development and socio-economic progress. These strengths encompass various aspects, including geographical advantages, agricultural potential, cultural heritage, and infrastructure. This note aims to provide insights into the strengths of Hanumangarh without plagiarism, highlighting its key attributes and advantages.

**1. Geographical Location:** Hanumangarh benefits from its strategic geographical location. Situated on the border of Rajasthan and Punjab, the district serves as a gateway between the two states, facilitating trade and commerce. Its proximity to major cities such as Bikaner, Jaipur, and Ludhiana enhances connectivity and accessibility, opening up opportunities for business expansion and market reach.

**2. Agricultural Potential:** Agriculture forms a vital part of Hanumangarh's economy. The district is blessed with fertile soil, ample water resources from the Indira Gandhi Canal, and favorable climatic conditions for agricultural activities. The cultivation of crops such as wheat, mustard, cotton, and fruits like citrus and guava contributes significantly to the agricultural output of the region.

**3. Cultural Heritage:** Hanumangarh boasts a rich cultural heritage, which is reflected in its historical monuments, traditions, and festivals. The district is home to ancient archaeological sites like Kalibangan, an Indus Valley Civilization site, which attracts tourists and researchers interested in exploring the region's historical significance. The cultural heritage of Hanumangarh contributes to its tourism potential and showcases the district's unique identity.

**4. Industrial Development:** Hanumangarh has witnessed notable industrial development in recent years. The district hosts a variety of industries, including textiles, agro-processing, ceramics, engineering, and chemical manufacturing. The presence of industrial areas and favorable policies has encouraged entrepreneurship and investment in the region, leading to employment generation and economic growth.

**5. Infrastructure:** Hanumangarh is well-equipped with basic infrastructure facilities that support economic activities and enhance the quality of life. The district has a well-developed road network, connecting it to major cities and neighboring states. It also has access to railways, with Hanumangarh Junction serving as a major railway station. Additionally, the availability of educational institutions, healthcare facilities, and modern amenities contributes to the overall development of the district.

**6. Skilled Workforce:** Hanumangarh benefits from a skilled and hardworking workforce. The district has educational institutions offering technical and vocational training programs, empowering individuals with relevant skills required in various industries. The availability of a skilled workforce enhances the competitiveness and productivity of businesses operating in Hanumangarh.

**7. Government Support:** The government of Rajasthan has implemented various policies,

schemes, and incentives to support the development of Hanumangarh. Initiatives such as the establishment of industrial areas, promotion of MSMEs, infrastructure development, and skill enhancement programs aim to boost economic growth, attract investments, and create employment opportunities in the district.

These strengths of Hanumangarh form a strong foundation for its overall development and progress. Leveraging its geographical advantages, agricultural potential, cultural heritage, and supportive infrastructure, the district has the potential to attract investments, promote entrepreneurship, and improve the quality of life for its residents. By harnessing these strengths and addressing any challenges, Hanumangarh can continue to thrive and emerge as a vibrant hub of economic activity and cultural significance in the region.

**Conclusion:**

The main objective of data collection was to study how entrepreneurs managed micro, small and medium enterprises. It also shows the role of MSMEs in helping in the economic restructuring and development of Hanumangarh. This data revealed that barriers such as financial constraints and issues related to business relationship, geographical area of sales range can be tackled more effectively by enterprises. Furthermore, the data collected revealed that the overall global business environment of Hanumangarh has been on average favorable for the growth of micro and small scale industries. The data shows that MSMEs have played a role in employment generation in Hanumangarh. Due to acute power shortage, industrial units are able to manage only 70 per cent capacity and their situation has become worse and they are also unable to pay salaries to the workers. Since most of the enterprises complain about unavailability of labor (although this problem is not exclusive) the government needs to pay attention to this matter. It will have to amend labor laws that are contemporary and relevant to the current global scenario. Simple and clear policies and regulations should be created so that these enterprises can understand them and use and implement them in the business for compliance and secure profits. There are many government schemes but from the study it was observed that most of these enterprises are not aware and do not understand how they can benefit from them. Entrepreneurs work in micro and small business which is influenced by many internal and external influences which are constantly changing. If government banks and financial institutions will take proper initiatives in the field of MSME and take pride in serving MSMEs, then these challenges can be resolved and the economic growth rate of Hanumangarh can be increased. Nowadays organizations are knowledge based and their success and survival depends on access to finance, creativity and innovation. The rate of change is increasing rapidly, as the creation and global distribution of new knowledge ideas increases.

**Government publications and newspapers**

1. Economic survey of government of India.
2. Business today.
3. Business India
4. The Hindu
5. The Times of India
6. The Hindustan times
7. India today
8. The economic times
9. Rajasthan patrika
10. The financial express
11. Business standard
12. Yojana
13. Business world
14. The Indian journal of commerce
15. Udhami margdrishika
16. Pratahkal newspaper
17. Nafa Nuksan

**Websites**

1. https://msme.gov.in
2. https://dcmse.gov.in
3. https://www.nimsme.org
4. https://m.economictimes.com
5. https://champions.gov.in

# जोधपुर महाराजा विजयसिंह की सनद बहियों के प्रमाण

**डॉ. जयश्री तंवर**
शोध निर्देशिका
टांटिया यूनिवर्सिटी, श्रीगंगानगर

**सुनीता देवी**
शोधार्थी
टांटिया यूनिवर्सिटी, श्रीगंगानगर

**सारांश**

सनद परवान बही महाराजा विजयसिंह के काल से आरम्भ हुई सनद एक आज्ञा पत्र है जो शासकों व कर्मचारियों के द्वारा जागीरदारों एवं चौधरियों को प्रशासनिक कार्यों के लिए भेजा जाता था। यह पत्र मूल रूप से परवाना कहलाता था। सनद एक प्रकार का स्वीकृति पत्र है। सनद परवाना बही न. 1 वि.स. 1820–1821 के समय की मिलती है, शासक विजयसिंह की प्रशासनिक गतिविधियों को जानने के लिए यह महत्त्वपूर्ण स्त्रोत है।

महाराजा विजयसिंह के काल में जो सनदें जारी की गई व परवाने भेजे गये उनकी प्रतिलिपियां बहियों में तिथि के साथ लिपिबद्ध की गई है। राज्य की प्रशासनिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व विशेष रूप से आर्थिक पहलुओं की जानकारी मिलती है। इस प्रकार के सूत्रों का उल्लेख इतिहास लेखन में कम हुआ है।

इसलिए ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण भी है।

**शब्दावली** – हुकमनामा, कागज परवाना, पटायत राजपूत, तशत वैसाश, आडतियों, सिरसतौ, नवीसंदौ, तलब किया।

**प्रस्तावना**

राजस्थान इतिहास में लिखित स्त्रोत में प्रमुख सामग्री अभिलेख है। इस लिखित सामग्री में राजा व प्रजा के विभिन्न क्रियाकलापों ओर उनके शासन में रहे योगदान का विस्तार से वर्णन मिलता है। इन सूत्रों की गणना करना मुश्किल है।

वर्तमान में जो प्रत्यक्ष रूप में हमारे सामने इतिहास के विविध पक्ष प्रकट हो रहे हैं वे अपने आप में दुर्लभ है। महाराजा विजयसिंह के शासनकाल की अधिकांश जानकारी हमें बहियों के माध्यम से मिलती है राज्य में कृषि व्यापार, पर्यटन, मेला, रोजगार, रीति– रिवाज, प्रथाएँ आदि के बारे में जानकारी मिलती है। राज्य के शासनादेश युद्ध व अधिकारियों की कार्य प्रणाली का विवरण इन बहियों में मिलता है बहियों की भाषा तत्काल राज्य की भाषा में दी गई है।

**अध्ययन के उद्देश्य**

1 प्रस्तुत लेख का उद्देश्य इस प्रकार के सूत्रो की ओर शोधार्थियों का ध्यान आकृष्ट करना है।

2. मारवाड़ की में शासन प्रणाली का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कर शोधार्थियों को लाभान्वित करना है।

3. मारवाड़ प्रशासन में लेखा–जोखा रखने के लिए बहियों के महत्व को समझना है।

4. मारवाड़ महाराजा विजयसिंह के प्रशासनिक सामाजिक सांस्कृतिक और विशेषतः आर्थिक पहलुओं की जानकारी प्राप्त करना है।

**लेख**

महाराजा विजयसिंह ने राज्य में जीव हत्या, बालिका वध, चौरी डकैती आदि पर रोक लगाई गई व विभिन्न प्रकार के दण्ड दिये गये। महाराजा के शासनकाल में अपराधियों को पकड़ने पर राज्य की ओर से इनाम स्वरूप शाशि भी दी जाती थी सनद से जानकारी मिलती है।

महाराणा विजयसिंह द्वारा वैष्णव धर्म अपनाने के बाद राज्य में पशु हत्या पर रोक लगाने के संबंध में सनद से ज्ञात होता है। कसाई लोगों के द्वारा जीव हत्या नहीं की

जायेगी यदि कोई कसाई फिर भी ऐसा करता है तो इसका हाथ काट दिया जाए यह आदेश दशहरे के दिन परगनों को दिया गया सनदों में मारवाड़ के विभिन्न विभागों जिनमें प्रमुख रूप से अंबार के कोठार सुतरखाना सिलेहखाना तबेला चरखादार गऊखाना, टकसाल खेमा का कारखाना आदि का उल्लेख तथा इसके साथ–साथ मारवाड़ के प्रमुख प्रशासनिक पद व उनके नाम मिलते है सांस्कृतिक एवं व्यापारिक मेले व उत्सव की जानकारी तथा कुएं एवं बाँध का निर्माण और उनकी मरम्मत के कार्य करवाने की जानकारी भी सनद में मिलती है।

इस प्रकार सनद परवाना की बहियों में जोधपुर के अन्य शासकों की जानकारी को मिलती है।

**बही उदाहरण –1**

पट्टायत राजपूत कोइ बेटी मारण पावै न्ही सुं जतन कर दीजो ने तीण बेटी मारे तीण नं मुलक बारे काड दीनो इण वात री विशेष सावधानी राषजो ही ये कीणी ओ कांम कीयो नै थे गाफली राषी तो थानु मेले छो ओलभो आवसी सं. 1821 रा चेत वद 8 रो प्रसंग है। इमअ अ क्षेत्र आयता हा–

1. वीगत
2. नागोर
3. मेड़ते
4. परबतसर
5. सोजत ने पाली
6. जालोर
7. भींनमाल
8. माहारोठ
9. सिवाणे
10. डीडवाणे
11. दौलतपुरा
12. कोलीयै
13. नांवै
14. जैतारण
15. तांतूटी
16. फलौधी

वि.सं. 1821 को एक महत्वपूर्ण आदेश राज्य द्वारा जारी किया गया कि पट्टायत सरदार के द्वारा अपनी बालिका हत्या पर रोक लगाने के संबंध में यह आदेश महाराजा विजयसिंह के समय में लड़कियों के जन्म होने पर उन्हें मार दिया जाता था यह घटना राज्य में बहुत ज्यादा. होने लगी तो मारवाड में यह के विभिन्न परगनों में यह सूचना दी गई कि कोई बालिका हत्या करता है तो उसको राज्य से बाहर निकाल दिया जायेगा।

**बही उदाहरण 2**

सावण सुद 3

तथा गांव रोहीसे हुकमनावारा2 रूपीया आठ हजार ठहरया तीण में च्यार हजार तो भरीया बाकी 4000) में 1000) छूट रो श्री हजुर सु हुकम हुवो है बाकी 3000) में 1500) दोढ हजार सावणु साष में भरावसी ने 1500) दोढ हजार उनालु साष में भरावसी हमार तलबीया3 हुवे तिणा री ऊठंतरी कराय देजो इणारी गेर राषजो सावण पट्टायत ठिकानेदार की मृत्यु होने के पश्चात् जब उसके पुत्र को ठिकाने का पट्टा–आवंटित्त किया जाता था तो उसको राज्य में हुकमनामा शुल्क जमा करवाना पड़ता था। राज्य की ओर से जब रोहिसे गांव के नया पट्टायत से 8000 रु. का शुल्क हुकमनामा के रूप में लेने का आदेश जारी हुआ तब उसमें 1000 रु. की छूट राज्य की ओर से की गई और वह शेष रही राशि सावणू (1500) व उनालू (1500) में लौटाने की बात कही और 4000 नकद राशि जमा करवाई, सनद से ज्ञात होता है। जानकारी श्रावण शुक्ल 3 वि.सं. 1821 की सनद से मिलती हैं।

**बही उदाहरण–3**

मेलां रा दीवानी कागद परवाना सं. 1821 मेले कापरडा परवाना म्हा सुद 6 रीव सं. 1821 स्वारूप श्री राम्हांजना वोपारीया समसत जोग्य जोधपुर था दीवांण श्री सुरतरामजी लिषावत जुहार वाचजो अठारा समाचार श्रीजी रे तेज प्रताप सुं भला छै थारा सदा भला चाहीजे तथा कापरडा रा मेला रो झण्डो चेत सुद 1 षड़ो हुसी सो चेत सुद 15 सुदो रहसी थे षातर जमे सु जीनस4 माल घोड़ा ऊंट बलद लेने मेले आवजो हासल अधकर माफ हुसी ने दरबार री हद में मारग रो जापतो हुसी दीसावरा थाहरा आडतीया5

नु पिण लिफ्जो सो जीनस माल लेने मेले आवै सं. 1821 रा म्हा सुद 6 रीर्व कापरड़ा में मेले का आयोजन शुरू होने पर दीवान सुरतमलजी की और से मारवाड़ के विभिन्न परगनों में रहने वाले महाजन व्यापारियों को परवाना भेजा गया जिसमें मेले के बारे लिखा है कि चैत्र शुक्ल 1 से शुरू होकर चैत्र शुक्ल 15 तक चलेगा अतः वहाँ पहुँच कर अपनी खाद्य सामग्री के साथ घोड़े, ऊँट और बेलों की बिक्री करने के संबंध में यह परवाना माघ शुक्ल 6 रविवार को जारी किया गया था और इसके साथ उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी राज्य की ओर से देने की बात कही गई है।

**बही उदाहरण–4**

। मति आसाढ़ सुद 4 शनि संवत 1821 मुकाम गढ़, जोधपुर तथा मुंहता खुशालचंद माणचंद शिवचंद निहाचलंद रायचंद रा बैटा पोतां रो हासल में अधकरी माफ रो हुकम हुवो है सु भै विणज व्योपार करै नै सायर दाण राहदारी वगैरे भरे तीण में अधकारी छुट कीजो श्रीहजूर रो हुकम छै।6 नागौर। मेड़तै। परबतसर । सोजत

मारवाड़ के परगनों में आने वाले गांवों से रबी और खरीफ की फसलों से लिया जाने वाला राजस्व कर के साथ जोधपुर के खुशालचंद किसनचंद को क्षण व राहदारी कर अदा करते हैं जिसमें उनको चौथाई छूट करने के संबंध में मुंहता खुसालचंद, माणकचंद, शिवचंद, निहालचंद, जेठमल व रायचंद के पुत्रों व पोत्रों को व्यापार, वाणिज्य में बढ़ावा देने की दृष्टि से क्षण व राहदारी कर में आधा कर माफ (छूट) करने की बात राज्य की ओर से जारी करने का उल्लेख मिलता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1 डॉ. जितेन्द्र सिंह भाटी राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था, पृ. स. 242

2. डॉ. विक्रम सिंह भाटी, महाराणा विजयसिंह सनद परवाना बही पृ.स 4,13, 14

3. हुकमसिंह भाटी भाग–2, राठौड़ों री ख्यात ।

4. गौरीशंकर हीराचंद औझा भाग–2, जोधपुर राज्य का इतिहास

5. ब्रजेश कुमार सिंह, महाराणा श्री विजयसिंह री ख्यात।

# श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

**डॉ. सावित्री सिंगवाल**
पीएच.डी. एजुकेशन
एसोसियट प्रोफेसर
जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय
कोटा (राज.)

वंशीधरं तोत्त्रधरं नमामि मनोहरं मोहहरं च कृष्णम्'
मालाधरं धर्मधुरन्धरं च पार्थस्य सारथ्यकरं च देवम्

जो अपने हाथों में बंशी तथा चाबुक और गले में दिव्य माला धारण किए हुए है एवं जो प्राणियों के मन का तथा मोह का हरण करने वाले है, उन पार्थ सारथी धर्म धुंरधर दिव्य स्वरूप भगवान श्रीकृष्ण को मैं प्रणाम करती हूँ।

मनुष्य को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति माना गया है शिक्षा व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है। यह हमारी संवेदनशीलता और दृष्टि को प्रखर करती है जिससे राष्ट्रीय एकता बढ़ती है और समझ एवं चिंतन में स्वतंत्रता आती है। शिक्षा हमारे संविधान में प्रतिष्ठित समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र के लक्ष्यों की प्राप्ति में हमारी सहायता करती है। किन्तु यह व्यावहारिकता और यथार्थवाद से कोसों दूर है। शिक्षा का प्रारम्भ इस लक्ष्य को लेकर हुआ कि सामाजिक दृष्टि से अच्छे इंसान तैयार हो किन्तु अब यह विकृत होकर ऐसी प्रणाली में बदल गई है, जो शरीर और बुद्धि की बात तो करती है किन्तु मनुष्य का आध्यात्मिक और भावनात्मक दृष्टि से स्पर्श नहीं करती। इसी का परिणाम है कि जीवन के आवश्यक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और जन सामान्य का मूल्यों पर से विश्वास उठता जा रहा है।

शिक्षाक्रम में ऐसे परिवर्तन की आवश्यकता है जिससे सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा एक सशक्त साधन बन सके। शिक्षा में प्राचीन एवं आधुनिकता का समन्वय होना चाहिए। भौतिकता, आध्यात्मिकता, व्यवहार व सिद्धान्त का सन्तुलन होना चाहिए। शिक्षा में पारिवारिक भाव का विकास, नीति व्यवस्था, पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम का निर्धारण भी होना चाहिए। 'शिक्षा' का कार्य मानव जीवन को अधिक व्यवस्थित एवं श्रेष्ठ बनाना है। भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा की उत्तम व्यवस्था विभिन्न माध्यमों से की गयी है। इस दृष्टि से उपनिषदों व प्राचीन साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है, जिससे ज्ञान का विस्तार होता रहा है। ऐसा माना जाता है कि उपनिषदों के रहस्यपूर्ण मंत्रों को सरल भाषा में श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता द्वारा जनता तक पहुँचाया गया है।

श्रीमद्भगवद्गीता में केवल धार्मिक बातें ही समाविष्ट नहीं है, अपितु शैक्षिक पहलुओं पर भी समुचित चिन्तन पाया जाता है जो मानव का समुचित (सर्वांगीण) विकास कर उसे जोड़े रखने का कार्य करता है।

प्रसिद्ध विद्वान पाण्डुरंग ने श्रीमद्भगवद्गीता के संबंध में कहा है, "Geeta is not the bible of Hinduism but it is the bible of Humanity.

बदलते हुए सामाजिक परिवेश में मानव भावहीन एवं दिशा शून्य होकर पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर रहा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के कारण जहाँ विश्व के मानव एक–दूसरे के सम्पर्क में आये है, वहीं मनुष्य–मनुष्य के बीच के आपसी संबंध औपचारिकता पूर्ण होते जा रहे है। आज की शिक्षा में गुरू एवं शिष्य के बीच मात्र औपचारिक संबंध रह गया है। प्राचीन काल में गुरू और शिष्य के मध्य अत्यन्त आदर व श्रद्धा भाव था। आज उसका सर्वथा अभाव प्रतीत होता है। गुरू के प्रति श्रद्धा, विनम्रता तथा सम्मान की भावना के बिना बालक के चरित्र का विकास नहीं हो सकता। भारतीय साहित्याकाश में नक्षत्र रूप में विद्यमान हमारी प्राचीन धरोहर के रूप में उपलब्ध श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता से समस्त मानव जाति अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। श्रीमद्भगवद्गीता एक ऐसी अक्षयनिधि है जिससे मानव की सम्पूर्ण समस्याओं का समाध

ाान खोजा जा सकता है। इनकी शिक्षा व्यक्ति के चहुंमुखी विकास पर बल देती है। श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता में भक्ति, ज्ञान और कर्तव्य का अपूर्व समन्वय है।

विश्व विख्यात ग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित ज्ञानशाखा की विषय वस्तु को विद्यालयों तक पहुँचाया जाए तो निश्चित ही आधुनिक शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति का पोषण हो सकता है क्योंकि श्रीमद्भगवद्गीता काल से परे विशाल धर्म का प्रतीक है। इसके अस्तित्व में आध्यात्मिक मूल्य शिक्षा के विचार प्रकट हुए है। बौद्धिक एवं नैतिक अन्तर्दृष्टि के प्रकाश में सर्वोच्च रहस्य आलोकित हुए है और उसमें शाश्वत् मूल्यों की विभावना हुई है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता के महत्व को इस प्रकार प्रतिपादित किया जा सकता है –

– आदर्श जीवन के सिद्धान्तों का निरूपण।
– नैतिक मूल्यों की स्थापना।
– आध्यात्मिक मूल्यों की पुनर्स्थापना।
– ईश्वर सत्ता की स्वीकृति।
– उच्च सात्विकता का सिद्धान्त।
– सामाजिक तथा वैयक्तिक संबंध।
– गुरू शिष्य सम्बन्ध।

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत का ही एक हिस्सा हैं जिसमें 18 अध्याय और 700 श्लोक है। श्रीमद्भगवद्गीता की गणना प्रस्थानत्रयी में की जाती है जिसमें उपनिषद् और ब्रमहसूत्र भी सम्मिलित हैं। भारतीय परम्परा के अनुसार श्रीमदभगवद्गीता का वही स्थान है जो उपनिषद और धर्मसूत्रों का है। उपनिषदों को गौ और श्रीमद्भगवद्गीता को उसका दुग्ध कहा गया हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग का वर्णन है। यह कुरूक्षेत्र के युद्ध में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया दिव्य उपदेश है।

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत का एक अध्याय है। उसका आरंभ अर्जुन के उस क्षोभक वर्णन से होता है, जो एक दूसरे के वध के लिए दोनों ओर खड़े योद्धाओं को देखकर उसके मन में हो उठा था और इसी दृश्य के अन्दर हिन्दू धर्म का प्रतिपादन सन्निविष्ट किया गया है। हमें श्रीमदभगवद्गीता को हिन्दू धर्म का एक अपूर्व ग्रंथ मानना चाहिए, कुरूक्षेत्र के युद्ध की एक अवान्तर कथा मात्र नहीं।

श्रीमद्भगवद्गीता एक सार्वभौमिक सत्य के विश्लेषण को उजागर करती है जो हर परिस्थिति, देशकाल के लिए आवश्यक समाज, शिक्षा, धर्म व राजनीति के स्वरूप को प्रतिपादित करती है। श्रीमद्भगवद्गीता उनको सही संदर्भों में परिभाषित कर नये प्रतिमान स्थापित कर अग्रसरित करने में सक्षम है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने श्रीमद्भगवद्गीता व श्रीरामचरितमानस में निरूपित विभिन्न शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करने का प्रयास किया है। श्रीमद्भगवद्गीता व श्रीरामचरितमानस ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिन्होंने दर्शन, तत्व विद्या, नीतिशास्त्र तथा मानवीय आदर्श को अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया है। भारत जिस गौरवशाली सम्पदा का उत्तराधिकारी रहा है वह कितनी समृद्ध है, यह आज अधिकांश भारतीय भूल चुके है। हमें राह दिखाने वाला कोई पथ प्रदर्शक प्रकाश स्तम्भ दिखाई नहीं देता। प्राचीन संस्कृति टूट रही है, नैतिक मानदण्ड नष्ट हो रहे हैं। सम्पूर्ण वातावरण में उत्तेजना व्याप्त है, चहुँ ओर उथल–पुथल मची है। सम्पूर्ण संस्कृति पर संकट उपस्थित है। ऐसे में मानस और श्रीमद्भगवद्गीता के मूल्य जनमत को आप्लावित कर सकते हैं। आपसी संघर्ष के स्थान पर एक दूसरे को संबल प्रदान कर सकते है। जीवन जीने की सही कला सिखा सकते हैं आवश्यकता है तो सिर्फ इस बात की इनमें निहित शैक्षिक मूल्यों का व्यापक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया जाए। श्रीमद्भगवद्गीता व श्रीरामचरितमानस हमारे धर्म ग्रंथों के तेजस्वी एवं निर्मल हीरे है। ब्रह्मण्ड ज्ञान एवं आत्म विद्या के गूढ़ और पवित्र तत्वों को थोड़े में एवं स्पष्ट रीति से समझाने वाले, मनुष्य मात्र की पुरुषार्थ से पहचान करा देने वाले, भक्ति और ज्ञान का मेल कराकर इन दोनों का शास्त्रोक्त व्यवहार के साथ संयोग करा देने वाले, संसार में व्यस्त मनुष्य को शांति देकर उसे निष्काम कर्तव्य के आचरण में लगाने वाले श्रीमद्भगवद्गीता व श्रीरामचरितमानस के समान ग्रंथ संसार के साहित्य में नहीं मिलते। जिस ग्रंथ में समस्त विद्याओं का सार स्वयं भगवान श्रीकृष्ण की वाणी से मुखरित हुआ हो उसकी योग्यता का वर्णन किसी लेखनी से भला कैसे सम्भव है।

श्रीमद्भगवद्गीता केवल भारत में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए कर्तव्य शास्त्र का अनूठा ग्रंथ रत्न है। इसमें जगद्गुरू के रूप में श्रीकृष्ण के द्वारा शिष्य के प्रतीक

रूप में अर्जुन को शिक्षा दी गई है। मानव जीवन की इतनी उच्च कल्पना एवं कर्तव्य का इतना उच्च विश्लेषण अन्यत्र प्राप्त नहीं होता। वेद वेदान्त में अर्थात् प्राचीन उपनिषदों में मंत्र दृष्टा ऋषियों द्वारा जिस गूढ़ गम्भीर तत्वचिंतन की मीमांसा हुई उन सबका निचोड श्रीमद्भगवद्गीता में अन्यन्त व्यवस्थित ढंग से संकलित संगृहित है। भगवान श्रीकृष्ण के मुखाम्भोज से निसृत इस ज्ञान समुद्र में श्रीमद्भगवद्गीता का भारतीय संस्कृति में महत्व एवं प्रयोग आज भी अक्षुण्ण बना हुआ है। वस्तुतः श्रीमद्भगवद्गीता में कोई एक दर्शन नहीं है, समस्त प्राचीन औपनिषदिक दर्शनों का सारांश इसमें हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित शिक्षण–प्रशिक्षण के स्वरूप, विधियाँ, प्रकार आदि की मीमांसा करने तथा उसमें निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता जानने हेतु सुनियोजित किया गया है। तत्व सम्बन्धित ग्रंथों, शोध तथा कल्याण जैसी धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन से श्रीमद्भगवद्गीता प्रणीत दर्शन व मानस के मूल्य शिक्षा दर्शन, शिक्षक–प्रशिक्षण के उद्देश्यों, वर्तमान शिक्षा पद्धति, स्वरूप, विधि, गुरू शिष्य सम्बन्ध के रूप में उभर कर सामने आता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति लक्ष्य विहीन होती जा रही है। आत्मशक्ति में कमी, गिरता मनोबल, मूल्य संहिता में गिरावट, सांस्कृतिक क्षरण, मूल्यों का क्षय आदि से भारतीय समाज व संस्कृति के अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया है। देश की संस्कृति की रक्षा करने का दायित्व शिक्षा पर होता है। शिक्षा द्वारा ही योग्य व सद्चरित्र नागरिकों का निर्माण होता है। किन्तु आज जहाँ तकनीकी युग में विज्ञान का बोलबाला है वहीं मानवीय गुणों का नितान्त अभाव हैं। वर्तमान शिक्षा दर्शनहीन, उद्देश्यहीन, बेरोजगारी और अनुशासनहीनता उत्पन्न करने वाली है। ऐसे में श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक मूल्य अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले है। श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार ज्ञान विचार व चिन्तन से अधिक अनुभव से सम्बन्ध रखता है। जिसे अन्य शब्दों में आत्मिक अनुभूति भी कहा जाता है। यह ग्रंथ अपनी शाश्वतता अपनी व्यावहारिकता के कारण ही आज तक अक्षुण्ण बनाये हुए है। श्रीमद्भगवद्गीता व मानस के आदर्शों व मूल्यों को विस्तृत आयाम प्राप्त है इसी से वह सभी युगों में सामाजिक, मानसिक, राजनैतिक व धार्मिक क्षेत्रों में अपना सर्वोच्च स्थान बनाए हुए है।

शिक्षा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करती है। व्यावहारिक और प्रासंगिक वहीं चीज रह सकती है जो व्यवहार में प्रचलित हो न कि सिद्धान्तों में। श्रीमद्भगवद्गीता ने संपूर्ण विश्व के समक्ष निष्काम कर्म व आदर्श मानव का भाव रखा। मनुष्य में मानवीयता का बीज विद्यमान है। उसे विकसित कर वटवृक्ष बनाना ही श्रीमद्भगवद्गीता का प्रयोजन है। श्रीमद्भगवद्गीता व श्रीरामचरितमानस ऐसे लोकप्रिय ग्रंथ है जिन्हें शताब्दियों से लोग नित्य प्रति श्रद्धा भाव से पढ़ते, सुनते और सुनाते आए हैं। श्रीमद्भगवद्गीता को भगवान की वाणी मानकर व मानस को आदर्श पारिवारिक ग्रंथ मानकर घर में रखना एक महान धार्मिक कार्य माना जाता है।

पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध से प्रभावित होकर भौतिकता की ओर उन्मुख होने में वर्तमान शिक्षा पद्धति अप्रत्यक्ष रूप से कहीं न कहीं अपनी भूमिका निभा रही है। परिणामस्वरूप हम अपने पुरातन मूल्यों को भूलते जा रहे है। सर्वत्र स्वार्थपरकता का बोलबाला होता जा रहा है। नैतिकता, परोपकार, अहिंसा, न्याय व आदर्श सामाजिक सम्बन्धों का जीवन में स्थान नगण्य होता जा रहा है। शिक्षा को केवल अर्थोपार्जन का साधन मात्र माना जाता है। अतएव व्यक्ति का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। श्रीमद्भगवद्गीता एवं मानस में सभी दार्शनिक, शैक्षिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तों का समाहार मिलता है।

''शत साहस्त्री संहिता'' के नाम से विख्यात महाभारत अनन्त ज्ञान राशि का अक्षय भण्डार है जिसके रचयिता महर्षि वेदव्यास माने जाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत का अंश है। महाभारत के भीष्म पर्व में स्थित 25 से 42वें अध्याय तक का अंश ''श्रीमद्भगवद्गीता'' नाम से प्रचलित है। श्रीमद्भगवद्गीता में 18 अध्याय तथा 700 श्लोक हैं। इसमें महाभारत युद्ध के समय भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये गये उपदेशों को निबद्ध किया गया है।

श्रीमद्भगवद्गीता में जगद्गुरू श्रीकृष्ण द्वारा शिष्य के प्रतीक रूप में अर्जुन को शिक्षा दी गई है। शिक्षा दर्शन की दृष्टि से श्रीमद्भगवद्गीता एक अमूल्य निधि है जिसमें सभी प्रचलित मान्यताओं तथा सिद्धान्तों का समाहार मिलता है। भारतीय शिक्षा दर्शन का सार यदि कहीं देखना हो तो

वह श्रीमद्भगवद्गीता में दिखाई देगा।

श्रीमद्भगवद्गीता एक ग्रंथ मात्र नहीं है अपितु हजारों वर्ष पूर्व कहे गए ऐसे उपदेश है जो मनुष्य को आज भी जीने की कला सिखाते हैं। जीवन के विभिन्न रास्तों पर हमारा मार्गदर्शन करते है। आज जब मनुष्य जीवन की परिस्थितियों से मजबूर हो जाता है तो श्रीमद्भगवद्गीता ही उसे सही मार्ग दिखाती है। सत्य का मार्ग चुनने की सलाह देती है। कठिनाईयों को हल करने का रास्ता दिखाकर हिम्मत प्रदान करती है। श्रीमद्भगवद्गीता में अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से धार्मिक सहिष्णुता की भावना को प्रस्तुत किया गया है, जो भारतीय संस्कृति की एक विशेषता है। इसमें सम्पूर्ण वेदों का सार निहित है। यह स्वयं भगवान श्रीकृष्ण के मुखार विन्द से निकली है।

श्रीमद्भगवद्गीता प्रत्यक्ष का अनुभव कराती है। सांसारिक कर्तव्यों का पालन, धर्म का पालन एवं कर्तव्य विमूढ़ स्थिति में सही कार्य करने की शिक्षा श्रीमद्भगवद्गीता से ही मिलती है। श्रीमद्भगवद्गीता जीवन के कई पहलुओं को स्पर्श ही नहीं करती उनका मार्गदर्शन भी करती है। कठिनाईयों से घिरे विद्यार्थियों को वर्तमान काल में श्रीकृष्ण जैसा मार्गदर्शक, शिक्षक, पथ प्रदर्शक मिलना अत्यन्त कठिन है। श्रीमद्भगवद्गीता हमें सिखाती है कि कर्म करने में आलस और फल की इच्छा का त्याग करना ही श्रेष्ठ है। सभी प्राणियों के प्रति प्रेम, दया तथा सहानुभूति रखने की शिक्षा श्रीमद्भगवद्गीता द्वारा मिलती है।

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार सभी प्राणियों में ईश्वर विद्यमान है अतः किसी भी प्राणी के प्रति द्वेष, ईर्ष्या व कपट का भाव रखना स्वयं ईश्वर के प्रति द्वेष रखना है। सुख और दुख में समान स्थिति में रहना, दृढ़ निश्चयी बनना, स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर बनने का गुण श्रीमद्भगवद्गीता में सिखाया गया है। श्रीमद्भगवद्गीता मानव जीवन के गूढ़ रहस्यात्मक तथ्यों का भी उद्घाटन करती है। श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार भाव, विवेक और कर्म की प्रधानता से ईश्वर की प्राप्ति होती है। अतः हमें सभी के साथ सद्व्यवहार करना चाहिए।

श्रीमद्भगवद्गीता सामाजिक, नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवन के गुण सिखाती है। ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्ति योग के साथ चारों आश्रमों में निहित कर्मो को करने का निर्देश देती है। शारीरिक, मानसिक एवं चारित्रिक विकास के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान करती है। काम, क्रोध और लोभ से बचने की शिक्षा देती है। श्रीमद्भगवद्गीता में संसार को 'धर्म क्षेत्र' व 'कर्म क्षेत्र' कहा गया है। जहाँ प्राणी अपनी सुरक्षा एवं सुस्थिति के लिए संघर्ष करता है। यह मानव जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति का साधन है। इसमें निहित उपदेशों और सीखों को व्यक्ति जीवन में उतारकर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण एक आदर्श शिक्षक है जो मार्ग दर्शन हेतु आए अर्जुन को कर्त्तव्य का पाठ पढ़ाते हैं अनेक परिस्थितियों में उचित–अनुचित, कर्म–अकर्म का ज्ञान देते है। अर्जुन भी शिक्षक के समक्ष–विनम्र भाव से कपट रहित होकर ज्ञान के लिए स्वयं को समर्पित कर देते है। श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार ज्ञान सभी में विद्यमान है गुरू सिर्फ उसे जाग्रत करता है। श्रीमद्भगवद्गीता में बुद्धि को तीन प्रकार से विभाजित करके सम्पूर्ण ज्ञान एवं शिक्षा को समाहित कर दिया गया है फिर चाहे वह आध्यात्मिक ज्ञान हो या सांसारिक ज्ञान।

वर्तमान में असत्य, चोरी, हिंसा, लूटपाट, डकैती, भ्रष्टाचार आदि दुर्गुण मानव जीवन के अंग बन गए है। ऐसे में बालकों को श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेश व शिक्षाओं को जीवन में उतारने की सख्त आवश्यकता हैं तभी विश्वबन्धुत्व एवं अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास होगा। यही श्रीमद्भगवद्गीता का मूल संदेश है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

**मूल स्रोत –**

1. महर्षि वेद व्यास कृत श्रीमद्भगवद्गीता (महाभारत), गीता प्रेस गोरखपुर

**शोध ग्रंथ –**

1. चारूल, एम.के. (1971), ''भगवद्गीता का शिक्षा दर्शन'' सेन्टर ऑफ एडवांस स्टडी इन ऐजुकेशन, एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा।

2. झा.एच. (1972), ''प्राचीन भारत में शिक्षा वाल्मीकि रामायण के विशेष संदर्भ में।'' पी.एच.डी., एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा

3. चतुर्वेदी, कुसुम (1981), ''श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक निहितार्थ'' . आगरा विश्वविद्यालय

4. पाण्डे, जे.बी. (1985), ''गीता और कुरान के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन।''

# डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक और शैक्षिक विचारों का अध्ययन

**Dr. Preeti Grover**
Associate Professor Faculty of Education
H.O.D.
Tantia University
Sri Ganganagar (Rajasthan)

**Mani Ram**
Research Scholar
Tantia University
Sri Ganganagar (Rajasthan)

**सारांश**

सार अगाध जान के भण्डार घोर अध्यवसायी, अदभुत प्रतिमा, सराहनीय निष्ठा, न्यायशीलता तथा स्पष्टवादिता के धनी डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, समाज सुधारक, संविधान शिल्पी और राजनीतिज थे। अम्बेडकर जी का सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज में सुधार के लिए समर्पित था। अस्पृर्थ्यो तथा दलितों के वे मसीहा थे। उन्होंने अपने विरुद्ध होने वाले अत्याचारों शोषण अन्याय तथा अपमान से संघर्ष करने के लिये शिक्षा रूपी शक्ति दी। उनके अनुसार सामाजिक प्रताड़ना राज्य द्वारा दिये जाने वाले दण्ड में भी कही अधिक दुःखदायी हैं। उन्होने न सिर्फ समाज में दलितों और अछूतों की स्थिति में सुधार के लिये कार्य किया अपितु श्रमिकों, किसानों, महिलाओं तथा समाज के प्रत्येक वर्ग के अधिकारों और उनकी शिक्षा के लिये कार्य किया। अम्बेडकर जी द्वारा किये गये कार्यो के कारण ही उन्हे भारत का अब्राहम लिंकन और मार्टिन लूथर कहा गया है तथा उन्हें बोधिसत्व की उपाधि से भी विभूषित किया गया।

**डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के शैक्षिक विचारः—**

डॉ. अम्बेडकर भारत माता के ऐसे प्रभावशाली मेध ावी एवं यशस्वी सपूत रहे है जिनकी अप्रतिम सेवाओं के लिये चिरकाल तक यह देश ऋणी रहेगा। तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के अनुसार अछूत परिवार में जन्म लेकर भी अध्ययन के लिये आवश्यक सुविधाओं से वंचित रहते हुये तथा बचपन से ही अपमान, तिरस्कार और घृणा के छूट पीते हुये एम.ए.. पीएच.डी., एम.एस.सी., डी.एस.सी. डी. लिट जैसी शिक्षा की उच्चतम उपाधियाँ प्राप्त करना उनके अदम्य साहस, लगन निष्ठा, धैर्य और शिक्षा के प्रति गहनतम लगाव महत्वपूर्ण उदाहरण है। अपने जीवन में उन्होने जा भी उपलब्धि प्राप्त की थी वह शिक्षा के बल पर ही प्राप्त की थी। इसलिये उन्होंने हा प्रकार के विकास के लिये शिक्षा को एक अमोध अस्त्र बताया तथा शिक्षा को मानव जीवन का अभिन्न अंग माना है।

डॉ० अम्बेडकर का मानना था कि शिक्षा ही एकता, बंधुता और देशप्रेम के विवेके को जन्म देती है। सम्यता और संस्ति का भवन शिक्षा के स्तम्भ पर ही बनता है। शिक्षा ही मनुष्य को मनुष्यत्व प्रदान करती है तथा शिक्षा के अभाव में मानव पशुतुल्य होता है। बाबा साहब ने कहा है कि शिक्षा वह शेरनी का दूध हैं जो पियेगा वही दहाडेगा और उन्होंने शिक्षा को सामाजिक समरसता व व्यक्ति में सात्विक गुर्णा का विकास करने वाली बताया है।

बाबा साहब प्रचलित शिक्षा तथा शिक्षण पद्धति को बदलना चाहते थे। उनका मानना था कि समरसता निर्माण करने वाली व लोकतान्त्रिक मूल्यों की भावना का विकास करने वाली शिक्षा व पाठ्यक्रम को ही पढ़ाया जाना चाहिये। उनका ये इदमत था कि समाज में ऐसी शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिये जिसकी समय के अनुकूल आवश्यकता है। वे मानते थे कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा में होना चाहिये, जिससे बालक में रुचि से पढ़ने का स्वभाव का निर्माण हो। उनका मानना था कि विधालय समाज का एक लघुरूप होता है तथा उन्होने अपने छात्र जीवन से ही यह महसूस किया था कि विद्यालय में रहकर सामूहिक अवधारणाओं को समाप्त किया जा सकता डॉ. अम्बेडकर जी भारत के शिल्पकार के साथ—साथ एक महान शिक्षक भी थे। उनका मानना था कि शिक्षा से ही जान का ताला खुलता है। वे शिक्षक को राष्ट्र निर्माता मानते थे। शिक्षक के सम्बन्ध में उन्होने कहा है कि

शिक्षक जान करने का सफर प्रदान की।

अम्बेडकर ने भारतीय आके कि संगठनका आधार सही चातुर्वर्ण व्यवस्था का विरोध किया तथा उसकी कटू आलोचना की। उनके अनुसार यह विभाजन बम के विभाजन पर आधारित होकर के विभाजन पर आधारित था। उनका मत था कि उन्नत भारत में है वैसा विश्व के किसी अन्य देश में नहीं है। डॉ अम्बेडकर ने आति व्यवस्था के बारे में यह स्पष्ट किया कि यह भारतीय समाज की एक बहुत बड़ी वि. ति है जो दु:खभाव समाज के लिये बहुत ही घातक है। उनके अनुसार जाति व्यवस्था ने केवल हिन्दू समाज को ही दुष्प्रभावी नहीं किया अपितु भारत के राजनीतिक आर्थिक तथा नैतिक जीवन में भी जहर घोल दिया। उन्होंने समाज में प्रचलित अस्पृश्यता को अन्यायपूर्वक मानते हुये उसका प्रबल विरोध किया। उनका दृष्टिकोण था कि यदि हिन्दू समाज का उत्थान करना है तो अस्पृश्यता का जड़ से निराकरण आवश्यक है। उन्होंने अस्पृश्यता निवारण के लिये सामाजिक राजनीतिक, आधिक नैतिक व शैक्षणिक आदि स्तरों पर रचनात्मक कार्यक्रम तथा संगठित अभियान का आग्रह किया। उनका मानना था कि हिन्दू समाज में स्वतंत्रता, समानता तथा न्याय पर आधारित व्यवस्था स्थापित करने के लिये कठोर नियमों में संशोधन आवश्यक है। वह जातीय बंधन को समाप्त करने के समर्थक थे। उन्होंने स्वयं अन्तर्जातीय विवाह तथा सहभोजी को प्रोत्साहित किया। वे दलितों में शिक्षा के प्रसार की महत्वपूर्ण मानते थे, वह उन्हे केवल औपचारिक शिक्षा देने की नहीं बल्कि अनौपचारिक शिक्षा की भी बात करते थे।

**डॉ. अम्बेडकर जी के सामाजिक विचार**

अम्बेडकर जी का सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज में सुधार के लिये समर्पित था। अस्पृश्यों व दलितों के वे मसीहा थे। उन्होंने सदियों से पद–दलित वर्ग को सम्मानपूर्वक जीने के लिये एक सुस्पष्ट मार्ग दिया। उनके अनुसार सामाजिक प्रताडना राज्यों द्वारा दिये जाने वाले दण्ड से भी कहीं अधिक दु:खदायी है उन्होने प्राचीन भारतीय राज्यों का विशद अध्ययन का यह बताया कि भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था, जाति प्रथा तथा अस्पृश्यता का प्रचलन समाज में कालान्तर में आई वि.तियों के कारण उत्पन्न हुयी है, न कि यह यहाँ के समाज में प्रारम्भ से ही विद्यमान थी। उन्होंने दलित वर्ग पर होने वाले अन्याय का विरोध ही नहीं किया अपितु उनमें आत्म–गौरव, अम्बेडकर जी का मानना था कि दलित वर्ग को अपने हितो की रक्षा के लिये व विधायी कार्यों को अपने पक्ष में प्रभावित करने के लिये राजनीति में पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिलना चाहिये। इसलिये उनका मानना था कि केन्द्रीय तथा प्रान्तीय विधानमण्डली में दलितों की भागीदारी हेतु पर्याप्त प्रतिनिधित्व के लिये कानून बनाया जाना चाहिये। वह दलितों को सरकारी सेवाओं में पर्याप्त प्रतिनिधित्व तथा आरक्षण की भी बात करते थे। उन्होंने भारतीय समाज में विद्यमान स्त्रियों की हीन दशा की कटु आलोचना की। उन्होंने हमेशा स्त्री–पुरुष समानता का व्यापक समर्थन किया। यही कारण है कि उन्होने स्वतंत्र भारत के प्रथम विधिमंत्री रहते हुये हिन्दू कोड बिल संसद में प्रस्तुत करते समय हिन्दु स्त्रियों के लिये न्याय सम्मत व्यवस्था बनाने के लिये विधेयक में व्यापक प्रावधान रखे।

**अम्बेडकर की शिक्षा का स्वरूप**

डॉ. अम्बेडकर दलितों के लिये शिक्षा हेतु चिन्तित थे, उसके साथ ही वह ऐसी शिक्षा पद्धति के पक्षधर थे, जिसमें समता निर्माण की शक्ति सृजित होती हों। सामाजिक और आर्थिक विकास शिक्षा पर निर्भर तो है ही, मनुष्य के नैतिक स्तर का बहुत कुछ ही निर्धारण करती है। सभ्यता, संस्.ति और शासनतंत्र का निर्माण बहुत कुछ उस देश की शिक्षा ही करती है।

दलितों की दुर्दशा के लिये बाबा साहब शिक्षा व्यवस्था को ही दोषी मानते थे, जिसने दलितों में कभी आत्म सम्मान की भावना जागृत नहीं होने दी। शिक्षा जहां अधिकार, कर्तव्य, संगठन और आत्म सम्मान के बोध के लिये आवश्यक है, वहीं यह भी आवश्यक है कि शिक्षा में एकरूपता और सबके लिये अनिवार्यता हो। बाबा साहब मानते थे कि शिक्षा की अनिवार्यता से दलित नौकरियों में जायेंगे और नौकरियों से उनका आर्थिक स्तर ऊँचा होगा। स्तर बढ़ने से अस्पृश्यता और भेदभाव समाप्त हो जायेगा, किन्तु उनका स्पष्ट मत था कि शिक्षा द्वारा वर्तमान .ष्टिकोण में परिवर्तन तब तक नहीं होगा, जब तक शिक्षा में मानवीय गुणों को आधार नहीं बनाया जाता। अम्बेडकर चाहते थे कि नैतिक और सामाजिक स्तर उठाने वाले गुणों से युक्त शिक्षा होनी चाहिए। वे शील और सदाचार पर आधारित शिक्षा के पक्षधर थे।

**स्वामी केशवानन्द का वंश**

स्वामी केशवानन्द का बचपन का नाम बीरमा था। बीरमा सीकर के ग्राम मंगलूना में ढाका जाट जाति में ठाकरसी तथा सारां के घर पैदा हुए। बीरमा के पूर्वज मालू जी ढ़ाका ने बैशाख सुदी पंचमी संवत् 1451 वार मंगलवार को मंगलाणा गांव की नींव रखी। ढाका जाटों के बही–भाटों की बही के अनुसार फतेखां नवाब फतेहपुर की बार में मालू जी द्वारा छड़ी रोपी गई (गांव की नींव डाली गई) स्वामी केशवानन्द अपने बारें में कम ही बातें करना पसंद करते थे। उनके बाल्यकाल के संबंध में जानकारी उनके समकालीन सहयोगियों द्वारा विभिन्न प्रसंगों पर उनसे विचार–विमर्श के दौरान घुमा–फिरा कर किये गये प्रश्नों–प्रतिप्रश्नों द्वारा प्राप्त की गई। अथवा स्वामी जी द्वारा स्वःलिखित संस्मरणों में उपलब्ध है। बीरमा का जन्म मालू जी ढ़ाका के वंश में ही लगभग 12 पीढ़ी बाद हुआ। बहियों के अनुसार मालू जी के वंशक्रम में ओनाड़जी बही भाट की बही में बीरमा जी का जन्म संवत् 1945 अंकित है।" बीरमा की उपरोक्त जन्म तिथि के हिसाब से उनका जन्म सन् 1888 होना चाहिये जो कि सही नहीं, क्योंकि स्वयं स्वामी केशवानन्द प्रदत् साक्ष्यों से यह तिथि संवत् 1940 अर्थात 1883 ई. होनी चाहिये ना कि संवत् 1945 अर्थात 1888 ई.। स्वामी केशवानन्द ने प्रसिद्ध छपन्ने अकाल के समय अपनी उम्र 16 वर्ष बताई है।" भीषण छप्पना जिसकी स्मृतियां यहां के लोगों को डराती रही। सम्वत् 1956 के भीषण अकाल से अभिप्रेत है और इस आधार पर स्वामी केशवानन्द की छप्पने में 16 वर्ष की उम्र उनका जन्म संवत् 1940 या 1883ई. ठहराती है। बीरमा का जन्म संवत् 1940 के पोष माह में उनके समकालीन सहयोगियों व जीवनी लेखकों द्वारा निरूपित किया गया है। केशवानन्द की प्रामाणिक जन्म तिथि सन् 1883 ही मानी गई है। संवत् 1956 तक बीरमा की माता सारां भी जीवित थी। अतः स्वामी केशवानन्द का यह कहना की छप्पने में वे 16 वर्ष के थे सम्भवतः उनकी माता ने ही उन्हें पारम्परिक गणना के आधार पर यह जानकारी दी हो। बीरमा के जन्म स्थल का नाम मंगलूणा सम्भवतः मगंलवार के दिन की स्थापना के कारण ही पड़ा होगा। प्रसिद्ध सालासार धाम हनुमान उपासकों का तीर्थ है और जाट जाति परम्परागत तौर पर हनुमान की भक्त रही है। सम्भव है बीरमा के पूर्वज मालू जी ने अपने इष्टदेव हनुमान के वार मंगलवार के दिन ही अपने गांव की नीवं डाली होगी। स्वामी केशवानन्द के बचपन का नाम बीरमा ब्रह्म का ही स्थानीय सम्बोधन है। इसी प्रकार ठाकरसी का अभिप्राय श्रीकृष्ण से (श्रीकृष्ण का दूसरा नाम ठाकुर जी) व सारां का अर्थ सरस्वती से है। निश्चिय ही बीरमा एक ऐसे परिवार में उत्पन्न हुआ जिसकी पृष्ठभूमि धार्मिक थी।"

**सामाजिक परिवेश**

स्वामी केशवानन्द के पूर्वज यद्यपि ग्राम संस्थापक की भूमिका में थे। लेकिन उनका परिवार गांव का एक सामान्य (.षक) परिवार ही था। स्वामी केशवानन्द (बीरमा) का जन्म एक .षक पृष्ठभूमि वाले धार्मिक जाट परिवार में हुआ था। सामाजिक–पृष्ठभूमि या परिवेश वह क्षेत्र है जिसमें पलकर व्यक्ति का भविष्य निर्मित होता है। वह सामाजिक परिवेश ही है जो बाल्यकाल व युवावस्था में नींव के पत्थर के रूप में व्यक्ति जीवन में स्थापित होता है और भविष्य में व्यक्ति का व्यक्तित्व रूपी भवन उस पर बनता है तथा स्थायित्व एवं गतिशीलता धारण करता है। किसी व्यक्ति के तौर–तरीके विचार और प्रवृतियां उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुरूप ही होते हैं।" मंगलूणा एक बड़ा गांव था जो जयपुर तथा बीकानेर की सीमा पर शेखावाटी क्षेत्र में स्थित है। मंगलूणा में ब्राह्मण, वैश्य, जाट, राजपूत, हरिजन व कायमखानी आदि विभिन्न जातियों के लोग थे।

**संदर्भ सूची**

1. स्वामी केशवानन्द पेपरस् ।

2. चतुर्वेदी, बनारसीदास एवम् जघीना, ठा. देशराजय वही, संस्मरण–खण्ड, पृ. 89, स्वामी केशवानन्द पेपरस ।

3. शर्मा, गोविन्दय वहीय पृ. 38

4. चौ. कुम्भाराम आर्य पेपरस। स्मारिकाः सितम्बर 13, 1984

5. सारण, डी.सी.य वहीय पृ. 77

6. जुनेजा, एम.एम., वहीय पृ. 75 एवम् 40

7. केशवानन्दय मरूभूमि पृ. 48–54

8. साक्षात्कारय तूर, स. शेर सिंह।

9. साक्षात्कारय डॉ. जाखड़, बलराम, ज्याणी, रामनारायण।

10. स्वामी केशवानन्द पेपरस।

11. वही।

12. शर्मा, गोविन्दय वहीय पृ. 20

13. जुनेजा, एम.एम.य वहीय पृ. 77

14. साक्षात्कारय ज्याणी, रामनारायण।

# बहुविषयक उपागम की ITEP में भूमिका

**Dr. Gulabdhar Dwivedi**
Guide
Arawali T.T. College, Banswara

**Seema Sharma**
Ph. D. Scholar (Edu.)
GGTU Banswara

**सारांश**

देश के समग्र विकास की अवधारणा तभी साकार होगी जब शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य प्राप्त हों अर्थात शिक्षा द्वारा चहुंमुखी विकास संभव हो सके। शिक्षा वह साधन है जो मानव जीवन को सार्थक, संपन्न एवं समृद्द बनाने में सहायता करें स शिक्षा आधुनिक नहीं वरन आदिकाल से चली आ रही एक प्रक्रिया है। समय एवं परिस्थिति अनुसार इसका स्वरूप परिवर्तित होता रहता हैं। सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अंतर्गत शिक्षा के बहुविषयक उपागम को स्वीकृति प्रदान करते हुए एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को प्रारंभ किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य समग्र और बहुविषयक दृष्टिकोण के माध्यम से भारतीय शिक्षा प्रणाली में विशाल परिवर्तन लाना है स बहुविषयक उपागम "जो विभिन्न विषयों के उपागम से एक अवधारणा को परिभाषित करने की अनुमति देता है। "NEP20 के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हैं। NEP20 के अनुसार ही बी.एड. पाठ्यक्रम की अवधि 4 वर्ष कर दी गई है स इसमें इच्छुक विद्यार्थी 12वी पास करने के पश्चात् ही प्रवेश परीक्षा के माध्यम से प्रवेश ले सकेंगा। यह पाठ्यक्रम ITEP के रूप में संचालित होगा।

ITEP एक दोहरी प्रमुख समग्र स्नातक डिग्री है जिसमें शिक्षण हेतु इच्छुक छात्र 12वी उत्तीर्ण करके B.A.,B.Ed., B.SC., B.Ed. या B.Com.B.Ed पाठ्यक्रम में प्रवेश लेंगे। NTA द्वारा सामान्य प्रवेश परीक्षा के माध्यम से प्रवेश ले सकेंगे।

**मूल शब्द** :– NEP2020, बहुविषयक उपागम, एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP)।

**परिचय**

NEP2020 के शुभारम्भ से भारतीय उच्च शिक्षा में एक नए युग की शुरुआत हुई है जो नए भविष्य निर्माण में सहायक है। यह नीति एक उत्कृष्ट दूरदृष्टि का परिणाम है और एक प्रेरणादायक दस्तावेज है जो भारतीय उच्च शिक्षा में मूलभूत परिवर्तन का आगाज़ करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को 28 जुलाई 2020 को भारत के केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया। इस नीति द्वारा एक सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र बनाने हेतु बहुत प्रयास किये जिससे प्रत्येक छात्र को फलने–फूलने और अलग बनाने के लिए बहु–विषयक शिक्षा प्रदान की जा सके। विषयों को चुनने का लचीलापन जिसमें विज्ञान के साथ कला–ललित कला, खेल, मानविकी इत्यादि विषय चुनने की एक विस्तृत श्रृंखला छात्रों को प्रदान की जाएगी। भारतीयों के सोचने, सीखने एवं ज्ञान प्राप्ति के तरीके उदार एवं बहु–विषयक रहे है स स बहुविषयक शिक्षा वह अभिनव माध्यम है जिसके द्वारा छात्र सभी विषयों को एक साथ सीख सकते है।

NEP2020 पांच स्तंभों पर केन्द्रित है :– वहनीयता, अभिगम्यता, गुणवत्ता, न्यायपरकता और जवाबदेही। ये सभी अधिगम को सुदृढ़ एवं सुगम बनाने में सहायक है।

**NEP2020 के प्रमुख उद्देश्य :–**

– गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करना।
– सीखने के अवसर उपलब्ध कराना।
– सतत विकास लक्ष्य की ओर अग्रसर होना।

इस प्रकार NEP2020 बहुविषयकता, डिजिटल साक्षरता, लिखित संचार, समस्या समाधान, तार्किक तर्क एवं व्यावसायिक प्रदर्शन पर अत्यधिक प्रभाव डालती है।

**NEP2020 का विज़न**

इस नीति अनुसार शैक्षिक प्रणाली का विज़न भारतीय मूल्यों से विकसित प्रणाली है जो सभी को उच्चतर गुणवत्ता

उपलब्ध कराकर भारत को जीवंत एवं न्यायसंगत समाज में परिवर्तित करेगी स नीति के विज़न के अनुसार छात्र व्यवहार कार्यो के साथ–साथ ज्ञान, कौशल, मूल्यों और वैश्विक कल्याण हेतु प्रतिबद्व होना चाहिए।

**NEP2020 (मुख्य बिंदु)**

1. उच्च शिक्षा की दृष्टि से :– बहुविषयक संस्थान शुरू करने की नीति कला, मानविकी जैसे सभी क्षेत्रो में नये सिरे से ध्यान केन्द्रित करेगी।

2. इसमें (STEM) साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मेडिसिन के साथ लिबरल आट्र्स, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान पर जोर देने के साथ एक उदार, बहु विषयक और अनुशासनात्मक शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की परिकल्पना की गई है।

3. NCTE द्वारा वर्ष 2022 तक शिक्षकों हेतु राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक NPST का विकास किया जाएगा।

4. वर्ष 2030 तक अध्यापन हेतु न्यूनतम डिग्री योग्यता 4 वर्षीय एकीकृत B.Ed. डिग्री को अनिवार्य किया जाएगा स

5. ITEP कार्यक्रम का उद्देश्य NEP2020 की नई स्कूल संरचना के अनुसार शिक्षको को मूलभूत, प्रारंभिक, मध्य चरणों के लिए तैयार करना है स पाठ्यक्रम द्वारा छात्रों को भारतीय मूल्यों, भाषा, ज्ञान, लोकाचार, परम्परागत शिक्षा एवं शिक्षाशास्त्र में नवीन प्रगति की जानकारी होगी।

**विशेषताएँ :–**

1. विद्यार्थी प्राकृतिक पर्यावरण एवं सामाजिक पर्यावरण का एक साथ अध्ययन करते है।

2. उपागम में सम्मिलित विषय विशिष्ट एवं प्रभावशाली होते है।

3. यह छात्रो को व्यावसायिक ज्ञान प्रदान करके आत्मनिर्भर बनाने में सहायक है।

4. छात्रो की सामूहिक एवं सहयोगात्मक प्रवृति को बढ़ावा मिलता है।

5. एक समय में एक से अधिक विषयों का ज्ञान सुलभ हो जाता है।

6. छात्रों का बहुविषयक दृष्टिकोण विकसित होता है जो छात्रों को क्रियाशील एवं, सक्रिय बनाता है।

**एकीकृत शिक्षा शिक्षा कार्यक्रम (ITEP)**

जब देश नए आयामों को छू रहा है तब यह आवश्यक हो जाता है कि अध्यापक शिक्षा में सकारात्मक बदलाव हो जिससे नए भारत का निर्माण हो। स्वतंत्रता पश्चात् ही शिक्षा आयोग और समितियां ने समय समय पर शिक्षा में नए ढांचे के निर्माण के सुझाव दिया था जो आज भी अनवरत जारी है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे अध्यापक शिक्षा के लिए भी सुझाव दिए गए थे जिनके आधार पर राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) ने 4 वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) पाठ्यक्रम की संरचना की जो अब देश की शिक्षा व्यवस्था का अंग बनने जा रहा हैं।

**ITEP परिचय**

शिक्षा मंत्रालय ने 4 वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) शुरू करने की अधिसूचना जारी की है, जो एक दोहरे प्रमुख समग्र स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम होगा। कार्यक्रम को औपचारिक रूप से मंत्रालय द्वारा अधिसूचित किया गया है। यह कार्यक्रम देश भर के 50 चयनित बहुविषयक संस्थानों में पायलट मोड़ में शैक्षणिक सत्र 2023–24 से छात्रो को पेश किया गया हैं।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) में बीएड कोर्स की जगह दो नए कोर्स लांच किये है। इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (ITEP) कोर्स चार साल का होगा। 8 सेमेस्टर होगें, जिसमे फील्ड बेस्ट एक्सपीरियंस, टीचिंग प्रैक्टिस और इंटर्नशिप भी शामिल है जैसे कि अभी तक प्री प्राइमरी से प्राइमरी स्तर तक की कक्षाओ में पढ़ाने के लिए डीएलएड जरूरी था और अपर प्राइमरी से सेकंडरी स्तर तक के स्कूलों से पढ़ने के लिए बीएड अनिवार्य था अब सभी को हटा कर NCTE चार वर्षीय इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (ITEP) शुरू करने जा रहा है इसके बाद प्राइमरी या फिर अपर प्राइमरी और इंटरमीडिएट में पढाने के लिए अभ्यर्थियों को अब बीटीसी, डीएलएड या फिर बीएड का कोर्स नहीं करना पड़ेगा।

यानि कोई भी स्टूडेंट जो टीचर लगाना चाहता है वह चार साल का इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम पूरा कर ले उसके बाद टीईटी, NCET या स्टेट लेवल के अन्य टेस्ट क्लियर करके टीचर बन सकते है। यह दो कोर्स है एक ITEP प्री प्राइमरी स्तर तक पढ़ाने के लिए होगा, जबकि दूसरा ITEP कोर्स अपर प्राइमरी से सेकंडरी स्तर तक पढाने के लिए होगा लेकिन दोनों की अवधि 4 साल है।

**सम्बंधित तथ्य –**

– अक्टूबर, 2021 में शिक्षा मंत्रालय ने 4 वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यकृम (ITEP) को अधिसूचित किया है,

जो एक दोहरी प्रमुख समग्र स्नातक डिग्री है।

– इस कार्यक्रम के तहत बी.ए.बी.एड., बी.एससी.बी.एड. और बी.कॉम.बी. एड. पाठ्यक्रम पेश किया गया है।

– यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय नीति, 2020 के अंतर्गत अध्यापक शिक्षा से सम्बंधित प्रमुख प्रावधानों में से एक है।

– राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP),2020 के अनुसार, वर्ष 2030 से शिक्षको की भर्ती केवल ITEP के माध्यम से की जाएगी।

– इसे प्रारम्भ में देशभर के लगभग 50 चयनित बहुविषयक संस्थानों में पायलट मोड में पेश किया जाएगा।

– शिक्षा मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) ने इस पाठ्यक्रम को इस तरह से तैयार किया है कि यह एक छात्र–शिक्षक को शिक्षा में डिग्री के साथ–साथ इतिहास, गणित, विज्ञान, कला, अर्थशास्त्र या वाणिज्य जैसे विशेषकृत विषयों में डिग्री प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

– ITEP न केवल अत्याधुनिक अध्यापन कला प्रदान करेगा, अपितु प्रारंभिक बाल–देखभाल और शिक्षा, (ECCE), मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान (FLN) समावेशी शिक्षा भारत तथा इसके मूल्यों / लोकाचार / कलाओ / परम्पराओं व अन्य चीजों की समझ विकसित करने में आधार तैयार करने का काम करेगा।

– ITEP उन सभी छात्रो के लिए उपलब्ध होगा, जो माध्यमिक शिक्षा के बाद शिक्षण को एक पेशे के रूप में लेना चाहते है।

– चार वर्षीय ITEP की शुरुआत शैक्षणिक सत्र 2022–23 से होगी।

– राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (NTA) द्वारा राष्ट्रीय सामान्य प्रवेश परीक्षा के माध्यम से इस पाठ्यक्रम में प्रवेश होगा स

**बहुविषयक उपागम की भूमिका**

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बहुविषयक उपागम बहुत अधिक कारगर साबित होगा स यह निम्न बिन्दुओ से स्पष्ट किया जा सकता है –

**1. उदार कला का विकास** – विभिन्न कलाओ एवं विषयों का ज्ञान उदार कला कहलाता है। रचनात्मक मानव प्रयासों की सभी शाखाओ को भारतीय कला कहा जाता है और इन कलाओ का समग्र विकास बहुविषयक उपागम द्वारा संभव है।

**2. सकारात्मक अधिगम** – विभिन्न विषयों को एकीकृत करने के कारण स्नातक शिक्षा में सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए है जिसमे रचनात्मकता, नवाचार, सोच क्षमता, समस्या समाधान क्षमता, टीम वर्क, संचार कौशल, नैतिक जागरूकता के साथ–साथ अनुसन्धान में भी सुधार एवं बढोतरी हुई है।

**3. क्षमताओं का एकीकृत विकास** – समग्र एवं बहु आयामी शिक्षा मानव सौन्दर्य, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक एवं नैतिक सभी क्षमताओं को एकीकृत रूप से विकसित करने में सहायक है।

**4. आजीवन अधिगम में सहायक** – कल्पनाशील एवं लचीली पाठ्यक्रम संरचनाए अध्ययन हेतु विषयों के रचनात्मक संयोजनों को सक्षम करेगी और वर्तमान में प्रचलित कठोर सीमाओं को हटाकर जीवनभर सीखने की नयी सम्भावनाये जागृत होगी।

**5. बहुविषयक** – इसमें विश्वविद्यालय उच्च गुणवत्ता वाले समग्र ज्ञान उपलब्ध करायेंगे।

6. 21वीं सदी एवं चतुर्थ औद्योगिक क्रांति में भारत की नेतृत्व क्षमता को मजबूत बनाने में सहायक है।

7. सीखने के व्यावहारिक पक्ष को मजबूती मिलने के कारण लाभार्थी रोजगार क्षमता में सुधार कर सकेगा।

8. इस उपागम को ध्यान में रखकर MERU ( बहुविषयक शिक्षा और अनुसन्धान विश्वविद्यालय ) स्थापित किये जायेंगे। जो शिक्षा के उच्चतम मानको को निर्धारित करने में सहायक है।

9. यह उपागम जीवंत अनुसन्धान और नवाचार संस्कृति को सक्षम करने एवं समर्थन करने हेतु भी सहायक है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बहुविषयक उपागम एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। साथ ही बहुविकासात्मक एवं बहु प्रतिभाशाली समाज के निर्माण में सहायक है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

NCTE Regulation 2014, 2019
नई शिक्षा नीति, 2020
hi-m-wikipedia-org
pib-gov-in
www-linehindustan-com
www-Bhaskarhindi-com
www-edristi-in
ncte-gov-in
hi-quora-com
dsel-edu-gov-in

# पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति एवं क्रियान्वयन का अध्ययन

**डॉ. पुनीत कुमार पंड्या**
(सह आचार्य)
(शोध मार्गदर्शक)
जनार्दन राय नागर राजस्थान
विद्यापीठ, उदयपुर

**शशिकला मिश्रा**
(शोधार्थी)
जनार्दन राय नागर राजस्थान
विद्यापीठ, उदयपुर

**सारांश** –

प्रस्तुत अध्ययन में पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति एवं क्रियान्वयन का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन न्यादर्श के रूप में 100 जोधपुर शहरी ब्लॉक तथा 100 लूणी ग्रामीण ब्लॉक के कक्षा 8 के विद्यार्थियों को लिया गया। ''पर्यावरण स्थिरता वस्तुस्थिति एवं क्रियान्वयन प्रमापनी'' के उपयोग से आंकडों को सरकारी विद्यालयों से एकत्रित किया तथा सांख्यिकीय विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण के द्वारा किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति एवं क्रियान्वयन में अन्तर पाया जाता है।

**मुख्य शब्द** – पर्यावरण स्थिरता वस्तुस्थिति, क्रियान्वयन।

**प्रस्तावना** –

विश्व स्तर पर तीव्र गति से जनवृद्धि, नगरीकरण, औद्योगीकरण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, कचरे का ढ़ेर, शौरगुल, मौसम परिवर्तन एवं जलवायु परिवर्तन इत्यादि विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न हो गयी है। जिनके कारण प्रकृति एवं पर्यावरणीय तत्त्व पूरी तरह से दूषित हो गये है। यह पर्यावरण असन्तुलन आज के जन–समुदाय के लिये एक ज्वलंत समस्या है, जिसका जनक स्वयं मानव ही है। मनुष्य अपने भौतिक संसाधनों के लिए प्रकृति का अनियमित शोषण कर रहा है, जिसका पर्यावरण पारिस्थितिकीय पर नकारात्मक प्रभाव दिखायी दे रहा है साथ ही नयी–नयी समस्यायें, घातक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही है, अतः पर्यावरण संरक्षव हेतु जन चेतना उत्पन्न करना नितांत आवश्यक हो गया है। समय–समय पर केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारे पर्यावरण संरक्षण हेतु कार्यक्रम, योजनायें, एवं अभियान संचालित करती रही है। इन योजनाओं में ''पर्यावरण स्थिरता'' स्टॉर योजना एक महत्त्वपूर्ण पहल है, जो राजस्थान राज्य सरकार द्वारा समग्र शिक्षा अभियान में संचालित की जा रही है।

पर्यावरण स्थिरता स्टॉर योजना सत्र 2022–23 में प्रारम्भ की गयी। यह योजना राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में चलायी गयी, जिसके लिये सरकार ने सरकारी विद्यालयों में ''ईको क्लब'' का निर्माण किया। वर्तमान में ईको क्लब द्वारा पर्यावरण स्थिरता कार्यक्रम में अनेक गतिविधियां विद्यालयों में करवायी जा रही है। विद्यार्थियों को स्थानीय वातावरण का ज्ञान, जैवविविधता की जानकारी, जलवायु परिवर्तन के कारण, कचरा प्रबंधन, पेयजल प्रबंधन, पर्यावरण सजगता, पर्यावरण स्वच्छता एवं संरक्षण के बारे में समझाया जा रहा हैं तथा अनेक गतिविधियाँ संचालित की जा रही है। इन सब गतिविधियों से विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण की नव–चोतना उत्पन्न हो सकेगी अतः पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति एवं क्रियान्वयन का अध्ययन करना आवश्यक है।

**शोध के उद्देश्य**

1. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति का अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरण स्थिरता योजना के क्रियान्वयन का अध्ययन करना।

**शोध की परिकल्पना**

1. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
2. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरण स्थिरता योजना के क्रियान्वयन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

**शोध प्रविधि –**

प्रस्तुत अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

**जनसंख्या –**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जोधपुर जिले के जोधपुर शहरी ब्लॉक एवं लूणी ग्रामीण ब्लॉक के कक्षा–8 के विद्यार्थियों को जनसंख्या में रखा गया है।

**न्यादर्श**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जोधपुर शहरी ब्लॉक एवं लूणी ग्रामीण ब्लॉक के कक्षा–8 के 200 विद्यार्थियों को साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया है।

**उपकरण**

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरण ''पर्यावरण स्थिरता वस्तुस्थिति एवं क्रियान्वयन प्रमापनी'' का प्रयोग किया गया है। जिसका विश्वसनीयता गुणांक 0.78 प्राप्त हुआ है।

**शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी** – प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकीय की निम्न विधियों का प्रयोग किया गया है

1. मध्यमान 2. मानक विचलन 3. टी परीक्षण

**आंकडो का विश्लेषण एवं व्याख्या –**

**परिकल्पना – 1 शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति में सार्थक अंतर नही पाया जाता है ।**

**तालिका संख्या–1**

**शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति का अन्तर**

| समूह | विद्यार्थियों की संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मान | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|
| शहरी | 100 | 81.50 | 3.24 | 2.60 | अस्वीकृत |
| ग्रामीण | 100 | 83.05 | 5.01 | | |

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जोधपुर शहरी ब्लॉक के विद्यार्थियों का पर्यावरण स्थिरता वस्तुस्थिति का इस आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अतः कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरण स्थिरता योजना की वस्तुस्थिति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

**परिकल्पना–2 शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरण स्थिरता योजना के क्रियान्वयन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।**

**तालिका संख्या –2**

**शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरण स्थिरता योजना के क्रियान्वयन का अन्तर**

| समूह | विद्यार्थियों की संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मान | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|
| शहरी | 100 | 132.98 | 3.53 | 10.87 | अस्वीकृत |
| ग्रामीण | 100 | 142.77 | 8.29 | | |

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जोधपुर शहरी ब्लॉक के विद्यार्थियों का पर्यावरण स्थिरता के क्रियान्वयन का इस आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की है जाती है। अतः कहा जा सकता है शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरण स्थिरता योजना के क्रियान्वयन में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

**सुझाव**

वर्तमान में बदलते पर्यावरण परिवेश को देखते हुए विद्यालयों में पर्यावरण स्थिरता के कार्यक्रम चलाये जा रहे जिनमें विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की गतिविधियों को करवाया जाता है, जिससे वे अपने पर्यावरण का संरक्षण कर उसका संवर्धन सीख सकें। पर्यावरण स्थिरता योजना द्वारा विद्यार्थी स्थानीय वातावरण का ज्ञान, जलवायु परिवर्तन के कारणों, कचरे का निस्तारण, पेयजल का संरक्षण एवं पर्यावरण के प्रति सजगता को शीघ्रता से सीखते है अतः पर्यावरण जागरूकता हेतु इस प्रकार की योजनाओं को निरन्तर चलाया जाना चाहिए।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –**


1. समग्र शिक्षा, 2023, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, जयपुर जुलाई.
2. सिंह, भोपाल, 2004, पर्यावरण शिक्षा लायल बुक डिपो, मेरठ.
3. सचदेवा, एन. कुमार, 2005 ''बदलते परिवेश में पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता'' परिप्रेक्ष्य न्यूपा, नयी दिल्ली, वर्ष 12, अंक 3 दिसम्बर.
4. शर्मा, डॉ. आर.ए., 2006, शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ.
5. मिश्रा, अरुण, 2013, शोध प्रविधि, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली, ISBN: 978–93–82206– 92–1, प्रथम संस्करण.

# व्यक्ति विकास में साहित्य व कलाओं की भूमिका

**डॉ. दीपक मीणा**
सहायक आचार्य
एल.बी.एस. कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, जयपुर

व्यक्तित्व को शब्द के अर्थ रूप में यदि देखा जाए तो व्यक्तित्व शब्द पर्सनैलिटी नामक अंग्रेजी शब्द का हिंदी रूपांतरण है, जिसकी उत्पत्ति लेटिन भाषा के परसोंना शब्द से हुई है। जिसका अर्थ वह 'वेशभूषा' है जिसे नाटक करते समय अभिनेता पहनते हैं और रंगमंच पर उसी पात्र के अनुसार अभिनय करता है। अतः उस समय उस अभिनेता का व्यक्तित्व उस चरित्र या पात्र के अनुरूप हो जाता है। इस तरह से यदि देखा जाए तो व्यक्तित्व का शाब्दिक अर्थ ला से जुड़ा हुआ है और व्यक्ति कला के माध्यम से जिस रचना की प्रस्तुति देता है, वह रचना भी साहित्य सर्जनात्मक का ही एक रूप है। इस प्रकार व्यक्तित्व, कला और साहित्य का एक त्रिवेणी संगम ही संपूर्ण सृजनात्मकता का मूर्त हैं और रंगमंच पर उसी पात्र के अनुसार अभिनय करता है। अतः उस समय उस अभिनेता का व्यक्तित्व उस चरित्र या पात्र के अनुरूप हो जाता है। इस तरह से यदि देखा जाए तो व्यक्तित्व का शाब्दिक अर्थ ला से जुड़ा हुआ है और व्यक्ति कला के माध्यम से जिस रचना की प्रस्तुति देता है, वह रचना भी साहित्य सर्जनात्मक का ही एक रूप है। इस प्रकार व्यक्तित्व, कला और साहित्य का एक त्रिवेणी संगम ही संपूर्ण सृजनात्मकता का मूर्त रूप होता है। साहित्य को यदि सूक्ष्म रूप से हम देख तो पाऐंगे कि विचार, भाव, ज्ञान का प्रतिबंध स्वरूप किंतु व्यक्तित्व अर्थ के सहित जीवन के विभिन्न पक्षों अनुभव धारणाओं का निचोड़ होता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व में भी हक जो व्यवहारिक तथा क्रिया रूपक गतिविधियां देखते हैं, उनका संबंध व्यक्ति के साहित्यिक पक्ष से होता है। व्यक्ति का संबंध, उसके आसपास के वातावरण, शिक्षा, परिवारजन मित्र, समूह आदि के साथ प्रत्यक्ष रूप से होता है। किंतु उसकी वयवहारिक क्षमता व योग्यता उसका वाक चातुर्य परिस्थियों के प्रति उनका दृष्टिकोण आदि। उसके शब्द बोध, उसके मानसिक शब्द व वैचारिक संग्रह आदि पर निर्भर होता है जिसका संबंध साहित्य से होता है। व्यक्ति का व्यक्तित्व वास्तव में दूसरों को प्रभावित करने के उद्देश्य से किए जाने वाले व्यवहार से होता है। अतः व्यक्तित्व को आकर्षित प्रेरणास्पद बनाने के लिए उसका सौंदर्य बोध से जुड़ा होना अति आवश्यक है। अतः और सौंदर्य बोध कला के बिना संभव नहीं है। कला व्यक्तित्व को प्रभावी, आमायुक्त व व्यवहार परक बनाती है। कला के विभिन्न पक्ष यथा क्रियात्मक, सौंदर्यत्मक, भावात्मक, रचनात्मक आदि के समावहन के द्वारा व्यक्तित्व का गठन आकर्षक व सुद्दढ होता है। व्यक्तित्व में इसी साहित्यक व कलात्मक भाव के संगम में विभिनन प्रकार की सकारात्मक वृतियों का संचरण निर्बाध रूप से होता रहता है तथा व्यक्ति निरंतर विकास के पथ पर आगे की ओर बढ़ता रहता है। साहित्य व कला परस्पर अटूट संबंध है। रविंद्र नाथ टैगोर ने अपने साहित्य में काव्य व संगीत के द्वारा कला को समाहित किया है जिसका प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर स्पष्ट दिखाई देता है। कपिल मुनि ने सांख्य दर्शन में ललित कला को साहित्य क्षेत्र के गुण, अलंकार, रस, ध्वनि आदि के प्रति रूपों में स्वीकृत किया है और यही संघ के दर्शन भारत वर्ष के प्रसिद्ध विभुतियों के लिए प्रेरणा स्रोत है साहित्य व कला के समागम का एक अन्य उदाहरण हिंदी साहित्य में छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद और पंथ के प्रकृति और नारी सौंदर्य के विभिन्न क्लास में प्रति मानव के प्रस्तुतीकरण में दिखाई देता है जिसका परिणाम यह है कि छायावादी कवियों में इन दोनों का अलग स्थान है जिससे स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व के विकास में साहित्य और कला एक महत्वपूर्ण आधार है।

व्यक्तित्व के बहुआयामी पक्ष को पूर्ण रूप से जानने और उसका सृजनात्मक अभिलेखन करने के लिए सर्वप्रथम चेतना का अध्ययन करना अति आवश्यक है। चेतना ना केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक आवश्यक पक्ष है अपितु यह एक स्वरूप है जो व्यक्ति के मनोविश्लेषणात्मक भाग को प्रदर्शित करती है। चेतना साहित्य सृजनात्मकता की जननी होती है। इसके अभाव में व्यक्ति सृजनशीलता की कल्पना भी नहीं कर सकता । मनोविज्ञानियों ने चेतना की इसी सृजनात्मकता को व्यवहारिक स्वरूप में कला का उदगम माना है। प्रकृति द्वारा प्राप्त भौतिक सामग्री से समाज की आवश्यकता पूर्ति हेतु नव यथार्थ निर्माण करने की मानव क्षमता सृजनात्मकता है। सृजनशील चिंतन मानव का स्वभाव है और इसी कारण कला का विकास होता है। सृजन प्रक्रिया में मनुष्य की कल्पना आत्मिक शक्तियाँ, दक्षता जो प्रशिक्षण व अभ्यास से प्राप्त हो आदि सृजनशील चिंतन को मूर्त रूप देने के लिए आवश्यक है। सृजनात्मक अभिव्यक्ति साहित्य में लेखन द्वारा दिखाई देती है।

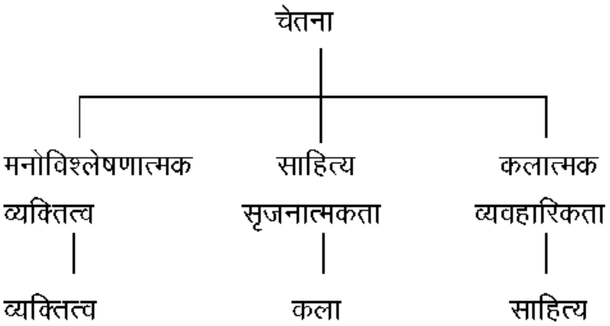


चेतना के स्तर को प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक युग ने स्पष्ट किया है।

1. संवेदना 2. भावना 3. अन्तादृष्टि
4. स्मृति 5. अर्न्तसाधाना 6. संवर्ग
7. संवर्ग के चिन्ह 8. व्यक्तित्व अचेतन 9. सामूहिक अचेतन
10. चेतना 11. अचेतन

उपर्युक्त चित्र के आधार पर हम चेतना के प्रकारों को इंगित कर सकते हैं जिसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष भावों को दर्शाया गया है। व्यक्तित्व प्रत्यक्ष के यही दोनों भाव साहित्य और कला से अविर्भाव रूप से जुड़े होते हैं। व्यक्ति अर्न्तसाधना में लीन रह कर ही उच्च कोटि के साहित्य व कला का निर्माण करता है। चित्रकार, नृत्यकार आदि संवेगात्मक प्रतिरूपों को अपने सृजन में दिखाते हैं। जीवन के अनुभवनों, प्रसंगों, घटनाओं आदि को स्मृरित करते हुए व्यक्ति व्यक्ति अन्तदृष्टि युक्त रचनाओं यथा जीवनी, संस्मरण आदि का निर्माण करता है। फ्रायड के अनुसार व्यक्ति के व्यक्तित्व में यही सभी भाव जागृत अवस्था में श्रृंखलाबंद रहते हैं।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार चेतना में तीन प्रकार की क्रियायं पाई जाती हैं :–

(1) ज्ञानात्मक (2) भावात्मक (3) क्रियात्मक

उदाहरणार्थ किसी मनुष्य ने प्रकृति का एक सुन्दर, मनोरम दृश्य देखा जिसे देखकर उसका हृदय व मस्तिष्क उद्वेलित हुआ और उसने कुछ पक्तियों के माध्यम प्रकृति स्वरूप में लिपिबद्ध के प्रभाव स्वरूप व्यक्तित्व में साहित्य कला व व्यक्तित्व विकास तीनों ही योग्यताओं का सृजन हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व विकास के लिए चेतनता अति आवश्यक है और यही चेतनता कलात्मक व सृजनात्मक व्यतिरेक को जन्म देती हैं।

व्यक्तित्व की चेतना को यदि सकारात्मक प्रवृत्ति से जोड़ा जाये तो वह दर्शन की एक शाखा सौन्दर्यशास्त्र को प्रकट करती है जिसके अन्तर्गत साहित्य, कला और सुन्दरता से सम्बाधित प्रश्नों की विवेचना की जाती है। सौंदर्यशास्त्र को यद शब्द की उत्पत्ति के संदर्भ में देखा जाये तो यह कला को परिभाषित करता है कि किसी सौंदर्य के प्रति आकर्षित होकर अपनी भावना को कलात्मक रूप में अभिव्यक्त करना ही कला है। कला में शिक्षा, शिक्षा में साहित्य और साहित्य से व्यक्तित्व का सृजन होता है।

व्यक्तित्व के अर्न्तगत इसी क्रमानुसार कला और सृजन साथ–साथ चलते हैं। सौनदर्य एवं कलाकृति को दैवीय प्रेरणा के स्थान पर मानवीय सृजन प्रक्रिया माना जाता है।

भारतीय पृष्ठभूमि में यदि हम देखे तो इतिहास में साहित्य कला के संगम का परिणामात्मक स्वरूप हमें चमत्कारिक व्यक्तित्व के धनी विभूमियों के रूप में देखने को मिलता है। मनु, शुक्र, कौटिल्य जैसे विद्वजन हो या कपिल मुनि, भरत मुनि, चावार्क, धन्वतरि जैसे दार्शनिक रचनाकार सभी ने साहित्यिक अभियोग्यता को कलात्मक पक्ष के साथ इस प्रकार सुशोभित किया कि भारत के संदर्भ में विश्व भर

में यहा कला प्रसंग अंकित चरितार्थ हो गई।

कलानां प्रवंर चित्रं धर्मकामर्थमोक्षदरम्।।

मांगल्स प्रथमं चैतद्गृहे यत्र प्रतिष्ठतम्।।

कला मात्र सृजनात्मकता नहीं है अपितु भिन्न–भिन्न विधाओं में मानव ह्रदय की आकाक्षाओं उसके विचारों, भावों कतिपय उसकी चारित्रिक विशेषताओं को लिये उसकी अभियोग्यता, क्षमता व रूचियों की बाझय अभिवयक्ति है। कला शबद 'कल' धातु से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है – सुन्दर अर्थात जो आनन्द प्रदान करता है उसे ही कला का नाम दिया गया है। कला से तात्पर्य रेखा आकृति, रंग, ताल तथा रेखाचित्र, मूर्तिकला, नृत्य, संगीत, कविता व साहित्य के रूप में मानव की प्रवृत्तियों की बाझ अभिव्यक्ति माना है। शाब्दिक व्युत्तिक्रम की दृष्टि से संस्कृत साहित्य में 'कला' शबद का प्रयोग लागभग 20 अर्थो में हुआ है। कला का प्राचीनतम प्रयोग ऋग्वेद के आठवें मण्डल में एक मंत्रांश में इस प्रकार है –

यथा कलां यथा शफं मथऋणं स नयामसि ।

अर्थात् ऋग्वेद के अतिरिक्त शतपथ ब्राहम्ण, षडिवश, ब्राहम्ण, सांख्यापन ब्राहम्ण तैत्तिरीय आरण्यक तथा अर्थवेद में है। भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र में कला का प्रथम स्पष्ट विवरण दिया है :–

न तज्ञान ने तचिछल्प न सा विद्या न सा कला ।।

भारतीय कला साहित्य में कला की विभिन्न सूचियाँ हैं जैसे – ललित विस्तार–86 वात्सायन के कामसूत्र – 64 प्रबन्धकोष – 72 बौद्ध व जैन ग्रंथ –64

कालिका पुराण– 64

मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार, ''अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति ही कला है।''

''कला सत्यम् शिवम् और सुन्दरम की अभिव्यक्ति है।''

कला एक अभिव्यक्ति के रूप में है। कला भावपूर्ण भाषा की अभिव्यक्ति है जो मानसिक स्थिति को जागृत करने में सफलता प्राप्त करती हैं।

व्यक्तित्व में कला के साथ जो दूसरा सृजनात्मक पक्ष सम्मिलित है वह है साहित्य का । व्यक्तित्व का पूर्ण विकास व निर्माण कला व साहित्य के समागम से ही पूर्ण होता है। व्यक्तित्व के विकास पथ के मार्ग का चयन मला व साहित्य से ही निकलता है। कला के माध्यम से व्यक्ति से ही निकलता है। कला के माध्यम से व्यक्ति जीवन जीने का ढंग, सीखता है। साहित्य उस मार्ग में कल्पना व भावना का बीज डालता है। साहित्य का आनन्द एक अलौकिक आनन्द होता है। व्यक्तित्व, साहित्य व कला तीनों का ही एक समान लक्ष्य है अलौकिकता, जिसमें संवेदनशीलता मानसिकता, सूक्ष्मता एवं अनिवर्चनीयता है। तीनों में ही अंतिम ध्योय श्रेष्ठ की प्राप्ति करना है अर्थात् अंतिम सत्य/श्रेष्ठ मोक्ष की।

आई.ए. रिचर्डस के अनुसार – ''साहित्य व कला अन्य विषयों से अधिक उत्कृष्ट है, क्योंकि यह व्यक्तित्व विकास को अग्रेसित करती है।

व्यक्ति विकास के उपरोक्त क्रमानगत अध्ययन में साहित्यिक सृजन का भी विशेष महत्व होता है। साहित्य के मूल चार तत्व माने जाते है :–

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | विचार | (ii) | भाव |
| (iii) | कल्पना | (iv) | शैली |

साहित्यक व्यक्तित्व का व्यक्ति अर्थात साहित्यकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में अपनी जीवन–दृष्टि सामाजिक विचारधारा, राजनीतिक मान्यता, दार्शनिक व धार्मिक आस्था – अनास्था की अभिव्यक्ति करता है। कभी वह किसी विचारधारा का समर्थन अथवा खंडन करता है तो उसके पीछे उसके व्यक्तित्व का बौद्धिक पक्ष उसका अपना दृष्टिकोण, ज्ञान, अनुभव एवं चिंतन ही छिपा रहता है तथा इस वह जिन भावनाओं को अपने साहित्य में प्रमुखता देता है, वे वस्तुतः उसके व्यक्तित्व का ही एक पक्ष होती है। उदाहरणर्थ तुल्सीदास के साहित्य में अंकित की भावना बिहारी काव्य में प्रणय भावना का, मैथलीशरण के काव्य में राष्ट्रीयता की भावना का होना इस बात का परिचायक है कि इनके व्यक्तित्व में इन्हीं की प्रमुखता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभन्न पक्षों का प्रत्यक्ष अंकन उसके साहित्य व उसके व्यवहारिक पक्ष में परिलक्षित होता है जो उसे व्यक्तित्व उन्नययन के लिए सदेव प्रेरित करता है। व्यक्ति का आंतरिक व्यक्तित्व लोक व्यवहार की अपेक्षा उसकी साहित्यिक रचनाओं में अधिक स्पष्टता से व्यक्त होता है, अतः साहित्य के व्यक्ति व्यक्तित्व को ही व्यक्ति है के वास्तविक रूप का प्रतिनिधि मानना अधिक संगत होगा।

# समाजिक परिवर्तन में महिला विकास कार्यक्रमों का योगदान : राजस्थान के संदर्भ में

**डॉ. अर्चना कुमारी मीना**
(सहायक आचार्य)
मुस्लिम गर्ल्स डिग्री कॉलेज, जयपुर

सृष्टि की संरचना और निर्माण में स्त्री और पुरूष दोनों का बराबर योगदान है। स्त्री और पुरूष के समागम ने सृष्टि को आगे की ओर चलायमान किया परिवार का निर्माण जिसके आधार पर आगे चलकर समूह अथवा समाज का प्रतिरूप विकसित हुआ व कालान्तर में राष्ट्र का अस्तित्व सामने आया। जीवन को जन्म देने की विशिष्ट योग्यता और क्षमता ने स्त्री को पूजनीय रमन्ते तत्र देवता ।

अर्थात् प्राचीन काल से ही महिलाओं के सम्मान और पूजा की महत्ता को इस सूक्त के द्वारा दर्शाया गया है कि जहां महिलाएं सम्मानित होती हैं वहां देवता भी प्रसन्न होते हैं।

अर्थात स्वर्ग की महत्ता व गरिमा भी जननी और मातृभूमि के आगे कोई अस्तित्व नहीं रखती ।

उक्त श्लोक भारतीय संस्कृति तथा समाज में महिलाओं के स्थान की महत्ता को परिलक्षित करते हैं जो यह स्पष्ट करते हैं कि स्त्री ना केवल एक सामाजिक इकाई मात्र है बल्कि उसका अस्तित्व उससे भी कहीं ज्यादा है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में प्राचीनकाल में महिलाओं की स्थिति प्रशसनीय थी। उन्हें समाज में आदर सम्मान पूर्वक दृष्टि में देखा जाता था। लोपा, धोषमुद्धा, गार्गी जैसी महान विदुषी को सिद्ध किया था किन्तु मध यकाल और स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ब्रिटिश शासन काल में महिलाओं की स्थिति शोचनीय हो गई। उन्हें सम्पत्ति समझकर क्रय–विक्रय तथा लूटा अर्थात् शक्ति द्वारा प्राप्त करने कार्य प्रारम्भ हो गया। जिसका परिणाम यह निकला के समाज का आधा भाग अर्थात् महिलायें शैक्षिक व सामाजिक दृष्टि से बहुत ही दारूण स्थिति में आ गई। समाज में महिलाओं से सम्बन्धित कई प्रकार की कुप्रथाऐं अस्तित्व में आ गई।

**महिला कुप्रथाऐं**

– सती प्रथा, कन्या वध, कन्या क्रय–विक्रय प्रथा, बहु पत्नी प्रथा, नाता प्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह प्रथा, पर्दा प्रथा, महिला भ्रूण हत्या, विधवा प्रताड़ना, उकन प्रथा आदि।

स्वतंत्रता के उपरान्त भारत में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए प्रशासनिक स्तर पर कई उपाए किए गये। जिसमें सबसे प्रमुख था :–

राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना तथा राज्य स्तर पर राज्य महिला आयोग की स्थापना जो कि महिला उत्पीड़न से सम्बन्धित घटनाओं पर त्वरित संज्ञान लेकर कार्य करते हैं। किंतु महिलाओं की स्थिति को सुधारने अर्थात मात्र महिला उत्पीडन को रोकना ही नहीं है अपितु महिलाओं की स्थिति को सामाजिक स्मर पर शैक्षिक, आर्थिक व अन्य सम्माव्य स्वरूपों में समन्नुत करना है और इसी उद्देश्य की प्रापित हेतु शासन के द्वारा कई महत्वपूर्ण प्रावधानों को लागू किया गया है।

राजस्थान में महिलाओं की स्थिति स्वतंत्रता के समय काफी निम्न स्तर पर थी क्योंकि राजपूताना में राजतंत्रात्मक व्यवस्था सामान्ती दृष्टिकोण सामाजिक कुप्रथाओं का अस्तित्व व महिला शिक्षा की नगण्य स्थिति ने समाज के इस वर्ग को अंधकार की ओर विमुख कर दिया था जिसका परिणाम प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष स्वरूप में सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था और उसके संगठनात्मक ढांचे पर नकारात्मक रूप में परिलक्षित हो रहा था। महिलाओं की दयनीय स्थिति तथा महिला साक्षरता के निम्न स्तर ने लिंगानुपात को व्यापक तरीके से प्रभावित किया था। इन सबकी वजह से समग्र रूप में महिलाओं से सम्बंधित निम्न सामाजिक बाधाओं का प्रसार हो रहा था–

– महिला साक्षरता की न्यूनता
– मातृत्व कुपोषण की स्थिति
– महिला की अन्य पर आर्थिक निर्भरता
– महिला श्रम शक्ति का उचित प्रयोग ना होना
– बाल मृत्यु दर में वृद्धि
– बाल कुपोषण का प्रसार
– महिला कुप्रथाओं का अस्तित्व में रहना

उपरोक्त बाधाओं की वजह से महिलाओं की स्थिति अत्याधिक दयनीय हो गयी जिसके निवारण के लिए शासन के द्वारा विभिन्न महिला उत्थान कार्यक्रमों का प्रारम्भ किया गया।

**राज्य महिला नीति – 2021 की उद्घोषणा :**

राजस्थान में महिला एवं बालिका कल्याण के लिए विभिन्न विभागों के मध्य उचित समन्वय स्थापित करके महिलाओं व बालिकाओं के जीवन स्तर को सुरक्षित एवं सशक्त बनाने का प्रयत्न किया गया है।

**महिला नीति के मार्गदर्शक सिद्धांत :**

– विकास की मुख्य धारा में भागीदारी – मानवाधिकार
– क्षेत्रीय विविधता – सबसे कमजोर तक पंहुच
– विशेष संभावना वाले वर्ग को समुन्नत बनाना

**मुख्य क्षेत्र : उद्देश्य एवं क्रियान्वयन बिन्दु ::**

राजस्थान राज्य महिला नीति 2021 के अन्तर्गत महिला व बालिका विकास हेतु निम्न क्षेत्र हेतु निर्दिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है जिसके अग्रलिखित बिंदुओं का समावेश है।

**शिक्षा और प्रशिक्षण**

– बालिकाओं के विद्यालय छोड़ने की दर में कमी लाकर उनके नामांकन में वृद्धि करना।
– उच्च तकनीकी शिक्षा में बालिकाओं की अंशभागीता को बढ़ाना।
– नैतिक रूप में आत्मसम्मान व स्वयं पर विश्वास में वृद्धि करना।
– शिक्षा के साथ–साथ खेलों में भी उपर्युक्त सदृभागिता को बढ़ाना।
– बालिका शिक्षा व प्रशिक्षण हेतु उपर्युक्त अनुकूलित परिस्थितियों के निर्माण में वृद्धि करना।

**आर्थिक सशक्तीकरण**

– आजीविका हेतु आत्मनिर्भर बनना।
– आजीविका चयन हेतु उपर्युक्त अवसर देना।
– निश्चित आवासीय सुविधाओं की व्यवस्था करना।
– पारिवारिक पैतृक सम्पत्ति पर महिलाओं के पक्ष को स्थायित्व देना।
– आर्थिक तथ्यों के आधर पर अवधि निर्माणं करना।

**राजनीतिक और सामाजिक सशक्तीकरण**

– राजनैतिक दृष्टि से महिला सहभागीता को बढ़ाना।
– सामाजिक रूप में महिला सशक्तीकरण करना।

**सुरक्षा और बचाव**

– महिलाओं से संबंधित सामाजिक कुप्रथाओं व हिसां की रोकथाम
– सामाजिक कुप्रथाओं व हिंसा के विरूद्ध कार्यवाही
– महिला सुरक्षा और संरक्षण हेतु विधि सम्मत कानूनों का निर्माण व उनकी अनुपालना सुनिश्चित करना।

**पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और आपदाएं**

– पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका को प्रोत्साहित करना।
– जेण्डर संवेदनशील व प्राकृतिक आपदा प्रबंधन की रोकथाम व उसका उचित प्रशिक्षण सुनिचिश्त करना।

इस प्रकार शासन द्वारा उचित उपरोक्त उद्देश्यों के निर्धारण से महिला सशक्तीकरण को ना केवल बढ़ावा मिलेगा अपितु राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक दृष्टि से महिलाओं को संबंल भी प्राप्त होगा। महिलाओं की स्थिति का प्रभाव ना केवल महिलाओं पर होगा अपितु सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था व उसके ढांचे पर इसका आमूलचूल लक्षण परिलक्षित होगा। सामाजिक व्यवस्था में महिला व बालिका विकास के प्रभावी क्रियान्वयन को सामाजिक गत्यामकता के सिद्धांत के आधार पर पूर्ण रूप से स्पष्ट कर सकते हैं जिसमें महिलाओं को सामाजिक नेतृत्व में बराबर की भागीदारी प्राप्त होती है जिसको परिणामस्वरूप ।

– सामाजिक संरचनात्मक प्रतिरूप में महिला प्रभाविकता का विस्तार करना।
– महिला निर्णयन के अवसरों में वृद्धि करना।
– सामाजिक व्यवस्था के पारम्परिक स्वरूप में नीति निर्धारण स्तर पर महिला सहभागिता में वृद्धि करना।
– आर्थिक नियोजन के स्तर पर महिला आर्थिक सशक्तीकरण का प्रसार करना।
– पिवृसत्तात्मक सामाजिक प्रतिरूप को एकधुवीय व्यवस्था से ध्रुवीय व्यवस्था में परिवर्तित करना।
– राजनैतिक सहभागीता के साथ–साथ सक्षम स्तर पर राजनैति नेतृत्वशीलता की अनुपालना महिला राजनैतिक चेतना द्वारा स्पष्ट करना।

# कवि निराला के काव्य में प्रगतिशील चेतना

**डॉ. महेश आमेटा**
शोध सहायक, संस्कृत विभाग, साहित्य संस्थान
जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड–टू–बी–विश्वविद्यालय),
उदयपुर (राज.)

**प्रस्तावना :**

निराला छायावाद के ही नहीं आधुनिक हिन्दी कविता के सबसे महत्त्वपूर्ण कवि है। अपने समकालीनों में जितने प्रासंगिक कवि निराला हैं, उतना प्रासांगिक आज दूसरा कोई कवि नहीं है। उनका रचनाकाल सन् 1916 से 1961 तक की कालावधि में फैला हुआ है। इस कालावधि के भीतर आधुनिक हिन्दी कविता की कई धाराएँ, वाद और आन्दोलन उभरे हैं और इनके नेतृत्वकर्ता भी अपने आपको उनके जनक घोषित करते और करवाते रहे हैं।

कवि निराला छायावादी दौर के कवि रहे है। उनके समग्र काव्य की पड़ताल करने पर यह स्पष्ट होता है कि प्रारम्भ से ही उनकी रचनाओं में एक रूपता न होकर अनेक रूपता स्पष्ट झलकती है। छायावादी दौर में एक ओर उन्होंने 'जुही की कली', 'शेफालिका', 'यमुना के प्रति', 'संध्या सुन्दरी' जैसी छायावादी भाव–बोध से युक्त रचनाएँ लिखी वहीं 'परिमल' में संकलित 'विधवा', भिक्षुक जैसी रचनाओं में तद्युगीन भारतीय सामजिक जीवन का यथार्थ अभिव्यक्त प्रस्तुत किया हुआ है (शर्मा 1996, 1–9)। निराला ने तो छायावाद के प्रारम्भिक दौर से ही अपनी सामाजिक रचनाओं में दरिद्रों के बोझिल जीवन के वर्णन तथा अभावग्रस्तता तथा दुःखों के प्रभावशाली चित्रण को अंकित किया है।

**कवि निराला का जीवन परिचय**

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म बंगाल की महिशादल रियासत जिला–मेदिनीपुर में माघ शुक्ल 11, विक्रम सम्वत् 1955 तदनुसार 21 फरवरी, 1899 में हुआ। बसन्त पंचमी पर उनका जन्मदिन मनाने की परम्परा सन् 1930 से प्रारम्भ हुई। वे मूलतः उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला नामक गाँव के निवासी रहे। कवि निराला की प्रारम्भिक शिक्षा हाई स्कूल तक हुई। बाद में उन्होंने हिन्दी, संस्कृत और बांगला का स्वतन्त्र अध्ययन किया। निराला के जीवन की सबसे विशेष बात यह है कि उन्होंने कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने सिद्धान्तों को त्यागकर समझौते का रास्ता नहीं अपनाया और हमेशा संघर्षरत रहे। इनके जीवन का उत्तरार्ध इलाहाबाद में बीता। कवि निराला की पहली नियुक्ति महिषादल राज्य में ही हुई। इन्होंने सन् 1918 से 1922 तक अपनी सेवाएँ देने के साथ ही सन् 1920 के आसपास से लेखन कार्य आरम्भ कर दिया। इनकी पहली रचना ''जूही की कली'' व जन्मभूमि पर लिख गया गीत है। कविता के अतिरिक्त कथा साहित्य तथा गद्य की अन्य विधाओं में भी निराला ने प्रभूत मात्रा में लिखा है। सूयकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक माने जाते हैं। वे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पन्त और महादेवी वर्मा के साथ हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तम्भ माने जाते हैं। इनकी कहानियाँ, उपन्यास और निबन्ध भी काफी प्रचलित है, परन्तु इनकी ख्याति विशेषकर कविता के क्षेत्र में ज्यादा रही है। कवि निराला को रामचरित मानस प्रारम्भ से ही बहुत प्रिय थी। वे हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में निपुण तो थे ही साथ ही संगीत में भी इनकी गहरी रुचि रही तथा अध्ययन में उनका विशेष मन नहीं लगता था।

कवि निराला का पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में ही रायबरेली जिले के डलमऊ के पं. रामदयाल की पुत्री मनोहरा देवी से विवाह हो गया। इनकी पत्नी शिक्षित थी। पत्नी के जोर देने पर ही उन्होनें हिन्दी का अभ्यास करते हुए हिन्दी में कविता लिखना शुरू कर दिया। ये हिन्दी में मुक्तछन्द के प्रवर्तक भी माने जाते हैं।

निराला को अपने समय में 'महाप्राण' कहा गया है

और यह एकदम सही भी है, क्योंकि उस पूरे दौर में एक कवि अपने समय के कई अल्पप्राण प्रतिमानों को चुनौती देकर अपना महाप्राणत्व सिद्ध कर रहा था। अपने युग में कई तरह की आलोचनाओं और प्रत्यालोचनाओं को झेलते हुए कवि ने पहली बार मनुष्य की मुक्ति की तरह कविता की मुक्ति की अवधारणा प्रस्तुत की थी। शायद इसीलिए छायावाद के बाद के सभी काव्यान्दोलनों ने निराला को याद किया जाता रहा।

सन् 1896 में बंगाल के मेदिनीपुर जिले की महिषादल रियासत में श्री रामसहाय तिवारी के घर जन्मे सूर्य कुमार ने स्वयं को सूर्यकान्त के रूप में निर्मित किया। अवध क्षेत्र के उन्नाव जनपद के गढ़ाकोला गाँव के मूल निवासी निराला को आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने हिन्दी के आधुनिक कवियों में शताब्दी का कवि कहा है। वहीं परवर्ती समय में इक्कीसवीं सदी के आगमन के साथ यह सिद्ध और सहज स्वीकार्य भी हो गया।

निराला का कवि–व्यक्तित्व छायावाद की अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करके हिन्दी की परवर्ती कविता की भूमिका तैयार करता है। यह एक ऐसे कवि की दुनिया है, जिसमें कविता से मान्यताएँ बन सकती हैं, मान्यताओं से कविता नहीं। भावना और बुद्धि की समन्वित उपस्थिति तथा रचना प्रक्रिया में अनकी एकता ही वह आधार है, जिससे निराला की कविता दीर्घजीवी भी होती है और कालजयी भी।

**प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह के अनुसार**

प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह कहते हैं–निराला हिन्दी के उन कवियों में से हैं, जिनमें हिन्दी की समूची परम्परा बोलती है। उनकी कविता में समूची हिन्दी की परम्परा की गूँज तो सुनाई पड़ती है। साथ ही उसमें उर्दू परम्परा के साथ संस्कृत भाशा का समावेश स्पश्ट झलकता है।

**आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी** : कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का काव्य विकास है। एक ही समय में भिन्न भिन्न प्रकार की कविताओं के साथ कवि अपने पाठकों और आलोचकों के समक्ष चुनौती प्रस्तुत करता है।

**रामविलास के अनुसार** : निराला के पूरे काव्यकाल को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। पहला काल सन् 1920 से लेकर 1938 तक का पूर्ववर्ती काल छायावादी काल के रूप में है। दूसरा काल सन् 1939 से 1949 तक का मध यवर्ती काल यथार्थवादी के रूप में है। फिर सन् 1950 से 1961 तक का काल परवर्तीकाल के रूप है, जिसमें प्रायः गीत ही रचे गए हैं।

**अशोक वाजपेयी के अनुसार** : महाकवि निराला दूसरे छायावादी कवियों से अलग हैं क्योंकि उनका विद्रोह महज भावनात्मक उफान नहीं है बल्कि जीवन और सामाजिक सम्बन्धों की बेहतर समझ और उससे बनी मानसिक चेतना से उत्पन्न है।

**निराला की प्रगतिशील चेतना** : कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' न तो छायावादी कवि, न रहस्यवादी कवि, न प्रयोगवादी कवि, एवं न प्रगतिवादी कवि रहे। वह निर्बन्ध और स्वच्छन्दतावादी भी नहीं थे, स्वच्छन्द कहने के बाद किसी बड़े आलोचक ने उनको स्वच्छन्दतावादी कह दिया, तो मुझे लगा कि जैसे स्वच्छन्दता की हत्या कर दी गई हो। ऐसे कवि निराला ही हो सकते हैं। कवि निराला जब 'मतवाला' के सम्पादक थे तब वह निराला बने। वह मस्ती उनके अपने व्यक्तित्व की मस्ती है, जो कि सबके पास नहीं होती और इसलिए वह निराला थे और ऐसा आदमी कभी रुढ़ियों से बन्धा होकर नहीं चलता, परन्तु परम्परा की तेजस्विता उसमें पूरी तरह रह सकती है और फिर वह प्रगति को अधिकाधिक स्वायत्त कर सकता है। उसको कोई खतरा नहीं रहता क्योंकि जड़ उसकी बहुत मजबूत होती है और मजबूत जड़े उसको बड़ी ऊँचाइयों तक ले जाती हैं। यही थे कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'।

निराला की जड़ बड़ी मजबूत थी। इसलिए 'परिमल' मैं कहा करता हूँ कि 'परिमल' कोई सूंध लेता, 'अनामिका' के इंगित कोई समझ लेता, तो आगे कुछ कहने की जरुरत नहीं पड़ती। लेकिन ऐसा लगता है कि उसके पहले के काव्यों को ही नहीं समझा गया। निराला ने अपनी 'परिमल' के तीन खण्ड तो कर दिए लेकिन तीन खण्ड कैसे अखण्ड हैं? एक ही कवि वेदों से लेकर अतीत के गाने गाते–गाते शिवाजी के पत्र की बात भी करता है। एक बार बस और नाच तू श्यामा की बात भी वह करता है। 'बादल राग' भी लिखता है, 'पंचवटी' के प्रति भी वह लिखता है, 'कण' के प्रति भी लिखता है, 'रास्ते के फूल' के प्रति भी लिखता है–एक ही 'परिमल' में हैं ये सब चीजें। विधवा भी है, 'भीक्षुक' भी है, दीन भी है। अब कैसे कहेंगे कि प्रगतिशील चेतना कहाँ से शुरू होती है? प्रगतिशील चेतना इसमें विद्यमान है और मैं कैसे कहूँ कि जिस 'राम की शक्ति पूजा'

की स्वाधीनता संग्राम के आलोक में अभी व्याख्या हुई, जो बहुत ठीक हुई वह स्वयं में प्रगति चेतना नहीं है क्या? क्या प्रगति चेतना कुछ और होती है, जिसमें लघुता की और ही दृष्टिपात किया जाए।

निराला के सन्दर्भ में बात करते हुए यह कहना मुझे बहुत जरुरी लगता है कि कहीं मैं यह तो नहीं सोच रहा कि निराला निःसन्देह बड़े उच्च कोटि के कवि हैं। निराला में वर्ष 40–41 के बाद काव्य परम्परा उच्च कोटि की प्रारम्भ हुई, लेकिन उसका बीज उसका मूल व्यक्तित्व पहले से ही विद्यमान रहा है।

मैंने मैं शैली अपनाई, देखा दुःखी एक निज भाई
दुःख की छाया पड़ी ह्रदय पर मेरे,
झट उमड़ वेदना आई, मैंने में शैली अपनाई
और छूटता है यद्यपि अधिवास, फिर भी न मुझे कुछ त्रास
कहाँ मेरा अधिवास कहाँ?, रुकती है गति जहाँ?
वह गति रुकी नहीं आज तक, वह प्रगति रुकी नहीं और ठीक है कि वह कहते हैं कि मै ब्रह्म हूँ।
नश्वर है दीन भाव कायरता, कायरता है दीन भाव नश्वरता
पद–रज भी नहीं है यह विश्व का भार
मैं ब्रह्म हूँ।

वाकई यह शक्ति देते हैं, लेकिन यह सारी ऊर्जा यह सारी तेजस्विता, यह सारी ओजस्विता उनके अन्दर है, जो वह ब्रह्म से प्राप्त है, जिसके कारण वे कहते हैं कि छन्दों की मुक्ति मान ली किसमें हैं? कर्मो के बन्धन में आदमी की मुक्ति है तो छन्दों की मुक्ति मुक्त होने में है। इसमें भी मुक्ति गाती है। यह उस काल का स्वाधीनता संग्राम है। ऐसे ही मुक्ति की बात नहीं कर रहे हैं। शैली से भी निराला में अनेक निर्बन्ध, स्वच्छन्द इस प्रकार के शब्द आए हैं। मुक्ति की बातें आई है उस शैली से भी हम जान सकते हैं कि निराला क्या थे।

नव पर नव स्वर दे, नवल गीत लय ताल छन्द नव
नव–नव के नव वेदवृन्द को,नव पर नव स्वर दे, वीणावादिनी वर दे।
अमृत मन्त्र नव प्रिय स्वतन्त्र नव भारत में भर दे।

इस प्रकार उस समय भारत में जो स्वाधीनता संग्राम था। निराला उसके साथ बन्धे हुए हैं। निराला का मुक्त छन्द, जो छनद हीन है, जिसमें अपना ताल और लय बराबर है वह सारा कुछ जुड़ा हुआ है और उससे आगे निराला बढ़ते हैं तो प्रगतिशील चेतना निराला में है, जिसे समझना बहुत जरूरी है कि वह प्रगति भीतर से है वे जब राष्ट्र के साथ एकमेव होते हैं। राम की शक्ति पूजा में वाकई वह दुर्गा कौन सी है? अब हमें वह दुर्गा, वह शक्ति तो अर्जित करनी है और राम हमारे संस्कारों में बैठे हुए राम हैं। वह राम हमारे वाल्मीकि के राम, तुलसीदास के राम हैं और आप सोचिए कि हर युग में राम नया जन्म लेता है क्योंकि हर युग को अपना नया सन्देश देना होता है, कवि की दृष्टि बदल जाती है। कवि के बारे में उन्होंने साफ–साफ कहा है कि जो अपने दुःख से मुख मोड़कर दूसरों को सुख देता है वही कवि है। यह कवि की परिभाषा है। 'जीवोमय देते हो जीवन ही जीवन जो' यह महाप्राण निराला कवि को स्वयं कहते थे (चुघ : 1996, 72–75)।

**निष्कर्ष**

निराला में प्रगतिशील चेतना तो हमेशा रही है। हाँ, अन्त में 'आराधना', अर्चना और गीत गूंज को नहीं भूलाना चाहिए क्योंकि निराला हमेशा प्रार्थनारत रहे हैं। निराला की आध्यात्मिकता हमेशा सम्पन्न रहीं है, प्रार्थनापरक गीत वह हमेशा अन्त तक लिखते रहे हैं। इसको भी नहीं भूलना चाहिए। इसलिए एक बात मुझे साफ साफ कहनी है और उसको समझना चाहिए कि निराला जैसे प्रगतिशील कवि आज भी अपेक्षित हैं और इसको नहीं भूलना चाहिए कि उन्होंने 'मास्को डॉयलॉग्ज' भी लिखा था, जिसमें उन्होंने साफ कहा है कि यह जो आयातित साम्यवाद है और जो यहाँ पर कोठियाँ बनाकर रहते हैं और साम्यवाद का गान करते है उनको भी सोचना चाहिए और इसलिए जब वह 'कुकुरमुत्ता' लिखते हैं तो उसमें बहुत लोग यह मानते हैं कि यहाँ पर उस काल की पूंजीशाही, पूंजीवादी ढाँचा है उस पर करारी चोट है। मानव प्रेम उनका सबसे बड़ा था–करुण वेदना, सम्वेदना उनमें बहुत गहरी थी, ऐसा आदमी जो होगा वह प्रगतिशील चेतना की हमेशा स्फूर्ति देता रहेगा। ऐसे निराला को पाकर हम धन्य हैं और हमारा काव्य भी गौररवान्वित हुआ।

**सन्दर्भ ग्रन्थ**

1. शर्मा; बीना, निराला और समकानीन हिन्दी कविता, प्रथम संस्करण 1996, ज्ञान भारती, नई दिल्ली प्रकाशन।
2. चुघ; डॉ. सत्यपाल, निराला की प्रगतिशील चेतना, 1996।

# अष्टांग योग का मानव जीवन पर प्रभाव

**डॉ० हरेन्द्र कुमार शर्मा**
सह आचार्य, महाराजा सूरजमल शिक्षक प्रशिक्षण
महाविद्यालय, पक्का बाग, भरतपुर (राज०)
Mob. No.: - 9414787640,
email: - jiyabtp21@gmail.com

**सारांश**

हमारे प्राचीन ऋषियों द्वारा खोजी गई अनुपम विद्या योग सम्पूर्ण मानवता के लिए बहुत बडा वरदान सिद्ध हुई है। यह विघा मनुष्य के उसके सम्पूर्ण दुखों से मुक्ति का सर्वोत्तम मार्ग प्रशस्त करती है। योग, विज्ञान और कला के साथ–साथ एक सम्पूर्ण जीवन शैली है। यह मनुष्य को केवल मुक्ति या स्वरूप स्थिति का मार्ग नहीं बताता बल्कि उसके दैनिक और सांसारिक जीवन में आने वाली संपूर्ण व्यवहारिक समस्याओं के समाधान में भी सहयोगी होता है। जीवन शैली के साथ–साथ योग एक चिकित्सा पद्वति के रूप में भी आज मान्यता प्राप्त कर चुका है यह विद्या आध्यात्मिक जिज्ञासाओं के लिए जितनी प्रभावकारी है उतनी ही सांसारिक या ग्रहस्त जीवन जीने वालों के लिए भी है। योग व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण के साथ उसके पारिवारिक, सामाजिक राष्ट्रीय तथा मानवीय समस्याओं के समाधान में भी उपायोगी सिद्ध हुआ है।

**मूल शब्द**– जीवन शैली, योग, मानवता।

**प्रस्तावना**

प्राचीन ऋषि मुनियों ने क्लेश, अतृप्ति, वासना इत्यादि को दूर करने के लिए जप तप, भक्ति, कर्मकांड, आदि मार्ग बतलाये। इन साधनों को अपना कर व्यक्ति सुख, सफलता प्राप्त कर संसारिक जीवन को सुखमय बना कर स्वर्ग की अभिलाषा भी रख सकता है किंतु परमानंद की प्राप्ति, आत्मा का अंतिम लक्ष्य व सच्चा ज्ञान, कैवल्य मोक्ष को प्राप्त करने के लिए इन साधनों से उच्च साधनों की अवश्यकता है उनमें उच्च साधनों को हम योग विद्या से प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि योग विद्या पूर्णतय क्रियात्मक है। योग एक दर्शन कला और विज्ञान है योग एक व्यावहारिक पद्वति है योग के द्वारा मानव शारीरिक सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करता है योग द्वारा मानव इस संसार को अंदर तथा बाहार से देख, परख और अनुभव करने योग्य बनता है योग सूत्र आज से 2000 वर्ष पूर्व महर्षि पतंजलि द्वारा निर्मित सूत्रों का संग्रह हैजिसकी प्रामाणिकता आज भी सिद्ध है अन्य प्रकारों के योग भी ''योग सूत्र'' पर आधारित हैं इन सूत्रों से ज्ञानवर्धन के साथ–साथ साधक स्वयं में परिवर्तन कैसे करें, मन को नियंत्रण में कैसे लाये बंधनों पर विजय प्राप्ति, योग के लक्ष्य कैवल्य को प्राप्त करता है मनुष्य के जीवन में समस्त दुखों को दूर करने के लिए महर्षि पतंजलि में अष्टांग योग का एक मार्ग दिया है जिस पर हम चलकर जीवन को सुख बना सकते हैं।

**1. यमः**–

यम का अर्थ नियंत्रित करना इंद्रिया और मन प्रति नियंत्रण करना ही यम है यम के पांच विभाग हैं सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह , अस्तेय। अपने व्यवहारिक जीवन में इन पांच व्रतों का अभ्यास किए बिना मन की शांति एकग्रता संभव ही नहीं है।

**सत्यः**– जो जैसा देखा सुना या जाना गया है उसे उसी तरह से कहना सत्य है न्याय और समानता पूर्वक व्यवहार सत्य आचारण है मन वचन कर्म से सत्य का आचारण सर्वश्रेष्ठ धर्म है कबीर साहब ने भी कहा है सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। जाको ह्रदय सांच है, ताको हृदय आप।। महात्मा गांधी ने अपने पूरे जीवन को सत्य पर ही आधारित किया और उन्होने कहा सत्य ही ईश्वर है अपने व्यवहारिक जीवन में सत्य को बिना उतारे मन की शांति एकग्रता आना संभव ही नहीं है यह आपसी विश्वास और प्रेम बढ़ाने का सबसे अच्छा माध्यम है।

**अहिंसाः–** मन, वाणी तथा कर्म से किसी को भी कोई हानि न पहुचाना अहिंसा है। पर–दोष, निन्दा, चुग्ली, क्रोध, कटुवाणी आदि के द्वारा किसी को कष्ट देना तथा इसके लिए किसी को उक्साना हिंसा है। यदि हमें अपने मन तथा चित्त को शुद्व एवं निर्मल करना है तो इससे बचना होगा शुद्व प्रेम इसका आधार है।

**अस्तेयः–** का अर्थ चोरी न करना। किसी दूसरे व्यक्ति की किसी वस्तु को मन, वाणी या कर्म से अपना बनाने का प्रयास करना चोरी है। सरकारी या व्यक्तिगत या किसी के धन या वस्तु को अनीति पूर्वक लेना चोरी है।

**ब्रह्मचर्यः–** दो शब्दो से मिलकर बना हैं ब्रह्म–चर्य। यहां पर ब्रह्म का तात्पर्य महान तथा चर्य का तात्पर्य आचरण है। इस प्रकार महान आचरण करने वाला ब्रेह्मचारी है। मनुष्य का सबसे महान कर्म या आचरण मन, इन्द्रिय पर नियंत्रण है। इसलिए अपने जीवन में ब्रह्मचर्य को महत्व देना आवश्यक है।

**अपरिग्रहः–** का अर्थ न पकडना या न ग्रहण करना है। अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तु और धन का संग्रह करना अनुचित है। वे लोग जो संग्रह करने में विश्वास करते हैं उनका सारा समय वस्तुओं की रक्षा करने की चिंता तथा फिक्र में ही बीत जाता है। ऐसे व्यक्ति का मन सदा अशांत बना रहता हैं।

**2. नियमः–**

मन को नियंत्रित करने के लिए उसे नियमों के कडे अनुशासन मे रखना चाहिए। पांच प्रकार के नियम बताऐ गये है इन नियमों को सही प्रकार से निभातें हुऐ आप जीवन को सही रूप से सुखमय बना सकते है। शौच, तप , संतोष, स्वाध्याय तथा ईष्वर प्रणिधानि।

**शौचः–** अपने मन को एकाग्र करने के लिए शारीरिक व मानसिक स्वच्छता एवं पवित्रता बहुत आवश्यक है। स्नान द्वारा शारीरिक सफाई झाडू– पोछा द्वारा अपने अलग–बगल की चीजो को साफ सुथरा रखना बाहरी शुद्वता हैं । ईमानदारी एवं परिश्रम की कमाई का भोजन अपने शरीर निर्वाह के लिए करना यह सब शौच के अंतर्गत आता है इसी तरह शाकाहार लेना, मांस, मदिरा, धूम्रपान तथा मद्यपान का त्याग करना शुचिता है। इसी के साथ मन की पवित्रता आंतरिक शौच है। राग, द्वेष, ईर्ष्या, घृणा, लोभ तथा मोह जैसे मानसिक विकार मन को गंदा कर हमें आंतरिक अशुद्वि देते है। इनका त्याग कर मैत्री, करूणा, मुदिता तथा उपेक्षा का जीवन में पूर्ण आचरण आंतरिक शुद्विता है।

**संतोषः–** पूरी शक्ति के साथ कर्म करना तथा उसका जो भी फल मिले उसे यथावत् स्वीकार कर लेना संतोष है। जो व्यक्ति संतुष्ट नहीं है। वह एकाग्र नहीं हो सकता है। जिसने कामनाओं पर विजय प्राप्त कर ली है। वही पूर्ण संतुष्ट हो सकता है।

**तपः–** सत्य के मार्ग पर चलते हुए मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं का धैर्य ही चट्टान पर स्थित होकर सामना करना तप है। सुख–दुःख, लाभ–हानि तथा जय–पराजय में समान रहना तप है।

**स्वाध्यायः–** स्व का अर्थ है स्वंय तथा अध्याय का अर्थ है अध्ययन या शिक्षण अपने–आप का अध्ययन स्वाध्याय है। आत्मशुद्वि वही कर सकता है जो रोज–रोज स्वंय की गलतियों पर दृष्टि डाले तथा उनमें निरंतर सुधार करने का प्रयत्न करता रहे।

**ईश्वर प्रणिधानिः–** जो व्यक्ति अहंकारवश अपने सिर पर संसार लिए घूमता है। वह कभी भी एकाग्र चित्त नहीं हो सकता है। निर्भयता तथा एकाग्रता उसी में आ सकती है जो सब कुछ ईश्वर , गुरू या कर्म सिद्वांत पर शरणागति करना सीख ले।

**3. आसनः–**

अष्टांग योग का तीसरा अंग आसन है। आसन का तात्पर्य शरीर की एक विशेष स्थिति है। किसी एक विशेष आसन में बिना हिले डुले सुखपूर्वक आधिक देर तक बैठे रहने से उस आसन विशेष में दक्षता मिलती है। मन को एकाग्र करने में शरीर की स्थिरता पहली सीढी है। आसन शरीर की स्थिरता प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है। आज आसनों को चिकित्सा के रूप में प्रयोग कराया जा रहा है। आसनों के अभ्यास से विभिन्न प्रकार के रोग ठीक हो रहे हैं योगासन करने से शरीर निरोगी बना रहता है।

**4. प्राणायामः–**

आसन के सिद्व हो जाने पर श्वास–प्रश्वास का रूक जाना प्राणायाम कहलाता है। तरीके से श्वास अंदर लेना पूरक , अंदर रोकना कुंभक तथा बाहर निकलना रेचक है। ये प्राणयाम के तीन अंग है। प्राणायाम शारीरिक तथा मानसिक शुद्वि में सहायक है। इसके अभ्यास से नाडियां

शुद्ध होती है। तथा पूरे शरीर में प्राणशक्ति का सम्यक् संचार होता है। इसलिए प्राणायाम का अभ्यास आवश्यक है। प्राणायाम करने से शरीर हल्का हो जाता है। जिससे हमारा मन शांत रहता है और हम हर चीज पर ज्यादा फोकस कर पाते है और हमारी एकाग्रता बढती है हमारी चंचलता शांत होती है और हम अपने लक्ष्य पर आसानी से पहुंच जाते है।

**5. प्रत्याहारः–**

प्रति का अर्थ लौटाना तथा आहार का अर्थ भोजन करना। इस प्रकार प्रत्याहार का अर्थ हुआ भोजन न करना। जब इन्द्रियां अपना आहार न लेकर अपने संचालन केन्द्र चित्त की ओर लौट आती है, तब वह प्रत्याहार है। इन्द्रियों की बहिर्मुखता का अंतर्मुख होना ही प्रत्याहार है। जैसे ही इन्द्रियां हमारे अंदर प्रवेश करने लगती हैं वैसे ही हमारा मन ज्यादा शांत और एकाग्र होने लगता है। और हम न सिर्फ जीवन में बल्कि अपने लक्ष्य को भी आसानी से प्राप्त नहीं कर सकते है।

**6. धारणाः–**

शरीर के भीतर व बाहर कहीं भी किसी एक स्थान या बिन्दु पर चित्त को ठहराना धारणा है। शरीर के भीतर हृदय, चक्र, मध्य, श्वास प्रश्वास या बाहर किसी महापुरूष मूर्ति या चित्तरादि में चित को बांधना धारणा है।

योग दर्शन के अनुसार 'देशबन्धश्चित्तस्य धारणा। – किसी स्थान (मन के भीतर या बाहर) विशेष पर चित्त को स्थिर करने का नाम धारणा है।

**7. ध्यानः–**

किसी भी एक विषय को धारण करके उसमें मन को एकाग्र करना होता है। ध्यान करने के लिए स्वच्छ जगह पर स्वच्छ आसन पे बैठकर साधक अपनी आंख बांध करके अपने मन को दूसरे सभी संकल्प–विकल्पों से हटाकर शांत कर देता है। और इश्वर, गूरू, मूर्ति, आत्मा निराकार परब्रह्म या किसी की भी धारणा करके उसमें अपने मन को स्थिर करके उसमें ही लीन हो जाता है। अगर आप मानव जीवन में ध्यान करते है तो इससे आपकी एकाग्रता बढती है। ध्यान के करने से आप चीजों पर ज्यादा फोकस कर पाते है आपके अंदर आध्यात्मिक शक्तियों का जागरण होने लगता है आपका मन प्रसन्न और सदा चित खुश रहने लगता है।

**8. समाधि –**

ध्यान की उच्च अवस्था को समाधि कहते है। इस अवस्था में विचार शून्य हो जाते है। जो व्यक्ति समाधि को प्राप्त करता है उसे स्पर्श, रस, गंध, रूप, एवं शब्द इन 5 विषयों की इच्छा नहीं रहती तथा उसे भूख–प्यास, सर्दी–गर्मी, मान–अपमान तथा सुख–दुःख आदि किसी की भी अनुभूति नहीं होती। ऐसा व्यक्ति शक्ति संपन्न बनकर अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। उसके जन्म–मरण का चक्र समाप्त हो जाता है।

**निष्कर्षः–**

अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मानव जीवन में अष्टांग योग हर प्रकार से महत्वपूर्ण है। अष्टांग योग जीवन को सुखमय बनाने से लेकर अगर आप मोक्ष तक के मार्ग पर आगे बढना चाहते है तो आपको अष्टांग योग को जीवन में उतारना होगा। अष्टांग योग सभी प्रकार के दुःखों को दूर करने के लिए एक चाबी का काम करता है।

**सन्दर्भः–**


– रोग और योग स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

– योग साधन व योग चिकित्सा रहस्यः स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

– प्राणयाम, मुद्रा, बंध स्वामी सत्यानन्द रामदेच यषिट संहिता 5

– योग दर्शन पं श्री राम आचार्य

– योगासन स्वामी कुवलयानन्द जी

– शरीर विज्ञान और योगाभ्यास डॉ0 मकरंद मधुकर गोर

– योग परिचिय डॉ0 पीताम्बर

– आधुनिक असामान्य मनोविज्ञानः अरूण कुमार सिंह

– मनोविकृति एवं उपचार जी डी रस्तोगी

– भारतीय मनोविज्ञान डॉ0 रामनाथ शर्मा

– प्राणयाम रहस्य स्वामी रामदेव

– Rl The Yogic Practice: Asanas, Pranayamasand Kriyas. Understanding Medical Physiology, 3rd Edition Jaypee Brothers Medical Publishers, New Delhi, India 2004: 883-889

- Crapo Ro; Pulmonary function testing Engl J Med., 1994; 331 ( 1 ): 25-30

# भटनेर दुर्ग साम्प्रदायिक सद्भावना का केन्द्र

**पुष्पा**
शोधार्थी
टांटिया यूनिवर्सिटी, श्रीगंगानगर

**डॉ. अनिल कुमार सिहाग**
शोध निर्देशक
टांटिया यूनिवर्सिटी, श्रीगंगानगर

**सारांश**

भारतीय इतिहास की संस्कृति की एक विशेषता साम्प्रदायिक सद्भावना है। भारत की भूमि पर समय–समय पर अनेक राजवंशों ने शासन किया है और उन राजवंशों द्वारा अपनाये गये धर्म को वहाँ के लोगों द्वारा भी अपनाया गया। साम्प्रदायिक सद्भावना का प्रत्यक्ष उदाहरण भटनेर दुर्ग को माना जाता है। यह दुर्ग राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में स्थित है। भटनेर दुर्ग के भीतर अलग–अलग समुदायों के लगभग 10 पूजा स्थलों को देखा जा सकता है जो कि धार्मिक समन्वय का प्रतीक है। अलग–अलग समुदायों के पूजा स्थल और मूर्तियाँ आज भी सुरक्षित है जिससे यह पता चलता है कि वहाँ शासन करने वाले राजाओं और उनकी प्रजा के मध्य धार्मिक समन्वय उच्च विचारों का था। वर्तमान में भी भटनेर (हनुमानगढ़) के निवासी विशेष अवसरों पर इन पूजा स्थलों पर पूजा अर्चना करने के लिए दुर्ग में जाते हैं।

**प्रस्तावना**

किसी भी क्षेत्र विशेष के लोगों द्वारा आपसी मेलजोल, भाईचारे की भावना, दूसरों के धर्म के प्रति सम्मान की भावना इस बात की आरे संकेत देती है कि वहाँ के लोगों में साम्प्रदायिक सद्भावना कैसी है? किस प्रकार अलग–अलग धर्मों के लोग आपस में समन्वय स्थापित करके रहते हैं? साम्प्रदायिक सद्भावना का प्रत्यक्ष उदाहरण हनुमानगढ़ (भटनेर) में रहने वाले निवासी हैं। यहाँ के निवासी अलग–अलग सम्प्रदायों को मानते हैं और यहाँ पर उनके अलग–अलग धार्मिक स्थल बने हुए हैं जिनमें वह पूजा अर्चना करने के लिए जाते हैं यहां के निवासी एक–दूसरे के धर्म का सम्मान करते हैं और एक–दूसरे के धार्मिक विचारों, रीति–रिवाजों, उत्सवों, मेले और त्योहारों का सम्मान करते हैं।

**अध्ययन के उद्देश्य**

1. प्रस्तुत लेख का उद्देश्य साम्प्रदायिक सद्भावना के प्रति शोधार्थियों का ध्यान आकर्षित करना है।
2. साम्प्रदायिक सद्भावना के प्रति भावी पीढ़ी का ध्यान आकर्षित करना है।
3. दूसरों के धर्म के प्रति सम्मान करना है।
4. साम्प्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देना और मजबूत करना है।

**भटनेर दुर्ग के प्रमुख धार्मिक स्थल**

भटनेर दुर्ग के भीतर अलग–अलग सम्प्रदाय के लगभग 10 पूजा स्थल स्थित है। दुर्ग के मुख्य द्वार से अन्दर प्रवेश करने पर लगभग 100 मीटर की दूरी पर सामने हनुमान जी का मन्दिर स्थित है यह मन्दिर हनुमानगढ़ ही नहीं बल्कि दूरदराज के क्षेत्रों के लोगों का भी आस्था का केन्द्र है। इस मन्दिर का निर्माण बीकानेर के शासक सूरतसिंह द्वारा 1805 ई. में भटनेर दुर्ग को जीतने की खुशी में किया गया था। उस दिन मंगलवार का दिन था तथा सूरतसिंह की हनुमान जी पर गहरी आस्था होने के कारण उन्होंने दुर्ग में हनुमान जी का मन्दिर बनवाया। यहाँ पर दूर–दूर से लोग दर्शन करने के लिए आते हैं।

यहाँ से आगे चलने पर तीन द्वार नजर आते हैं। इन द्वारों को पार करके आगे बढ़ने पर दुर्ग के भीतरी भाग में प्रवेश किया जा सकता है। दुर्ग के भीतरी भाग में प्रवेश करते ही सामने करणी माता मन्दिर नजर आता है। करणी माता मन्दिर का निर्माण राजपूत शासकों द्वारा किया गया था। यह मन्दिर राजपूत सम्प्रदाय का धार्मिक स्थल है।

करणी माता मन्दिर के समीप ही रामदेव जी का

मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर साम्प्रदायिक सद्भावना का प्रतीक माना जाता है। रामदेव जी को साम्प्रदायिक सद्भाव के लोक देवता के रूप में जाना जाता है। हिन्दू लोग उन्हें रामदेव जी तथा मुसलमान लोग उन्हें रामसापीर कहते हैं।

हनुमान मन्दिर

करणी माता मन्दिर

रामदेव मन्दिर

जैन मन्दिर

शिव मन्दिर

मुरली मनोहर मन्दिर

रामदेव जी मन्दिर से कुछ दूरी पर जैन सम्प्रदाय का मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर 16वें जैन तीर्थकर शान्तिनाथ को समर्पित है। यह मन्दिर एक ऊंचे टीले पर बना है। यह मन्दिर 6वीं शताब्दी में बनवाया गया था।

जैन मन्दिर से कुछ दूरी पर भगवान शिव का मन्दिर (भूपतेश्वर धाम सदाशिव मन्दिर) स्थित है। यह मन्दिर 1300 वर्ष पुराना है। इस मन्दिर का निर्माण भाटी राजा भूपत भाटी की याद में करवाया गया था। उन्हीं के नाम पर मन्दिर का नाम भूपतेश्वर धाम सदाशिव मन्दिर रखा गया है। शिव मन्दिर में एक जाल वृक्ष भी है जो जनश्रुतियों के अनुसार 500 वर्ष पुराना बताया जाता है। फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि के उपलक्ष्य में यहाँ पर विशाल मेले व उत्सव का आयोजन होता है। दूर–दूर से लोग इस शिव मन्दिर में दर्शन करने के लिए आते हैं।

शेर खाँ दरगाह

मामा भानजा दरगाह

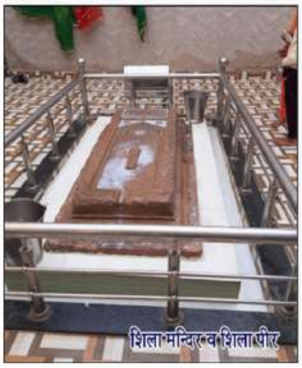
शिला मन्दिर व शिला पीर

सुखा सिंह महताब सिंह गुरुद्वारा

दुर्ग में नाथ सम्प्रदाय का गोरखनाथ का मन्दिर भी स्थित है। इनको भगवान शिव का अवतार माना जाता है। दुर्ग में भगवान श्री कृष्ण और राधा जी का मुरली मनोहर मन्दिर स्थित है। यहाँ पर कृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण अष्टमी) के अवसर पर बहुत अधिक संख्या में दर्शनार्थी दर्शन करने के लिए आते हैं।

दुर्ग में मुस्लिम सम्प्रदाय की दरगाह भी स्थित है जिनमें से एक मामा पीर की दरगाह, एक भांजापीर की दरगाह और एक शेर खाँ की दरगाह स्थित है। इन दरगाहों पर यहाँ के निवासियों और दूर–दराज के लोगों की गहरी आस्था है। उनकी मन्नत पूरी होने पर वे इस पर चद्दर चढ़ाते हैं। मुस्लिम लोगों के साथ–साथ हिन्दू लोगों की भी इस पर गहरी आस्था है।

भटनेर दुर्ग के बाहर कुछ ही दूरी पर दो धार्मिक

स्थल स्थित है जिनमें से एक सिक्ख सम्प्रदाय का पवित्र स्थान गुरूद्वारा श्री सुखासिंह मेहताब सिंह स्थित है। यहाँ प्रत्येक माह की अमावस्या को जोड़ मेला लगता है। गुरूद्वारे के समीप ही दूसरा धार्मिक स्थल शीला माता का मन्दिर है। प्रत्येक माह के शुक्ल पक्ष के गुरूवार को यहाँ पर श्रद्धालु दूर–दूर से दर्शन करने के लिए आते हैं। यहाँ पर दर्शन करने वाले लोगों को चर्म रोगों से मुक्ति मिलती है। यह मन्दिर हिन्दू–मुस्लिम समन्वय का प्रतीक है। हिन्दू सम्प्रदाय के लोग इसे शिला माता मान कर पूजा करते हैं। जबकि मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग इसे शिला पीर मानकर पूजा करते हैं और उनकी मन्नत पूरी होने पर वह इस चद्दर चढ़ाते हैं।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


1. भाटी हरिसिंह, गजनी से जैसलमेर भाटियों का पूर्व मध्यकालीन इतिहास, सांखला प्रिन्टर्स, बीकानेर 1998

2. ओझा, डॉ. गौरी शंकर हीराचन्द्र, बीकानेर राज्य का इतिहास भाग–प्रथम वैदिक मंत्रालय, अजमेर 1939

3. भाटी हरिसिंह, पूगल का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर 1989

4. व्यक्तिगत साक्षात्कार सुरेन्द्रपाल गुप्ता प्राचार्य राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भटनेर दुर्ग एवं पुजारी शिव मन्दिर, भटनेर दुर्ग दिनांक 12/08/2022

5. शोधार्थी द्वारा अवलोकन, भटनेर दुर्ग दिनांक 13/08/2022

6. भटनेर दुर्ग–हनुमानगढ़ पर्यटक सूचना फोल्डर, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, जयपुर मण्डल, जयपुर 2010

7. डॉ. विक्रम भाटी, राजस्थान के लोग देवता राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर 2017

8. मनोहर, राघवेन्द्र सिंह, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2013

# नारी विषयक समाचारों की सनसनी खेज प्रस्तुति

**डा. किरण त्रिवेदी**
मो.नं. 807636400
फ्लैट नंबर 209, द्वितीय तल, मुदित मेंशन पाल लिंक रोड,
जोधपुर, राजस्थान
मेल आई.डी.–drkiran.jnu@gmail.com

नवयुग के पदार्पण के पश्चात् आज की स्त्री की स्थिति में अधिक सुधार नहीं हुआ है। पितृ सत्ता ने अपने बनाये हुए मकड़जाल में स्त्री को इस तरह कैद कर रखा है कि वह उससे बाहर ही नहीं निकल पाती। नारी के प्रति आज भी सोच वैसी हीश्पुरानी है।

21वीं सदी में मीडिया की भूमिका बदल चुकी है। मीडिया, पूंजीवाद से साफ–साफ प्रेरित ही नहीं उससे पूरी तरह सराबोर भी हो चुका है। वर्तमान परिदृश्य में घटनाक्रम तथा मीडिया के तेवर भी बदले हैं। शुरुआत में समाचार पत्र यानि मुद्रित माध्यम ही एकमात्र विकल्प था, आज आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स तथा इन्टरनेट के तेज माध्यमों में स्त्री संबंधित हर तरह कि घटनाओं को वैश्विक सीमाओं के परे प्रसारित करने का काम किया है फिर वो चाहे फ्रिज में टुकडों में रखी खबर हो (श्रद्वा मर्डर केस)।श्आज के युग में किसी भी प्रकार की आपराधिक घटना के प्रस्तुतीकरण में से सौम्यता का तत्व लगभग नदारद हो चला है।श्इस सदी की घटनाएं जितनी क्रूर तथा अविश्वसनीय हो चली हैं उतनी ही आक्रामक एवं सनसनी फैलाने वाली भूमिका, मीडिया की हो गई है। यानि घटनाओं का प्रस्तुतीकरण आक्रामक हो चला है। मीडिया की भूमिका पर कई बार सवाल भी खड़े किए गए। कभी इन्हें राजनीतिक पार्टियों के दलाल के रूप में तो कभी पश्चिमी विकसित राष्ट्रों के मीडिया की नकल करने वाला भी कहा गया।

मीडिया के तीखे तेवरों के कारण समाचारों का जायका भी तीखा हो रहा है। यही कारण है कि दैनिक समाचार पत्र में आपराधिक समाचारों की संख्या में पहले की अपेक्षा अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। किसी भी त्रासदी, युद्ध, बड़े घटनाक्रम तथा अपहरण केश्समय मीडिया कवरेज में सिर्फ विषाद, करुणा एवं दुःख के स्थान पर कई अन्य तत्व भी लक्षित होते हैं जैसे सनसनी, उत्साह, जातीय आधार पर रिपोर्टिंग, छोटी–छोटी बातों की खींचतान तथा गौण मुद्दों को बढ़ा–चढ़ाकर पेश करने की प्रवृत्ति। वर्तमान में समाचारों काश्बाजारीकरण बढ़ चला है। यही कारण है कि महिलाओं से संबंधित खबरें न सिर्फ बढ़ाचढ़ाकर प्रकाशित एवं प्रसारित की जाती हैं, बल्कि उनकी संख्या इतनी बढ़ गई है कि आपराधिक प्रकरणों के लिए हर समाचार टी.वी. चौनल के पास दो से अधिक विशेष कार्यक्रम ऐसे हैं जिनमें सिर्फ सनसनीखेज समाचार ही प्रसारित होते हैं। उदाहरण– स्टार न्यूज पर सनसनी, जी– न्यूज पर क्राइम रिपोर्टर, सोनी टीवी पर क्राइम फाइल तथा इंडिया टी.वी. पर मोस्ट वांटेड।

महिलाओं पर रोजाना हो रहे अत्याचार नए नहीं है, लेकिन उन्हें विभिन्न तरीकों द्वारा अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग व्यक्तियों द्वारा दोहराया जाता है। बलात्कार चाहे दिल्ली में हो या जोधपुर में, मीडिया का अपना अलग तरीका होता है जिस तरह से उसे प्रस्तुत किया जाता है। समाचार माध्यमों में जब सनसनीखेज नारी विषयक समाचारों का चयन किया जा रहा था, यही तथ्य स्पष्ट होता गया कि अपराध के समाचारों से समाचार पत्रों के पन्ने भरे हुए हैं आज समाचार पत्रों में किस प्रकार की सामग्री प्रकाशित हो रही है, इसका ध्यान बहुत कम समाचार पत्रों में रखा जाता है।

आजकल 'पाठक' की जगह 'ग्राहक' शब्द चलन में आ गया है। अखबार एक वस्तु में तब्दील हो गया है। जिस अखबार के जितने ज्यादा ग्राहक है वहीं प्रथम स्थान पर माना जाता है। इसका दूसरा अर्थ यह है कि जिस समाचार पत्र की प्रसार संख्या अधिक है वही समाचार पत्र अच्छा

माना जाता है। अच्छे लेखन, रिपोर्टिंग, पठनीय सामग्री, विश्वनीयता के पैमाने प्रसार संख्या के मुकाबले दूसरे स्थान पर आ चुके हैं। समाचार पत्रों में बढ़ती 'पेज–3' संस्कृति तथा उसके चमक–दमक भरे रंगीन पन्नों में ग्लैमर, कामुकता, चटपटापन और इनसे कहीं बढ़कर सनसनी का तत्व बहुत अधिक प्रकाशित होने लगा है। कुछ प्रतिशत ही ऐसी महिलाएं हैं जिन्हें ये सब सहन नहीं करना पड़ा हो, अन्यथा पारिवारिक, सामाजिक तथा कार्यस्थल पर सामान्यतः महिलाएं कई प्रकार की व्यावहारिक समस्याओं से जूझती हैं। चाहे नर्स हो या मजदूर, शिक्षिका हो अथवा डॉक्टर, हर महिला के अपने संघर्ष हैं। आम औरत के संघर्षों, तकलीफों तथा उस परश्हो रहे अत्याचार के खिलाफ मीडिया में इस प्रकार की गहरी छानबीन नहीं होती। मैंने अपने शोध में कन्टेन्ट एनालिसस शोध विधि के आधार पर समाचारो का गुणात्मक और संख्यात्मक विश्लेषण किया जिसमें जनवरी 2002 से जून 2002 तक के प्रकाशित प्रसारित समाचारों को आधार बनाकर प्रमुख महिला संबंधित समाचारो का संकलन और विश्लेषण कर अपनी बात को कहने का प्रयास किया है। दैनिक भास्कर समाचार पत्र के 18 मार्च 2002 के अंक में मुख्य पृष्ठ पर छपी उस दिन की एक बड़ी सनसनीखेज खबर थी। 'नटवर सिंह की बहू की हत्या'1 पूर्व केन्द्रीय मंत्री और वरिष्ठ कांग्रेसी नेता नटवर सिंह की पुत्रवधू नताशा सिंह आज सुबह दक्षिण दिल्ली के एक पांच सितारा होटल हयात रिजेंसी में मृत पाई गई। पुलिस के अनुसार यह हत्या का मामला है। 25–26 वर्षीया नताशा की पीठ में दो औरश्सिर पर एक घाव है। कुछ रिपोर्टो में कहा गया कि ये गोलियों के निशान हैं, जबकि कुछ में कहा गया है कि ये घाव इटली में प्रचलित धारदार हथियार (गुप्ती जैसे) स्टिलेडो के हैं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक नताशा के शरीर पर न तो गोलियों के निशान है और न ही कोई गहरी चोट है। नताशा के मोबाइल पर एक संदेश मिला है जो कल आधी रात के बाद उसने अपने दोस्तों को भेजा था। यह संदेश है– मैं दूसरी दुनिया में जा रही हूं। उसने ऐसा ही संदेश अपने पति को भी भेजा था जिसमें कहा गया था–टेक केयर ऑफ माई चिल्ड्रन, आई एम गोइंग टू एनादर वर्ल्ड।' 'जनसत्ता' तथा 'राजस्थान पत्रिका' समाचार पत्र में भी इस समाचार को प्रमुखता 2 से प्रकाशित किया गया है। इस घटना के घटित होते ही सभी समाचार पत्रों तथा समाचार चौनलों के क्राइम रिपोर्टरों को एक अच्छी–खासी 'स्टोरी' मिल गई। अब तो राई और तिल जैसी सूचना, जो नताशा से जुड़ी हुई हो, की छानबीन शुरू हो गई। दूसरे ही दिन से मीडिया की सीधी नजरें इस केस पर टिक गई। दिलचस्प बात यह है कि इस केस को शुरू से अंत तक राजनीतिक रंग में डूबा देने की मीडिया की पूरी कोशिश रही। सनसनीखेज खबरों में राजस्थान पत्रिका समेत अन्य समाचार पत्रों में छपी कुछ खबरें इस प्रकार हैं– 'बालून्दा नहीं दिया तो विवाहिता को जहर देकर मारा'2 'जोधपुर, 14 जून। संतान के जन्म के बाद बालून्दा (गहने व कपड़े) आदि नहीं दिया तो लोभी ससुराल वालों ने विवाहिता को जहर देकर मारने का कुचक्र रचा। पीड़िता ने आठ दिन तक अस्पताल में भर्ती रहने के बाद दम तोड़ दिया। उसके पिता की रिपोर्ट पर पुलिस ने दहेज हत्या का मामला दर्ज कर आरोपी जेठ व पति को गिरफ्तार किया है। उसने गुरुवार देर रात दम तोड़ दिया। शिल्पा के ससुराल वालों ने लंबी–चौड़ी मांगे रखी। इन मांगों से तंग आए गोपीलाल कुछ समय तक इसे टालते रहे। 'दैनिक भास्कर' में 01 अप्रैल 2002 में प्रकाशित एक समाचार –'पत्नी और अबोध पुत्र को जिंदा जला दिया'3 सास से खटपट तथा पति के हाथों पिटती मुन्नी देवी को उसके अबोध पुत्र के साथ निर्दयी पति ने जिंदा जला दिया। घर बदर होने और न्याय पंचायत की मध्यस्थता से हाल ही होली पर ससुराल गई मुन्नी देवी को रविवार तड़के अपने झोपड़ीनुमा कमरे में पुत्र सहित अग्निस्नान झेलना पड़ा। घरेलू हिंसा के दायरे में रिश्तों के बिगड़ते समीकरण तथा उनका व्यक्ति विशेष पर नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव व्यावहारिक असमान्यता को बढ़ावा देता है। 'दैनिक भास्कर' समाचार पत्र की एक खबरः– 'प्रेत भगाने के चक्कर में पत्नी को जला डाला'4 प्रेत छाया से मुक्त करने का बहाना बनाकर पत्नी को क्रूरता पूर्वक जलाने का मामला पोकरण थाने में दर्ज हुआ। पीहरपक्ष को समाचार मिलने पर ससुराल में जली हुई हालत में पिछले 6 दिनों से भूखी–प्यासी पड़ी लड़की को लाकर पोकरण चिकित्सालय में भर्ती करवाया। जिन्नत द्वारा पुलिस को दिए बयानों के अनुसार शादी के कुछ समय बाद ही मामूली सी बात को लेकर ससुराल वालों द्वारा मारपीट की जाती थी। घायल जिन्नत ने बताया कि पति

उमर के साथ जेठ रहमान खां एवं जेठानी अमीना ने मेरे ऊपर प्रेत छाया का प्रकोप होने की आशंका प्रकट करते हुए रात को एक बजे तीनों ने मिलकर पहले तो आग जलाकर उस पर पिसी मिर्ची डालकर उसका धुआं में आंख व नाक में घुसाया गया। तत्पश्चात मुझे बेरहमी के साथ जला दिया। महिलाओं को प्रेत बाधा या डायन की आड़ में विभिन्न मानसिक, शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रताड़नाएं दी जा रही हैं 'राष्ट्रीय सहारा' समाचार–पत्र में एक फीचर गीताश्री द्वारा लिखित है जो जोगिन बनने की प्रथा पर लिखा गया है–'जबरन जोगिन बनने पर मजबूर'5–आधुनिक राज्यों में गिने जाने वाले राज्य आंध्र प्रदेश के कुछ गांवों में आज भी दो हजार साल पुरानी 'जोगिन' बनाने की कुप्रथा कायम है। जोगिन गांव के दलित समुदाय के कथित देवता की ब्याहता होती है, मगर एक तरह से सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर उपेक्षित महिला की जिंदगी गुजारती है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में 3000 जोगिनें पहचानी गई। ग्रामीण इलाकों के इतर शहरी क्षेत्रों में घर तथा बाहर हो रही अमानवीय घटनाओं की श्रेणी में एक समाचार इस प्रकार है–'सौतेले पिता ने किया बलात्कारी'6 – इंसानियत को शर्मसार करते वाले एक कृत्य में सौतेले पिता द्वारा विवाहिता पुत्री के साथ चौबीस दिन तक सिरडी में बंधक बनाकर बलात्कार करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। बासनी पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर तफ्तीश आरंभ की है। कुड़ी भगतासनी निवासी श्रीमती जमना (30) पत्नी ओमप्रकाश सुथार की माता ने बेवा होने के बाद रामसिंह से विवाह कर लिया था। घरेलू परेशानियों के चलते जमना कुछ समय के लिए मां के पास चली गई लेकिन कुछ समय बाद वापस अपने घर आ 3 गई। 26 मार्च को उसने एसपी को परिवाद पेश कर सौतेले पिता पर बंधक बनाने और बलात्कार करने का आरोप लगाया। पुलिस ने परिवाद के आधार पर मुकदमा दर्ज कर तफ्तीश आरंभ की है।' यह घटना न केवल शर्मसार करने वाली है अपितु पिता जैसे सम्मानजनक रिश्ते को भी प्रश्नांकित करती है। एक अन्य समाचार जो 'राजस्थान पत्रिका' के जून 2002 की 14 तारीख को प्रकाशित हुआ, इस प्रकार है–'बहन की हत्या कर शव नदी में गाड़ा'7–जसवंतपुरा थाना क्षेत्र के दांतलावास गांव में घर से भागने से खफा होकर एक भाई ने गुरुवार रात अपनी सगी बहन की हत्या कर दी। भीनमाल पहुंचकर वहां उन्होंने शराब खरीदी तथा वहीं होटल में खाना खाया। तब तारा को संदेह होने लगा। वह वहां से जान बचाकर भागी। तब उन्होंने उसे पकड़कर उसका गला दबाया तो वह बेहोश हो गई। बेहोशी की हालत में ही उस पर फावड़े से वार किया तथा हत्या के बाद शव को नदी में गाड दिया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी पिछड़ापन है जिसका मुख्य कारण अशिक्षा है। जहां जातिवाद, परिवार की मान–मर्यादा तथा प्रेम–विवाह को लेकर अतिसंकीर्ण मानसिकता व्याप्त है, 'ऑनर किलिंग' इसि श्रेणी का अपराध है। शोध के समय यह तथ्य भी उभर कर आया कि शहर हो या गांव, महिलाएं कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं। 'महिला ने छह बच्चों को जहर देकर खुदकुशी की'11'(सहारा समाचार) हापुड़–गाजियाबाद, 11 अप्रेल बीमारी, आर्थिक तंगी से परेशान एक महिला ने कल रात अपने छह बच्चों को जहर देकर मार डाला तथा खुद भी जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या कर ली।'

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्त्री पर हो रहे अत्याचारों का मीडिया में सनसनीखेज ढंग से प्रस्तुतीकरण किया जा रहाश्है। इस तरह की घटनाएं भले ही सामाचार पत्रों की पाठक संख्या में वृद्धि करती हो पर आज भी सवेंदनशीलता की हममें कमी है।

अतः जब तक समाज व सरकार स्त्रियों की सुरक्षा के लिए पुख्ता कदम नहीं उठायेगी उस पर अत्याचार होते ही रहेंगे। इसलिए हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम स्त्रियों के प्रति संवेदनशील बने तब ही नारी समाज में सम्मानजनक ढंग से जी सकती है।

**संदर्भ** :–

विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित महिला संबंधित समाचार
1. दैनिक भास्कर, 18 मार्च, 2002
2. राजस्थान पत्रिका, 15 जून, 2002
3. दैनिक भास्कर, 1 अप्रैल, 2002
4. दैनिक भास्कर, 5 अप्रैल, 2002
5. राष्ट्रीय सहारा, 29 जनवरी, 2002
6. दैनिक भास्कर, 7 अप्रैल, 2002
7. राजस्थान पत्रिका, 15 जून, 2002
8. दैनिक भास्कर, 22 मई, 2002
9. जनसत्ता, 14 मई, 2002
10. जनसत्ता, 30 मई, 2002
11. राष्ट्रीय सहारा, 12 अप्रेल 2002

# Development of the Scientific View of Educational Life

**Dr. Savita Gupta**
Professor
Lords University,Chikani Alwar

**Abstract**

The scientific study of education, often referred to as educational science, has evolved significantly over the centuries. From early philosophical debates to the current interdisciplinary approach that blends psychology, sociology, neuroscience, and pedagogy, the scientific view of educational life has shaped how societies understand learning, teaching, and educational policy. This paper traces the development of this scientific view, starting from ancient philosophical traditions, through the Renaissance, Enlightenment, and Industrial Revolution, to the modern era of empirical research and evidence-based practices in education. It also examines the role of key figures, such as John Dewey, Jean Piaget, and Lev vygotsky, whose theories have profoundly influenced educational paradigms. The development of educational psychology, cognitive theories, the application of neuroscience to learning, and the rise of educational technology are also discussed. This work concludes by reflecting on the current state of educational research, its challenges, and potential directions for future advancements.

**Introduction**

The term "scientific view" in the context of education refers to an empirical, evidence-based understanding of learning and teaching processes. Historically, education has been shaped by philosophical, religious, and cultural ideals. However, the modern scientific approach to education, grounded in observation, experimentation, and data analysis, has become more prominent over the last few centuries. Educational research today draws on multiple disciplines, including psychology, sociology, and cognitive science, to inform practices and policies. This paper aims to trace the development of this scientific view, highlighting key milestones in educational theory and practice.

**Early Foundations of Educational Thought**

**Ancient Philosophical Contributions**

The scientific exploration of education began long before the advent of modern research methodologies. Early philosophical thinkers, such as Plato and Aristotle, provided the first significant frameworks for considering education. Plato's Republic proposed a form of education designed to cultivate justice, virtue, and rationality in citizens. Aristotle, while emphasizing the importance of empirical observation, also argued for a balanced education that would develop both intellectual and moral virtues.

The influence of Greek philosophy extended well into the Roman era, where figures like Quintilian further developed the concept of paideia, the system of education that was integral to public life. These philosophical foundations laid the groundwork for the eventual development of educational science, though they did not yet employ the modern scientific methods of observation and experimentation.

Medieval Education and Scholasticism

During the Middle Ages, educational

practices were primarily influenced by religious institutions. Scholasticism, which sought to reconcile faith with reason, shaped educational systems in Europe. Figures like Thomas Aquinas emphasized the importance of logic, philosophy, and theology in the development of the mind. However, the scholastic tradition did not fully embrace empirical methods, and as such, the scientific approach to education remained largely underdeveloped during this period.

**The Renaissance and Enlightenment: Seeds of Scientific Education**

**Renaissance Humanism and Education**

The Renaissance period saw a renewed interest in humanism, emphasizing the development of the individual through education. Scholars such as Erasmus and Michel de Montaigne advocated for educational reforms that emphasized critical thinking, moral development, and the exploration of human nature. While still rooted in classical traditions, Renaissance humanists began to advocate for a more individualized, student-centered approach to learning.

**The Enlightenment and the Rise of Empirical Methods**

The Enlightenment marked a crucial turning point in the development of educational science. Thinkers like John Locke and Jean-Jacques Rousseau shifted the focus of education from moral and religious instruction to the development of reason and scientific inquiry. Locke's Some Thoughts Concerning Education (1693) emphasized the importance of experience in shaping knowledge, while Rousseau's Emile (1762) advocated for an education that was tailored to the child's developmental needs, free from societal constraints. The Enlightenment thinkers also laid the intellectual groundwork for the development of psychology and the scientific method, both of which would play pivotal roles in the modern study of education. The application of empirical, scientific approaches to human behavior in the 19th century would become central to educational research in the following centuries.

The 19th Century: Establishing Educational Psychology

**The Birth of Educational Psychology**

The 19th century saw the emergence of educational psychology as a distinct discipline. Figures like Johann Herbart and William James emphasized the scientific study of learning and teaching. Herbart, often considered the father of modern educational psychology, argued that education should be grounded in the psychology of the learner. He emphasized the role of interest, attention, and memory in the learning process.

William James, in his influential work Principles of Psychology (1890), emphasized the importance of individual differences in learning. His work laid the foundation for later research on cognitive development and the psychology of learning.

**John Dewey and Progressive Education**

One of the most influential figures in the development of the scientific view of education in the 20th century was John Dewey. Dewey's philosophy of education, known as pragmatism, emphasized the importance of experience and active learning. In works such as Democracy and Education (1916), Dewey argued that education should be grounded in the experiences of the learner and that schools should function as communities that prepare students for democratic citizenship.

Dewey's progressive education movement sought to make learning more experiential, collaborative, and student-centered. His ideas were grounded in the belief that education should not simply transmit knowledge but should also foster critical thinking, problem-solving, and social interaction. Dewey's work was groundbreaking in its integration of psychological principles into educational practice.

**The 20th Century: Cognitive and Social Learning Theories**

**Jean Piaget and Cognitive Development**

Jean Piaget's theory of cognitive development had a profound influence on the scientific understanding of learning. Piaget proposed that children pass through distinct stages of cognitive development, each of which involves qualitatively different ways of thinking and understanding the world. His work shifted the focus of educational research from behaviorism to a deeper understanding of how children think and learn at different ages.

**Lev vygotsky and Social Constructivism**

Lev vygotsky, a Soviet psychologist, further expanded the understanding of cognitive development by introducing the concept of the Zone of Proximal Development (ZPD). vygotsky's theory emphasized the social nature of learning, arguing that children learn best when they interact with more knowledgeable individuals. His work on scaffolding-providing temporary support to learners-has become central to modern educational practices.

vygotsky's ideas laid the foundation for the social constructivist approach to education, which stresses the importance of social interaction, collaboration, and cultural context in the learning process.

**The Modern Era: Neuroscience, Technology, and Evidence-Based Practices**

**Cognitive Neuroscience and Learning**

In the late 20th and early 21st centuries, advances in neuroscience have provided new insights into how the brain processes information and how learning occurs at the neural level. The application of neuroscience to education, often referred to as educational neuroscience, has led to a better understanding of how memory, attention, emotion, and motivation affect learning. Researchers have explored topics such as the role of neuroplasticity in learning, the impact of sleep on memory consolidation, and the effects of different teaching strategies on brain development.

Neuroscientific research has also prompted educational reforms focused on the importance of early childhood education, as brain development in the early years has been shown to have a significant impact on lifelong learning outcomes.

**Educational Technology and Innovation**

The rise of digital technologies has revolutionized the way education is delivered and experienced. Online learning platforms, interactive multimedia, artificial intelligence (AI), and virtual reality (VR) are increasingly being integrated into educational practices. These technologies have opened new possibilities for personalized learning, where students can receive tailored instruction based on their individual needs and learning styles.

**Conclusion**

The development of the scientific view of education has been a complex and multifaceted process, driven by contributions from philosophy, psychology, neuroscience, and technology. From the early philosophical musings of Plato and Aristotle to the modern integration of neuroscience and educational technology, the field of education has become increasingly scientific, grounded in empirical research and data-driven practices.

The scientific study of education has not only transformed how we understand the process of learning but has also shaped educational practices and policies around the world. As new technologies and scientific discoveries continue to emerge, the scientific view of education will likely evolve further, offering new insights and opportunities for improving learning outcomes.

**References**

1. Dewey, J. (1916). Democracy and Education: An Introduction to the Philosophy of Education. Macmillan.

2. James, W. (1890). The Principles of Psychology. Henry Holt and Company.

3. Locke, J. (1693). Some Thoughts Concerning Education. Awnsham Churchill.

4. Piaget, J. (1952). The Origins of Intelligence in Children. International Universities Press.

# वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में नवाचार की भूमिका का अध्ययन

**प्रो. (डॉ.) विक्रम सिंह औलख**
शिक्षा संकाय,
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़

**प्रस्तावना :**

शैक्षिक नवाचार शिक्षा की विकासोन्मुख रहने वाली प्रक्रिया को प्रदर्शित करने वाली एक नवीन अवधारणा है। नवाचार शब्द का प्रयोग वैज्ञानिक विकास के युग में शैक्षिक तकनीकी के नवीन प्रावधानों के कारण शैक्षिक नवाचार का महत्व बढ़ गया है। अन्तराष्ट्रीयता, वैश्वीकरण और जनसंचार के आधुनिक संसाधनों ने इसे आज के युग की एक आवश्यकता के रूप में स्थापित कर दिया है। नवाचार परिवर्तन तक सीमित नहीं होते। समाज में भी प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। पुरानी मान्यताओं के स्थान पर नवीन मान्यताएँ जन्म ले रही है। पुरातन विचार जा रहे है नूतन विचार आ रहे है। जल स्थिर रहेगा तो सड़ेगा ही। जल का प्रभाव जारी रहेगा अर्थात पुराने जल का स्थान नया जल लेता रहेगा तो जल शुद्ध रहेगा। इसी प्रकार जो समाज स्थिर यथावत स्थिति में बना रहना चाहता है। नवीन विचारों को ग्रहण नहीं करता वह जीवित नही रह सकता है। नये–नये विचारों को ग्रहण करने से समाज को नया जीवन प्राप्त होता है। उसी प्रकार अपेक्षित परिवर्तनों से शिक्षा में नवीन चेतना आती है। नयी स्फूर्ति आती है। ये परिवर्तन शिक्षा में नवीनता लाते है और शिक्षा आगे की और बढ़ती है। शिक्षा प्रगति पथ पर अग्रसर होती है।

**शिक्षा में नवाचार :**

प्रत्येक वस्तु या क्रिया में परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परिवर्तन से ही विकास के चरण आगे बढ़ते है। परिवर्तन एक जीवन्त, गतिशील और आवश्यक क्रिया है, जो समाज को वर्तमान व्यवस्था के अनुकुल बनाती है। परिवर्तन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होते हैं इन्हीं परिवर्तनों से व्यक्ति और समाज को स्फूर्ति, चेतना, ऊर्जा एवं नवीनता की उपलब्धि होती है।

परिवर्तन अच्छा है या बुरा इस संबंध में शिक्षाविद् किल पैट्रिक की स्पष्ट अवधारणा है– "परिवर्तन विचारधीन बात का पूर्ण या आंशिक परिवर्तन है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि परिवर्तन अच्छी बात के लिए है या बुरी बात के लिए।"

इस प्रकार परिवर्तन की प्रक्रिया विकासवादी, संतुलनात्मक एवं नव गत्यात्मक परिवर्तन से जुड़ी होती है। परिवर्तन समाज की माँग की स्वाभविक प्रक्रिया से जुड़ा तथ्य है। इसलिए परिवर्तन नवाचार और शिक्षा का आपसी सम्बन्ध स्पष्ट है–

शिक्षा

परिवर्तन — नवाचार

नवाचार कोई नया कार्य करना मात्र नहीं वरन् किसी भी कार्य को नये तरीके से करना ही नवाचार है।

**शैक्षिक नवाचारों से संबन्धित पृष्ठभूमि :**

परिवर्तन ही सृष्टि का शाश्वत् नियम है। परिवर्तन से सृष्टि में नवीनता आती है। प्रतिक्षण सृष्टि मे परिवर्तन हो रहा है। पेड़ों पर मृदु कोपलें निकलती है जो हरे पत्तों का रूप धारण करती हैं। हरे पत्ते पीले पत्तों में परिवर्तित हो जाते है। फिर पीले पत्ते भी सूख कर झड़ जाते है और इनके स्थान पर फिर नये पत्ते आ जाते है। पेड़ों की टहनियों पर पहले नन्ही–कलिकाएँ प्रार्दुभूत होती हैं। वे सुन्दर सुगन्धित पुष्प का रूप धारण करती हैं। पुष्प पहले मुरझाता है और फिर सूख कर हवा के झोकों से बिखर जाता है। प्रकृति की यह नित्य नयी नवीनता हमें सदा आकर्षित करती रहती है। प्रकृति की इस चिर नवीनता की पृष्ठभूमि में परिवर्तन की

प्रमुख भूमिका रहती है। समय परिवर्तनषील है और ब्रहमाण्ड की प्रत्येक वस्तु को यह अपने आगोश में ले लेता है।

परिवर्तन प्रकृति तक ही सीमित नही है। समाज में भी प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। पुरानी मान्यताओं का स्थान नवीन मान्यताएं ले रही हैं। पुरातन विचार जा रहे हैं, नूतन विचार आ रहे हैं। पुरातन मूल्यों का स्थान, नूतन मूल्य ग्रहण कर रहे हैं। जल स्थिर रहेगा, तो जल सड़ेगा ही। यदि जल का प्रवाह जारी रहेगा– अर्थात् पुराने जल का स्थान, नया जल लेता रहेगा, तो जल शुद्ध बना रहेगा। इसी प्रकार जो समाज स्थिर, यथावत स्थिति में बना रहना चाहता है, नवीन विचारों को ग्रहण नहीं करता है, वह जीवित नहीं रह सकता। नये–नये विचारों को ग्रहण करने से समाज को नया जीवन प्राप्त होता है। उसमें नयी स्फूर्ति आती है और वह सदा अग्रणी स्थान प्राप्त करता है। वर्तमान युग विज्ञान का युग है। इससे प्रत्येक क्षेत्र की कार्य प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन आया है। शिक्षण की वैज्ञानिक विधियों एवं संसाधनो ने शिक्षा के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है।

ज्ञान– विज्ञान के इस युग में हर क्षेत्र में परिवर्तन–युक्त नित नये–नये अविश्कार हो रहे हैं जिसकी अपनी गरिमा एवं महत्व है। समाज के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन युक्त नवीन विचारों एवं अविश्कारों को आत्मसात् करने से इन सबको नयी स्फूर्ति, नया स्वरूप एवं विकास के नये रास्ते मिले हैं। अतएव परिवर्तन युक्त वे साधन एवं माध्यम जिन्होने व्यक्ति के व्यवहार में नवीनता युक्त तथ्यों, मान्यताओं, विचारों का बीजारोपण करके व्यक्ति को नवीन प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख किया है, नवाचार कहलाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु नये–नये साधन एवं विधियों को शैक्षिक नवाचार कहते हैं।

'नवाचार' आँग्ल भाषा के – 'इन्नोवेयान' (Innovation) शब्द से बना है जिसकी उत्पत्ति 'इन्नोवेट' (Innovate) शब्द से हुई है। इन्नोवेट शब्द का अर्थ होता है –

(क) to introduce novelties (नवीनता लाना)।

(ख) to make changes (परिवर्तन लाना)।

इस प्रकार 'इन्नोवेशन का अर्थ हुआ– 'वह परिवर्तन जो नवीनता लाए'।

'नवाचार, शब्द की विभिन्न शिक्षाविदों ने निम्नलिखित परिभाषाएँ दी हैः–

– नवाचार एक ऐसा विचार, व्यवहार, अथवा पदार्थ है, जो नवीन है और वर्तमान स्वरूप में गुणात्मक दृष्टि से भिन्न है।
– वारनेट, ए.जी.

नवाचार वह विचार है, जिसकी प्रतीति, व्यक्ति नवीन विचार के रूप में करे।

– रोजर्स, ई.एम.

**नवाचार की विशेषताएं :**

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर नवाचार की विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है–

1. नवाचार एक नवीन विचार है।
2. नवाचार में कोई नवीन विशेषता पाई जाती है।
3. नवाचार एक उद्देश्यपूर्वक किया जाने वाला कार्य है।
4. नवाचार उपयोगिता की दृष्टि से किया जाने वाला कार्य है।
5. नवाचार के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों में सुधार लाने का प्रयास किया जाता है।
6. प्रचलित विधियों की अपेक्षा नवाचार को अधिक अच्छा माना जाता है।

**शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता :**

शिक्षा मनुष्य के विकास की आधारशिला है। यह मनुष्य को तात्कालिक परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति प्रदान करती है। शिक्षा की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति को होती है और प्रत्येक मनुष्य अधिक से अधिक गुणकारी शिक्षा प्राप्त करने का प्रयास करता है, परन्तु समय सापेक्ष शिक्षा को सर्व स्वीकृति प्राप्त है। ऐसी शिक्षा समाज के अनुरूप परिवर्तित होती रहती है। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। प्रकृति में नित–प्रति परिवर्तन हो रहे हैं। समाज भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा है। समाज के परिवर्तित स्वरूप के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है। मनुष्य की बढ़ती भौतिक आवश्यकताएँ, समय का अभाव एवं धन इकठ्ठा करने की लालसा ने शिक्षा के वर्तमान स्वरूप में आमूल–चूल परिवर्तन ला दिया है। शिक्षा को समय सापेक्ष बनाने के लिए इसमें नवाचारों का उदय हुआ है। संक्षेप में शिक्षा में नवाचारों की आवश्यकता को निम्नलिखित बिन्दिुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

1. इससे धन, समय एवं श्रम की बचत होती है। 2. इससे एक साथ सभी को दिशा प्रदान की जा सकती है। 3. इससे प्रत्यक्ष एवं स्थाई ज्ञान प्रदान करने में सहायता मिलती है। 4. इसके माध्यम से शिक्षा को समय–सापेक्ष परिवर्तनशील बनाया जा सकता है। 5. बढ़ती हुई जनसंख्या के अनुरूप शिक्षा सुविधाओं में वृद्धि करने के लिए। 6. विभिन्न शैक्षिक इकाइयों में समन्वय स्थापित करने के लिए। 7. शीघ्र एवं सटीक मूल्यांकन के लिए। 8. शिक्षा के गुणात्मक एवं मात्रात्मक विकास के लिए। 9. बच्चों को वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान प्रदान करने के लिए। 10. शिक्षा को सार्वजनिक एवं आसान बनाने के लिए।

**नवाचार में बाधाएं :**

किसी भी नवीन परिवर्तन को अपनाने एवं उसके क्रियान्वन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं एवं बाधाओं का वर्णन निम्नलिखित है–

**1. अपर्याप्त धन** – एक नवाचार को प्रारम्भ करने के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता होती है। पर्याप्त धन के अभाव में नवाचार के कार्यक्रमों का संचालन नहीं किसा जा सकता है। कई उत्कृष्ट नवाचारों की आवश्यकता है परन्तु धन की कमी के कारण प्रयोग नहीं किए जा पा रहे हैं।

**2. समाज का भय–** मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के कारण उसे समाज के मूल्यों, आदर्शो, परम्पराओं का सम्मान करना पड़ता है। वह इनके विरूद्ध नहीं जा सकता है। इन्हीं सामाजिक परम्पराओं के कारण वह कुछ नया सोचने में डरता है। जिससे नवाचार के विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

**3. असफलता का भय –** मनुष्य अपना प्रत्येक कार्य किसी सफलता की आशा से करता है यदि उसे आशा होती है कि किसी नवीन विचार के माध्यम से उसे भविष्य में सफलता प्राप्त होगी तो वह उस विसार को अपने मस्तिष्क में लाता है परन्तु यदि किसी नवीन विचार या कार्य के माध्यम से भविष्य में असफलता का भय होता है तो उस नवीन विचार से वह विरत हो जाता है। यह असफलता का भय नवाचार के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं।

**4. आत्मविश्वास का अभाव** –प्रायः मनुष्य में इतनी योग्यता या क्षमता नहीं होती है कि वह कोई नवीन विचार अपने मस्तिष्क में ला सके। अपनी इस आत्मविश्वास की कमी के कारण भी वह नवाचारों का प्रयोग करने में असमर्थ रहता है।

**5. उचित संगठन का अभाव** –किसी भी नवाचार का विकास करने के लिए उचित संगठन की आवश्यकता होती है। उचित संगठन के अभाव में नवाचार के मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

**6. समय का अभाव** –जब तक किसी व्यक्ति के पास पर्याप्त समय नहीं होगा तब तक कोई नवीन विचार उसके मस्तिष्क में उत्पन्न नहीं होगा। नवीन विचार के उत्पन्न न होने से वह नवीन कार्यों को करने में असमर्थ होगा। अतः नवाचार के मार्ग में सबसे बड़ी कठिनाई समय का अभाव होना है।

**7. व्यक्तित्व सम्बन्धी बाधाएं** –व्यक्तित्व मन और षरीर का गत्यात्मक संगठन होता है। इसमें व्यक्ति की आदतें, मनोवृत्तियों रूचि, नैतिकता क्षमता इत्यादि निहित होती है। इसी के आधार पर व्यक्ति अपने वातावरण एवं निहित होती हैं।

**8. अज्ञान जनित बाधाएं** –अज्ञान जनित बाधाएं निरक्षरता व अन्धविश्वास पर आधारित होती हैं। इसमें किसी नवाचार के बारें में पूर्ण रूपेण जानकारी न होना, मित्रमण्डली द्वारा नवाचारों को महत्व न देना, बिना जानकारी के नवाचारों का विरोध करना इत्यादि बातें निहित होती है।

**नवाचार की बाधाओं को दूर करने के उपाय :**

1. नवाचार को सफल बनाने के लिए ऐसे परिवेश का निर्माण करना होगा, जिसमें व्यक्ति की आदतों में वांछित परिवर्तन लाया जा सके।

2. नैतिकता की बाधा को दूर करने के लिए ग्रहणकर्ता के मन में नवाचार के प्रति विश्वास जागृत होगा।

3. असुरक्षा की भावना के उन्मूलन के लिए अधिकारियों द्वारा ग्रहणकर्ता को संरक्षण दिया जाए जिससे उसका हौंसला बढ़े।

4. असफलता की भावना को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि नवाचार के प्रयोग में सुखद अनुभव कराया जाए जिससे ग्रहणकर्ता को यह अनुभूति कराई जा सके कि वह इस कार्य में अवश्य सफल होगा।

5. सामाजिक भय को दूर करने के लिए आवश्यक है कि अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को इस स्थिति में उसके सामने ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण प्रस्तुत करने होंगे जिन्होंने समाज को अनुचित परम्पराओं का उल्लंघन करके

सफलतापूर्वक नवाचार को अपनाया है।

6. नवाचार के प्रति अज्ञानता को दूर करने के लिए आवश्यक है कि ग्रहणकर्ता को नवाचार की पूर्ण जानकारी दी जाए जिससे उसकी नवाचार के प्रति भ्रान्ति दूर हो सके।

7. नवाचार की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए मानव संसाधनों के साथ–साथ व्यक्तित्व सम्बन्धी व सामाजिक भ्रान्तियों को दूर करना अति आवश्यक है तभी नवाचार को सफलता मिल सकती है।

**नवाचार शिक्षण पद्धतियाँ :**

वर्तमान समय में शिक्षा पूर्णतया निःशुल्क एवं बाल केन्द्रित है। हमारी सरकार के द्वारा विद्यालय को सभी भौतिक सुविधाएं उपलब्ध करायी जा चुकी है जैसे– विद्यालय भवन, विद्युत व्यवस्था, पाठ्यपुस्तकें, स्कूल यूनिफार्म, मध्यान्ह भोजन, छात्रवृत्ति, शिक्षण अधिगम सामग्री के लिए धनराशि आदि। यह सत्य है कि सभी सुविधाओं से विद्यालयों में छात्र नामांकन संख्या में वृद्धि हुई है। परन्तु गुणात्मक शिक्षा में अभी भी आशानुरूप सफलता नहीं मिली है। जहाँ संख्यात्मक वृद्धि होती है वहाँ गुणात्मक वृद्धि में कमी आ जाती है। इस कमी को दूर करने के लिए आवश्यक है कि कक्षा में रूचिपूर्ण पद्धति अपनाई जाए जैसे– भ्रमण विधि खेल विधि, कहानी विधि, प्रदर्शन विधि, करके सीखना, प्रोजेक्ट विधि, केस स्टडी विधि तथा विभिन्न प्रकार की अन्य शैक्षिक गतिविधियाँ आदि।

इन नवाचारी शिक्षण पद्धतियों से शिक्षण कार्य करने में अध्यापक एवं विद्यालयों दोनों के लिए ही शिक्षण अधिगम एक रूचिपूर्ण प्रक्रिया बन सकेगी। इन पद्धतियों के माध्यम से शिक्षण कार्य सरल व सुगम ही नहीं बनता बल्कि विद्यार्थी की रूचि भी जागृत होती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के प्रमुख उद्देश्य है कि बच्चों के पुस्तकीय ज्ञान को उनके बाहरी ज्ञान से जोड़ा जाये, यह उद्देश्य भी इन पद्धतियों से प्राप्त हो सकेगा। भयमुक्त वातावरण में विद्यार्थी स्वतंत्र होकर अपना कार्य सुगमता से कर सकता है।

नवाचारी शिक्षण पद्धतियों से कौशल विकास

– अभिव्यक्ति का विकास
– अन्वेषण
– निर्णय लेने की क्षमता का विकास
– स्वं मूल्यांकन करने की क्षमता
– सृजनात्मक का विकास
– रचनात्मक विकास
– आत्म विश्वास

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नवाचार शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास तो होगा ही साथ ही उनका सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन भी हो सकेगा।

नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ

नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ निम्न है–

प्रोजेक्ट विधि, केस स्टडी, क्षेत्रीय पर्यटन, मानसिक उद्वेलन, पात्र अभिनय, प्रदर्शन विधि, खेल विधि

**निष्कर्ष :**

बालक अपने नवीन ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है इसका निहितार्थ है कि पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें शिक्षक को इस बात के लिए सक्षम बनाये कि बच्चों की प्रकृति और वातावरण के अनुरूप विद्यालय में गतिविधि एवं अनुभव आधारित कार्यक्रम आयोजित करें ताकि सभी बच्चों को विकास के अवसर मिल सकें। सक्रिय गतिविधि के जरिये बच्चे अपने आसपास की दुनिया को समझने की कोशिश करते है इसलिए प्रत्येक साधन का उपयोग इस प्रकार किया जाना चाहिए कि बच्चे को स्वयं को अभिव्यक्त करने में और स्वस्थ रूप से विकसित होने में मदद मिलें। इन नवाचारी शिक्षण पद्धतियों के प्रयोग से बच्चों को चहुमुखी विकास के अवसर प्राप्त हो सकें।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची :**


1. जीत, योगेन्द्र भाई (2006). शिक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृत्तियाँ अष्टम् संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा पृष्ठ संख्या–57

2. सिंह, आर.आर. (2007). नैतिकता के लिए षिक्षा. जयपुर : आर.वी.एस.एस पब्लिशर्स. पृष्ठ संख्या–23

3. अग्रवाल, जे.सी. (1988), ''नयी शिक्षा नीति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

4. लाल, रमन बिहारी (2004), भारतीय शिक्षा और उनकी समस्याएँ, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।

5. पाण्डेय, के.पी. (1993), ''शिक्षण व्यवहार की तकनिकी'', अमिताभ प्रकाशन

6. सिंह, माया शंकर (2007). अध्यापक शिक्षा : गुणात्मक विकास, प्रथम संस्करण, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

# Economic Impact of Waste Management Programs in Uttar Pradesh

**Prerna Singh**
Assistant Professor
Department of Economics
Isabella Thoburn College,
Lucknow

**Tashu**
(Co-authors)
Department of Economics
Isabella Thoburn College,
Lucknow

**Snehil**
(Co-authors)
Department of Economics
Isabella Thoburn College,
Lucknow

**ABSTRACT**

The accelerated urbanization, increased population and rapid industrialization has made waste management a serious global concern. The amount of waste increases as population and urbanization increases, hence it is imperative to half an effective waste management and control system in Uttar Pradesh. Currently the states waste management system is overseen by Uttar Pradesh pollution Control Board (UPPCB). The status of municipal solid waste management is pressing as much of waste is dumped in open areas and only a small portion is processed. Uttar Pradesh is generating about 14,468 tons of waste every day out of which 40% is processed and the remaining are dumped in open areas polluting groundwater further contributing methane emissions. the paper seeks to understand the social and economic impact of waste management policy of Uttar Pradesh on the population of the state addressing variables like job creation cost effectiveness reduced pollution environmental benefits resource recovery and sustainability.

**Keywords:** Uttar Pradesh, environment, waste management, job Creation, costs, sustainable Development.

**INTRODUCTION**

The state of Uttar Pradesh was created in the year 1937 by the British regime under the name of United Provinces and post independence it was renamed as Uttar Pradesh in 1950. Lucknow district serves as the capital of U.P. Uttar Pradesh covers an area of 2,40,928 sq.km., which is 7.33% of the geographical area of India. The urban area of Uttar Pradesh is 2.7% of its geographical area(6558 sq.km).

Implanted in the core of India, a land where societies have developed and religions

arise. The significance of Uttar Pradesh lies in this conversion, yet additionally in the rise of social and strict customs along probably the best waterways in the Indian

sub-continent - the Ganga and the Yamuna. Over the entire course of time, incredible urban communities have arisen furthermore, laid out along incredible streams. Inside India, the Ganga and the Yamuna have supported a culture due to which strict confidence, customs, culture and scholarly edification have advanced in places along the two streams. Uttar Pradesh is the fourth biggest state as far as geological region covering 9.0 per penny of the country's geological region. It is additionally the most crowded state in India comprising of 19.96 crore (199.6 million) occupants according to 2011 census. It is likewise the most crowded country region on the planet. There are 75 regions in Uttar Pradesh and they are assembled into 18 divisions. They are Agra, Aligarh, Azamgarh, Allahabad, Kanpur, Gorakhpur, Chitrakoot Dham, Jhansi, Devi Patan, Faizabad, Bareilly, Basti, Vindhyachal (Mirzapur), Moradabad, Meerut, Lucknow, Varanasi and Saharanpur.There are 14 Nagar Nigams, 202 Nagar Palika Parishads and 438 Nagar Panchayats, in all 654 Urban Local

Bodies.(rceuslucknow.org) The significant area of Uttar Pradesh economy is horticulture. Wheat, beats, oilseeds, rice, sugarcane, and potatoes are the principal crops developed here. Sugarcane is a significant money crop developed here. The travel industry,hardware and information technology and handicrafts are other significant supporters of the state's economy.

**WASTE MANAGEMENT OF UTTAR PRADESH**

Waste management is all about how solid waste can be changed and used as a valuable resource i.e. waste to wealth. It is the process of treating solid wastes and offers variety of solutions for recycling items that don't belong to trash. It is about how garbage can be used as a valuable resource. Solid waste management should be embraced by each and every household including the business owners across the world. One of the negative effects of industrialization is the creation of solid waste.

The economic impact of waste management programs in Uttar Pradesh is a critical area of study, given the state's significant waste generation and its implications for sustainable development. With a daily waste output exceeding 15,000 metric tons, managing this waste presents both challenges and opportunities. Waste management is not only an environmental necessity but also a potential driver of economic activity, offering avenues for job creation, resource recovery, and energy generation. Programs such as the Swachh Bharat Mission and waste-to-energy initiatives have introduced a new dimension to the state's economic landscape, transforming waste into a resource while addressing pressing environmental concerns.

The implementation of these programs has led to the establishment of formal waste collection systems, decentralized composting units, and recycling industries, stimulating local economies and creating livelihoods, particularly in urban areas. Public-private associations and enterprising endeavors in reusing and squander handling have additionally upgraded financial results, drawing in speculations and encouraging advancement. Notwithstanding, difficulties like deficient foundation, restricted mindfulness, and inadequate subsidizing thwart the full financial capability of these projects.

This paper examines the current state of waste management in Uttar Pradesh, analyzing the policies, technologies, and community practices shaping the system. It explores the potential of these initiatives to address existing challenges and their implications for sustainable development, ultimately contributing to a circular economy framework.

**LITERATURE REVIEW**

Waste management is a critical component in the economic development and environmental sustainability of urban and rural areas. For a state like Uttar Pradesh (UP), with its rapidly growing population and urbanization, the challenges of effective waste management have direct implications on public health, local economies, and environmental outcomes. The literature surrounding the economic impact of waste management programs in Uttar Pradesh and similar regions is growing, touching on aspects such as job creation, cost efficiency, resource recovery, and environmental health.

1. Narain, U. (2003). "Urban Waste Management and Economic Development"

This study investigates the relationship between waste management practices and economic growth in urban areas. Narain highlights the financial challenges faced by local governments in India, including Uttar Pradesh, where waste management consumes a significant portion of municipal budgets.

2. Patel, S., et al. (2017). "Economic Impacts of Waste Management in Indian Municipalities"

Patel and colleagues assess the economic consequences of waste management in various Indian cities, including those in Uttar Pradesh. They focus on the financial challenges faced by urban local bodies (ULBs) and the inefficiency of waste collection, segregation, and disposal systems.

3. Kumar, A., & Soni, R. (2020). "Waste Management and Revenue Generation in Uttar

Pradesh: Opportunities and Challenges"

This paper delves into the waste management systems in Uttar Pradesh, focusing on revenue generation and economic sustainability. Kumar and Soni examine the potential of waste-to-energy (WTE) plants and recycling programs in the state.

4. Suthar, S., et al. (2018). "Resource Recovery in Waste Management: A Case Study of Uttar Pradesh"

Suthar's research focuses on the potential of resource recovery from solid waste in Uttar Pradesh. The paper highlights various methods of waste processing, including recycling, composting, and the use of waste-to-energy technologies.

**OBJECTIVE**

The purpose of this research paper is to assess the economic effects of waste management initiatives, with particular emphasis on Uttar Pradesh. Waste management has become an essential aspect of sustainable progress, significantly affecting environmental preservation and economic advancement.

1) This study aims to investigate how waste management schemes support economic activities such as employment generation, revenue enhancement, and resource optimization.

2) To recognize the contribution of these programs to sustainable development, the paper will underscore their capacity to decrease reliance on limited resources, minimize ecological harm, and enhance public health standards.

3) the study seeks to explore how local economies gain from waste management initiatives. This includes analyzing cost-effective strategies for municipalities and industries, such as lowering landfill expenses, harnessing energy, and generating income through the sale of recycled products. By examining the financial feasibility and expansion potential of these programs, the paper aims to shed light on their role in driving regional economic progress in Uttar Pradesh.

4) To offer actionable recommendations for policymakers, enterprises, and community stakeholders to reinforce waste management strategies. By aligning these efforts with broader financial and environmental objectives, the study aspires to highlight their importance in establishing a circular economy that enhances resource efficiency, ecological sustainability, and inclusive development in Uttar Pradesh.

**METHODOLOGY**

This study employs a mixed-method approach, combining both qualitative and quantitative techniques to assess the economic effects of waste management initiatives in Uttar Pradesh. The methodology is structured to offer a comprehensive perspective on the subject by examining data collected from various primary and secondary sources.

**Research Design**

The research adopts a descriptive and analytical design. It aims to outline the economic benefits of waste management initiatives while evaluating their effects on aspects such as employment generation, sustainable development, cost efficiency, and support for local economies.

**SAMPLE SIZE**

The survey involved participants connected, either directly or indirectly, to waste management programs in Uttar Pradesh. A total of 64 individuals took part in the study, representing a varied demographic in terms of age, profession, and regional distribution across the state. The sample comprised municipal authorities, residents, students, and professionals from prominent cities such as Lucknow, Kanpur, and Varanasi.

This sample size ensures a diverse collection of perspectives and experiences, offering valuable insights while recognizing the limitations posed by its scope.

**Data Collection**

**Primary Data**

Primary data is gathered through:

Surveys and Questionnaires: Well-structured questionnaires are distributed among stakeholders

such as waste handlers, municipal authorities, entrepreneurs, and community members engaged in waste management processes.

**Data Analysis**

The collected data is analyzed through a combination of:

Quantitative Analysis: Numerical data, such as job opportunities created, cost reductions achieved, and revenue generated from recycled materials, is examined using statistical tools.

Qualitative Analysis: Interview transcripts and open-ended survey responses are analyzed using content analysis to extract key patterns and insights.

**Geographic Scope**

The study focuses on urban and semi-urban areas of Uttar Pradesh, where waste management programs are operational. Specific emphasis is placed on cities like Lucknow, Kanpur, and Varanasi, as they represent diverse economic and environmental scenarios.

**Ethical Considerations**

Ensuring the confidentiality and anonymity of respondents.

Using the gathered data exclusively for academic purposes.

**Limitations**

The research acknowledges certain constraints, including:

Limited access to accurate or up-to-date secondary information.

Restricted generalization due to the focus on specific regions of Uttar Pradesh.

Difficulties in collecting responses from informal sector participants.

**ANALYSIS AND INTERPRETATION**

**SOURCE: PRIMARY**

Here is a horizontal bar chart summarizing the key findings of the economic impact of waste management programs in Uttar Pradesh. It visually represents the distribution of responses across various categories, highlighting areas such as job creation, cost savings, and local business support.

The analysis of the responses highlights the nuanced economic impact of waste management programs in Uttar Pradesh. A significant portion of respondents (75%) were unsure about job creation through these initiatives, with only 15.6% acknowledging their role in generating employment. This indicates a considerable gap in awareness about the economic opportunities arising from waste management programs. Among the sectors benefiting from these initiatives, composting and organic waste processing (39.1%) and recycling and material recovery (31.3%) were perceived as the primary contributors to job growth. Additionally, 79.7% of participants recognized that these programs support local businesses, particularly recycling centers and compost facilities, reinforcing their role in fostering entrepreneurship and boosting the local economy.

Despite these positive perceptions, only 50% of respondents agreed that waste management programs significantly strengthen the local economy, reflecting mixed opinions about their broader economic contributions. On the financial front, cost savings were evident, with 31.3% and 32.8% of respondents citing reductions in household waste disposal costs and environmental remediation expenses, respectively. However, awareness of government-provided incentives and subsidies remained low, as 53.1% of respondents were unsure about their availability.

Overall, while the responses indicate that waste management programs have made tangible contributions to economic development, the lack of widespread awareness about job creation and incentives limits their perceived impact. To maximize their effectiveness, targeted investments in key sectors like composting and recycling, coupled with robust awareness campaigns, are essential to bridge this knowledge gap and amplify their economic benefits.

**KEY FINDINGS**

The key findings from the analysis of waste management programs in Uttar Pradesh reveal a nuanced economic impact. A significant portion of

respondents (75%) were unsure if these programs have created job opportunities, suggesting limited visibility or awareness of employment benefits. However, 15.6% acknowledged job creation, particularly in sectors like composting and organic waste processing (39.1%) and recycling and material recovery (31.3%). Moreover, 79.7% of participants recognized that waste management programs support local businesses, including recycling centers and compost facilities, underscoring their role in fostering entrepreneurship. Cost savings were noted by 31.3% in household waste disposal and 32.8% in environmental remediation, indicating financial benefits. Despite these positive impacts, 50% of respondents agreed that waste management programs strengthened the local economy, but there was also significant skepticism or neutral sentiment among others. The limited awareness about incentives and subsidies (35.9% aware, 53.1% unsure) suggests a need for better promotion and communication to enhance the programs' effectiveness.

**INTERPRETATIONS**

The interpretation of the key findings from the analysis of waste management programs in Uttar Pradesh reveals several critical insights. The majority of respondents were unsure about job creation, reflecting a gap in communication and visibility of employment opportunities within these programs. This uncertainty indicates the need for better awareness campaigns to highlight the economic benefits, particularly in job sectors like composting and recycling. The strong recognition (79.7%) of support for local businesses suggests that these programs are playing a vital role in fostering entrepreneurship and boosting local economies. However, the mixed perception of economic strengthening (50% agree, 34.4% neutral) points to a need for more tangible impacts and greater understanding of these benefits among the community. Cost savings, particularly in household waste disposal and environmental remediation, were acknowledged, reflecting the financial advantages of waste management initiatives. Finally, the limited visibility of government incentives and subsidies indicates a barrier to participation and investment, suggesting that better promotion and transparency are required to fully capitalize on these supportive measures.

**CONCLUSION**

This study highlights the substantial economic benefits of waste management initiatives, focusing specifically on Uttar Pradesh. The results illustrate that these initiatives are not only crucial for safeguarding the environment but also act as significant catalysts for economic progress. By generating employment, creating revenue streams, and enhancing resource utilization, waste management programs contribute greatly to the state's pathway toward sustainable development.

In Uttar Pradesh, where increasing urbanization and rising waste levels present growing challenges, adopting innovative waste management strategies has shown promise in tackling issues such as joblessness, environmental harm, and public health risks. Initiatives centered on recycling, reusing, and energy conversion have proven their capacity to lower expenses for local governments and businesses while advancing a circular economy.

Nevertheless, the research also identifies barriers, including insufficient infrastructure, a lack of public education, and restricted funding for scaling these efforts. Overcoming these challenges necessitates collaborative action from government bodies, private enterprises, and community stakeholders. Enhancing waste management frameworks and integrating them with larger economic and ecological priorities can further amplify their impact.

In summation, waste management programs transcend their traditional role of waste disposal, evolving into transformative systems that foster economic, environmental, and social advancements. Strategically implementing these initiatives can enable Uttar Pradesh to lead the way in sustainable development, efficient resource management, and

inclusive growth, offering a model for other regions to emulate.

**REFERENCES**

1. Bhalerao, S., et al. (2015). Public-Private Partnerships in Municipal Solid Waste Management in India: An Evaluation. Urban Development Journal.

2. Brahmbhatt, H. (2014). Economic Aspects of Informal Waste Management in India. Environmental Economics Review.

3. Chakraborty, S., & Pal, M. (2019). Environmental Impact of Urban Waste Management in India: Case Study of Uttar Pradesh. Environmental Sustainability Studies.

4. Ghosh, A., et al. (2012). Health and Economic Consequences of Poor Waste Management in India. Public Health Journal.

5. Kumar, A., & Soni, R. (2020). Waste Management and Revenue Generation in Uttar Pradesh: Opportunities and Challenges. Economic and Environmental Review.

6. Mehta, M. (2015). Social Behavior and Waste Management in India. Indian Journal of Environmental Economics.

7. Narain, U. (2003). Urban Waste Management and Economic Development. Environmental Economics.

8. Patel, S., et al. (2017). Economic Impacts of Waste Management in Indian Municipalities. Municipal Finance Journal.

9. Sharma, R., et al. (2016). Swachh Bharat Mission: Challenges and Impact on Waste Management in Uttar Pradesh. Indian Journal of Urban Studies.

10. Sridhar, M., et al. (2014). Financing Municipal Waste Management in India. International Journal of Environmental Management.

11. Suthar, S., et al. (2018). Resource Recovery in Waste Management: A Case Study of Uttar Pradesh. Waste Management and Research.

12. The World Bank. (2016). Job Creation through Waste Management Programs in India. World Bank Report.

# Multicultural Education under NEP 2020: Future Direction

**YOGESHWAR SINGH YADAV**
RESEARCH SCHOLAR,
DEPARTMENT OF EDUCATION
MOHAN LAL SUKHADIA UNIVERSITY
UDAIPUR,RAJASTHAN
EMAIL-YADAVYOGESHWAR1988@GMAIL.COM
CONTACT.NO-9694602795

**Abstract:-**

The National Education Policy (NEP) 2020 represents a pivotal reform in India's educational landscape, emphasizing inclusivity, cultural diversity, and equity. In a country as culturally rich and varied as India, a multicultural approach to education is not only necessary but crucial for fostering social cohesion and global citizenship. This research paper explores the future directions for multicultural education under NEP 2020, focusing on the key elements such as curriculum reforms, multilingualism, teacher training, and technology integration. The paper also emphasizes the importance of addressing educational disparities, promoting cultural exchange, and cultivating global citizens who respect diversity. In light of these goals, NEP 2020 could transform Indian education into a model of multicultural inclusivity.

**Keywords :-** Multicultural Education, NEP 2020, Cultural Diversity, Inclusivity, Teacher Training, Global Citizenship, Multilingualism, Educational Policy, Technology in Education, Curriculum Reform, Equity.

**Introduction:-**Multicultural education is an approach that seeks to respect and incorporate diverse cultural perspectives within the educational process. It is particularly relevant in diverse nations like India, where various languages, religions, and ethnic groups coexist. The NEP 2020, which is India's first education policy in the 21st century, introduces several new directions aimed at achieving an inclusive and equitable education system. These initiatives include curricular reforms, promotion of multilingualism, teacher education programs that focus on cultural responsiveness, and the use of technology to support diversity in the classroom. The policy also focuses on creating global citizens who are not only aware of their local and national cultures but are also sensitive to and respectful of international cultural contexts. This research paper will explore the future directions for multicultural education under NEP 2020, focusing on how these policies will shape Indian education in the years to come.

**1. NEP 2020 and Multicultural Curriculum Reform:-**A curriculum that reflects a country's cultural diversity is essential for fostering inclusivity and equity in education. NEP 2020 makes a commitment to revamping the existing curriculum to better reflect India's multifaceted cultural, linguistic, and knowledge systems. This shift is crucial for promoting a learning environment where students from all backgrounds feel represented and valued.

**1.1 Integration of Local Knowledge Systems:-** India's traditional education system, dominated by Western-centric perspectives, has long overlooked local knowledge systems. NEP 2020, however, places a strong emphasis on integrating indigenous knowledge, folk traditions, and regional histories into the curriculum. By doing so, the policy not only preserves the rich heritage of diverse communities but also provides students with a sense of cultural pride and belonging.

For instance, incorporating the medicinal

knowledge of tribal communities, sustainable agricultural practices, and regional art forms into the syllabus can help students understand and appreciate the depth of their cultural heritage (Gupta, 2020). These initiatives will promote cultural inclusivity and foster respect for India's indigenous and marginalized communities.

**1.2 Project-Based Learning on Culture:-**

The NEP emphasizes the importance of experiential learning. Project-based learning can be an effective tool for teaching cultural awareness, as it encourages students to explore different cultural traditions through firsthand experiences. By engaging in projects that involve studying regional festivals, traditional crafts, or local governance systems, students can develop a deeper understanding and appreciation for India's cultural diversity.

Such learning activities would align with the objectives of multicultural education by allowing students to step beyond the confines of textbook learning, engaging instead with the real-world practices of different cultural groups. For example, students could undertake research projects on regional folk music or local histories, thus contributing to a wider appreciation of India's varied cultural landscape.

**2. Multilingualism and Language Diversity in Education:-**

Language is not just a medium of communication; it is an integral part of cultural identity. NEP 2020 places significant emphasis on multilingualism, particularly the importance of teaching students in their mother tongue or regional language during the foundational years of schooling. This policy is designed to ensure that students can access education in a language that is most familiar to them, thereby enhancing learning outcomes while preserving linguistic diversity.

**2.1 Promotion of Mother Tongue-Based Education:-**

NEP 2020 supports the idea that children learn best in their native language, especially in the early years of education. The policy advocates for the mother tongue or regional language to be the primary medium of instruction at least until Grade 5, and preferably until Grade 8. This approach recognizes the importance of language in cognitive development and academic success (Agnihotri, 2020).

By encouraging mother tongue instruction, NEP 2020 helps preserve the linguistic heritage of different communities. It is particularly important in a country like India, where more than 1,600 languages are spoken. Multilingualism is viewed not only as a way to support learning but also as a tool to respect and uphold cultural diversity.

**2.2 The Three-Language Formula:-**

The three-language formula promoted in NEP 2020 seeks to ensure that students are proficient in their mother tongue, while also learning an additional regional or national language, and a foreign language such as English. This multilingual approach is intended to equip students with the ability to interact within their own community, across the country, and internationally.

The three-language formula, when properly implemented, will promote cross-cultural understanding and communication. Learning languages is a powerful way to build empathy and understanding among diverse cultural groups. It can also help reduce the dominance of a few languages, thereby ensuring that no linguistic community feels marginalized.

**3. Teacher Training for Cultural Competence:-**

Teachers are essential in creating an inclusive and culturally responsive learning environment. NEP 2020 acknowledges the importance of teacher education and aims to ensure that teachers are well-prepared to handle classrooms that reflect India's cultural diversity.

**3.1 Culturally Responsive Pedagogy:-**

The concept of culturally responsive pedagogy is central to the success of multicultural education. Culturally responsive teaching involves recognizing the cultural backgrounds of students and incorporating their experiences into the learning

process. Teachers trained in culturally responsive pedagogy can better engage students from diverse backgrounds, making learning more meaningful and relevant (Gay, 2018).

NEP 2020 emphasizes the need for teacher education programs that focus on developing cultural competence. By integrating cultural knowledge into teacher training, educators will be better equipped to design lessons that reflect the lived experiences of their students. For instance, a history teacher might include discussions on regional freedom fighters or indigenous governance systems, while a language teacher could incorporate folk stories from different linguistic traditions.

**3.2 Addressing Bias and Stereotypes:-**

Cultural biases and stereotypes can have a detrimental impact on students' educational experiences. Teachers, often unconsciously, may perpetuate stereotypes or exhibit biases that marginalize certain cultural groups. To address this, NEP 2020 encourages teacher training programs to include modules on recognizing and combating biases.

Teachers will learn to create classroom environments where all students feel valued, regardless of their cultural or socio-economic background. This will involve strategies for promoting equity, such as differentiated instruction and culturally responsive assessment methods. The policy also advocates for ongoing professional development to ensure that teachers stay updated on best practices for fostering inclusive education.

**4. Technology as a Tool for Promoting Multiculturalism:-**

The rapid advancement of technology has opened up new possibilities for multicultural education. NEP 2020 recognizes the potential of technology to bridge cultural gaps and promote inclusivity in education. Digital platforms, online resources, and virtual learning environments can provide students with access to diverse perspectives and learning materials.

**4.1 Digital content in multiple Languages:-**

NEP 2020 envisions a robust use of technology to create and distribute educational content in multiple languages. This is particularly important for reaching students in remote or underserved areas, where access to educational resources in regional languages may be limited. The creation of digital content in various languages will ensure that students from different linguistic backgrounds have equitable access to learning materials (MHRD, 2020).

In addition, the policy encourages the development of digital tools that cater to diverse learning needs, including resources that reflect the cultural heritage of different communities. For instance, online platforms could offer modules on regional histories, traditional art forms, or local governance systems, thereby promoting cultural awareness and inclusivity.

**4.2 Virtual Classrooms for Cultural Exchange:-**

One of the most exciting prospects for multicultural education in the digital age is the use of virtual classrooms and online platforms for cross-cultural interaction. NEP 2020 encourages the use of technology to connect students from different cultural and geographic backgrounds. Virtual classrooms can provide a platform for students to share their cultural experiences, learn about different traditions, and collaborate on projects that promote intercultural understanding.

By facilitating dialogue between students from different parts of the country, or even internationally, virtual classrooms can help break down cultural barriers and promote global citizenship. This approach not only fosters respect for diversity but also prepares students for a world that is increasingly interconnected.

**5. Equity and Access in Multicultural Education:-**Ensuring equity and access to education for all students, regardless of their cultural or socio-economic background, is a key goal of NEP 2020. The policy aims to address the disparities in education by focusing on marginalized communities,

including Scheduled Castes (SC), Scheduled Tribes (ST), Other Backward Classes (OBC), and religious minorities.

**5.1 Financial Support and Scholarships for Marginalized Groups:-**

One of the major challenges in providing equitable education is ensuring that students from marginalized communities have the financial resources to access quality education. NEP 2020 outlines provisions for scholarships, financial aid, and targeted support programs for students from disadvantaged backgrounds. These initiatives are designed to level the playing field and ensure that students from allbackgrounds have access to quality education, irrespective of their socio-economic status.* By providing financial support to students from marginalized communities, the policy aims to reduce the educational disparities that have long been prevalent in India.

**5.2 Gender Sensitivity and Inclusion:-**

NEP 2020 also emphasizes gender inclusion and the need to eliminate gender biases in education. The policy encourages gender-sensitive training for teachers and school staff to ensure that classrooms are safe and welcoming for all students, regardless of their gender identity. Furthermore, NEP promotes the education of girls and other marginalized gender groups by providing targeted support and scholarships.

Gender inclusivity in multicultural education not only means offering equal opportunities for girls and boys but also recognizing the cultural nuances of gender roles in different communities. Teachers are expected to be aware of these distinctions and create environments that are both respectful and sensitive to gender dynamics within various cultural groups.

**5.3 Accessibility for Students with Disabilities:-**

NEP 2020 also advocates for the inclusion of students with disabilities in mainstream education. It proposes the creation of accessible learning materials, schools, and digital platforms that can cater to the diverse needs of students with physical, cognitive, or sensory disabilities. Culturally responsive education under NEP 2020 should also extend to recognizing the intersectionality of disability and cultural background, ensuring that all students, regardless of their abilities or cultural context, have equitable access to education.

**6. Global Citizenship through Multicultural Education:-**

One of the key goals of NEP 2020 is to prepare students to be global citizens who are not only aware of their local and national heritage but also capable of interacting in an increasingly interconnected world. Global citizenship education (GCE) is about fostering respect for cultural diversity, promoting social justice, and encouraging the active participation of students in solving global challenges such as environmental sustainability, human rights, and global inequality.

**6.1 International Exchange Programs:-**

The NEP encourages the development of international partnerships and exchange programs that allow Indian students to interact with their peers from other countries. Such exchanges provide students with firsthand experience of different cultures, helping them to develop empathy and a broader perspective on global issues (UNESCO, 2021). These programs are particularly important for students in rural or marginalized communities, who may otherwise have limited exposure to cultures outside their immediate environment.

**6.2 Fostering Empathy and Tolerance:-**

Through its curriculum reforms and focus on experiential learning, NEP 2020 seeks to instill values of empathy, tolerance, and mutual respect in students. In an increasingly polarized world, the ability to appreciate different perspectives and engage in respectful dialogue across cultures is more important than ever. Multicultural education, with its emphasis on diversity and inclusion, plays a crucial role in fostering these values.

By teaching students about various cultural, religious, and linguistic traditions, NEP 2020 aims to create a more harmonious and inclusive society.

This approach not only benefits India domestically but also prepares Indian students to contribute meaningfully to a global community.

**7. Challenges and Opportunities in Implementing Multicultural Education:-**

While NEP 2020 provides a comprehensive framework for promoting multicultural education, there are significant challenges that need to be addressed for its successful implementation. One of the primary challenges is the potential resistance from certain sections of society that may feel threatened by the promotion of cultural diversity. Additionally, ensuring the availability of qualified teachers who are trained in culturally responsive pedagogy remains a critical issue.

**7.1 Teacher Training and Capacity Building:-**

Effective implementation of multicultural education under NEP 2020 will require significant investment in teacher training programs. While the policy outlines the need for culturally responsive pedagogy, there is a need for concrete strategies to develop teachers' cultural competence. Teacher education institutions will need to update their curricula to include training on diversity, equity, and inclusion. Moreover, ongoing professional development for teachers is essential to ensure that they remain well-equipped to handle the complexities of multicultural classrooms.

**7.2 Funding and Resources:-**Implementing the various aspects of NEP 2020, such as multilingual education, technology integration, and financial support for marginalized groups, will require substantial financial resources. While the policy outlines several ambitious goals, ensuring that adequate funding is allocated to support these initiatives is critical. Both central and state governments will need to collaborate to ensure that schools have the necessary resources to implement multicultural education effectively.

**7.3 Policy Adaptation at the Local Level:-**

Given India's diversity, the implementation of multicultural education will need to be adapted to local contexts. What works in urban areas may not be suitable for rural schools, and policies that address the needs of one cultural group may not resonate with another. Therefore, flexibility in policy implementation is crucial. States, districts, and even individual schools will need the autonomy to tailor NEP 2020's directives to the specific needs of their communities.

**8. Research and Continuous Evaluation:-**

For NEP 2020 to be successful in fostering multicultural education, continuous research and evaluation are essential. Educational institutions, researchers, and policymakers must engage in ongoing assessments to determine the effectiveness of multicultural initiatives and identify areas that require improvement.

**8.1 Longitudinal Studies on Multicultural Education:-**

Long-term research that tracks the impact of multicultural education on students' academic performance, social development, and attitudes towards diversity will provide valuable insights. Such studies can help identify the most effective teaching strategies, the role of multilingualism in enhancing learning outcomes, and the impact of cultural competence on students' interpersonal relationships.

**8.2 Policy Revisions Based on Research Findings:-**

Based on the results of these studies, policymakers should be prepared to revise and update educational policies to better serve the needs of students. As India continues to evolve, so too will the cultural and linguistic landscape, necessitating ongoing adjustments to ensure that multicultural education remains relevant and effective.

**Conclusion:-**

The National Education Policy 2020 offers a visionary framework for multicultural education in India, with a strong focus on inclusivity, equity, and respect for diversity. By reforming the curriculum, promoting multilingualism, investing in teacher training, and leveraging technology, NEP 2020 has the potential to transform India's educational system

into one that celebrates and respects the country's rich cultural diversity.

While there are challenges to implementing multicultural education, such as the need for teacher training, resource allocation, and localized adaptations, the opportunities far outweigh the obstacles. NEP 2020's emphasis on global citizenship, cultural awareness, and equity prepares students to succeed in an interconnected world where respect for diversity is essential.

Through continued research, policy evaluation, and community engagement, NEP 2020 can serve as a blueprint for creating an educational system that not only meets the needs of India's diverse population but also contributes to the creation of a more inclusive and harmonious society.

**References:-**

- Agnihotri, R. K. (2020). "Mother Tongue in Education: NEP 2020 and Language Policy." Journal of Multilingual Education Research, 5(2), 23-34.
- Banks, J. A., & Banks, C. A. M. (2019). Multicultural Education: Issues and Perspectives. 10th ed., Wiley.
- Gay, G. (2018). Culturally Responsive Teaching: Theory, Research, and Practice. 3rd ed., Teachers College Press.
- Gupta, M. (2020). "Curriculum Reform and Cultural Diversity: A Critical Analysis of NEP 2020." International Journal of Education and Social Sciences, 6(3), 45-59.
- Ministry of Human Resource Development (MHRD). (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
- UNESCO. (2021). "Global Citizenship Education: Preparing Learners for the Challenges of the 21st Century." UNESCO Reports.

# सामाजिक मूल्यों की स्थापना और संरक्षण में व्यंग्य का महत्व और योगदान

**कान्ता विश्नोई**
शोधार्थी
राजस्थानी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
ईमेल–Kanta-vishvajeet123@gmail-com

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसका सम्पूर्ण जीवन समाज से ही प्रभावित होता है उसी के इर्द–गिर्द व्यतीत होता है। इसलिये स्वाभाविक सी बात है कि जिस वातावरण में मनुष्य आजीवन निवास करता हो वहां का सामाजिक परिवेश, वहां के निवासियों का मानसिक स्वास्थ्य आचार–व्यवहार सभ्यता एवं संस्कृति जैसे सामाजिक मूल्य उच्च गुणवत्ता प्रधान होने चाहिए। ऐसा होना इसलिये भी आवश्यक है क्यूंकि स्वच्छ मानसिकता वाला व्यक्ति ही आगे चलकर एक सभ्य देश का सभ्य नागरिक बनता है जो कि देश की प्रगति और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। सामाजिक परिवेश अच्छा होगा तो आने वाली पीढ़ियां स्वच्छ मानसिकता वाली एवं बुद्धिजीवी होगी। जिस प्रकार बिना मौसम की बरसात फसलों को बर्बाद कर देती है उसी प्रकर कुछ असामाजिक तत्व समाज को अपनी तुच्छ मानसिकता एवं निजी स्वार्थ सिद्धि हेतु दूषित कर देते है। वो लोग समाज में जाति, धर्म, और वर्गभेद के नाम पर वैमनस्य फैलाते हैं। लोगों को बहकाकर आपस में लड़ाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में साहित्यकार वर्ग जो अपनी चेतना शक्ति से स्थिति को समझ कर जनसाधारण को वास्त्विकता से अवगत करता है, उनको सन्मार्ग दिखाता है। साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से असामाजिक तत्वों द्वारा की जाने वाली गतिविधियों के बारे में लोगों का ध्यान खींचकर उनको सचेत करने का कार्य करता है।

'कैलासदान लालस' द्वारा रचित व्यंग्य पोथी 'काळजयी' में आए एक व्यंग्य लेख 'हिंदू अर मुहमदी हिन्दूं' में लेखक ने हिन्दू शब्द का संबंध सिन्धू नदी से बताया है, ना कि किसी धर्म से। ये बात पूर्णतया सत्य भी प्रतीत होती है क्यूंकि सिंधू नदी के किनारे निवास करने के कारण हिंदू नाम पड़ा, जिनका कोई धर्म नहीं था पर कालान्तर में देस दुनिया के लोगों द्वारा निजी स्वार्थों हेतु इसे हिन्दू धर्म का नाम दे दिया गया जो कि अब तक निरन्तर बना हुआ है। उर्दू और फारसी बोलने वाले मुसलमान थे जो कि धीरे–धीरे मुस्लिम धर्म बन गया और बीतते समय के साथ ये दोनों धर्म एक दूसरे के विरोधी स्वरूप में आ गए।

ऐसी परिस्थितियों में हमारे कवियों ने 'मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना'' ''कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत एक है'' जैसे गीत कविताओं से प्रेम और भाईचारे का पाठ पढाया। मशहूर शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाखान ने बजरंगबली के मंदिर में शहनाई बजाकर और सकूरखान ने तुलसी, कबीर, मीरा के भजन गाकर लोगों को धार्मिक सद्भाव का पाठ पढाया राजा राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज के रूप में एक ऐसे समाज की स्थापना की जो किसी धर्म विशेष का अनुसरण नहीं करके सब धर्मो का सार ग्रहण करके समाज में उपस्थित कुरीतियों और भेदभाव से रहित हो। कबीर, तुलसी, मीरा, रसखान, रहीम, नानक और सूरदास में से कोई भी ये नहीं कहता कि किसी धर्म विशेष का अनुसरण किया जाए सभी ये सीख देते हैं कि सभी धर्मो का सम्मान किया जाए।

लालस जी की दूसरी व्यंग्य पुस्तक 'भला व्है भ्रष्टाचार रा' में लालस जी ने समाज में हर क्षेत्र मे फैले हुए भ्रष्टाचार को उजागर करते हुए उसे समाप्त करने की मनसा व्यक्त की। वास्तविकता ये है कि जिन्हें समाज के लोगों ने अपना हितैसी मानकर अपना मुखिया चुना है हमारे नेताजी वे ही भ्रष्टाचार के असली आश्रयदाता है। जनता के सामने उनके हितैषी बनकर खड़े होने वाले परदे के पीछे घूसखोरी रिश्वतखोरी, मिलावट, जैसे गौरखधंधे धर्म और जाति के नाम

पर जनता को आपस में वैमनस्य बढाना जैसे कार्य करने वाले हमारे नेताजी का सच उजागर करने में हमारे व्यंग्य साहित्यकारों ने अग्रणी भूमिका निभाई है। इसी पुस्तक के अन्य व्यंग्य लेख 'बहुमत, जैल री काया पलट, म्हैं वोट तंत्र रो साथ' में लेखक ने राजनीतिक भ्रष्टाचार में रत नेता लोगों की कारगुजारियों को उजागर करने को सफल प्रयास किया है।

समाज में हो रहा कोई भी ऐसा कार्य जो नीति और व्यहवार के पथ से विचलित हो, हमारी सभ्यता और संस्कृति को हानि पहुंचाता हो हमारे सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों को नष्ट करने वाला हो तो ऐसी विकट परिस्थितियों से देसकाल और समाज की सदैव ही रक्षा की है हमारे व्यंग्य लेखकों ने। विसंगतियों से भरे समाज को तीखे दमदार व्यंग्य की सार्वाधिक आवश्यकता है। हमारे सराहनीय व्यंग्य लेखको में हरिशंकर परसाई जी का नाम अग्रणी पंक्ति में आता है इनके पश्चात् नागराज शर्मा, बुलाकी शर्मा देवकिशन राजपुरोहित, मनोहर सिंह राठौड़, डॉ. मदन केवलिया मंगत बादल, पूरन सरमा, छगनलाल व्यास सांवर दईया जैसे ख्यात नाम लेखकों के नाम गिनाए जा सकते है। जिस प्रकार दर्द के लिए दी गई दवा उसी अंग पर असर करती है जिस भाग में दर्द हो उसी प्रकार व्यंग्यकार भी समाज में विस्तृत विक्षमताओं पर चोट करता है जिससे वे ही लोग प्रभावित होते है जो उनके पीछे हो। समाज सुधार हेतु व्यंग्य एक हथियार के रूप में कार्य करता है, ये समाज की चेतना को जगाने का कार्य करता है।

व्यंग्य समाज का यथार्थवादी और वास्तविकता से भरा चित्र प्रस्तुत करता है अर्थात् ईश्वर के दरबार में सब एक समान है वहां जात–पात का कोई सरोकार नहीं जो सच्चे मन से प्रभु का स्मरण करते हैं उनका कल्याण होता हैं। परन्तु वर्तमान समय इसके विपरीत चल रहा है चारों तरफ जात–पात का बोलबाला है। जात–पात लोकतंत्र की आधारशिला बन चुका है किसी उम्मीदवार को चुनाव में खड़ा करने से पहले उस क्षेत्र का जातिगत ब्यौरा तैयार किया जाता है।

'शरद उपाध्याय' ने अपनी व्यंग्य पुस्तक 'चुगली की गुगली' में व्यंग्य लेख के माध्यम से चुगलखोर लोगों की प्रवृति का बखान करते हुए इस सामाजिक अभिशाप की निंदा की है। अपने क्षणिक आंनद और किसी से अपने वैरभाव के वशीभूत होकर की गई निंदा कई बार महाक्लेश का रूप धारण कर लेती है। पारिवारिक और सामाजिक मतभेद इतना बढ़ जाता है कि सम्बन्धित लोगों को जीवनभर इसका परिणाम भुगतान पड़ता है।

उपाध्याय जी ने इसी पुस्तक के दूसरे व्यंग्य लेख 'कोय को आदमी बणो में' बडे लोगों से पहचान ना होने को बडी विडम्बना बताया है। जो भी कोई मंत्री नेता या किसी बड़े अफसर से रिश्तेदारी रखता हो उसका काम बड़ी आसानी से हो जाता है परन्तु साधारण व्यक्ति को उसी काम के लिए इधर–उधर भटकना पड़ता है और रिश्वत देने जैसे कदम उठाने पड़ते हैं जो कि सामाजिक बुराई को बढावा देना है। 'आलोचक के नाम पाती' व्यंग्य में लेखक ने व्यंग्य लेखक की वास्तविक स्थिति का वर्णन करते हुए बताया है कि व्यंग्य लेखक को सर्वथा आलोचना का सामना करना पड़ता है क्योंकि वो समाज में फैली हुई कुरीतियो को व्यंग्य के दम पर मिटाने की चेष्टा रखता है जो लोग समाज में कुरीतियों को बढावा देने वाले हैं वे व्यंग्यकार की सदैव आलोचना करते हैं।

'रोबो मंहगाई को' व्यंग्य में लेखक ने मंहगाई को अभिशाप बताया है जो आम लोगों के जीवन में सीधा उनकी थाली में नजर आने लगती हैं। मंहगाई कुछ लोगों के नीजी स्वार्थों का प्रतिफल है। ईमानदार की प्रजाति' व्यंग्य में लेखक ने वर्तमान समय बढ़ती बेईमानी और घूसखोरी की प्रवृति पर चिंता व्यक्त की है। 'श्याम सुंदर भारती' ने अपनी व्यंग्य पुस्तक 'कलम अर बंदूक' की भूमिका में व्यंग्य को धारदार और असरदार हथियार बताते हुए सामाजिक परिवेश के परिष्कार में इसको महत्वपूर्ण विधा का स्थान दिया हैं।

'व्यंग्य अेक धारदार नै असरदार अैड़ी सबळी विधा है जकी पाठक रा हिया ताईं सीधी ढुकै नै उणरै मन मगज ने घौदावै, फंफेडै अर जगावै। उण री चापळ तोडै, उणरी ऊँघ उडावै। इण री खिमता है के जको अणहूती अत्याचार, अनाचार नै भ्रष्टाचार सांमी पग रोप नै उणनै ललकारै, उण रो विरोध करै आपरी संपूरण खिमता साथै उण रो मुकाबलो करै नै आखरी दम तक लड़णे री हूंस राखै।'' कुंदन माली 'आलोचना री आंख सूं' पुस्तक में व्यंग्य री दीठ, परिवेस री पकड़' व्यंग्य लेख में शंकर सिंह राजपुरोहित की पहली व्यंग्य पुस्तक 'सुण अरजुन' की समीक्षा करते हुए व्यंग्य को

समाज की विसंगतियों ओर विडम्बनाओं को मिटाने का ओजार बताया है। "लेखक साम्प्रत समय परिवेश री मोजूदा सतही विसंगतियां विडम्बनावां नै उजागर करणै अर समकालीन जथारथ री दुर्बलतावां अर सुगलवाडा नै व्यंग्य री निगाह सूं रेखांकित करणे री कोसिस करै अर इण कोसिस मैं वो कथ्य री विविधता अर व्यापकता रो परिचै देवै। विसय व्यापकता रै कारण ईज मोजूदा निबंधा में भासा अर साहित्य री विसंगतिया, लोकमानस में व्याप्त रूढ़ियां अर अंधविश्वास, शिक्षा प्रणाली रै पांखड अर पोल, नेतागिरी रै स्तरहीन स्तर, भासा साथै जीवन रै दूजे खेतरां में नकल री प्रवृति, आलस निकम्मेपण निर्लज्जता, चुतराई अर चालकी री परसती आदतां, पूंजी प्रेम, लोकतंत्र रै नाम चालती लूटपाट उठा पटक चुनाव रै नांव माथै जनता नै ठगणे री नेतावां री आदत, साहित्य आलोचकां री कथनी करणी रा भेद उपभोक्तवाद रै तांई बदते लगाव अर कविता रै नांव पर पाठकां री रूचि बिगाड़णै री हळके–फुळडै कवियां री मानसिकता इत्याद विसयां माथै चोट करणै री आं री विसंगतियां नै रेखांकित, करणै री अर मौजूदा परिस्थितियां, में बदलाव री चिंता अर कोसिस अठै देखी जाय सकै।"

कला और साहित्य की पहली शर्त होती है कि अपने आस पास के यथार्थ स्वरूप को जनमानस के सामने प्रकट करे, यथार्थ को सबके सम्मुख लाने की क्षमता केवल व्यंग्य रखता है। जो बिना लाग लपेट के बिना भेदभाव के सबके लिए समान दृष्टि रखते हुए केवल असंगत या असमान्य को उजागर करता है।

पश्चिम के विचारकों में अरस्तू, लोंजाइनस दांते शेक्सपीयर और एडीसन सिलर जैसे विद्वान वक्रता/व्यंग्य के जोरदार समीक्षक थे। हिन्दी और राजस्थानी साहित्य में कबीर से लेकर प्रगतिवादी युग तक के लेखकों ओर आलोचकों ने व्यंग्य को अग्रणी पंक्ति में स्थान दिया। कवि और लेखकों ने व्यंग्य को तीर जितना प्रभावशाली बताया है। वीर सतसई जद 'बाला चाल म बीसरे मो थण जहर समान हैं', मनुज द्वेपावत जद 'सिंहा री झपटा झेलणिया, मिनकी रै बोल डर जावै और राठौड़ पृथ्वीराज री बात जद 'मळै आज सुणी है नाहरियो' के रूप में रखी जाती है तो अर्थ का अनर्थ होने से बच जाता है। व्यंग्य अपना इतिहास बताता है कि किस प्रकार व्यंग्य के एक बोल से महाराणा प्रताप ने अपना निर्णय बदल दिया कवि बिहारी के एक दोहे को सुनकर राजा जयसिंह अपने कर्तव्यपथ पथ अग्रसर हो गए। एक सच्चा व्यंग्यकार समाज की कुरीतियों को देखता है और व्यंग्य बाण से उनको बींधता है। इस प्रकार व्यंग्यकार दोहरे उद्देश्य सुधार और सामाजिक चरित्र का परिस्कार करने का कार्य करता है। अस्वाभाविकता व्यंग्यकार को खटकती है वो उस पर चोट करता है। जाने माने व्यंग्कार हरिशंकर परसाई जी कहते हैं कि व्यंग्य जीवन से सम्मुख होता है वो जीवन की आलोचना करता है, पांखड और कर्मकांडो का परदाफास करता है। वैदिक साहित्य महाभारत और रामायण में व्यंग्य का शुरूवाती स्वरूप देखा जा सकता है। नाट्यशास्त्र में इसका वर्तमान स्वरूप देखा जा सकता है। कालिदास की 'अभिज्ञान शकुन्तलम्' विशाखदत की 'मुद्राराक्षस' शूद्रक की 'मृच्छकटिकम्' को उदाहरण स्वरूप देखा जा सकता है। इसके पश्चात सिद्धो और नाथों के उपदेशों में जगह–जगह व्यंग्य के सुर देखे जा सकते है। मध्यकाल के मुख्य व्यंग्यकार कबीर जिन्होने समाज धर्म और जीवन में घूसी हुई विकृतियो पर व्यंग्य किया। सूरदास के भ्रमरगीत में व्यंग्य का तीखा पन स्पष्ट महसूस किया जा सकता है। भारतेंदू निराला दिनकर और धूमिल की कविताओं मे व्यंग्य के अनोखे तेंवर देखे जा सकते हैं।

राजनीति ओर समाज की मूल्यहीनता भ्रष्टाचार इंसानों में आपसी भेद और आर्थिक विषमता जैसे विषयों पर लिखे गए व्यंग्य समाज के लिए महत्वपूर्ण साबित हुए। भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था व्यंग्यकार का मूल स्वर रही है। राजनीति मात्र नारावादी हो गई है जो आम आदमी को छलती है। आज हिन्दी साहित्य के आलोचना क्षेत्र में पाश्चात्य साहित्य के आलोचना प्रतिमानों के अंधानुकरण की अवांछनीय प्रवृतियां अपेक्षाकृत अधिक बल पकड़ रही है। इससे हिंदी आलोचना अपने मूल धर्म मौलिक चिंतन और नीजी अनूभूतियों की सम्पतियों से वंचित होती रही है। आज की आलोचना की सबसे बडी आवश्यकता में है कि वह पौर्वात्य और पाश्चात्य के ग्राहत मानदंडो के स्वस्थ एवं संतुलित समन्वय द्वारा साहित्य और जीवन में आस्थावाद आशावाद तथा आनन्दवाद का पावन संचार करे।

बेबाकी सत्यनिष्ठा, तटस्थता प्रहार क्षमता आदि गुणों के साथ कबीर ने हिन्दी व्यंग्य का विधान किया।

भारतेन्दु जी द्वारा अपने नाटकों में हिन्दी व्यंग्य की आधारशिला रखी गई। 'निराला' जी व्यंग्य अपने आक्रोश के कारण कबीर का वंशज होने का प्रमाण देता है। यथार्थ के प्रति आग्रहशील होने के कारण व्यंग्यकार के लिए गद्य का मार्ग अनूकूल है। व्यंग्यकार की दृष्टि उसके आस–पास के वातावरण में परिलक्षित दोष एवं मूर्खतापूर्ण असंगतियों पर केन्द्रित होती है। व्यंग्य में किसी के अनादर और अवमानना का भाव नहीं है। यह प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी ना किसी रूप में कल्याण का भाव लिये होता है।

**व्यंग्य का महत्व**

1. व्यंग्य समकालीन समाज और राजनीति का दर्पण होता है।

2. व्यंग्य सामाजिक विकृतियों और दुर्बलताओं का उद्घाटन करता है।

3. व्यंग्य का उद्देश्य मनोरंजन नही चेतना शक्ति को जाग्रत करना है।

4. व्यंग्य मानसिक भंगिमा है जिसका उन्मेष अन्तर्विरोधों से होता है।

5. व्यंग्यकार तटस्थ होता है।

6. तिरस्कार, उपेक्षा और भर्त्सना आदि भाव व्यंग्य लेखक के अस्त्र होते हैं।

7. व्यंग्यकार की दृष्टि में व्यापकता होती है, वह संवेदनशील होता है।

8. व्यंग्य अपने समय और समाज की सच्चाई का दस्तावेज विद्रूपताओं के प्रति आक्रोश की अभिव्यक्ति है।

9. व्यंग्यकार संवेदनशील और समाजोन्मुख होता है। वह सामाजिक नियम निर्माता भले ही ना हो परन्तु मान्य आचरण शैली के प्रतिकूल व्यवहार करने वालों की खबर रखने वाला सजग पत्रकार है।

10. व्यंग्य विसंगतियों के परिवर्तन का संकेत है, विडम्बना की उत्प्रेरक परिस्थितियों के प्रति समाज को सावधान व जागरूक करने की चेष्टा है।

11. व्यंग्य विकृति पर करारी चोट है।

12. व्यंग्य साहित्य और मानव जीवन के बौद्धिक स्तर पर व्यक्त होने वाली संवेदना की विशिष्ट प्रक्रिया है।

13. व्यंग्कार अपने चतुर्दिक फैले पाखण्ड छद्म आचरण भ्रष्टता पदलिप्सा अनाचार गद्दी के संघर्ष और आपाधापी भ्रष्टाचार वैमनस्थ आदि को खुली निगाहों से देखना है।

14. व्यंग्य परिस्थितियों की उपज नीं है, पतनशील परिस्थतियों के प्रति सचेत मानसिकता की अभिव्यक्ति है।

15. व्यंग्य सोदेश्य होता है बिना लक्ष्य के व्यंग्य का सृजन नहीं किया जा सकता है।

16. व्यंग्य सामाजिक पीड़ा की अभिव्यक्ति है, जिसे व्यक्त करने का जोखिम भर दायित्व व्यंग्यकार के कंधो पर होता है।

**निष्कर्ष**

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर स्पष्ट है कि व्यंग्य मानव कल्याण और सामाजिक परिष्कार का भाव लिए साहित्य की एक संवेदनशील विधा है। मनुष्यों को उनकी निर्बलताओं की पहचान कराकर सुधारात्मक उद्देश्य को पूर्ण करता है। व्यंग्यकार को क्रांति का अग्रदूत कहा जा सकता है जो असामान्य को बदलने की प्रेरणा देता है। व्यंग्यकार एक चेतावनी देता है। भले ही व्यंग्य कठोरता कर्कशता लिये होता है परन्तु उसका उद्देश्य सदैव सृजन है निर्माण है परिष्कार है। व्यंग्य केवल समाज और राजनीति में ही नहीं अपितु, शिक्षा, साहित्य कला संस्कृति अर्थ और धर्म का भी दिग्दर्शन करने वाला है। व्यंग्य न तो निष्प्रयोजनीय है और ना ही नकारात्मक उसकी रचना प्रक्रिया का मूल समाज और उसका खोखलापन है तथा व्यंग्य का केन्द्र बिन्दु भी समाज ही है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. कैलाशदान लालसः 'कालजयी' महाराज मानसिंह पुस्तक प्रकाश, शोध केन्द्र सोजती गेट जोधपुर सं. 2023, पृ. सं. 43–53

2. कैलासदान लालस 'भला व्है भ्रष्टाचार रा' प्रकाशकः राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट जोधपुर सं. 2023, पृ.सं. 21–28

3. मदन केवलियाः 'गिनीज बुक सारू', प्रकाशक–पुस्तक मंदिर 4 , मूलदेवी क्वाटर्स नगर परिषद् बीकानेर, पृ. सं. 1–3

4. शरद उपाध्यायः 'चुगली की गुगली', प्रकाशक चेरी स्टेशनर्स एण्ड प्रिण्टर्स, कोटडी रोड़, गुमानपुरा कोटा सं. 2007 पृ.सं. 5–9, 12–13

5. श्याम सुन्दर भारतीः कलम अर बंदूक प्रकाशक मरूवीणा

# भक्तिभाव और गुरु-प्रेम की कवयित्री रानाबाई

**घनश्याम सोनी**
विद्यासंबल सहायक आचार्य,
प्रतापगढ़ (राज.)
ग्राम–पो. खेड़ुली, तह0–मेड़ता सिटी
जिला– नागौर, राजस्थान–341511
मो0 7014883025

भक्ति शब्द संस्कृत के ' भज् ' सेवायाम धातु में 'क्तिन' प्रत्यय लगाने पर बनता है। जिसका अर्थ 'सेवा करना' या भजना है , अर्थात श्रद्धा और प्रेम पूर्वक इष्ट देवता की प्रति आसक्ति।

मोनियर विलियम के अनुसार – भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' से की जा सकती है। (भज् का अर्थ भाग लेना )

भक्ति शब्द का वास्तविक अर्थ भगवान की सेवा करना।

**भक्ति की परिभाषाः–**

– "अपूर्व एवं प्रकृष्ट अनुराग रखने को ही भक्त कहते हैं। (महर्षि शांडिल्य के अनुसार)

– भगवान के प्रति परम प्रेम ही भक्ति है। (नारद मुनि के अनुसार)

– भगवान के महत्ज्ञान पूर्वक सुदृढ़ और सतत् स्नेह ही स्नेह भक्ति है। (माधवाचार्य के अनुसार)

–श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है। (आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार)

भक्ति शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख 'श्वेताश्वेतर उपनिषद' में मिलता है

हमारे साहित्यिक इतिहासकारों ने हिंदी साहित्य के इतिहास को चार भागों में वर्गीकृत किया जो क्रमशः इस प्रकार है।

1. आदिकाल 2. भक्तिकाल 3. रीतिकाल 4. आधुनिक काल

उच्च कोटि की काव्य रचना तथा आध्यात्मिकता में सामाजिक चेतना के कारण भक्ति काल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण काल कहा जाता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भक्ति भावना के उदय के कारण भारत में आक्रमणकारी मुसलमान द्वारा हिंदू जनता को प्रताड़ित किए जाने के कारण हिंदू कवि भक्ति साहित्य की लेखन की ओर अग्रसर हुए।

इसी मत का खंडन करते हुए हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भक्ति आंदोलन भारतीय चिंतन द्वारा का स्वाभाविक विकास बताया। उत्तर भारत के नाथो, सिद्धों की साधना व अवतार लीला की अवधारणा और जातिगत कठोरता दक्षिण भारत से आई हुई भक्ति धारा में घुल मिल गई।

द्विवेदी जी के अनुसार भक्ति आंदोलन और भक्ति काल का साहित्य लोकोन्मुख तथा करुणा एवं परदुखकातरता से युक्त है।

भक्ति साहित्य के लेखन का प्रमुख लक्ष्य शाश्वत मानव मूल्य की स्थापना करना माना जाता है।

भक्तिकालीन साहित्य सर्वप्रथम ' तमिल' भाषा में लिखा गया था , लेकिन आगे चलकर इसमें ब्रज, अवधी ओर राजस्थानी आदि भाषाओं का सर्वाधिक प्रयोग हुआ हैं। भक्ति आंदोलन की शुरुआत दक्षिण भारत से मानी जाती है। यह संपूर्ण भारत में धीरे–धीरे फैल गया इसकी उत्पत्ति एवं प्रसार के संबंध में निम्न श्लोक द्रष्टव्य हैं।

" उत्पन्ना द्रविडे चाहं, वृद्धि कर्णाटके गता।
क्वचित् क्वचित् महाराष्ट्रे,गुर्जरे जीर्णतां गता"

भक्ति काल का विभाजन दो धाराओं में किया गया।

1. निर्गुण काव्यधारा 2. सगुण काव्यधारा

**1. निर्गुण काव्य धारा** :– जिन भक्त कवियों के द्वारा निराकार ईश्वर की उपासना की गई उनके द्वारा रचित काव्य को ही निर्गुण काव्य धारा कहा गया।

– इस काव्य धारा के दो भेद हैं।

अ. ज्ञानाश्रयी काव्यधारा (सन्त काव्यधारा)

ब. प्रेमाश्रयी काव्यधारा (सूफी काव्यधारा)

**2. सगुण काव्य धारा** :– जिन भक्त कवियों के द्वारा साकार ईश्वर की उपासना की गई उनके द्वारा रचित काव्य को सगुण भक्ति काव्य धारा कहा गया ।

इस काव्य धारा के दो भेद हैं।

**अ. कृष्ण भक्ति काव्यधारा ब. राम भक्ति काव्यधारा**

ज्ञानाश्रयी काव्य धारा में संतों के द्वारा रचा गया काव्य संत काव्य कहलाता है परंतु हिंदी में निर्गुण उपासक ज्ञानमार्गी कवियों के द्वारा रचा गया काव्य संत काव्य कहलाता है।

संत साधना का साहित्यिक स्वरूप का दार्शनिक आधार शंकराचार्य द्वारा परिवर्तित "अद्वैत दर्शन" को माना जाता है।

संत संप्रदाय 'विश्व संप्रदाय' है और उसका धर्म 'विश्व धर्म' है। विश्व धर्म का मूलाधार हृदय की पवित्रता मानी गई है। संत शब्द का प्रयोग आमतौर पर बुद्धिमान ,पवित्र आत्मा परोपकारी ,सज्जन व्यक्ति के लिए किया जाता है।

संत साहित्य में इसे उस व्यक्ति के लिए प्रयोग किया गया जिसने सत् परम तत्व को अनुभव कर लिया है। जिसका सत्य से साक्षात्कार हो गया है वही संत है।

कबीर दास जी के एक दोहे में संतों की पहचान बताई गई है

"निरबैरी निहकामता, सांई सेती नेह।
विषया सून्दरा रहै, संतनि को अंह ऐह।"

संतमत का यथोचित कोई ग्रंथ नहीं है बल्कि संतमत अविरल चलती हुई परंपरा की तरह है।उस समय विभिन्न संतों ने जो व्यक्तिगत अनुभव किया उसे अपने मत में शामिल कर लिया गया। संतों का अनुभूत सत्य ही इस मत का आधार रहा है। जब संत काव्य धारा की बात चलती है, तो हमारे सामने कबीर , दादू व रविदास आदि संतों की छवि उबर कर आती है। इतिहासकारों ने भी अपना प्रमुख विषय पुरुष संतों के आसपास रखा है। नारी संतों में केवल मीराबाई का ही वैशिष्टय स्वीकार किया गया है, नारी संतों में अक्का महादेवी, सक्कू बाई ,बहिणाबाई , रानाबाई , अंडाल जैसी महिला संतों ने भी ईश्वर के प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति की है। जिनका परिचय निम्न हैं।

**अंडाल**: अंडाल, जिन्हें नचियार के नाम से भी जाना जाता है, दक्षिण भारत की भक्ति परंपरा से 9वीं शताब्दी की तमिल कवि–संत थीं। वह भगवान विष्णु के प्रति अपने भक्ति भजनों, विशेष रूप से थिरुप्पावई और नचियार थिरुमोझी के लिए जानी जाती हैं। अंडाल की कविताओं में भगवान कृष्ण के प्रति उनका गहरा प्रेम और भक्ति व्यक्त होती है।

**अक्का महादेवी**: अक्का महादेवी वीरशैव परंपरा से 12वीं सदी की कन्नड़ कवि–संत थीं। वह अपने वचनों (छंदों) के लिए जानी जाती हैं जो भगवान शिव के प्रति उनकी भक्ति को व्यक्त करते हैं। अक्का महादेवी कन्नड़ भाषा की शुरुआती महिला कवियों में से एक हैं।

**मीरा बाई**: मीरा बाई की कविताएँ अपनी भावनात्मक और आध्यात्मिक गहराई के लिए व्यापक रूप से प्रसिद्ध हैं।

**रानाबाई**:– इनको राजस्थान की दूसरी मीरा कहा जाता है। 16वीं सदी की जाट कन्या जो गुरु द्वारा बताये गए भक्ति मार्ग को ही अपना सर्वस्व समझकर समाज की बनी परिपाठी को तोड़ा तथा वैष्णव भक्ति का प्रसार किया।जिन्होंने पदों, शब्दों व गीतों के माध्यम से अपनी भक्ति भावना को उजागर किया

**सक्कुबाई**: सक्कुबाई 15वीं सदी की मराठी संत–कवि थीं, जिन्होंने भगवान कृष्ण के एक रूप भगवान विठोबा को समर्पित अभंग (भक्ति गीत) की रचना की थी। उनके भक्ति भजन विठोबा के भक्तों द्वारा आज भी गाए जाते हैं।

**बहिणाबाई चौधरी**: बहिणाबाई चौधरी 17वीं सदी की मराठी संत–कवयित्री थीं, जिन्होंने भगवान विठोबा के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करते हुए वारकरी परंपरा में भक्तिपूर्ण अभंगों की रचना की। उनका लेखन उनकी गहरी आध्यात्मिकता और भक्ति को दर्शाता है।

**लाल देद**: लाल देद, जिन्हें लल्ला आरिफा के नाम से भी जाना जाता है, 14वीं सदी की कश्मीरी संत–कवयित्री थीं। उन्होंने शैव परंपरा का पालन किया और उनके वाक् (छंद) आंतरिक आध्यात्मिक यात्रा और भगवान शिव के साथ स्वयं की एकता पर जोर देते हैं।

**जनाबाई**: जनाबाई, 13वीं सदी की मराठी संत–कवि, भगवान विठोबा की भक्त थीं। उन्होंने अपनी भक्ति अभंगों के माध्यम से व्यक्त की, और उनकी कविता उनकी सादगी और भक्ति को दर्शाती है।

मध्यकाल में संतों की तरह महिलाओं ने भी भक्ति

आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। महिलाओं ने मंत्रोच्चार, कविताएं, जीवन के गीत गाकर समाज के अंधविश्वासी लोगों को चुनौती दी।

ऐसे समय में जब नारीवादियों को किसी खास जगह में प्रवेश करने की मनाही थी, महिलाओं ने अपने जीवन जीने के तरीके से सभी रूढ़ियों को तोड़ दिया। इससे भारत में राजनीति, समाज, रिश्तों और धर्मों में सुधार के लिए सकारात्मक बदलाव आया।

इतना ही नहीं, बल्कि सशक्त महिलाओं ने अपने बच्चों और परिवार को छोड़ दिया और फिर अपने भगवान तक पहुँचने के लिए यात्राएँ कीं। उन्होंने न केवल अपने पतियों से भगवान का दर्जा छीन लिया, बल्कि अपने परिवार और मातृत्व को भी त्याग दिया। इस तरह, भक्ति आंदोलन ने पुरुषों और महिलाओं के लिए एक अलग भूमिका निभाई। महिला भक्ति की रचनाओं से हमें उसे समय की सामाजिक परिस्थितियों और घर और समाज की महिलाओं की स्थिति के बारे में बताती है उनके रहस्यवाद और तत्व मीमांसा के पीछे एक दिव्य उदासी छपी है।

नारी संतों की अधिकतर रचनाएं गुरु के महत्व की स्थापना, अपने आराध्य की प्राप्ति के लिए उनकी विकलता के विषयों पर ही मिलती है परंतु इनके साथ–साथ उनके सामाजिक चेतना भी इन रचनाओं में मुखर होती है।

नारी संतों ने निर्गुण और सगुण भक्ति के समन्वय की बात की है वह इन दोनों भक्ति पद्धति में किसी में भेद नहीं मानती है ।

**संत काव्य की प्रमुख विशेषताः–**

एकेश्वरवाद का समर्थन, गुरु की महत्ता

जातिवाद का विरोध, आमजन की भाषा का प्रयोग

आचरण की पवित्रता पर जोर, साधारण समाज सुधार व जन जागरण की चेतना का प्रसार

धार्मिक रुढ़ियों एवं सामाजिक कुरीतियों का विरोध

**समानता के प्रेम पर बल**

**आडंबरवाद एवं संप्रदायवाद का विरोध**

भक्ति काल की समय अवधि में राजस्थान में भी विभिन्न संत संप्रदाय के कवियों द्वारा अपने संत साहित्य के माध्यम से जनता की सोई हुई आशाओं को जगाने का काम किया। राजस्थान में विभिन्न संप्रदाय के संत कवियो तथा कवयित्रीयों ने अपने–अपने साहित्य के माध्यम से अपनी विचारधारा को जनता तक पहुंचा।

**संत रानाबाई का जीवन परिचय**

राजस्थान की दूसरी मीराबाई के रूप में जाने वाली भक्तिन कवयित्री रानाबाई का जन्म राजस्थान के नागौर जिले के परबतसर तहसील के हरनावा गांव में 1504 ई.(विक्रम संवत 1561) वैसाख सुदी (आखातीज )के दिन हुआ। इनके जन्म के लिए एक पद प्रसिद्ध है।

"पन्द्रह सौ इकसठ प्रकट, आखा तीज त्यौहार।
जहि दिन राना जन्म हो, घर–घर मंगलाचार।।
जाट उजागर धून जंग, नामी जालम जाट।
बस्ती रचक ओ दौ विगत, गण हरनावो ग्राम ।।
जालम सुत रामो सुजन, जा का राम गोपाल ।
उनका पुत्र भुवन ओरू, बाई बुद्धि विशाल ।।
पन्द्रह सौ इकसठ प्रत्यक्ष, तीज अक्षय त्यौहार ।
पिता राम गोपाल घर, राना को अवतार।।"

रानाबाई के परदादा जालम जी जाट के पूर्वज जैसलमेर के माने जाते हैं।

जालम जी के पुत्र रामुजी तथा रामु जी के पुत्र रामगोपाल जी के एक पुत्र भवान जी तथा 2 पुत्रियां रानाबाई ओर धानीबाई मानी जाती हैं।

रानाबाई बचपन से ही सक्रिय– क्रियाशील थी। उनका सहज गाम्भीर्य उनकी चाल चलन में था।उनकी चेहरे पर दैवीय क्रांति झलकती थी जैसे साक्षात् लक्ष्मी अपनी दिव्यता लेकर अवतरित हुई हैं।

रानाबाई अपने दादा की विशेष लाडली थी। जब रानाबाई 3 /4 वर्ष की हुई तब दादा के विशेष लाड़ के कारण उनके साथ समय व्यतीत करती थी।

रानाबाई के दादा जी अपना नित्यक्रम में रोज ब्रह्ममुहूर्त में रामनाम की माला फेरते देख रानाबाई का भी मन माला फेरने में लगा लिया। धीरे धीरे रानाबाई अपने सम्पूर्ण तन–मन से ध्यान लगाने लगे।।

इस भक्तिभाव को देख कर उनके घर वाले भी उन पर व्यंग्य करते कि इतना जल्दी राना तो वैरागी बन गयी।

रानाबाई 4 वर्ष की होने पर वह अपने दादा से सत्य, देवी–देवताओं गंगा ,गायत्री,गो, की कहानियां सुनती थी और भजन में ध्यान लगाती थी जैसे उनके पहले के कोई

संस्कार हो।

जैसे–जैसे ही रानाबाई की बाल्यावस्था बीती जा रही थी वैसे–वैसे उनका भक्ति भावना के प्रति गंभीरता बढ़ने लगी थी।

**गुरु के प्रति समर्पण :–**

" बढ़ती निशि दिन बालिका, खोजी गुरु मिल्या खास।
राम नाम आनंद को दीनो दृढ़ विश्वास"

रानाबाई के कालावधि में राम भक्त संत खोजी जी (चतुरदास जी) आसपास में रामकथा व रामनाम का जप करते थे। जिनका संबंध रामानंद संप्रदाय से था, यह राम के अनन्य उपासक थे ।

रानाबाई के दादाजी गांव के जागीरदार होने के कारण संत खोजीजी का उनके यहां पर आना–जाना रहता था इन संत भक्त खोजीजी की सेवा चाकरी का काम लाडली राना को दिया गया जो उन्होंने पूर्ण श्रद्धा के साथ किया था ।उनकी श्रद्धा के कारण खोजीजी ने रानाबाई को राममंत्र व गुरु ज्ञान का महत्व बताया तथा भक्ति मार्ग की ओर अग्रसर किया। गुरु के आगमन ओर गुरु ज्ञान के कारण उनका एक प्रसिद्ध सबद है।

"वारी वारी वारी वारी वारी वारी वारी म्हारा परम् गुरुजी।
आज म्हारो जनम सफल भयो,मैं गुरुदेव जी ने देख्या,
भाग हमारा है सखी, गुरुदेव जी पधार्या
काम, क्रोध,मद,लोभ ने म्हारा दूर निवार्या
बंदनवार घलावस्यां ये, मोत्यां चौक पुरावस्यां
पर दिखणां परणाम स्यूं ये, चरणां शीश निवास्यां।।
ढोल्यो रतन जड़ावरो ये, रेशम गिदरो बिछास्यां।
सतगुरु ऊँचा बिराजसी ये, दूधा चरण पखास्यां।।
आज म्हारे आनंद बधावणा ये, बायां मन भाया।
'राना' रे घरां बधावणा ये, गुरु 'खोजीजी' आया।।"

रानाबाई बचपन से ही परोपकारी व कोमल स्वभाव होने के कारण उनका ह्रदय करुणार्द्र था उन्होंने कबीर दास जी के एक दोहे

"साई इतना दीजिए जामें कुटुम समाय
मैं भी भूखा ना रहूं साधु भी भूख न जाए"

को चरितार्थ करते हुए कभी भी अपने घर आए किसी भी साधु संत को बिना किसी दान के जाने नहीं दिया ।जब भी वह किसी भिखारी को या साधु संत को दान देते थे तो उनसे " राम नाम जपो,सारे कष्ट दूर रखो" का मंत्र देते थे।

कहा जाता है कि रानाबाई बचपन से ही प्रतिभाशाली होने के कारण एक बार पढी हुई या सुनी हुई बात को याद रख लेते थे। 12 वे 13 वर्ष तक रानाबाई ने अक्सर ज्ञान के साथ धार्मिक पुस्तकों को भी पढ़ना सीख लिया था।

रानाबाई धीरे–धीरे रामकथा व राम नाम का भजन कीर्तन करने लगे रानाबाई की मधुर वाणी व राम कथा श्रवण के कारण स्थानीय आसपास के लोग तथा साधु संत उनसे कथा सुनने आने लगे।

**रामनाम का वरण :–**

गुरु संत खोजी जी महाराज के द्वारा मिले राम नाम के मंत्र को रानाबाई ने अपने अपने जीवन का मूल आधार बनाया ।

जब रानाबाई युवावस्था में आने पर घर वालों को उनके विवाह की चिंता होने लगी। जब वह उनसे विवाह की बात करते तो रानाबाई हमेशा यह कहकर टाल देते की मेरा तो एकमात्र वर राम है और कह देती कि " दूजे परणु तो राम दुहाई " मैं जन्म–जन्मांतर उसी से ब्याहती हूं ।

"राना कहे रामवर मेरा ,सतगुरु मेट्या सब उलझेरा
अमर सुहाग अमरवर पाया, तेजपुंज की उनकी काया"
मेरा वर तो अमरवर के प्राप्त होने से अमर हो गया है।
मुझे सांसारिक मोह–माया के पति की कामना नही हैं।

जिस राम नाम रट–रट कर जीव–जन्तु जगत सब जीव मुक्त होते हैं।ऐसे राम मेरे गुरु द्वारा मुझे मिल गये है और मेरे जीवन का आधार राम ही हैं।

**सामाजिक आलोचना :–**

यौवनावस्था में हर समय रामनाम में लीन रहना तथा विवाह के प्रति विरक्त होने के भाव के कारण समाज में तथा घर परिवार में भी रानाबाई की आलोचना का सामना करना पड़ा।

समाज के लोगों से यह सुनने को मिलता था की मुस्लिमों का राज है और बिना पुरुष के कैसे जीवन व्यतीत होगा। कब तक अपने पिता व भाई के घर पर बोझ बनती रहेगी।

भजन – कीर्तन हमने भी किये हैं लेकिन संसार की परिपाटी नही तोड़ी।

**रानाबाई की भक्तिभावना :—**

रानाबाई सामाजिक आलोचना व निंदा से परेशान होकर पूरे समाज से व घर परिवार से मुँह मोड़ लिया।

रानाबाई घर में गहरे बंबरे में बैठ कर रामनाम मन्त्र का जाप करने लगे। कहा जाता है कि 6 माह की कठिन भक्ति व तपस्या से साक्षात प्रभु के दर्शन हो गये।

6 माह बँबर में भक्ति करते रानाबाई बैकुंठ सहित संपूण त्रिलोक के दर्शन कर लिये।

रानाबाई की 6 माह की तपस्या पूर्ण के बाद स्थानीय लोगो मे परचे देने लगे जैसे दैत्यराज का अंत, हरनावा गाँव मे प्रेत उत्पात,ठाकुर राजसिंह राठौर कि युद्ध में सहायता व जोधपुर रसाले को रानाबाई का उद्धार इत्यादि।

**रानाबाई की वृंदावन के प्रति लगाव :—**

रानाबाई ने सलेमाबाद के निम्बार्काचार्य परशुराम देव के साथ वृंदावन तीर्थ स्थल का दौरा किया था ।भगवान श्री गोपीनाथ की उपासना का रहस्य व गोपी भाव का प्रभाव स्वामी परशुराम महाराज की प्रेरणा से प्राप्त हुआ। वृंदावन में वह गोपीनाथ की मूर्ति के सामने बैठ कर उनको अपने देश लाने के लिए प्रार्थना करते हुए कहती है कि

"राना री अरदास नाथ थासूं, राना री अरदास।
जनम मरण री फेरी मिट गई, पायो परम प्रकास।।
बिंदराबन बंशीबट जमना, भलो करायो बास।
उछब नित्त नया ही बिरज में, रमै सांवरो रास।।
म्हारे संगड़े मुरधर चालो, पुरवौ म्हारी आस।
बिनवै 'राना' सतगुरु 'खोजी', परसराम परकास।।"

वृंदावन में रानाबाई जी को वहां का भक्तिमय वातावरण इतना अच्छा लगा की वृंदावन से वापस आते समय गोपीनाथ व राधा जी की मूर्ति हरनावा ले आए ओर विधिवत पूजा प्रतिष्ठा कर उनकी सेवा पूजा करने के साथ साथ भजनगान व नृत्य कीर्तन करने लगे।

**ज्ञानुपदेश के साथ लेखनः—**

रानाबाई संत होने के साथ—साथ कवयित्री भी थी इन्होंने अपने गीत व पद राजस्थानी भाषा में लिखे यह अपने उपदेश भी राजस्थानी भाषा में देते थे। इनके गीतों का संकलन "श्री रानाबाई की पर्ची" में है रानाबाई के चरित्र पर निम्बार्काचार्य श्री परशुराम देवाचार्य ने भी रानाबाई के चरित्र पर एक पद "कोई दुख देते लेते परचै को" नाम का बनाया था। इनके गीतों के संग्रह को राना पदावली कहा जाता है।

**रानाबाई की जीवित समाधिः—**

" सौला सौ विक्रम सही,सताईस शुभसाल।
लीला समाधि राना समझ,जैजे झूठा जंजील"।।

रानाबाई ने 1570 ई (विक्रम संवत 1627) को 66 वर्ष की उम्र में जीवित समाधि ली।

यह समाधि कच्ची बनवाई गई वर्तमान में इसके संदर्भ में बहुत मान्यता है की इस समाधि की पूरी फेरी कभी नहीं लगती है।

हरनावा गांव में इनके समाधि स्थल पर प्रतिवर्ष भादवा सुदी तेरस को भव्य मेला लगता है।

**निष्कर्षः—**

रानाबाई के जीवन चरित्र का अध्ययन करने पर इस मान्यता पर बल मिलता है कि भगवान से साक्षात्कार तथा इस जीव जगत से मुक्ति पाने के लिए कठिन साधना व तपस्या करनी पड़ती है।

सामाजिक विरोधों तथा व्यवधानों का सामना करने के साथ भी आपको एकाग्रता की आवश्यकता होती है। इस एकाग्रता व तल्लीनता के साथ कठोर तप करने पर ही प्रभु की शरणागति को पा सकते हैं।

**संदर्भ ग्रन्थः—**


1. हिंदी साहित्य का इतिहास — आचार्य रामचंद्र शुक्ल पी.बी.डी. पब्लिकेशन पृ. सं. 41—50
2. हिंदी साहित्य का सरल इतिहास — विश्वनाथ त्रिपाठी ओरियंट ब्लैकस्वान प्रकाशक पृ. सं. 11—15,17—20
3. हिंदी साहित्य का इतिहास : निरन्तरता ओर बदलाव — डॉ सुभाष चन्द्र प्रकाशक सत्यशोधक फाउंडेशन पृ.सं. 95,96
4. श्री रानाबाई जी की पर्ची
5. जाटों की गौरव गाथा प्रकाशक राजस्थानी ग्रन्थागार पृ.सं.48
6. भक्तिमयी महासती रानाबाई — विजय जी नाहर पृ. सं. 19—30,41—42
7. लेख "रानाबाई" लेखक लक्ष्मण जी बुरड़क
8. श्री रानाबाई मन्दिर पुजारी श्री रामाराम जी धूण

# शिक्षा का दार्शनिक दृष्टिकोण एवं भारतीय दर्शन में ईश्वर की अवधारणा

**अम्बालाल जेदिया**
शोधार्थी (शिक्षा संकाय)
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय
जोधपुर

मानव जीवन स्वयं एक दर्शन है। संसार का प्रत्येक मानव दार्शनिक है, क्योंकि वह जन्म से मृत्यु तक घटित होने वाली सभी घटनाओं को उत्सुकता एवं कौतुहल से देखता है। प्रत्येक नई बात तक पहुँचना उसका स्वभाव है। नई परिस्थितिया मे निष्कर्ष निकाले बिना मनुष्य को शांति नही मिल सकती, तभी तो वह जन्मजात दार्शनिक है। युक्ति पुर्वक तत्व ज्ञान प्राप्त करने के प्रयत्न को ही दर्शन कहते है।

'दर्शन' सुव्यवस्थित ढ़ंग से अनवरत चिन्तन करने की एक कला है। इसमे मानव जीवन से सम्बंधित समग्र वस्तुओं पर तार्किक .ष्टि से विचार किया जाता है। साथ ही पार लौकिक जगत और इहलौकिक जगत का सम्बंध एवं उनके रहस्यों की व्याख्या आदि पर विचार किया जाता है।

भारतीय दर्शन के सम्प्रदायों का विभाजन दो भागों में किया गया है, आस्तिक दर्शन और नास्तिक दर्शन। जो वेद को मानता या स्वीकारता है वह आस्तिक दर्शन तथा जो वेद को अस्वीकार करता है वह नास्तिक दर्शन कहलाता है। एक दूसरे अर्थ में नास्तिक और आस्तिक का विभाजन ईश्वर के आधार पर किया गया है। जो ईश्वर को स्वीकारता है या उसमे आस्था रखता है वह आस्तिक तथा जो ईश्वर को अस्वीकार या उसमें आस्था नहीं रखता है वह नास्तिक कहलाता है। जिसे ईश्वरवादी और अनीश्वरवादी भी कहा जाता है। व्यावहारिक जीवन में भी आस्तिक और नास्तिक का प्रयोग इसी आधार पर किया जाता है लेकिन दार्शनिक अर्थ में आस्तिक और नास्तिक का प्रयोग वेदों के आधार पर ही किया गया है।

ईश्वर की अवधारणा में ''ईश्वर है या नहीं?''

इस प्रकार भारतीय दर्शन के नौ दर्शनों में से 6 दर्शन आस्तिक तथा 3 दर्शन नास्तिक की श्रेणी में आते है जो इस प्रकार है–

भारतीय दर्शन

आस्तिक दर्शन — सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमासा, वेदान्त

नास्तिक दर्शन — चार्वाक, जैन, बौद्ध

भारतीय दर्शन में ईश्वर का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसका यह भी कारण है कि धर्म की अमिट छाप भारतीय दर्शन पर है। साधारणतया धर्म उसे कहा जाता है जो ईश्वर में विश्वास रखता हो । भारतीय दर्शन का धर्म से प्रभावित होने के कारण ही ईश्वर के बारे में अत्यधिक चर्चा की गई है। भारतीय दर्शन में जो दर्शन ईश्वर को मानते हैं या स्वीकारते हैं उन्हें ईश्वरवादी और जो दर्शन ईश्वर को अस्वीकार करते है वह अनीश्वरवादी कहलाते है।

1. ईश्वर की अवधारणा में ''ईश्वर है या नहीं? ईश्वर का स्वरूप क्या है? ईश्वर के अस्तित्व का क्या प्रमाण है?'' आदि को जानने का प्रयास किया जाता है। जो दर्शन आस्तिक है उन्हें श्षड्दर्शनश भी कहा जाता है क्योंकि ये सभी ''दर्शन किसी–न–किसी रूप में वेदों पर आधारित है।''

2. वेद ही भारतीय दर्शन का प्रारम्भ बिन्दू है। वेद में कई देवताओं के विचार वर्णित हैं। अनेकेश्वरवाद अनेक ईश्वरों में विश्वास करता है। एकैकाधिदेववाद (हीनोथीज्म) उसे कहा जाता है जब बहुत सारे देवताओं में से कोई एक उपास्य बन जाता था। एकेश्वरवाद में एक ही शत् तथा विश्व का मूल तत्व है और वह है प्रजापति या स्त्रष्टा। इस तरह वेदों में हमें अनेकेश्वरवाद, एकाधिदेववाद तथा

एकेश्वरवाद की अवधारणा मिलती है।

उपनिषद् में ब्रह्म को ही चरम् तत्व माना गया है। ''देवताओं को यहाँ ब्रह्म का प्रकाशित रूप माना गया है। देवतागण अपनी सत्ता के लिए ब्रह्म पर निर्भर रहते हैं। ईश्वर का स्वतन्त्र अस्तित्व समाप्त हो जाता है।'' ब्रह्म के दो रूपों का वर्णन उपनिषदों में मिलता है। (1.) परब्रह्म (ब्रह्म), (2.) अपरब्रह्म (ईश्वर)। पर ब्रह्म को निर्गुण, असीम माना गया है तथा अपरब्रह्म को सीमित और सगुण माना गया है। ''ईश्वर को उपनिषदों में सबको प्रकाश देने वाला तथा कर्मों का अधिष्ठाता माना गया है। वह स्वयंभू तथा जगत् का कारण है। माया उसकी शक्ति है। उपनिषदों में ईश्वर को विश्वव्यापी तथा विश्वातीत दोनों माना गया है।'' भगवद्गीता में ईश्वर को परम् ज्ञानी, जगत् का परम् निधान, अक्षर तथा सनातन पुरूष कहा गया है तथा पूर्ण रूप से व्याप्त है। ईश्वर ही विश्व की नैतिक व्यवस्था तथा जीव को उनके कर्मों के अनुसार सुख–दुःख प्रदान करता है। ईश्वर उपासना का विषय तथा परम् सत्य है। ''गीता में ईश्वर को 'पुरुषोत्तम' कहा गया है।''

भगवद्गीता के पश्चात् भारतीय दर्शन की रूपरेखा मे कुछ परिवर्तन होता है । भारतीय दर्शन का विभाजन आस्तिक और नास्तिक सम्प्रदायों में होता है। चार्वाक, जैन और बौद्ध नास्तिक तथा साँख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मींमासा, वेदान्त आस्तिक की श्रेणी में आते है। चार्वाक दर्शन ने अपने दर्शन में ईश्वर को कोई स्थान नहीं दिया है। चार्वाक प्रत्यक्ष को एकमात्र प्रमाण मानने के कारण ईश्वर को अस्वीकार करता है। चार्वाक ने ईश्वर के लिए बहुत ही निर्मम शब्दों का प्रयोग किया है। ईश्वर से प्रेम को चार्वाक ने काल्पनिक वस्तु बताया है।

जैन और बौद्ध ने भी ईश्वर के अस्तित्व का निषेध किया है। जैन दर्शन, ईश्वरवादियों द्वारा ईश्वर के अस्तित्व में दी गई युक्तियों का खंडन करता है। तथा युक्तियों के आधार पर खंडन करके वह ईश्वर को अप्रमाणित और असिद्ध बतलाता है। बौद्ध दर्शन में बुद्ध ने कहा है कि ''ईश्वर से प्रेम करना एक ऐसी रमणी से प्रेम करने के तुल्य है जिसका अस्तित्व ही नहीं है।'' विश्व का कारण ईश्वर को मानना भ्रम है। विश्व या संसार तो प्रतीत्य समुत्पाद के द्वारा संचालित है।

जैन और बौद्ध दर्शन में ईश्वर का निषेध किया गया है। फिर भी हमें ईश्वर विचार के दर्शन होते है। बौद्ध धर्म की महायान शाखा में बुद्ध को ही ईश्वर का रूप माना गया है तथा बुद्ध को भी मृत्यु के बाद ईश्वर के रूप में पाते है। जैन दर्शन में भी तीर्थकरों को ईश्वर के स्थान पर माना गया है। लेकिन फिर भी जैन और बौद्ध अनीश्वरवादी दर्शन ही माने जाते है।

न्याय दर्शन ईश्वरवादी है तथा ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करता है। ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए नैयायिकों ने कई प्रमाण दिये है न्याय में ईश्वर को विश्व का स्रष्टा माना गया है तथा वह इस संसार की सृष्टि नित्य परमाणुओं और दिक्काल, आत्मा तथा मन के द्वारा करता है। वैशेषिक भी न्याय दर्शन की तरह ईश्वर का समर्थ है तथा ईश्वर एक आत्मा है जो चेतना से युक्त है। वैशेषिक ने आत्मा के दो प्रकार बताये है। 1. जीवात्मा, 2. परमात्मा। ईवर को ही परमात्मा कहा है जो विश्व का स्रष्टा, पालक और संहारक है।

सांख्य दर्शन में ईश्वर को लेकर उसके समर्थकों में वाद–विवाद भी है। विज्ञान भिक्षु ईश्वरवादी है। उनके अनुसार सांख्य अनीश्वरवादी नहीं है। ष्सांख्य ने केवल इतना ही कहा है कि ईश्वर के अस्तित्व के लिए कोई प्रमाण नहीं है। ईश्वर असिद्ध है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि साँख्य अनीश्वरवादी है, अमान्य प्रतीत होता है। इसके विपरीत साँख्य ईश्वरवादी है। विज्ञान भिक्षु का कहना है कि यद्यपि प्र.ति से समस्त वस्तुएँ विकसित होती है तथापि अचेतन प्र.ति को गतिशील करने के लिए ईश्वर के सानिध्य की आवश्यकता होती है। उनके अनुसार युक्ति तथा शास्त्र दोनों से ही ऐसे ईवर की सिद्धि होती है । परन्तु सांख्य की यह ईश्वरवादी व्याख्या अधिक मान्य नहीं है। अधिकांश टीकाकारों ने सांख्य को निरीश्वरवादी (।जीमपेजपब) ही माना है।'' ईश्वर का अस्तित्व नहीं है इसके लिए सांख्य ने कई युक्तियाँ भी दी है।

ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए योग दर्शन ने कई युक्तियाँ दी है। योग में ईश्वर के स्वरूप का वर्णन करते हुए ''महर्षि पतंजली ने कहा कि– "क्लेशकर्माविपाकाशयेरपरामृष्टः पुरुषविशेषः ईश्वरः'' अर्थात् क्लेश, कर्म, विपाक और आशयों से रहित पुरूष विशेष

ईश्वर है। योग दर्शन में ईश्वर का व्यावहारिक महत्व भी बताया गया है। योग दर्शन का मुख्य लक्ष्य चित्त वृत्तियों का निरोध है और इसकी प्राप्ति ईश्वर प्राणिधान से ही संभव मानी गई है। अर्थात् ईश्वर की भक्ति करना। ध्यान के सर्वश्रेष्ठ विषय के रूप में भी ईश्वर को ही योग दर्शन में माना गया है। ''प्रणव (ध) ईश्वर का प्रतीक माना गया है।''

मीमांसा दर्शन निरीश्वरवादी है। मींमासा में अनेक देवों को स्वीकार किया है लेकिन सृष्टि कर्ता के रूप में ईश्वर को स्वीकार नहीं करता है। ''न्याय – वैशैषिक मत में ईश्वर के अस्तित्व के लिए दिए गए प्रमाणों को ये दोनों ही मत (प्रभाकर एवं कुमारिल) स्वीकार नहीं करते।'' मींमासा दर्शन ईश्वरवादी नहीं है फिर भी वह आस्तिक है।

अद्वेत वेदान्त में शंकर ने ईश्वर को केवल व्यावहाकि दृष्टि से ही सत्य माना है परमार्थिक दृष्टि से नहीं। परमार्थिक दृष्टि से तो शंकर ने ब्रह्म को एकमात्र सत्य माना है। ''शंकर ने ईश्वर को जगत् की तरह व्यवहारिक सत्ता के अन्दर रखा है।'' ईश्वर के अस्तित्व को शंकर ने श्रुति के द्वारा प्रमाणित किया है। ''शंकर ने ब्रह्म को ''सच्चिदानंद'' कहा है। ''सच्चिदानंद का अर्थ है सत् (existence) + चित् (consciousness) + आनन्द (bliss)। ब्रह्म, सत्ता, विशुद्ध चेतना एवं आनंदमय है।'' विशिष्टाद्वैत वेदान्त में रामानुज ने ब्रह्म और ईश्वर को अभिन्न माना है। शंकर ने ब्रह्म और ईश्वर में भेद किया है। लेकिन रामानुज ब्रह्म और ईश्वर को एक मानते हैं। ब्रह्म को शंकर ने निर्गुण तथा रामानुज ने सगुण माना है। रामानुज के अनुसार ''ब्रह्म ही ईश्वर है। ब्रह्म ईश्वर होने के कारण सगुण है। वह पूर्ण है। वह जीवों को उनके शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार सुख, दुःख प्रदान करता है। वह कर्म–फलदाता है। वह उपासना का विषय है। वह भक्तों के प्रति दयावान रहता है। ईश्वर की कृपा से ही मोक्ष प्राप्त है।''

इस प्रकार भारतीय दर्शन में भी ईश्वर पर विचार विमर्श किया गया है। जिसमें अरविन्द, विवेकानन्द, राधाकृष्णन, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी आदि ने अपने दर्शन में ईश्वर को केन्द्र बिन्दू बनाया है।

# माध्यमिक स्तर पर खेल तथा शिक्षा का सामाजिक, राजनीतिक यातायात एवं परिवहन में सामाजिक मनोविज्ञान का प्रभावात्मक अध्ययन

**निकेता सोलंकी**
शिक्षिका
Email:- niketasolanki09@gmail.com

**सारांश : सभी खेल अच्छे है।**

खेल एक स्वाभाविक, सार्वभौमिक तथा आनन्ददायी क्रिया है। खेलों के द्वारा बालकों का ही नही बल्कि बड़ों का मनोरंजन(Entertainment), शारीरिक(Physical)] मानसिक(Mental), सामाजिक(Social) तथा संवेगात्मक(Emotionality) विकास होता है।

खिलाड़ी मनोवैज्ञानिक की सलाह लेकर अपने खेल में सुधार कर सकते है। कुछ खिलाड़ी अवसाद से ग्रस्त हो जाते है, कुछ थकान अनुभव करते हैं। ऐसे खिलाड़ियों की मदद खेल मनोवैज्ञानिकों से ली जा सकती है।

खेल मनोवैज्ञानिक (Psychologist) उन्हें अपने कार्य में सफल होने की युक्ति से परिचित करा सकते है। शिक्षा(Education) एक ऐसी सामाजिक क्रिया है। समाज(Social) के विचारों में परिवर्तन एवं विकास का कार्य शिक्षा ही करती है।

बालक के सामाजिक व्यक्तित्व(Personality) का निर्माण होता है और वह व्यवहारिक बनता है। इसलिए सामाजिक मनोविज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है।

राजनीतिक(Political) मनोविज्ञान का उद्देश्य व्यक्ति और ऐसे विषयों के मध्य संबंध को दर्शाता है, जो प्रोत्साहन, विश्वास, अनुभव तथा सूचना प्रक्रिया से प्रभावित है।

शोधकर्ता ने बच्चों को ग्रामीण स्तर पर तथा अपने विद्यालय स्तर पर काल्पनिक उदाहरण प्रस्तुत करके राजनीति स्तर से पूरी तरह परिचित कराया है। जिससे बच्चों में उत्सुकता दिखाई दी है।

यातायात तथा परिवहन का विकास यातायात मनोविज्ञान से जुड़ा है। शोधकर्ता ने बच्चों को बताया कि अपने स्कूलों के वाहनों का पीला रंग होने का मुख्य कारण है कि वह दूर से दिखाई देता है जिससे किसी प्रकार की हानि नहीं हो पायें। परिवहन सेवाओं की सुचारू निगरानी के लिए राज्य को 12 परिवहन संभागों और 54 परिवहन जिलों में बांटा गया है।

इसमें बच्चों को वर्तमान के उदाहरण देकर बताया गया है।

जिसमें सभी बच्चों ने यातायात परिवहन के सभी नियमों की पालना करने का संकल्प लिया है। यह सभी गतिविधियां विद्यालय स्तर में मनोविज्ञानिक खेल विधि के माध्यम से अवगत कराएं है।

विश्व स्तर पर खेल सर्वप्रथम कुश्ती को माना गया है जो 708 ईसा पूर्व में हुई थी।

यह भारत का भी सबसे पुराना खेल माना जाता है। राजस्थान में सर्वप्रथम बास्केटबॉल की शुरूआत 1948 ई. से मानी जाती है।

शोधकर्ता ने प्राचीन खेलों तथा वर्तमान खेलों की सभी गतिविधियों की जानकारी से अवगत कराया। जिससे माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के साथ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के साथ विद्यालय स्टाफ में भी रूचि देखी गई है। इनसे इतने प्रभावित हुए जो सभी विद्यार्थी कक्षा 1–12 तक ने प्रण लिया कि हमारी पढ़ाई की षुरूआत खेल से करेंगे।

खेल से जीवन की सभी गतिविधियों से रूबरू होने से सहायता मिलती है।

शोधकर्ता ने बताया की सरकार भी खेलों पर पूरी तरह से आगे बढ़ने में मदद कर रही है। जो वर्तमान युग में

नवयुवक व बूढ़े बुजर्ग सभी महत्व समझकर प्रतिदिन खेलते है।

**शोधकर्ता ने निम्न शब्दावली काम में ली –**

समाज :– सामाजिक संबंधों का जाल

सामाजीकरण :– किसी व्यक्ति को समाज के अनुकूल बनाने की प्रक्रिया

मनोविज्ञान :– व्यवहार का विज्ञान

खेल मनोविज्ञान :– खेल खेलने का तथा उसके महत्व का मनोविज्ञान।

राजनैतिक मनोविज्ञान :– राजनीति में काम आने वाला मनोविज्ञान।

यातायात मनोविज्ञान :– परिवहन से सम्बन्धित।

**प्रस्तावना :–**

सामान्य मनोविज्ञान में जीवित प्राणियों के व्यवहारों का अध्ययन उद्दीपक प्राणी अनुक्रिया के अन्तर्गत किया जाता है।

इस प्रकार सामाजिक मनोविज्ञान (Social Psychological) में सामाजिक उद्दीपक मानव सामाजिक अनुक्रिया के अन्तर्गत व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। मनोविज्ञान मानव व्यवहारों का विज्ञान है और व्यवहारों को उपयोग में लाने का काम शिक्षा करती है। क्रिया–प्रतिक्रिया तथा अंतःक्रिया के द्वारा शिक्षा व्यवहार का विकास करती है।

मानव व्यवहार को वांछित स्वरूप प्रदान करती है। मनोविज्ञान (Psychology) के सिद्धान्तों का मानव जीवन में विनियोग कर बालक को सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व के रूप में ढ़ालने का काम सामाजिक मनोविज्ञान करता है।

शोधकर्ताओं ने माना है कि आधुनिक ज्ञान की विशेषता है उसका व्यवहारपूरक होना। इस दृष्टि से सामाजिक मनोविज्ञान का महत्व और भी बढ़ जाता है।

सामाजिक मनोविज्ञान मानव व्यवहार को संतुलित एवं व्यवस्थित करता है।

शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मनोविज्ञान से इतना अवगत कराया है जो उसमें सभी परिवर्तन दिखाई देने लगे।

**खेल के उद्देश्य :–**

(Social psychology of Sports) खेल का सामाजिक मनोविज्ञान – नालन्दा विशाल शब्द सागर के अनुसार खेल का सामान्य अर्थ है– चित्त की उमंग या मन बहलाव।

खेल एक स्वाभाविक सार्वभौमिक, आत्मप्रेरित एवं आन्नाचिनी क्रिया है।

स्टार्न के अनुसार – खेल एक स्वैच्छिक और आत्मकेन्द्रित क्रिया है।

T.P. नन के अनुसार – ष्खेल रचनात्मक क्रियाओं की व्यापक अभिव्यक्ति है।

(Importance of Play in Child Development) बालकों के विकास में खेल के महत्व जैसे –

शारीरिक विकास, मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास, नैतिक विकास, आदि।

(Types of Play) खेलों के प्रकार –

बालक आनन्द की प्राप्ति और मनोरंजन के लिए विभिन्न प्रकार के खेलों को खेलता है।

कभी बालक अकेला खेलता है तो कभी समूह में।

1. व्यक्तिगत खेल
2. सामूहिक खेल

इन दोनों प्रकार के खेलों के आधार पर कार्ल ग्रम ने बालोपयोगी खेलों का विस्तृत रूप में वर्णन किया। उसके पाँच प्रकार के खेल को अधिक महत्वपूर्ण माना जो निम्न है– परिणात्मक खेल, गतिशील खेल, रचनात्मक खेल, लड़ाई का खेल, बौधिक खेल, अन्य प्रकार के ।

शोधकर्ता ने बताया कि वर्तमान सरकार ने राजस्थान में भिन्न–भिन्न खेलों को बढ़ावा दे रही है।

**खेल अध्ययन का औचित्य :–**

किसी भी तरह का अध्ययन हो उनकी सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगिताओं पर निर्भर करती है।

धीरे–धीरे वह विकास की ओर अग्रसर होता है उसमें शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक विकास भी होता है। और उसे इस संसार के अस्तित्व की जानकारी होने लगती है।

खेल जीवन में महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। शोधकर्ता ने बताया कि खेल के बीना जीवन अपूर्ण है। वर्तमान युग के खेलों के हर क्षेत्र में प्रभाव बढ़ता ही जा रहा

है।

खेल है तो जहान् है।

**खेल अध्ययन की परिकल्पनाएँ –**

अनुमान के आधार पर खेल षोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाए :–

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जानकारी नहीं होने से उसमें अभिवृति की कमी है।

बालक एवं बालिकाओं में शिक्षा खेल के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में खेल शिक्षा मनोविज्ञान के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं है।

**शोध अध्ययन की परिसीमाएं–**

प्रस्तुत शोध को माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा गया है।

यह अध्ययन 20 विद्यालय के 300 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

**शोध प्रविधि –**

शोधकर्ता ने प्राचीन विधि तथा सर्वेक्षण वर्तमान विधि से अनुसंधान के विशय को स्तर निर्धारण करने में सहायक होते है विद्यार्थियों के हर तरह की विधि का भी अवलोकन करके बताया भी था।

**न्यायदर्श :–**

वर्तमान खेल में शोधकर्ता ने यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया है जो योजना से नहीं होकर अपने अनुसार ही होती है।

**उपकरण –**

शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के खेल मनोविज्ञान के प्रति जुड़ाव का भरसक प्रयास करके स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया है।

**सांख्यिकि –**

शोधकर्ता ने निम्न प्रयोग किये –

– प्रतिशत
– मध्यमान
– माध्य विचलन
– टी मान

**निष्कर्ष–**

कोई भी शोधकर्ता तभी सफल माना जा सकता है जबकि उनकी खेल शिक्षा के क्षेत्र में योगदान हो।

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों को खेल मनोविज्ञान तथा सामाजिक राजनीतिक का यातायात परिवहन के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता उत्पन्न करके भविष्य निर्माण की खेल शिक्षा की भावना जाग्रत की गई है।

**सन्दर्भ ग्रंथ –**

| भारत के प्रमुख खेल | | खिलाड़ियों की संख्या |
|---|---|---|
| कबड्डी | – | 7, 7 त्र 14 |
| क्रिकेट | – | 11, 11 त्र 22 |
| बैडमिंटन | – | 2 या 4 |
| जूडो | – | 20, 20, 1रेफरी |
| खो – खो | – | 12, 12 लेकिन 9 खिलाड़ी खेलते है। |
| शतरंज | – | 02 |
| बाघ–बकरी | – | 02 एक के पास चार बाघ बाघ और दूसरों के पास 2बकरियां |
| बास्केट | – | 55 |
| लंगड़ी | – | |

**नोट –** भारत में आधिकारिक तौर पर कोई राष्ट्रीय खेल नहीं है। दरअसल हॉकी हमारा राष्ट्रीय खेल है। लेकिन क्रिकेट के प्रशंसक ज्यादा है।

प्राचीन समय में दौड़, मुक्केबाजी, कुश्ती, तलवारबाजी, भाला फेंकना रथों की दौड आदि खेल खेले जाते थे।

**सन्दर्भ ग्रंथ –**


1 Mathur, S.S(2011), Social Psychology, Agrawal Publication, Agra

2 सुलेहमान मोहम्मद (2010) आधुनिक मनोविज्ञान, नई दिल्ली।

3 त्रिपाठी, बाल वचन (2010) – आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान, एच.वी, भार्गव बुक हाउस, आगरा।

# COMPARATIVE ANALYSIS OF SOLAR CONVERSION EFFICIENCY IN THIRD-GENERATION PHOTOVOLTAIC CELLS: METHODS, TOOLS, AND TECHNIQUES

**BHAWESH BHASKAR SONI**
Research Scholar, Department of Physics
SKD UNIVERSITY, HANUMANGARH
(RAJASTHAN)

## ABSTRACT

How much light radiation that sunlight powered chargers are presented to at last decides how much power that they can create, while how much time that they might be utilized depends on the temperatures that they are presented to. This study was directed fully intent on deciding what the power of the light means for how much power that sunlight based chargers produce and how proficient they are. With the end goal of this examination, an immediate estimating method is used wherein a monocrystalline sunlight based charger and a polycrystalline sun powered charger with similar power limit and a pinnacle limit of fifty watts for every watt are used. The examination was completed inside, with lights filling in as the wellsprings of brightening. The force of the light was differed inside the scope of 2.21-331.01 W/m, - 2, and the distance between the sunlight powered charger and the light source was expanded by fifty centimeters. An expansion in temperature on the outer layer of the sunlight based charger can likewise bring about a diminishing in how much power that is created, and the monocrystalline sort of sunlight powered charger is more impervious to temperature increments than the polycrystalline assortment. There is an adjustment of the effectiveness of the sun powered charger when it is presented to light of a specific energy, up to the most elevated force of 331.01 watts per square meter. The most noteworthy temperature that happens brings about an effectiveness of 12.84% on the monocrystalline board and 11.95% on the polycrystalline board.

**Keywords:** Efficiency, solar panels, 50 Wp, monocrystalline, polycrystalline

## INTRODUCTION

Because of the way that a semiconductor material structure as a p-n (positive-negative) diode will create a progression of electrons inside it when it is presented to a light shaft, this kind of material is alluded to as a Sunlight based Cell. Sunlight based cells are equipped for being used as a wellspring of electrical energy. Because of the way that the sun is the most remarkable light source that can be utilized as a stockpile of light beams in sun based cells, sun powered cells are some of the time alluded to as photovoltaic cells. Then again, photovoltaic cells can be perceived as "lightelectricity." It is important to join various sun powered cells in a particular locale that is alluded to as the sun powered charger to meet the electron stream limit necessities. The photovoltaic impact alludes to the alleged progression of current or the exchange of electrons between two layers of photovoltaic cells that are restricting in the sunlight based charger. This happens because of the sun powered charger being presented to daylight.

Sunlight based chargers are presently the most effective, harmless to the ecosystem, and practical technique for power age that finding anyplace in the globe is conceivable. Various sorts of sun powered charger innovations, including monocrystalline silicon, polycrystalline silicon, nebulous silicon, and dainty movies, are among the

most generally involved advancements for the age of power. The electrical attributes and the climate wherein sunlight based charger modules are arranged are two factors that impact the exhibition and effectiveness of these modules [1].

Albeit the sun never stops sending its beams, how much daylight that is accessible in various districts of the globe vacillates considerably because of the way that the temperatures of the climate and the states of the air are unique. Thus, the Greatest Power Point (MPP) of sunlight based chargers is helpless to vacillations. Thus, a Greatest Power Point Following (MPPT) regulator is expected to run the sunlight based charger at its most extreme power point position [2]. As of late, various methodologies have been created to follow the MPP, which is the most common way of arranging sun powered chargers in the fitting daylight to amplify the result force of sunlight powered chargers, no matter what the temperature conditions, radiation, and electrical burden qualities [3].

The temperature of the photovoltaic not set in stone by the occurrence of brilliant power thickness, the electrical power yield, and the warm properties of the semiconductor materials that were utilized in the assembling of the module. In the sun oriented range, just a part of the energy is transformed into power, while the excess energy is released as intensity. As an outcome of this intensity, the temperature of the module increments, which prompts a decrease in the effectiveness of the module as well as the result power [4].

The modules of sunlight based chargers are affected by the general climate, which thusly meaningfully affects the productivity of the sunlight powered chargers or how much electrical energy that is delivered. As per the discoveries of this exploration, which utilizes the Five Boundaries way to deal with work out the presentation of sun powered chargers with a solitary diode model, the monocrystalline sunlight powered charger is the kind of sunlight based charger that outcomes in the most noteworthy proficiency and ideal execution [5]. A photograph current source, a diode, a series resistor, and a shunt resistor are parts of the same circuit that is utilized to delineate this model, which is gotten from numerical estimations. The model that was constructed makes it conceivable to estimate how sunlight based charger cells will act because of different natural and actual qualities [6]. The readiness of the model is achieved by the use of central numerical conditions that depend on the same series of photovoltaic cells. Through the assessment of many electrical and ecological boundaries, this model represents the general presentation of the highlights of the photovoltaic cell [7].

Over the span of the trial, similar investigations of business sunlight powered chargers working in regular daylight conditions prompted an expansion in the normal greatest force of monocrystalline silicon boards. This increment went from 1.9 times for low radiation to 2.4 times higher than the power got from undefined silicon boards. For most of the estimations, the temperature of monocrystalline silicon boards is viewed as lower than the temperature of undefined silicon boards [8].

The degree of proficiency and life season of each sort of module comparative with changes in climate or the climate, both during the dry season and during the stormy season, is the essential issue that emerges with the use of sunlight powered charger modules that have been flowing in the market today. Thus, a relative investigation of the proficiency and life season of monocrystalline and polycrystalline sunlight powered chargers is done. The reason for this investigation is to lay out a rule for the plan of sunlight based chargers that highlight monocrystalline and polycrystalline parts.

## RESEARCH METHODOLOGY

### Solar Radiation

The sun is one of the stars that fills in as the essential wellspring of energy for all types of life that exist on the planet. Sun based energy is created by the combination response of particles, which brings about very high strain and temperature. This response is the wellspring of sun oriented energy. A

lot of energy are created by the sun because of this combination occasion.

The electromagnetic waves that are sent into the air are the shape that this energy takes. The sun is a wellspring of light radiation that starts from the electromagnetic range and transmits light radiation of a great many frequencies, including bright radiation, noticeable light, and infrared (infrared). The amount of radiation energy that is gotten from the sun per unit region per unit time, communicated as a connection to the frequency of the radiation. The frequency of sun powered energy that is imparted goes from 0.25 micrometers to 3 micrometers (when it is outside the environment of the earth), yet the frequency of sun based energy that is communicated inside the climate of the earth goes from 0.32 micrometers to 2.53 micrometers. Just seven percent of this energy is bright (Air Mass 0), 47 percent is noticeable (apparent light has a frequency that reaches from four micrometers to 75 micrometers), and 46 percent is infrared [light]. From an overall perspective, the change of sun powered energy into different types of energy can be separated into three unmistakable cycles: heliochemical, heliothermal, and helioelectrical processes. It is during the course of photosynthesis that the heliochemical response happens. All petroleum derivatives begin from this cycle, which happens. Sun based radiation is quickly transformed into nuclear power through the heliothermal cycle, which is the retention of sun oriented radiation. Then again, the essential helioelectrical process is the making of power utilizing sunlight based cells, which is likewise alluded to as the photovoltaic impact.

A device known as a lux meter is used to decide the degree of light force. Light power or lighting level can be estimated with the assistance of a gadget called a lux meter. This is commonly finished inside. There are occasions when the prerequisites for enlightenment in each room are unique. Everything is subject to the exercises that are done and changed likewise. A device that is equipped for working consequently is expected to quantify how much lighting. This device should have the option to gauge the power of the light and acclimate to the degree of light that is required.

To gauge the power of light, a Lux meter is used, which creates a worth of light force communicated in units of lux. It is unimaginable to expect to change lux over completely to W/m-2 in a clear way; rather, the transformation is reliant upon the frequency or shade of the light. It is important to direct trials to acquire the transformation among lux and W/m-2 that is required. So, there is an assessment of 0.0079 W/m-2 for each lux for the transformation.

How much radiation that the outer layer of the planet gets consistently is portrayed in Figure 1. The radiation that arrives at the outer layer of the earth in the first part of the day and night is of a low power. The justification for this is that the bearing of the sun's beams isn't opposite to the outer layer of the planet, which brings about a particular point. Subsequently, daylight is exposed to a dispersion occasion by the air of the earth. In the sunlight powered charger, the point of frequency, which is the point between the bearing of the occurrence beams and the opposite part to the plane of the board, essentially affects how much radiation that is gotten by the board. It is the point at which the board is opposite to the board plane that it will get the most elevated measure of sunlight based radiation. How much radiation that the board is presented to will diminish when the sun isn't situated toward a path that is opposite to the plane of the board.

**Types of solar cells**

One method for arranging the many sorts of sun powered cells is as per the assembling innovation that they use. From an overall perspective, sunlight based cells can be made out of three unmistakable sorts, which are as per the following:

**Monocrystalline**

This type is built from unadulterated silicon precious stone bars that have been cut finely. Using

innovation of this sort, it will be feasible to produce sun based cell parts that are indistinguishable from each other and have an elevated degree of execution. This will permit it to turn into the most effective sunlight based cell in contrast with different types of sun oriented cells, which are normally somewhere in the range of 15 and 20 percent. Because of the significant expense of unadulterated silicon precious stones and the innovation that was used, the cost of this specific kind of sunlight based cell is altogether higher than the cost of different sorts of sun powered cells that are presently accessible available. The weakness of this kind of sunlight based cell is that it will leave a lot of void space on the off chance that it is put to shape a sun oriented module (sun powered charger). This is because of the way that sun based cells of this kind are regularly hexagonal or round in shape, contingent upon the state of the silicon gem bars, as shown in the picture that follows.

Sun powered cells that are made out of single precious stone silicon have tracked down broad application in a few parts of regular daily existence, including however not restricted to toys, timekeepers, mini-computers, water warmers, and TVs. Albeit sunlight based cells built from single-translucent silicon material have a life expectancy of as long as fifty years, there is plausible that their effectiveness will diminish by a normal of five percent consistently during that time. As of now, the usage of sun powered cells made of single-glasslike silicon is easy to situate in metropolitan areas and different areas with limited space.

**Polycrystalline**

The square shape, in the event that it is organized to frame sun powered chargers, will be tight and there will be no squandered void space like the course of action of the monocrystalline sunlight powered chargers above. The assembling system is more straightforward than monocrystalline, which is the reason the cost is less expensive. This type is the most generally utilized sort of sun based cell today. It is made out of a few silicon gem bars that are liquefied and afterward filled a square shape. The immaculateness of the silicon gems isn't so unadulterated as the monocrystalline sun oriented cells, which is the reason the sun based cells that are created are not indistinguishable from one another. The proficiency of the sun based cells that are created is lower, roughly 13% to 16% not exactly the productivity of the monocrystalline sun powered cells.

Figure 1. Monocrystalline and polycrystalline solar panel 50 wp

**Table 1. Solar Cell Specification**

| Parameter | PV Panel Monocrystalline 50 Wp | PV Panel Polycrystalline 50 Wp |
|---|---|---|
| Rated Max Power | 52 Watt | 51 Watt |
| Power Tolerance | -1% to +4% | -1% to +4% |
| Max Power Voltage (Vmp) | 18.20 V | 17.80 V |
| Max Power Current (Imp) | 2.86 A | 2.87 A |
| Open Circuit Voltage (Voc) | 23.00 V | 22.80 V |
| Short Circuit Current (Isc) | 3.10 A | 3.15 A |
| Cell Efficiency | 18.00% | 17.50% |
| Junction Box | IP 66 | IP 66 |
| Max System Voltage | 1100 V | 1100 V |
| Max Series Fuse Rating | 12 A | 12 A |
| Application Class | Class A | Class A |

With regards to the exhibition of a sun powered charger, the most fundamental measurement is the force of sun oriented radiation, which is likewise commonly alluded to as sun based light. This alludes to the amount of sun based power

that is showing up to the surface per region. 1365 W/m-2 is the worth that is alluded to as the sun based steady, which is the force of sun oriented radiation that is produced beyond the environment of the Earth. Because of the way that the world's air goes about as a channel, a specific measure of light is lost, and the pinnacle radiation strength is roughly 1000 W/m-2. During splendid circumstances, this figure addresses the common radiation power that is found on a superficial level that is opposite to the sun. How much power that can be produced by a sun powered charger not entirely set in stone by the greatness of the sun irradiance esteem.

**Characteristics of Solar Cells**

A diagram is used to acquire a comprehension of the elements of the sun oriented cell, which is a non-straight innovation. With regards to the age of electrical energy, the electrical properties of sun powered cells might be seen from the qualities of these cells. All the more explicitly, the current and voltage that are created by sun oriented cells under different light and load circumstances can be utilized to accumulate data about these characteristics. Both current-voltage bends and power-voltage bends are remembered for the attributes of sunlight based chargers [9].

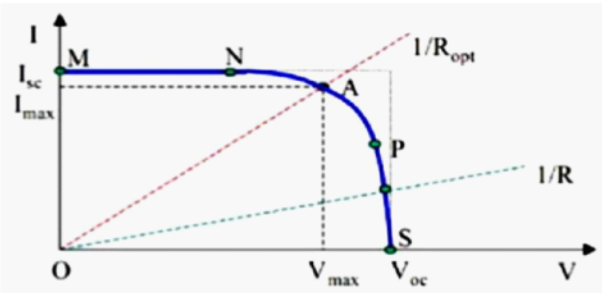


**Figure 2. Voltage Current Curve**

The condition of the cell when it is connected to the heap (R) is found in Figure 2. The line I/V = I/R addresses the opposition that is acted by the heap like a straight line. This exhibits that the obstruction esteem is impacted by how much power that is acquired. At the point when the worth of R is low, the cell is supposed to be working in the MN bend area. This is the zone wherein the cell capabilities as a steady current source or short out current (Isc). Then again, on the off chance that R is huge, the cell works in the PS region, which is a locale wherein the cell capabilities as a steady voltage source or open circuit (Voc) voltage. R-pick demonstrates that the sun oriented cell creates the most elevated measure of power when it is associated with the ideal opposition. This is on the grounds that it delivers the most extreme voltage (Vmax) and the greatest current (Imax).

Coming up next are instances of variables that are frequently used to decide the result qualities of sunlight based cells: boundaries on the current-voltage bend for sun powered cells

Impede (Isc) is the greatest result current from the sunlight based cell without opposition.

The open circuit voltage ( Voc ) is the best voltage limit that can be gotten without any current.

The best power (Pmax) in Figure 3, is at point A (Vmax, Imax).

The fill component or Fill Element (FF) is a value that is close to the steady of a specific sun powered cell. Assuming the FF esteem is higher than 0.7 , the cell is in an ideal situation.

Fill factor is an estimation that is basically used to decide the nature of the sun powered cell. An examination is made between the hypothetical most extreme power and the result power at open circuit and short out voltages to show up at the estimation. On the other hand composed as (Demon x Vmp)/ (Isc x Voc), the fill factor condition is Pmax/PT.

There is an ongoing source that is driven by daylight that is associated in lined up with the diode in a photovoltaic (PV) sun oriented cell. This is the basic similar to succession.

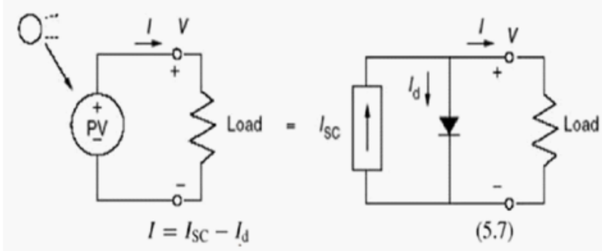


Figure 3. Solar cell equivalent sequence

Hamper and open-circuit voltage are two measurements that are fundamental for the offer of photovoltaic sunlight powered chargers.

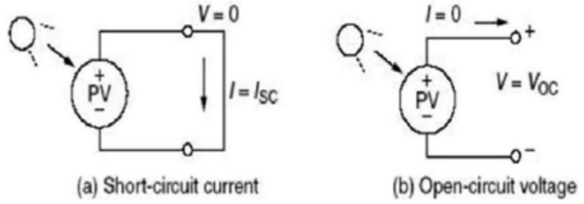


**Figure 4. Testing Series**

**Efficiency**

$$= \frac{\text{Amount of out Energy } (P_{\text{out}})}{\text{Amounty of in Energy } (P_{\text{in}})} \times 100\%$$

$$= \frac{13.37}{112.99} \times 100\% = 11.83\%$$

When it comes to the intensity of 384 W/, 425 W/, 373 W/, and 288 W/, the results of the calculation may be found in the table 2 that is presented below.

## RESULTS AND DISCUSSION

Solar cell research results shown in the table2.

**Table 2: Consolidated Solar Cell Testing Table with Updated Values**

| No | Time | Monocrystalline | Polycrystalline | ... | Irradiance (W/m²) | Pin (W) | Pout (W) | ... |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | V (Volt) | I (A) | V (Volt) | I (A) | | | Monocrystalline |
| 1 | 08:00 | 18.90 | 0.75 | 18.85 | 0.80 | 30 | 310 | 11.25 |
| 2 | 09:00 | 18.75 | 0.88 | 18.70 | 0.82 | 33 | 380 | 14.40 |
| 3 | 10:00 | 20.00 | 1.10 | 19.95 | 1.05 | 36 | 430 | 22.00 |
| 4 | 11:00 | 19.60 | 1.05 | 19.55 | 1.00 | 38 | 390 | 20.58 |
| 5 | 12:00 | 18.80 | 0.90 | 18.70 | 0.85 | 39 | 300 | 16.92 |
| 6 | 13:00 | 20.10 | 1.15 | 20.05 | 1.08 | 37 | 450 | 23.12 |
| 7 | 14:00 | 19.85 | 1.12 | 19.80 | 1.05 | 36 | 420 | 22.23 |
| 8 | 15:00 | 19.50 | 0.75 | 19.45 | 0.72 | 35 | 290 | 14.62 |
| 9 | 16:00 | 19.40 | 0.85 | 19.35 | 0.83 | 34 | 330 | 16.49 |
| 10 | 17:00 | 19.25 | 0.92 | 19.20 | 0.88 | 32 | 380 | 17.71 |

The data displayed in the table delineates the distinctions and likenesses between the exhibition of monocrystalline and polycrystalline photovoltaic (PV) boards at different times and in a wide range of natural circumstances. There are a few key measurements that give bits of knowledge into the viability and effectiveness of the two kinds of boards in changing over daylight into electrical energy. These boundaries incorporate voltage (V), current (I), power input (Pin), power yield (Mope), and effectiveness (?).

**Voltage as well as Latest Patterns**

Over the span of the testing, the monocrystalline boards showed a voltage range that was reliable between 18.90 V and 20.10 V, while their current went from 0.75 A to 1.15 A. The polycrystalline boards, then again, had a voltage range that stretched out from 18.70 V to 20.05 V and current qualities that went from 0.72 A to 1.08 A. In view of these discoveries, it very well may be reasoned that the two kinds of boards had the option to keep up with reliable voltage levels. Notwithstanding, monocrystalline boards exhibited fairly unrivaled voltage security and current result, which is fundamental for the production of persistent energy.

**An Assessment of the Power Information and Result**

Over the span of the day, the power input (Pin), which is a portrayal of the sun oriented energy that was episode on the board, changed with the irradiance levels. For the two kinds of boards, the power input went from 290 W to 450 W. The power yield (Frown) values were for the most part more noteworthy for monocrystalline boards, arriving at up to 23.12 W at maximized operation times. This is rather than the greatest power yield (Frown) values for polycrystalline boards, which didn't surpass 21.65 W. As per this, monocrystalline boards were more proficient than polycrystalline boards in changing over the sun based energy that was accessible into electrical power under conditions that were practically identical.

**Examination of the Productivity**

Productivity (?), not entirely set in stone by computing the proportion of Mope to Stick, is a fundamental viewpoint that goes about as a proportion of the viability of sun powered transformation. All things considered, monocrystalline boards have reliably beated polycrystalline boards. They have accomplished greatest productivity upsides of 15.60% during ideal times, which is altogether higher than the 14.65%

effectiveness values accomplished by polycrystalline boards. The more prominent exhibition of monocrystalline boards in various ecological circumstances was shown by the way that they kept a higher proficiency in any event, during times of diminished irradiance.

**Viewpoints on the General Execution**

The discoveries feature the advantages of monocrystalline boards as far as power yield as well as effectiveness, especially while working in settings with high illumination. On account of their unrivaled effectiveness and reliable execution, they are a fantastic choice for applications that require the most productive measure of energy transformation. While polycrystalline boards, then again, were somewhat less proficient than monocrystalline boards, they by and by conveyed steady execution. This made them a financially savvy elective in circumstances where the significant goal was not to expand yield.

All in all, the discoveries give more proof that monocrystalline photovoltaic boards are more proficient than their monocrystalline partners, especially in settings where how much daylight differs. Nonetheless, the two sorts of boards demonstrate their handiness in adding to feasible energy arrangements. They empower adaptability in organization in view of explicit energy and monetary prerequisites, which is a critical benefit.

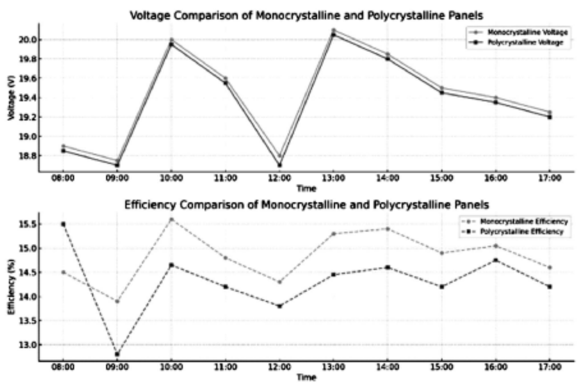


**Figure 5:Efficiency Comparison of Monocrystalline and Polycrystalline Panels**

**Figure 6. Graph of the relationship of energy entering the solar panel with the power generated from the 50 Wp solar panel.**

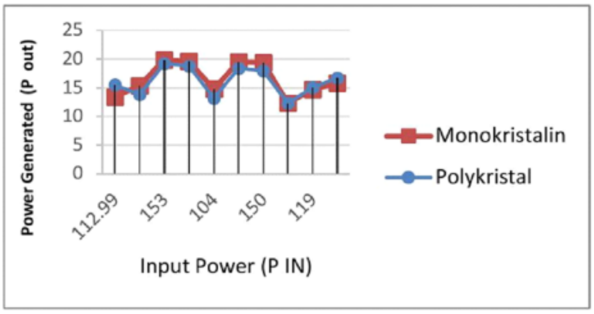


While this is going on, it is obvious from taking a gander at Figures how much energy or power that is created by the sunlight based charger, whether or not it is monocrystalline or polycrystalline, is straightforwardly proportionate to how much energy that is entering the board. This is achieved by following an example that makes a point with how much energy that is entering the board. An extra perception that can be made is that sunlight powered chargers made of monocrystalline materials are better than those made of polycrystalline materials as far as their ability to change over approaching energy into electrical energy that is then delivered. There is a distinction in the effectiveness of monocrystalline sunlight powered chargers, which is 0.25% higher than that of polycrystallines, if the typical proficiency of monocrystalline and polycrystalline sunlight based chargers is thought about during the test.

**CONCLUSION**

The accompanying inductions can be drawn from the discoveries of the tests directed on two monocrystalline and polycrystalline sun oriented cell boards with a power result of fifty watts each. The Effectiveness Worth of a Sun based Cell Controlling 50 Watts It has been found that the monocristalline type is higher than both polycristalline types when the power is something very similar. By getting the power information made by the sun oriented power plant, research was completed with a scope of light forces to decide the best productivity an incentive for every hour. The light powers went from the most

minimal conceivable light force to the most noteworthy conceivable light power, with 313 and 445 W/m2 relying upon the distance between the light source and the sun based cell. The voltage and current that are created by sunlight based cells are affected by varieties in the power of the light. Expanding the light power will bring about an expansion in both the current and the voltage separately. The monocrystalline sort of sunlight based cell has a productivity of 14.51%, though the polycrystalline kind of sun oriented cell has a proficiency of 13.75%. The amount of radiation force that a sunlight based charger is presented to is straightforwardly corresponding to how much electric voltage that it produces. A correlation among monocrystalline and polycrystalline sun powered chargers uncovers that monocrystalline sunlight powered chargers are better as far as their capacity than convert the force of daylight into energy that is consumed by the sun powered charger.

**REFERENCES**

Md FaysalNayan, S.M.SafayetUllah, S. N. Saif, "Comparative Analysis of PV Module Efficiency for Different Types of Silicon Materials Considering the Effects of Environmental Parameters". 3rd International Conference on Electrical Engineering and Information Communication Technology (ICEEICT). 2016.

C.Hemalatha, M.ValanRajkumar, G.VidhyaKrishnan,."Simulation and Analysis of MPPT Control with Modified Firefly Algorithm for Photovoltaic System ".International Journal of Innovative Studies in Sciences and Engineering Technology (IJISSET) ISSN 2455-4863 (Online) www.ijisset.org Volume: 2 Issue: 11. November 2016.

M.Lokanadham, "Incremental Conductance Based Maximum Power Point Tracking (MPPT) for P]hotovoltaic System", International Journal of Engineering Research and Applications (IJERA) Vol.2, pp.1420-1424, Mar-Apr 2012.

C.F. Gabra, A. A. Hossam-Eldin, Ahmed Hamza H. Ali, "A Comparative Analysis Between the Performances of Monocrystalline, Polycrystalline and Amorphous Thin Film in Different Temperatures at Different Locations in Egypt". Conference, Africa Photovoltaic Solar Energy Conference (Africa PVSEC), Durban, South Africa. March 2014.

Rizal Akbarudin Rahman, Aripriharta, Hari Putranto, "Performance Comparative Analysis of Monocrystalline and Polycrystalline Single Diode Solar Panel Models using the Five Parameters Method".Frontier Energy System and Power Engineering (FESPE), Vol. 1, No. 1. January 2019.

TarakSalmiet al., "Simulink Based Modelling of Solar Photovoltaic Cell", Vol.2, No.2, International Journal of Renewable Energy, Research Matlab. 2012.

Nayan, Md Faysal, and S. M. SafayetUllah, "Modelling of solar cell characteristics considering the effect of electrical and environmental parameters". Green Energy and Technology (ICGET), 3rd International Conference on. IEEE. 2015.

Daniel T. Cotfas and Petru A. Cotfas, "Comparative Study of Two Commercial Photovoltaic Panels under Natural Sunlight Conditions". Hindawi International Journal of Photoenergy.Electrical Engineering and Computer Science Faculty, Transilvania University of Brasov, Romania. 22 Nov 2019.

Eduard Muljadi, "Renewable Energy Solar PV - Electrical Characteristics". Workshop PV Tecnology Principle, Research and Application in Indonesia, Word Class Professor, Department of Electrical Engineering ITS, Surabaya,Auburn University. 2019.

# विवाह के बदलते प्रतिमान वर्तमान भारतीय समाज के परिपेक्ष में

**किशन भाम्बु**
सहायक आचार्य, गृह विज्ञान
राजकीय कन्या महाविद्यालय बड़ागुड़ा सोजत जिला
पाली राजस्थान

**प्रस्तावना**

विवाह स्त्री एवं पुरुष के पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने की महत्वपूर्ण संस्था है। जिस संस्था द्वारा मानव समाज यौन इच्छाओं की पूर्ति करता है उससे विवाह की संज्ञा दी जाती है विवाह स्त्री एवं पुरुष का ऐसा योग है, जिसमें स्त्री से जन्मा बच्चा माता–पिता की वैध संतान माना जाता है भारतीय शास्त्रों के अनुसार देखा जाए तो विवाह को एक धार्मिक संस्कार माना गया है । विवाह समाज एवं कानून द्वारा मान्यता प्राप्त पढ़ती है जिसके द्वारा महिला एवं पुरुष परिवार की स्थापना करते हैं पारिवारिक जीवन प्रारंभ करते हैं यौन सुख की प्राप्ति करते हैं बच्चों का पालन पोषण तथा समाजीकरण करते हैं

**विवाह की परिभाषा**

१ गिलिन तथा गिलिन के अनुसार,, विवाह एक प्रजनन मुल्क परिवार को स्थापित करने के लिए मान्यता प्राप्त विधि है।

२ जॉनसन के अनुसार,, विवाह के संबंध में एक महत्वपूर्ण बात यह है यह स्थाई संबंध है जिसमें एक पुरुष और स्त्री समुदाय मेंअपनी प्रतिष्ठा को कोई भी ना संतान उत्पन्न करने की सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करते हैं

३ बोगाडस के अनुसार के अनुसार,, विवाह स्त्री और पुरुष को पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने की संस्था है।

**हिंदू धर्म में विवाह का स्वरूप**

हिंदू धर्म में विवाह को एक धार्मिक संस्कार माना गया है हिंदुओं में प्रचलित 16 संस्कार में से विवाह को एक प्रमुख संस्कार माना गया है प्राचीन समय में समाज को चार आश्रमों में विभाजित किया गया था ब्रह्मचारआश्रम गृहस्थ आश्रम वानप्रस्थ आश्रम सन्यास आश्रम जब बालक 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करके गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करता था पूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था विवाह करता था सृष्टि के विकास में संतान उत्पत्ति करता था विवाह मानव समाज की सबसे महत्वपूर्ण संस्थानों में से एक है। प्राचीन काल में विवाह समाज में व्यवस्था एवं अनुशासन बनाए रखने में प्रमुख माध्यम रहा है हिंदुओं में चार पुरुषार्थ की बात कही गई है धर्म अर्थ काम और मोक्ष जिसकी पूर्ति ग्रस्त आश्रम में ही संभव है हिंदू धर्म में व्यक्ति पर तीन ऋण की बात भी कही गई है पितृ ऋण देव ऋण ,ऋषि ऋण इन ऋणों को चुकाने के लिए पितृ ऋण से मुक्ति प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को विवाह करने की एवं संतान उत्पत्ति करना आवश्यक माना गया है। वेदों में भी अविवाहित व्यक्ति को अपवित्र माना गया है धार्मिक दृष्टिकोण से भी इसे अपूर्ण माना जाता है विवाह के बिना व्यक्ति धार्मिक संस्कारों को पूर्ण नहीं कर सकता है। वर्तमान समय में विवाह के स्वरूप में भी परिवर्तन आ रहा है अब विवाह एक धार्मिक बंधन नहीं रहा अटूट बंधन नहीं रहा कहीं बार विवाह टूटे भी है जिसे समझौता कह सकते हैं विवाह पर धर्म का बंधन फीका पड़ता हुआ नजर आ रहा है व्यक्ति बिना शादी किए भी यौन संबंधों की पूर्ति कर सकता है जिससे लिविंग रिलेशन का नाम दिया जा रहा है परंपरागत समाज में जहां विवाह परिवार एवं नातेदारी संबंधों द्वारा तय किया जाता था वहीं आज इंटरनेट मैरिज ब्यूरो वैवाहिक पत्रिका अखबारों में इच्छित जीवनसाथी में चाही गई विशेषताओं तथा गुना के साथ आकर्षक विज्ञापन प्रकाशित कराए जाते हैं आज की युवा पीढ़ी सिर्फ लड़की की सुंदरता को देखा है उच्च शिक्षा को देखा है और वही लड़कियां सरकारी नौकरी वाले लड़के आकर्षक व्यक्तित्व को पसंद करती है

भौतिक सुविधाओं से सुसज्जित घर हो वर्तमान समय में विवाह के लिए जाति का बंधन भी ढीला पड़ता हुआ दिखाई दे रहा है प्राचीन समय में पुरुषार्थ को प्राप्त करने के लिए मोक्ष प्राप्त करने के लिए विवाह को मोक्ष प्राप्ति का एक साधन माना जाता था लेकिन आधुनिक भौतिकवादी युग में वैज्ञानिक ने शिक्षा में लोगों के दृष्टिकोण को ही बदल डाला है आज विवाह करना भी या अविवाहित रहना लोगों की अपनी पसंद होती है प्राचीन समय में व्यक्ति अगर अविवाहित रहता था तो उसे है यह दृष्टि से देखा जाता था विवाह के बिना व्यक्ति को अपवित्र माना जाता था लेकिन आधुनिक समय में ऐसा कुछ भी नहीं है अब समाज का प्रतिबंध पहले जैसा कठोर नहीं है

आधुनिक समय में विवाह में हुए परिवर्तन निम्नलिखित विश्लेषण किया जा सकता है।

**1 विवाह के उद्देश्यों में परिवर्तन**—विवाह स्त्री पुरुष को पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने के संस्था के रूप में रही है विवाह के प्रमुख उद्देश्य धर्म प्रजा रति जिसे यौन सुख कहा जाता है जिसे चरम सुख कहा जाता है यह तीसरी स्थान पर आता था लेकिन वर्तमान समय में धार्मिक उद्देश्य गन हो गया और यौन सुख महत्वपूर्ण उद्देश्य बन गया संतान उत्पत्ति पर भी ज्यादा महत्व नहीं देते हुए एक ही बच्चा होने पर संतान उत्पत्ति का विचार त्याग देते हैं

**2विवाह की आयु**—प्राचीन समय में जहां विवाह 18 साल की लड़की वह 21 साल का लड़का को आधार मानते हुए कम आयु में ही विवाह कर दिए जाते थे उसे समय बाल विवाह का भी प्रचलन था हालांकि ग्रामीण समाज में अधिकांश गांव में आज भी बाल विवाह होते हैं परंतु वर्तमान समय में विलंब विवाह का प्रचलन बढ़ने लगा है क्योंकि उच्च शिक्षा प्राप्त करते—करते लड़का लड़की 30—35 वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करते हैं बाद में विवाह के लिए सोचते हैं वर्तमान समय में विवाह पर नहीं अपने करियर पर ज्यादा ध्यान देने लगे हैं युवा वर्ग और स्वाभाविक सी बात है आधुनिक समय में जब शिक्षा प्राप्त करने के लिए लंबे समय तक बाहर रहना पड़ता है इसमें युवा साथी मौज मस्ती भी करते हैं लिविंग रिलेशन में भी रह लेते हैं परिणाम स्वरूप विलंब विवाह होने लगे हैं कभी—कभी समय निकल जाने के बाद पूरे जीवन भर अच्छा रिश्ता नहीं मिलता है या बिना विवाह के पूरा जीवन ही निकल जाता है यह समस्या भी समाज के सामने आने लगी है।

**3 विवाह संबंधित निर्योग्यता में परिवर्तन**—आधुनिक युग में अंतरजातीय विवाह प्रेम विवाह बढ़ने लगे हैं बाल विवाह समाप्त होने लगे हैं विलंब विवाह का प्रतिशत भी बढ़ने लग गया है जहां विधवा विवाह को प्रोत्साहन मिला है यह वर्तमान समय में एक परपंरा सी बन गई है विवाह करना या नहीं करना इसका निर्णय लड़का लड़की स्वयं करने लगे हैं प्राचीन समय में महिला को दूसरा विवाह करने का अधिकार नहीं था लेकिन इस प्रकार की कोई पाबंदी नहीं है जिसके साथ विचार मिले युवा वर्ग को लगे कि हमें एक दूसरे के साथ विवाह कर लेना चाहिए तो फिर चाहे स्त्री हो या पुरुष हो विवाह हो जाता है

**4 दहेज या वर मूल्य प्रथा का बढ़ना**

आज के इस भौतिकवादी युग में धन का काफी महत्व बढ़ गया है समाज में जिस व्यक्ति के पास धन अधिक होता है उसे श्रेष्ठ समझा जाता है समाज में उसकी प्रस्तुति को उच्च माना जाता है वर्तमान समय में व्यक्ति की प्रतिष्ठा का मुख्य आधार धन को माना जाता है अतः लोग अपने लड़कों के विवाह में लड़की वालों से दहेज के रूप में धन एवं वस्तुओं की मांग करने लगे हैं पढ़े—लिखे सभ्य समाज के लोग शादी में दहेज को देना और दहेज को लेना प्रतिष्ठा का सूचक मानते हैं।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1 बोगाड्स विलियम (1986) सोशियोलॉजी मैकमिलन क न्यूयॉर्क

2 जॉनसन एच एम (1954) सोशियोलॉजी ए सिस्टमैटिक इंट्रोडक्शन सेज पब्लिकेशन न्यू यॉर्क

3 वेस्टं मार्क ई (1921) द हिस्ट्री ऑफ़ ह्यूमन मैरिज मैकमिलन और न्यू यॉर्क पब्लिकेशन

4के.एम कपाड़िया (1966) ,मैरिज एंड फैमिली इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड प्रेस मुंबई

5 आर. एन सक्सेना(1968) भारतीय समाज एवं सामाजिक संस्थाएं पुस्तक महल आगरा

6 साहू किशोरी प्रसाद (1987) इस्लाम उद्भव और विकास बिहार ग्रंथ अकादमी पटना

# संत केशवानंद जी: मरुभूमि के समाजसेवी तपस्वी का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

**डॉ. महेश चन्द गुर्जर**
व्याख्याता
श्रीमती अनार देवी टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, कोटपुतली
मो. न. – 9929047008
मो. jangalmahesh@gmail.com

**प्रस्तावना**

मरुभूमि के संत केशवानंद जी, मानवता की सेवा में समर्पित एक विलक्षण व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अपने आध्यात्मिक ज्ञान और अद्वितीय परोपकारी दृष्टिकोण से समाज के विविध आयामों को स्पर्श किया। उनका जीवन त्याग, तपस्या और समाज के प्रति अटूट समर्पण का उदाहरण है। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक समृद्धि और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया। राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों, जहाँ गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक रूढ़ियाँ गहराई से जमी हुई थीं, वहाँ उन्होंने सुधार और प्रगति का नया अध्याय लिखा।

संत केशवानंद जी ने अपने कार्यों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि एक व्यक्ति की प्रतिबद्धता और दूरदर्शिता पूरे समाज को एक नई दिशा दे सकती है। उनकी दृष्टि मात्र सामाजिक सेवा तक सीमित नहीं थी; वह एक व्यापक सामाजिक पुनरुत्थान के प्रतीक थे। उनकी नीतियाँ और कार्य, न केवल तत्कालीन समाज की समस्याओं का समाधान करते थे, बल्कि भविष्य के लिए एक मजबूत आधारशिला भी रखते थे। उन्होंने समाज के कमजोर और उपेक्षित वर्गों को मुख्यधारा में लाने का हरसंभव प्रयास किया।

उनका मानना था कि शिक्षा समाज के परिवर्तन का सबसे सशक्त साधन है। उन्होंने बालिकाओं की शिक्षा को विशेष प्राथमिकता दी, जो उस समय एक क्रांतिकारी कदम था। उनकी स्थापना की गई शिक्षण संस्थाएँ न केवल ज्ञान का प्रसार करती थीं, बल्कि सामाजिक असमानताओं को मिटाने का भी प्रयास करती थीं। उन्होंने समाज को यह संदेश दिया कि शिक्षा केवल पुस्तक ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह एक व्यक्ति को आत्मनिर्भर और जागरूक नागरिक बनाने का माध्यम होनी चाहिए।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी उनके योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता । उन्होंने ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी को दूर करने के लिए अस्पतालों, आयुर्वेदिक केंद्रों और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों का प्रचार–प्रसार किया। उन्होंने यह समझाया कि स्वस्थ समाज ही प्रगति की ओर अग्रसर हो सकता है। उनके द्वारा स्थापित स्वास्थ्य केंद्र आज भी ग्रामीण जनता की सेवा में कार्यरत हैं।

संत केशवानंद जी का आर्थिक विकास के प्रति दृष्टिकोण भी उल्लेखनीय था। उन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए कृषि, पशुपालन और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया। उनके प्रयासों से न केवल रोजगार के अवसर बढ़े, बल्कि ग्रामीण समुदायों की आत्मनिर्भरता भी सुनिश्चित हुई। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए उन्होंने स्वयं सहायता समूहों का गठन किया और उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया।

समाज के प्रति उनकी सबसे बड़ी देन सामाजिक जागरूकता और एकता का प्रसार था। उन्होंने धार्मिक और सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती दी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने की वकालत की। उन्होंने यह सिद्ध किया कि जब समाज का हर व्यक्ति समान अवसर और सम्मान प्राप्त करेगा, तभी वह अपने पूर्ण सामर्थ्य को प्राप्त कर सकेगा। उनके कार्यों ने मरुस्थलीय समाज में एक नई चेतना का संचार किया।

यह लेख संत केशवानंद जी के जीवन और कार्यों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उनके द्वारा स्थापित मूल्यों और उनके कार्यों से उत्पन्न सामाजिक

परिवर्तन का अध्ययन करते हुए, यह उनके योगदान की व्यापकता और प्रभाव को रेखांकित करता है। उनके जीवन और कार्य हमें यह प्रेरणा देते हैं कि निस्वार्थ सेवा और दृढ़ संकल्प के माध्यम से किसी भी समाज को नई दिशा दी जा सकती है। संत केशवानंद जी के प्रयास आज भी हमें यह सिखाते हैं कि समाज सेवा का वास्तविक अर्थ अपने आप को समाज के उत्थान के लिए समर्पित करना है। उनके द्वारा छोड़े गए प्रेरणास्पद आदर्श आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव मार्गदर्शक बने रहेंगे।

**जीवन और साधना**

संत केशवानंद जी का जीवन तप, त्याग और आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक था। उनका जन्म 1883 में राजस्थान के बीकानेर जिले के एक साधारण परिवार में हुआ। प्रारंभिक अवस्था से ही उनमें धर्म और समाज सेवा के प्रति अद्वितीय रुचि देखी गई। किशोरावस्था में उन्होंने सांसारिक मोह–माया को त्यागकर आध्यात्मिक साधना और ज्ञानार्जन के मार्ग को अपनाया। कठोर तप और स्वाध्याय के माध्यम से उन्होंने आध्यात्मिक ऊँचाइयों को प्राप्त किया और अपनी योग्यता का उपयोग समाज के उत्थान के लिए किया।

उनका विश्वास था कि समाज में व्याप्त विषमताओं और कुरीतियों को मिटाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक स्वतंत्रता अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने अपने जीवन को पूरी तरह से अभावग्रस्त और शोषित समुदायों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। संत केशवानंद जी ने यह सिद्ध किया कि सच्ची साधना वही है जो मानवता के कल्याण में योगदान दे। उनके व्यक्तित्व और कार्यों में एक अद्भुत सामंजस्य था, जिसने उन्हें एक संत से अधिक समाज सुधारक के रूप में प्रतिष्ठित किया। उनका जीवन यह सिखाता है कि सेवा और साधना का समन्वय समाज के पुनर्निर्माण का सबसे प्रभावी माध्यम हो सकता है।

**शिक्षा क्षेत्र में क्रांति**

शिक्षा क्षेत्र में क्रांति के सूत्रधार संत केशवानंद जी थे, जिन्होंने समाज सुधार के लिए शिक्षा को अत्यंत प्रभावी साधन माना। उनका मानना था कि समाज में व्याप्त असमानताएँ और भेदभाव केवल शिक्षा के माध्यम से ही समाप्त हो सकती हैं। विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा पर जोर देते हुए, उन्होंने कई विद्यालयों, महाविद्यालयों और आश्रमों की स्थापना की, जहाँ निर्धन और वंचित वर्ग के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती थी। उनका उद्देश्य था कि शिक्षा के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसर मिलें, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और समाज में व्याप्त असमानताओं को समाप्त किया जा सके।

संत केशवानंद जी की शिक्षा क्रांति ने न केवल साक्षरता दर में वृद्धि की, बल्कि सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी कई बदलाव लाए। उनके द्वारा स्थापित संस्थानों ने गरीब बच्चों को शिक्षा का अवसर दिया, जिससे वे अपने जीवन में सुधार कर सके। इन संस्थाओं ने जातिवाद, धार्मिक भेदभाव और लिंगभेद को चुनौती दी और शिक्षा के माध्यम से समाज में एक नई जागरूकता और समानता की भावना को पनपने दिया। इसके परिणामस्वरूप, समाज में व्यापक स्तर पर बदलाव आया और शिक्षा को एक सशक्त उपकरण के रूप में स्वीकार किया गया।

**स्वास्थ्य सेवा में योगदान**

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में संत केशवानंद जी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी था। उनका दृष्टिकोण स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने और हर वर्ग के लिए सुलभ चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने का था। उन्होंने अस्पतालों, चिकित्सालयों और आयुर्वेदिक केंद्रों की स्थापना की, जहाँ गरीब और वंचित वर्ग के लोगों को निःशुल्क या सस्ते दरों पर चिकित्सा सेवाएँ प्रदान की जाती थीं। उनका यह प्रयास केवल शारीरिक उपचार तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने समाज में स्वास्थ्य के समग्र दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया।

संत केशवानंद जी ने स्वच्छता, पोषण और प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व को भी प्रमुखता से प्रचारित किया। उनका मानना था कि स्वास्थ्य केवल चिकित्सकीय उपचार पर निर्भर नहीं होता, बल्कि स्वस्थ आहार, शारीरिक स्वच्छता और मानसिक संतुलन भी इसकी आधारशिला हैं। उन्होंने विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए कई कदम उठाए। इसके परिणामस्वरूप, न केवल रोगों के प्रति जन जागरूकता बढ़ी, बल्कि प्राकृतिक उपचार और स्वच्छता के प्रति समाज का दृष्टिकोण भी सकारात्मक हुआ।

उनकी इन पहलों ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं को एक नई दिशा दी और जनता में स्वास्थ्य के प्रति जिम्मेदारी का अहसास कराया। संत केशवानंद जी के योगदान से स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में एक सशक्त और समग्र सुधार हुआ, जो आज भी समाज में उनके कार्यों को याद किया जाता है।

**आर्थिक समृद्धि के लिए नवाचार**

संत केशवानंद जी का योगदान केवल सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने ग्रामीण समुदायों की आर्थिक समृद्धि के लिए भी अनेक नवाचार किए। उनका मानना था कि ग्रामीण क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और समृद्धि के लिए कृषि, पशुपालन और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि तकनीकों को आधुनिक बनाने, पशुपालन को लाभकारी व्यवसाय बनाने और छोटे उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाओं का संचालन किया। इसके तहत, किसानों को बेहतर खेती के उपायों और बीजों के बारे में जानकारी दी गई, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए संत केशवानंद जी ने स्वयं सहायता समूहों की स्थापना की और उन्हें कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई, हस्तशिल्प और अन्य छोटे उद्योगों में प्रशिक्षित किया, जिससे उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई। इस पहल से न केवल महिलाओं का सामाजिक दर्जा बढ़ा, बल्कि उनके परिवारों की आर्थिक स्थिति भी मजबूत हुई।

संत केशवानंद जी के प्रयासों से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई और सामुदायिक विकास को एक नई दिशा मिली। उनका यह नवाचार न केवल गांवों के विकास में सहायक रहा, बल्कि ग्रामीण समाज के समग्र उत्थान के लिए एक ठोस आधार तैयार किया।

**मरुभूमि समाज पर उनका प्रभाव**

**संत केशवानंद जी के कार्यों का मरुभूमि के समाज पर प्रभावः**

**1. अंधविश्वास और कुरीतियों का उन्मूलनः**

– तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया।

– अंधविश्वास और अनावश्यक परंपराओं से समाज को मुक्त करने के लिए कदम उठाए।

– ग्रामीण समाज में जागरूकता का प्रसार हुआ।

**2. महिला सशक्तिकरणः**

– महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और अधिकारों के प्रति जागरूक किया।

– महिलाओं को सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का अवसर मिला।

– महिलाओं का समाज में दर्जा और सम्मान बढ़ा।

**3. साक्षरता का प्रसारः**

– कई शिक्षण संस्थान स्थापित किए।

– साक्षरता दर में वृद्धि के साथ समाज में नई चेतना और जागरूकता का प्रसार हुआ।

**4. स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँचः**

– ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य केंद्र स्थापित किए।

– सस्ते और सुलभ उपचार की सुविधा प्रदान की।

– स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच को आसान और प्रभावी बनाया।

इन पहलों के परिणामस्वरूप मरुभूमि के समाज में एक नई ऊर्जा और परिवर्तन का संचार हुआ, जो आज भी वहाँ के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में दिखाई देता है।

**समाजशास्त्रीय विश्लेषण में संत केशवानंद जी का योगदान**

संत केशवानंद जी के कार्यों को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह एक प्रगतिशील सामाजिक आंदोलन का रूप था, जिसने समाज में बदलाव की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। उनके प्रयासों ने समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया, जिनमें प्रमुख थेः

**1. सामाजिक जागरूकताः**

– संत केशवानंद जी ने शिक्षा और स्वास्थ्य के माध्यम से समाज में जागरूकता और समझ विकसित की।

– उन्होंने तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया, जिससे लोगों में नए विचारों का संचार हुआ।

– अंधविश्वास, कुरीतियाँ और सामाजिक असमानताओं के खिलाफ संघर्ष किया।

**2. सामाजिक समरसताः**

– विभिन्न जाति, धर्म और वर्गों के बीच सामंजस्य और एकता को सुदृढ़ किया।

– उन्होंने समाज के हाशिये पर रहने वाले वर्गों को मुख्यधारा में लाने के लिए कार्य किए।

– उनकी पहल से समाज में एकता, भाईचारे और सहिष्णुता का माहौल बना।

**3. सामाजिक न्याय और समानता:**

– संत केशवानंद जी ने वंचित वर्गों को मुख्यधारा में शामिल करने के लिए कई योजनाएँ बनाई।

– शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्रों में समान अवसर प्रदान कर सामाजिक न्याय के आदर्शों को साकार किया।

– उनके कार्यों ने समाज में समानता, अधिकारों की रक्षा और न्याय की भावना को प्रबल किया।

संत केशवानंद जी के ये प्रयास समाज में बदलाव की एक नई लहर लेकर आए, जो आज भी उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मौजूद हैं।

**निष्कर्ष :**

संत केशवानंद जी का जीवन और कार्य समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। उनके द्वारा किए गए प्रयासों को गहन अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने न केवल सामाजिक, बल्कि सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से भी समाज की दिशा बदलने का कार्य किया। उनका योगदान विशेष रूप से शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, और सामाजिक न्याय के क्षेत्रों में अभूतपूर्व रहा। उन्होंने अंधविश्वास और कुरीतियों को समाप्त करने के लिए तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया, जिससे समाज में जागरूकता का प्रसार हुआ।

संत केशवानंद जी के दृष्टिकोण में समाज के हर वर्ग को समान अवसर देना और समाज के हाशिये पर स्थित लोगों को मुख्यधारा में लाना था। उनकी नीतियों ने यह सिद्ध कर दिया कि समग्र समाज का विकास तब ही संभव है जब हर व्यक्ति को समान अधिकार और अवसर मिलें। महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक अवसर प्रदान करके उन्होंने उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए।

गहन अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि उनके द्वारा स्थापित संस्थाएँ और कार्यक्रम आज भी उनके विचारों और आदर्शों का प्रचार–प्रसार करती हैं, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं।

**संदर्भ सूची : –**

- Gupta, R. (2015). The Life and Teachings of Sant Keshwanand Ji. New Delhi: Lotus Publications.

- Kumar, A. (2017). Social Reforms in Rajasthan: A Study of Sant Keshwanand Ji's Efforts. Jodhpur: Jodhpur University Press.

- Sharma, V. (2011). The Role of Spiritual Leaders in Societal Transformation. Bikaner: R.K. Publications.

- Mehta, P. (2012). The Philosophy of Sant Keshwanand Ji. Udaipur: Vishal Publishers.

- Agarwal, M. (2014). Impact of Sant Keshwanand Ji on Rajasthan's Rural Development. Ajmer: Ajmer University Press.

- Purohit, L. (2009). The Social Reforms of Sant Keshwanand Ji in Marwar Region. Bikaner: Marwar Research Institute.

- Jain, A. (2013). Sant Keshwanand Ji's Vision of Social Equality. Jodhpur: Rajasthan Historical Society.

- Rathi, S. (2016). Women Empowerment through Education: A Study of Sant Keshwanand Ji's Teachings. Jaipur: Women's Studies Press.

- Rathore, K. (2008). The Awakening of Rural Rajasthan: Sant Keshwanand Ji's Contributions. Bikaner: Rural Development Foundation.

- Patel, H. (2011). Social Justice and Equality in the Teachings of Sant Keshwanand Ji. Rajasthan Journal of Social Sciences, 2(1), 15-25.

- Sharma, K. (2014). Revolutionizing Education in Rural India: The Legacy of Sant Keshwanand Ji. Jaipur: Rajasthan University Press.

- Yadav, P. (2017). Sociological Perspective of Sant Keshwanand Ji's Work. New Delhi: Social Change Publishers.

- Mishra, G. (2015). The Role of Sant Keshwanand Ji in Promoting Scientific Thinking in Rural India. Delhi: Science and Society Publications.

- Saxena, R. (2016). Education as a Tool for Societal Transformation: Insights from Sant Keshwanand Ji's Work. Jodhpur: Academic Press.

- Joshi, R. (2010). The Economic Reforms of Sant Keshwanand Ji: A Study of Rural Development. Bikaner: Rajasthan Economic Review.

# दक्षिण के राष्ट्रकूटों का राजस्थान से सम्बंध का अध्ययन

**डॉ. मातु सिंह राठौड**
से.नि. ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
सूर्य सदन, वार्ड नं. 20, राजगढ़ रोड़
तारानगर (चूरू)
मो. 9672781699

इतिहास मात्र धरोहर ही नहीं एक प्रेरणादायी दस्तावेज भी होता है जो भूतकाल के उदाहरण प्रस्तुत कर भविष्यकाल की योजनाओं का निर्माण करता है। शोधकर्त्ताओं ने व्याख्या करते हुये स्पष्ट किया है कि इतिहास का अर्थ है 'ऐसा ही हुआ था' इतिहास की घटनाओं को प्रमाणित करने के लिए पुस्तकों में लिखित साहित्य के अतिरिक्त शिलालेखों , दानपत्रों एवं प्रशस्ति–पत्रों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है । 'राष्ट्रकुटों' का प्राचीन इतिहास इन्ही प्रमाणों पर आधारित है। उत्तर भारत से दक्षिण भारत तथा दक्षिण से उतर भारत के विभिन्न क्षेत्रों पर शासन करने वाले राष्ट्रकूट शासकों का इतिहास विलक्षण योद्धाओं एवं दानदाताओं की गाथा है। 'बीकानेर राज्य का इतिहास 'में लिखा है कि प्राकृत शब्दों की उत्पति के नियमानुसार 'राष्ट्रकूट' शब्द का प्राकृतरूप रूप 'रट्ठऊड़' होता है, जिससे 'राठऊड़' या राठौड़ शब्द बनता है । ''राष्ट्रकूट के स्थान पर कही कही 'राष्ट्रवर्य शब्द भी मिलता है । जिससे 'राठवड़' शब्द बनता है 'राष्ट्रकूट' और राष्ट्रवर्य दोनो शब्दों का अर्थ एक ही है क्योंकि राष्ट्रकूट का अर्थ 'राष्ट्र' जाति या वंश का शिरोमणी है और 'राष्ट्रवर्य' का अर्थ 'राष्ट्र' जाति अथवा वंश मे श्रेष्ठ है' अनेक स्थानों पर राठौड़ों के लिए राष्ट्रकूट शब्द का प्रयोग हुआ है।चूरू जिले के गांव गोपालपुरा में राव बीदा के पुत्र उदयकरण के वि.सं. 1565 के स्मारक लेख में 'राष्ट्रकूट वंशे' 'लिखा हुआ है। 'ख्यात देशदर्पण ' में लिखित वंशावली में क्र.सं. 64 पर भगवान राजा रामचन्द्र एवं क्रं.सं. 65 पर कुश का नाम लिखा है। इससे प्रमाणित होता है कि राष्ट्रकूट (राठौड़) कुश के वंशज हैं। कुछ लेखकों ने लव का वंशज भी बताया है जो सही नहीं है। राजपूत वंशावली ' में ठाकुर ईश्वर सिंह मडाढ ने लिखा है,'भगवान राम के पुत्र कुश के किसी वंशज ने दक्षिण में जाकर राज्य स्थापित किया था। वहां उसकी राजधानी मान्यखेट थी। वहां से इनकी एक शाखा मध्य भारत में आयी जिससे इनके राज्य को महाराष्ट्र कहा जाने लगा। 'ख्यात देशदर्पण' में वर्णित वंशावली के अनुसार इस वंश में क्रं.सं. 125 पर राजा रठवर हुये । राठेश्वरी देवी रा वरदान सूं हुओ पुत्र, तैं सूं रठवर कहाया।' क्रं.स. 131 पर राजा कमधज का नाम लिखा है। 'इणसूं कमधज कहाया।' दूसरे मतानुसार बिना सिर के घड़ को 'कबंध' कहा जाता है, राठौड़ योद्धा बिना सिर के लड़ने में भी सक्षम थे, इसलिए इन्हें 'कमधज' कहा जाता है। राष्ट्रकूट पहले भारत के उत्तर – पश्चिम प्रदेश में ही रहते थे और बाद में यहां से एक शाखा ने दक्षिण की तरफ नये राज्य की स्थापना हेतु प्रस्थान किया।'राष्ट्रकूटों का इतिहास ' में लिखा है कि 'इन प्रमाणों पर विचार करने से प्रकट होता है कि विक्रम की छठी शताब्दी में वहां पर (दक्षिण में) राष्ट्रकूटों का राज्य था' बीकानेर राज्य का इतिहास' में लिखा है कि 'दक्षिण के येवूरगांव (कलाडगी जिला) के सोंलकियों की वंशावली वाले (सोमेश्वर के मन्दिर में लगे हुए) शिलालेख से पाया जाता है कि वि.सं. 550 के लगभग राष्ट्रकूट राजा कृष्ण के पुत्र इन्द्र को जिसकी सेना में 800 हाथी थे ,सोलंकी राजा जयसिंह ने जीता और वहां सोलंकी राज्य की स्थापना की । 'यह शिलालेख प्रमाणित करता है कि इस ऐतिहासिक घटना से पूर्ण दक्षिण में भी राष्ट्रकूटों (राठौड़ों) का सुदृढ राज्य था तथा इसके पश्चात भी दक्षिण क्षेत्र में इनका प्रभाव क्षिण नहीं हुआ था। राजधानी एवं सामरिक महत्व के कुछ स्थानों को छोड़ कर अन्य क्षेत्रों पर राष्ट्रकूटों का प्रभाव यथावत रहा।

शिलालेखों एवं दानपत्रों के आधार पर इतिहासकारों ने मान्यखेट (दक्षिण के मालखेड़ राज्य के अन्तर्गत, रेउ ने इसकी स्थिति शोलापुर से 90 मील दक्षिण पूर्व दी है) के राष्ट्रकूटों का तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया है। इतिहासकार विश्वेश्वरनाथ रेउ की पुस्तक 'राष्ट्रकूटों का इतिहास' में (वि. सं. 650 के पूर्व से लेकर वि.सं. 1030 तक) 19 राष्ट्रकूट राजाओं का विवरण दिया गया है लेकिन हम अपने शोधपूर्ण आलेख की आवश्यकता के अनुसार मान्यखेट के 10 राष्ट्रकूट (राठौड़) शासकों के सम्बन्ध में विभिन्न लेखकों द्वारा तैयार ऐतिहासिक सामग्री एवं अन्य स्त्रोतों के आधार पर अध्ययन करेंगे–

**1. दन्तिवर्मा (दन्तिदुर्गद्ध प्रथम)**– यह राजा पूर्ववर्णित जयसिंह सोलंकी द्वारा परास्त राष्ट्रकूट राजा इन्द्र का वंशज था। मान्यखेट राष्ट्रकूट राजाओं की प्रशस्तियों में इसका नाम सर्वप्रथम लिखा हुआ है। सोलंकियों के अधिकार क्षेत्र से बाहर राष्ट्रकूट राज्य का यह सरंक्षक एवं स्वाधीन शासक था।

**2. इन्द्रराज प्रथम**– इस राष्ट्रकूट राजा एवं इसके पिता दन्तिवर्मा का नाम एलोरा की गुफाओं में दशावतार मन्दिर के लेख में भी लिखा हुआ है। दशावतार लेख के अनुसार यह अनेक यज्ञों को करने वाला वीर शासक था।

**3. गोविन्दराज प्रथम** – यह इन्द्रराज का पुत्र और उतराधिकारी था। इसने अपने शासनकाल (वि.सं. 691) में पूर्वजों के हाथ से गये राज्य के शेषभाग को भी प्राप्त करने का प्रयास किया। कुछ इतिहासकारों ने गोविन्दराज को वीरनारायण नाम से भी लिखा है।

**4. कर्कराज प्रथम** – गोविन्दराज प्रथम का पुत्र कर्कराज उसका उतराधिकारी बना। वैदिक धर्म में आस्था रखने वाला यह राष्ट्रकूट राजा विद्वानो का आश्रयदाता एवं दानी था।

**5. इन्द्रराज द्वितीय** – कर्कराज के इस पुत्र के समय चालुक्यों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध यथावत रहे। इसकी सेना सुदृढ थी जिसमें घोड़े एवं हाथियों की संख्या अत्यधिक थी।

**6. दन्तिवर्मा(दन्तिदुर्गद्ध द्वितीय)** – यह अपने पिता इन्द्रराज द्वितीय के बाद गदी पर बैठा । इसने वि.सं. 804 से 810 के मध्य सोलंकी कीर्तिवर्मा (द्वितीय) के समय विस्तृत भू–भाग पर अधिकार कर दक्षिणी क्षेत्र में राष्ट्रकूट राज्य को सुदृढता प्रदान की । दक्षिण के इस प्रतापी राजा ने कलिंग ,कोसल, मालव, टंक एवं नर्बदा के पश्चिम क्षेत्र लाट तथा नागवंशियों पर विजय प्राप्त कर राज्य का विस्तार किया। दानपत्रों से प्रमाणित होता है कि इसका राज्य गुजरात और मालवे की उत्तरी सीमा से लेकर दक्षिण के रामेश्वरम् तक विस्तृत था।

**7. कृष्णराज प्रथम** – दन्तिवर्ग के बाद उसका चाचा कृष्णराज प्रथम शासक बना जो इन्द्रराज द्वितीय का छोटा भाई था। शिलालेखों, ताम्रपत्रों एव दानपत्रों के अतिरिक्त इसके राज्यकाल में निर्मित 1800 के लगभग चांदी के सिक्के प्राप्त हुये हैं जो राज्य की आर्थिक स्थिति एवं व्यापार की जानकारी प्रदान करते है।

**8. गोविन्दराज द्वितीय** – कृष्णराज का बड़ा पुत्र गोविन्दराज उसका उतराधिकारी हुआ। दानपत्रों से इसके राज्य के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी मिलती है। इसने भोगविलास मे फंसकर राज्य का कार्य अपने छोटे भाई को सोंप दिया, जिससे इसका प्रभुत्व शिथिल हो गया तथा कालान्तर में इसके भाई ध्रुवराज (निरूपम) ने राज्य पर अधिकार कर लिया।

**9. ध्रुवराज** –' बीकानेर राज्य का इतिहास' में लिखा है कि 'ध्रुवराज बड़ा पराक्रमी राजा था। उसने कौशल और उतराखण्ड के कई राजाओं को परास्त किया । इसका राज्य रामेश्वर से अयोध्या तक फैला हुआ था' वि.सं. 850 के एक दानपत्र के आधार पर ' राष्ट्रकूटों का इतिहास 'के पृ.सं 58 पर लिखा है कि 'गोविन्दराज द्वितीय की शिथिलता के कारण राष्ट्रकूट राज्य को दबा लेने के लिए उद्यत हुए अन्य लोगों को देखकर ही उस पर (ध्रुवराज ने)अधिकार किया था ।

**10. गोविन्दराज तृतीय**–ध्रुवराज का अज्ञाकारी योग्य पुत्र गोविन्दराज तृतीय दक्षिण में राष्ट्रकूटों के इस सुदृढ राज्य का उतराधिकारी बना। इसके सम्बन्ध में अन्य सामग्री के अतिरिक्त 9 ताम्रपत्र भी मिले हैं जो राज्य की समस्त जानकारी प्रदान करते है। इस शक्तिशाली षासक का उतर में विंध्य व मालवे से लेकर दक्षिण में कांचीपुर तक के षासक आज्ञा का पालन करते थे। ' बीकानेर राज्य का इतिहास 'में लिखा है कि 'तुंगभद्रा ,वेंगी, गंगवाडी, केरल, पांड्य ,चोल और कांची के नरेशों को परास्त कर उसने सिंहल के राजा को अपने अधीन किया। फिर उसने प्रतिहार राजा नागभट

को हराकर मारवाड से भगा दिया। गोविन्दराज तृतीय के 9 वें ताम्रपत्र वि.सं. 869 से जानकारी प्राप्त होती है कि गुजराज के मध्य और दक्षिणी भाग (लाट देश) को विजय कर अपने भाई को यह राज्य दिया जिससे गुजरात में दक्षिण के राष्ट्रकूटो की दूसरी शाखा चली थी ।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर इतिहासकारों ने यह प्रमाणित किया है कि दक्षिण के शक्तिशाली राष्ट्रकूट राजा गोविन्दराज तृतीय की राज्य विस्तार योजना से गुजरात के अतिरिक्त राजस्थान का क्षेत्र भी प्रभावित हुआ था।

गुजरात का राष्ट्रकूट राज्य दक्षिण के शक्तिसम्पन्न शासक दन्तिवर्मा द्वितीय (पूर्व लिखित क्र.स. 6) के समय वि. सं. 810 के लगभग दक्षिण एवं मध्य गुजरात (लाटक्षेत्र) पर अधिकार हो गया था । एक ताम्रपत्र के अध्ययन के आधार पर 'राष्ट्रकूटों' का इतिहास' में लिखा है कि 'दन्तिवर्मा द्वितीय ने अपनी सोलंकियों पर की गई विजय के समय, अपने रिश्तेदार कर्कराज को लाट प्रदेश का स्वामी बना दिया था' गुजरात के ये शासक मान्यखेट के राष्ट्रकूट नरेशों के अधीन शासन करते थे । यहां कर्कराज प्रथम के पश्चात् ध्रुवराज, गोविन्दराज एवं कर्कराज द्वितीय क्रमशः शासक बने । कर्कराज द्वितीय बड़ा प्रतापी और शिवभक्त शासक था । इसने मान्यखेट की सत्ता से अपने आपको मुक्त कर परममाहेश्वर, परमभट्टारक, परमेश्वर और महाराजाधिराज की उपाधियां धारण की तथा अन्य सामंतों के सहयोग से शक्तिशाली बन गया । दक्षिण भारत के राष्ट्रकूटों (राठौड़ों) के सर्वेसर्वा मान्यखेत के शासक गोविन्दराज तृतीय (पूर्व वर्णित क्र.सं.10) के समय कर्कराज द्वितीय को परास्त कर गुजरात के मध्य और दक्षिण भाग(लाटदेश) को पुनः' अपने अधीन किया तथा शेष क्षेत्र के शासक प्रतिहार राजा यशोवर्मा को भी परास्त कर समस्त गुजरात पर अधिकार कर लिया। वि.सं. 860 के लगभग राष्ट्रकूटों की गुजरात में प्रथम शाखा का राज्य समाप्त हुआ तथा द्वितीय शाखा का शासनकाल प्रारम्भ हुआ, जिसके शासकों का इतिहास इस प्रकार उपलब्ध हैं:—

**1. इन्द्रराज**— यह मान्यखेट के राष्ट्रकूट (राठौड़) राजा ध्रुवराज का पुत्र और गोविन्दराज तृतीय का भाई था । वि. स. 865 के ताम्रपत्र में गुजरात के मध्य और दक्षिण भाग (लाट प्रदेश) के विजय का उल्लेख है । इस विजय को स्थाई करने के लिए गोविन्दराज तृतीय ने अपने विश्वसनिय छोटे भाई इन्द्रराज को नियुक्त कर अपना सामंत बनाया। इसने राज्य सत्ता पर पकड़ मजबूत कर अपने भाई मान्यखेट के शासक गोविन्दराज तृतीय की शक्ति को सुदृढ़ता प्रदान की।

**2. कर्कराज**— यह इन्द्रराज का पुत्र था । जो उसके बाद राष्ट्रकूटों द्वारा षासित गुजरात एवं निकटवृति क्षेत्र का शासक बना । कर्कराज के समय के तीन ताम्रपत्र (वि.स. 869,873,881) प्राप्त हुये हैं जो इसके पूर्वजों एवं राज्य सम्बन्धी जानकारी के लिए महत्वपूर्ण हैं । महासामन्ताधिपति, लाटेश्वर और सुवर्णवर्ष उपाधियों से विभूषित कर्कराज ने मान्यखेट के राजा अमोधवर्ष प्रथम को उसके पिता की गद्दी पर बैठाने में सहायता की थी ।

**3.गोविन्दराजः**— यह कर्कराज का छोटा भाई था, जो उसका उत्तराधिकारी बना । गोविन्दराज के समय के दो ताम्रपत्र मिलते हैं । प्रथम में महासामन्ताधिपति व प्रभूतवर्ष उपाधियों का वर्णन हैं । द्वितीय में जयादित्य नामक सूर्यमन्दिर के लिए एक गांव दान में देने का उल्लेख है ।

**4. ध्रुवराज प्रथम**— यह कर्कराज का पुत्र था, जो गोविन्दराज के बाद राज्य का उत्तराधिकारी बना । महासामंताधिपति, धरावर्श एवं निरूपम इसकी उपाधियां थी । इसके बाद इस वंष के (5) अकालवर्ष (6) ध्रुवराज द्वितीय (7) दन्तिवर्मा (8) कृष्णराज क्रमशः गुजरात क्षेत्र के राष्ट्रकूट शासक हुये। गुजरात के इन सांमत शासकों द्वारा शक्तिसम्पन्न बन कर चुनौती देने कारण मान्यखेट के राजा कृष्णराज द्वितीय ने वि. सं.967 के लगभग अपनी राजधानी के सीधे नियंत्रण में कर लिया ।

राजपूताना के पहले राष्ट्रकूट (राठौड़ ) :— दक्षिण के राष्ट्रकूट राज्य मान्यखेट द्वारा शासित एवं गुजरात में सामंताधिपति के रूप में स्थापित राठौड़ों की इस शाखा का विक्रम की10 वीं. शताब्दी के लगभग प्रारम्भ में राजस्थान (मरुप्रदेश) में प्रवेश हुआ । पाली जिले में हस्तिकुंडी (हथूंडी) नामक स्थान पर यह पल्लवित —पुष्पित हुयी । पूर्व अध्ययन के अनुसार गुजरात की इस शाखा के प्रथम सामंत शासक इन्द्रराज के बाद उसका बड़ा पुत्र कर्कराज एवं उसके बाद गोविन्दराज राज्य के उत्तराधिकारी हुये । यह हथूंडिया शाखा के राठौड़ों की जन्मस्थली है, इसके सम्बन्ध में

विश्वेश्वरनाथ रेउ, डॉ. सोहनलाल पटनी एवं डॉ. हुकम सिंह भाटी ने विस्तार से लिखा है ।

**1. हरिवर्मा**ः— जोधुपर राज्य के गोडवाड़ परगने में बीजापुर से वि.सं. 1053 का एक शिलालेख मिला है, इसमें हथूंडी के राठौड़ों की वंशावली में हरिवर्मा का नाम प्रथम स्थान पर लिखा हुआ है, सम्भवत यह गोविन्दराज(गुजरात क्षेत्र का शासक) का पुत्र था। इसके राज्य स्थापित करने पर गुजराज के शासक द्वारा विरोध करने के प्रमाण नहीं हैं, शायद इसे सुरक्षा कवच माना गया तथा इस वंश में यह एकता बनाये रखने का प्रयास सिद्व हुआ होगा ।

**2. विदग्धराज**ः— हरिवर्मा का पुत्र जो उसका उत्तराधिकारी हुआ । यह वि0स0 973 (जर्नल बंगाल एशियाटिक सोसाइटी भाग'62, पृ.स. 314 के आधार पर ) में हथूंडी का शासक होना प्रमाणित होता है ।' हस्तिकुण्डी का इतिहास' के अनुसार 'ये मेवाड़ के राजा अल्लट के मित्र थे । अल्लट के परामर्श से ही विदग्धराज ने बलिभद्र सूरिजी को हस्तिकुण्डी में बुलाया था और उनके उपदेष से जैन धर्म भी स्वीकार किया था ।'

**3. मम्मटराज**ः— यह विदग्धराज का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था । जैनधर्म में आस्था रखने वाले इस शासक ने सर्वप्रथम नैतिक शिखा के आदेश द्वारा अपनी प्रजा को बताया कि –देवद्रव्य एवं गुरुद्रव्य का भक्षण करना महापाप है।' इसके राज्यकाल (वि.स. 996) में आचार्य सर्वदेवसूरि का हस्तिकुण्डी में आगमन हुआ था। जिनके उपदेश से प्रभावित होकर राजपरिवार के कुछ सदस्यों ने जैन धर्म स्वीकार किया था।

**4. धवलराज**ः— मम्मटराज का पुत्र धवलराज जैन धर्म में आस्था रखने वाला शक्तिषाली शासक था । इसने अपने मित्र चितौड़ के शासक महेन्द्र की सहायता कर उसके शत्रुओं को परास्त किया था ।

**5. बालाप्रसाद**ः— धवलराज ने राजकार्य की अधिकता एवं बढती उम्र के कारण अपने जीवनकाल में ही प्रियपुत्र बालाप्रसाद को राज्य संचालन के पर्याप्त अधिकार प्रदान कर दिये थे । विशेष प्रतिभा नहीं होने पर भी राज्य व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित रही ।

**6. नामदत्त** :—धवलराज के बाद हथूंडी प्रतिष्ठित राज्यों में गिना जाने लगा, इसलिए यहां के राष्ट्रकूट शासक हथूंडिया राठौड़ के नाम से प्रतिष्ठित एवं प्रचारित हुये । नामदत्त के राज्य काल के समय महमूद गजनी ने सोमनाथ पर आक्रमण किया था ।

**7. सिंगा हथूंडिया**ः— यह उजड़ी हुयी, साधनहीन हथूंडी का राजा बना । इसने हथूंडी को पुनः प्रतिश्ठित करने का प्रयास किया ,लेकिन सफल नहीं हुआ और बरसिंघ बालिसा चौहान के साथ वि.सं. 1232 में हुये युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ । इस सम्बन्ध में इतिहास प्रसिद्ध एक दोहा हैंः–

बरबे लीधो बांकड़ै, बाहां बल बालीस ।
सींगो कमधज साजियो,बारासें बत्तीस ।।

भावार्थ है कि बालिसा चौहान बरसिंह ने सिंगा राठौड़ को मारकर अपने भुजबल से इस क्षेत्र पर वि.सं. 1232 में अधिकार कर लिया ।

कुओं–तालाबों एवं लोककथाओं तथा योगी समाज के बहीभाटी (ऐतिहासिक तथ्य प्राप्ति स्थल पर योगी समाज का गांव हुडेरा जोगियान आबाद है) की बही के आधार पर प्रमाणित होता है कि कोलासर राज्य की स्थापना करने वाला हथूंडी के शासक धवलराज का पुत्र सिंघराज हथूंडिया (सिंघड़, हथूंडिया, राजा सिंघा, सिंघा राजा ) था । आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न इस शासक ने सामरिक महत्व के उच्च स्थान पर गढ निर्माण के अतिरिक्त अपने राज्य के सभी क्षेत्रों में कुओं–तालाबों के निर्माण को प्राथमिकता प्रदान की थी। पंक्तियों के लेखक ने स्वयं भग्नावशेष गढ तथा हुडेरा में तालाब के पास पहाड़ी पत्थरों से निर्मित सिंघडु (सिंगड़ू) कुआ' का अवलोकन किया है ।

**नरहरिदास**

राठौड़ नरहरिदास की देवळी जो कोलासर (रतनगढ़) के पास हुडेरा में उपलब्ध है। उनका चित्र यह है, जो आज भी स्थापित है।

कोलासर पर राष्ट्रकूटों की इस शाखा का राज्य विक्रम की 11 वीं शताब्दी के लगभग मध्य से 14 वीं शताब्दी के प्रथम दशक तक होना प्रमाणित होता है । युद्व मैदान हुडेरा गांव से अलग अलग समय की तीन प्रकार के पत्थरों से बनी देवळियां (स्मारक, पत्थर पर उकेरित चित्र एवं लेख) इस बात का प्रमाण है कि सत्ता संघर्ष के लिये तीन बड़े युद्व हुऐ थे । एक देवळी पर घुड़सवार हाथ में तलवार लिये है इसके आगे तीन सतियां जो हाथ जोड़े खड़ी हैं, का चित्र उकेरित है । जनसामान्य द्वारा लाछां, पानां, श्यामां के नाम से पूजा होती है । देवली के ऊपर दीवार में इनके स्थान बनाये हुये हैं, यह सबसे पुरानी देवळी प्रतीत होती है ।

लगभग 250 वर्षो तक राष्ट्रकूटों (राठौड़ों) की इस शाखा के 9–10 शासकों ने कोलासर पर स्वतंत्र एवं सामंत की हैसियत से शासन किया । मोहिलों के बढते प्रभाव के आगे इस शाखा का अस्तित्व समाप्त हो गया । राजनीतिक घटनाचक्र एवं ऐतिहासिक तथ्य प्रमाणित करते हैं कि गोगाजी के वि.स.1082 में जुझार होने के उपरान्त उनके यशोगान में राजा सिंघराज कोलासर(कोळासर) गढ एवं राजकुमारी केलमदे का नाम प्रसंगवश आता रहा,लेकिन 14 वीं. शताब्दी के लगभग मध्य में यह राजधराना जनसामान्य की जानकारी में नहीं रहा,क्योंकि कोलासर पर मोहिलों का अधिकार हो गया और राठौड़ राज्य वि.सं.1309 में ही समाप्त हो गया था। वि.सं.1323 में बूड़ोजी व पाबूजी राठौड़ के वीरगति को प्राप्त होनें के पश्चात् पाबूजी की आत्मा को देवशक्ति प्राप्त हुयी, कुछ वर्षों बाद लोककथाओं में परिवर्तन हो गया । कोलासर गढ की राजकुमारी केलमदे को कोळूगढ की राजकुमारी बता 300 वर्षो के अन्तर को भूलाकर बूड़ोजी की पुत्री बताया गया । गोगाजी, पाबूजी व केलमदे के यशोगान में लोककलाकारो एवं बातपोशों ने ऐतिहासिक तथ्य को संयोगवश भ्रमित कर दिया । स्मरण रहें ! हमें आस्था की पट्टी को इतना खैंच कर नहीं बांधना चाहिये कि वास्तविक धरातल के दृश्य दीखने बंद हो जायें ।

वर्षो बाद इसी स्थान पर पुनः वि.स. 1309 में राठौड़ों एवं मोहिलों के मध्य निर्णायक युद्व हुआ,जिसमें कोलासर के राजा राठौड़ नरहरिदास वीरगति को प्राप्त हुये, उनकी रानी भाटी किशना सती हुयी । सम्भवतः इस युद्व के बाद या वि.सं. 1311 में लोहट मोहिल के छापर की गद्दी पर बैठने के उपरान्त राठौड़ इस क्षेत्र से अन्यत्र प्लायन कर गये । कोलासर गांव जागीर के रूप में मोहिल राजपरिवार के सदस्यों को प्राप्त हुआ । ग्रामवासियों एवं बही के अनुसार लगभग 750 वर्ष पूर्व किशन सिंह चौहान झगड़ा कर ददरेवा से यहां आये तथा नाथजी के गृहस्थ शिष्य हुये, इनके वंशज हुडेरा गावं में निवास करते हैं। मोयल गजेसिंह एंव उनके पुत्र रणधीर सिंह यहां के जागीरदार रहे हैं । मोयल दलपत सिंह देवलनाथजी के समय हुये, जिन्होंने नाथजी की तपस्या से प्रभावित होकर आश्रम के दक्षिण दिशा में दो कुओं का निर्माण करवाया तथा 700 बीधा भूमि आश्रम को प्रदान की । जुझार राठौड़ नरहरिदासजी की देवळी से सवातीन हाथ उत्तर में बही के अनुसार देवलानाथजी ने वि.स.1505 में जीवित समाधि ली । इस स्थान के क्षेत्र में कई समाधियां हैं । राठौड़ नरहरिदास की देवळी मूर्ति को मूल स्थान से हटाकर वर्तमान में देवलनाथजी की मूर्ति के पीछे दीवार में स्थापित कर रखा हैं जहां नियमित पूजा होती है । इस स्थान से 50 मीटर उतर में परमार्थ जुझार हुये भोमियां जी का शक्ति सम्पन्न स्थान भी हैं । हथूंडी से आये सिंघराज हथूंडिया एवं उनकी राजकुमारी केलमदे की कहानी कथाओं में प्रतिष्ठित तथा छापर के मोयलों के अधिकार क्षेत्र में रहा कोलासर, ''रतनगढ परिक्रमा'' के सम्पादक श्री ओम सारस्वत के अनुसार कालान्तर में बीकानेर राठौड़ राज्य का यह आबादी क्षेत्र वि.स.1858 में रतनगढ के नाम से प्रतिष्ठित हुआ । कोलासर की राठौड़ राजकुमारी केलमदे की कहानी लगभग 700 वर्षो से भ्रमित तथ्यों के साथ प्रचारित थी,जिसे प्रमाणित ग्रंथों के आधार पर प्रस्तुत किया गया हैं ।

**संदर्भ ग्रंथ–**


1. बीकानेर राज्य का इतिहास,लेखक गौरीशंकर हीराचन्द औझा, पृ.स. 75,76,77

(2) ख्यात देशदर्पण, लेखक–दयालदास सिंढायच,पृ.सं.4,6

(3) राजपूत वंशावली,लेखक ईश्वर सिंह मडाढ, पृ.सं. 6,54,55

(4) राष्ट्रकूटों का इतिहास ,लेखक विश्वेश्वरनाथ रेउ, पृ.सं. 14,48,58,61,78,84,89,101

(5) हस्तिकुंडी का इतिहास,लेखक –डॉ. सोहनलाल पटनी,पृ.सं. 4,14,15,39,40

(6) चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास, लेखक– गोविन्द अग्रवाल, पृ.सं. 126,127,128,131,132

(7) पाबू प्रकास महाकाव्य,लेखक– मोडजी आशिया,पृ.सं. 70,72,81,104

(8) राजपूताने का इतिहास,लेखक –जगदीशसिंह गहलोत,पृ.सं. 7,8,24,29

(9) क्यामखां रासा, कविजान दोहा सं. 109,110,111

(10) चौहानों के राव उदयसिंह आसलपुर की गोगापोता बही

(11) योगी समाज के राव काननाथ की बही हुडेरा जोगियान के सम्बन्ध में लिखित पंक्तियां ।

# कोटा संभाग के मूकबधिर विद्यार्थियों की दुश्चिंता और निर्देशन आवश्यकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

**जया नरेला**
शोध छात्रा
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय), उदयपुर

**डॉ. अमित कुमार दवे**
शोध पर्यवेक्षक,
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय), उदयपुर

**सारांश :**

दुनिया की 5% से अधिक जनसंख्या श्रवण हानि वाले लोगों की है, और यह अनुमान लगाया गया है कि 2050 तक हर दस में से एक व्यक्ति को विकलांग श्रवण हानि होगी (WHO, 2020); भारत की 2.2% जनसंख्या में विकलांगता थी (सेंटीस, 2011)। इस अध्ययन का उद्देश्य श्रवण हानि वाले और सामान्य श्रवण क्षमता वाले लोगों के बीच अवसाद और दुश्चिंता में कोई महत्वपूर्ण अंतर का परीक्षण करना था। यह अध्ययन शैक्षिक वातावरण में छात्रों की दुश्चिंता और मानसिक स्थिति पर विभिन्न कारकों के प्रभाव को समझने का प्रयास करता है, विशेष रूप से शिक्षकों और माता–पिता की भूमिका पर। यह अध्ययन 500 छात्रों पर किया गया जिसमे श्रवण 335 एवं दृष्टि बाधित 165 छात्रो से लि जानकारी के आधार पर निसकर्ष निकले गएद्य अध्ययन में यह भी पाया गया कि शिक्षक और माता–पिता दोनों का मार्गदर्शन छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। शिक्षक छात्रों को प्रेरित करते हैं, उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन देते हैं और आधुनिक शैक्षिक उपकरणों का उपयोग करते हैं। वहीं, माता–पिता भी बच्चों को भविष्य के लक्ष्यों को निर्धारित करने, उनकी रुचियों को आगे बढ़ाने और सहायक सलाह देने में मदद करते हैं। कुल मिलाकर, शिक्षक और माता–पिता का प्रभावी मार्गदर्शन छात्रों के समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। दृष्टिहीन और श्रवण बाधित छात्रों के लिए मार्गदर्शन और मानसिक स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। यह सोध पत्र कोटा संभाग के मूकबधिर विद्यार्थियों की दुश्चिंता और निर्देशन आवश्यकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

**मूलशब्द** : दुश्चिंता, निर्देशन , मानसिक स्वास्थ्य, , मार्गदर्शन, व्यक्तिगत विकास, शैक्षिक उपकरण, बच्चों की रुचियाँ, समग्र विकास।

**प्रस्तावना :**

दुनिया की 5% से अधिक जनसंख्या श्रवण हानि से प्रभावित है, और यह अनुमान लगाया गया है कि 2050 तक हर दस में से एक व्यक्ति को विकलांग श्रवण हानि होगी (WHO, 2020)। भारत में 2.2% जनसंख्या विकलांगता का सामना कर रही है (सेंटीस, 2011)। इस पृष्ठभूमि में, इस अध्ययन का उद्देश्य श्रवण हानि वाले और सामान्य श्रवण क्षमता वाले लोगों के बीच अवसाद और दुश्चिंता में कोई महत्वपूर्ण अंतर का परीक्षण करना है। साथ ही, यह अध्ययन शैक्षिक वातावरण में छात्रों की दुश्चिंता और मानसिक स्थिति पर विभिन्न कारकों के प्रभाव को समझने का प्रयास करता है, विशेष रूप से शिक्षकों और माता–पिता की भूमिका पर। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन यह दर्शाता है कि शिक्षक और माता–पिता का मार्गदर्शन छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

**उद्देश्य :**

1. छात्रों में शैक्षिक जिम्मेदारियों, व्यक्तिगत समस्याओं और सामाजिक रिश्तों से जुड़ी दुश्चिंता के स्तर को समझना और विश्लेषण करना।

2. यह जांचना कि शिक्षक की आलोचना, परीक्षा का दबाव और अचानक बदलाव जैसे कारक छात्रों में दुश्चिंता उत्पन्न करते हैं।

3. यह अध्ययन करना कि शिक्षक और माता–पिता का मार्गदर्शन छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक विकास पर किस प्रकार प्रभाव डालता है।

4. यह समझना कि शिक्षक किस प्रकार छात्रों को प्रेरित करते हैं और शैक्षिक उपकरणों का उपयोग करके उनका मार्गदर्शन करते हैं।

**शोध पद्धति :**

इस वर्णनात्मक अनुसंधान जिसमें शैक्षिक, सामाजिक और भावनात्मक सभी पहलुओं का ध्यान रखा जाए। मूकबधिर छात्रों के बीच मानसिक स्वास्थ्य और दुश्चिंता (एंग्जायटी) का स्तर भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इस अध्ययन से प्राप्त जानकारी शिक्षकों और नीति निर्माताओं को यह समझने में मदद करती है कि मूकबधिर छात्रों के लिए कौन से संसाधन और विधियाँ उपयुक्त हैं, और उनकी मानसिक और भावनात्मक स्थिति को सुधारने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं।

**डेटा संग्रहण :**

डेटा प्राथमिक विधि का उपयोग करके एकत्र किया गया। श्रवण एवं दृष्टि बाधित छात्रों के समायोजन स्तर को समझने के लिए एक लिकर्ट स्केल आधारित प्रश्नावली तैयार की गई।

**शोध उपकरण :**

प्रश्नवाली के माध्यम से जानकारी प्राप्त की।

**डेटा सांख्यिकी**

**तालिका संख्या 1: दुश्चिंता**

| सवाल | औसत | मानक विचलन |
|---|---|---|
| मुझे स्कूल जाने पर दुश्चिंता होती है। | 2.64 | 1.12 |
| मुझे होमवर्क मिलने पर दुश्चिंता होती है। | 2.68 | 1.22 |
| मुझे जब आपका शिक्षक आपको डांटता है, तो दुश्चिंता होती है। | 2.7 | 1.16 |
| मुझे जब आपका शिक्षक आपको कुछ देता है, तो दुश्चिंता होती है। | 2.89 | 1.35 |
| मुझे जब आपका परीक्षा पास आती है, तो दुश्चिंता होती है। | 3.01 | 1.33 |
| मुझे जब आपके माता–पिता आपके पास नहीं होते, तो दुश्चिंता होती है। | 3.19 | 1.33 |
| मुझे जब आप किसी अजनबी से मिलते हैं, तो दुश्चिंता होती है। | 2.93 | 1.38 |
| मुझे जब कोई आपको बुरी इशारे करता है, तो दुश्चिंता होती है। | 3.06 | 1.35 |
| मुझे जब आपका दोस्त आपसे बात नहीं करता, तो दुश्चिंता होती है। | 3.16 | 1.42 |
| मुझे जब आपका दोस्त आपसे लड़ता है, तो दुश्चिंता होती है। | 3.22 | 1.43 |
| मुझे जब आपके सहपाठी मित्रवत नहीं होते, तो दुश्चिंता होती है। | 2.91 | 1.41 |
| मुझे जब आपको कक्षा के सामने बोलना होता है, तो दुश्चिंता होती है। | 3.05 | 1.33 |
| मुझे जब आप समूह गतिविधियों में भाग लेते हैं, तो दुश्चिंता होती है। | 3.06 | 1.3 |
| मुझे जब आपको नए स्थान पर नेविगेट करना होता है, तो दुश्चिंता होती है। | 2.97 | 1.35 |
| मुझे जब आपको मदद मांगनी होती है, तो दुश्चिंता होती है। | 3 | 1.3 |
| मुझे जब आपको कुछ नया प्रयास करना होता है, तो दुश्चिंता होती है। | 3.03 | 1.33 |
| मुझे जब आपकी दिनचर्या अचानक बदलती है, तो दुश्चिंता होती है। | 3.04 | 1.29 |
| मुझे जब आप पाठ को नहीं समझ पाते, तो दुश्चिंता होती है। | 2.91 | 1.41 |
| मुझे जब आप का मूल्यांकन या ग्रेडिंग होती है, तो दुश्चिंता होती है। | 3.08 | 1.36 |

**ग्राफ संख्या 1: दुश्चिंता**

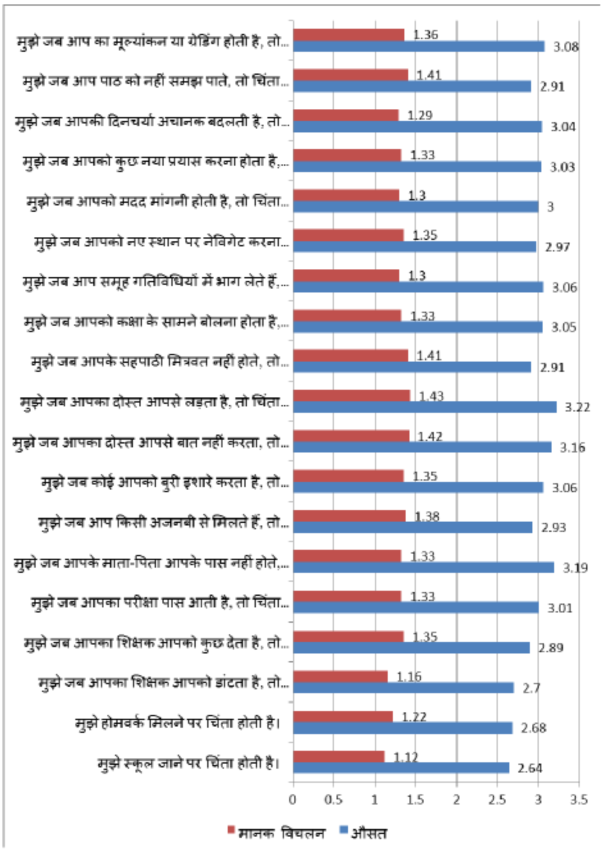


इस डेटा के अनुसार, यह स्पष्ट होता है कि छात्रों को विभिन्न परिस्थितियों में दुश्चिंता का सामना करना पड़ता है, जो उनके मानसिक और शैक्षिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है।

"मुझे स्कूल जाने पर दुश्चिंता होती है" (औसतः 2. 64, मानक विचलनः 1.12) और "मुझे होमवर्क मिलने पर दुश्चिंता होती है" (औसतः 2.68, मानक विचलनः 1.22) जैसे उत्तर यह संकेत देते हैं कि छात्रों को नियमित शैक्षिक जिम्मेदारियों से जुड़ी दुश्चिंता होती है।

"मुझे जब आपका शिक्षक आपको डांटता है, तो दुश्चिंता होती है" (औसतः 2.7, मानक विचलनः 1.16) और "मुझे जब आपका शिक्षक आपको कुछ देता है, तो दुश्चिंता होती है" (औसतः 2.89, मानक विचलनः 1.35) इन बयानों से यह पता चलता है कि शिक्षक द्वारा आलोचना या दबाव से छात्रों में दुश्चिंता उत्पन्न होती है।

"मुझे जब आपका परीक्षा पास आती है, तो दुश्चिंता होती है" (औसतः 3.01, मानक विचलनः 1.33) और "मुझे जब आपकी दिनचर्या अचानक बदलती है, तो दुश्चिंता होती है"

(औसतः 3.04, मानक विचलनः 1.29) के उच्च औसत यह दर्शाते हैं कि परीक्षा और अचानक बदलाव छात्रों में उच्च दुश्ंचिता का कारण बनते हैं।

"मुझे जब आपके माता–पिता आपके पास नहीं होते, तो दुश्ंचिता होती है" (औसतः 3.19, मानक विचलनः 1. 33) और "मुझे जब आपका दोस्त आपसे बात नहीं करता, तो दुश्ंचिता होती है" (औसतः 3.16, मानक विचलनः 1.42) यह संकेत करते हैं कि व्यक्तिगत और सामाजिक रिश्तों में समस्याएं भी दुश्ंचिता का कारण बन सकती हैं।

इस प्रकार, यह डेटा छात्रों की मानसिक स्थिति को समझने में मदद करता है और यह दर्शाता है कि शैक्षिक वातावरण, व्यक्तिगत रिश्ते, और सामाजिक घटनाएं छात्रों में दुश्ंचिता को प्रभावित करती हैं।

**तालिका संख्या 2ः शिक्षक एवं माता–पिता से निर्देशन**

| सवाल | मध्यमान | मानक विचलन |
|---|---|---|
| मेरे शिक्षक मेरे कार्यों पर ध्यान देते हैं। | 2.81 | 1.24 |
| हमारे शिक्षण के लिए नवीनतम उपकरण और तकनीकें उपयोग की जाती हैं। | 2.75 | 1.15 |
| मुझे अपने शिक्षक की शिक्षण से प्रेरणा मिलती है। | 2.64 | 1.12 |
| मेरे शिक्षक मुझे मेरी पूरी क्षमता से काम करने के लिए प्रेरित करते हैं। | 2.68 | 1.22 |
| मेरे शिक्षक स्पष्ट निर्देश देते हैं। | 2.68 | 1.16 |
| मेरे शिक्षक मेरे विषयों से संबंधित समस्याओं और शंकाओं के बारे में पूछते हैं। | 2.77 | 1.22 |
| मेरे शिक्षक को सहजता पूर्वक अपनी जिज्ञासाएं बत्ता पाता हूं। | 2.72 | 1.13 |
| शिक्षकों द्वारा प्राप्त ज्ञान मुझे भविष्य की चुनौतियों हेतु तैयार करता है। | 2.76 | 1.23 |
| मेरे शिक्षक की सलाह से मैं उचित–अनुचित का भेद कर पाता हु। | 2.91 | 1.36 |
| शिक्षकों के दिशा निर्देश मेरे लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सहायक हैं। | 2.82 | 1.22 |
| मेरे शिक्षक शिक्षण के साथ प्रतिपालक की भूमिका भी अदा करते हैं। | 2.8 | 1.24 |
| शिक्षकों के निर्देशन से मैं सहजता से ज्ञान को आत्मसात कर पाता हूं। | 2.78 | 1.18 |
| शिक्षक मुझे शिक्षण के साथ–साथ भावनात्मक रूप से भी मजबूत बनाते हैं। | 2.66 | 1.18 |
| शिक्षकों का समर्पण के साथ शिक्षण, उत्तम भविष्य की आधारशिला रखने में मददगार है। | 2.7 | 1.24 |
| शिक्षक शिक्षण के साथ अपने आदर्श एवं सहयोगात्मक व्यवहार से हमें प्रेरणा देते हैं। | 2.87 | 1.23 |
| शिक्षक द्वारा प्राप्त ज्ञान निश्चित ही दिशा निर्देशित करने का सर्वश्रेष्ठ साधन है। | 2.81 | 1.24 |
| शिक्षकों का निर्देशन व्यावहारिक रूप से सही गलत जानने में सहायक है। | 2.75 | 1.15 |
| मेरे माता–पिता मुझे भविष्य के लिए लक्ष्य तय करने में मदद करते हैं। | 2.75 | 1.15 |
| मेरे माता–पिता मुझे सहायक सलाह देते हैं। | 2.64 | 1.12 |
| मेरे माता–पिता मेरे निर्णयों का समर्थन करते हैं। | 2.68 | 1.22 |
| मेरे माता–पिता ने कभी मुझे मेरे विकल्पों को लेकर दबाव महसूस कराया। | 2.77 | 1.22 |
| मेरे माता–पिता मुझे मेरी रुचियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं। | 2.92 | 1.31 |

**ग्राफ संख्या 2ः शिक्षक एवं माता–पिता से निर्देशन**

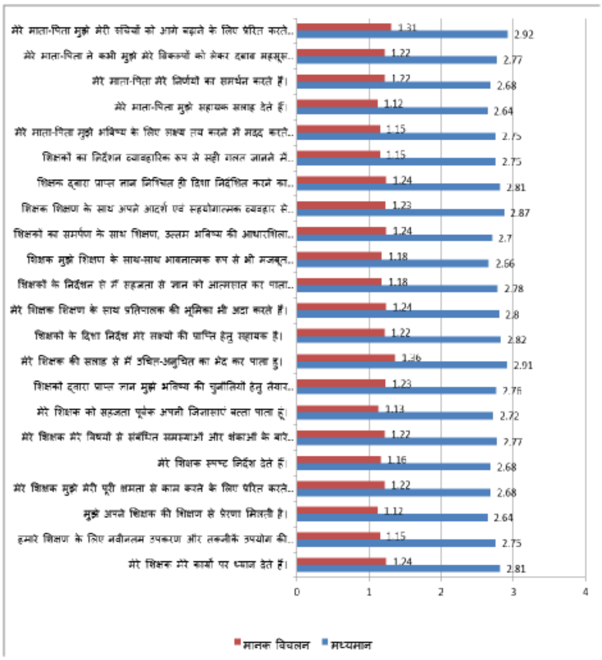


इस डेटा के अनुसार, छात्रों के अनुभवों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक और माता–पिता दोनों का प्रभावी मार्गदर्शन उनके शिक्षा और व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

"मेरे शिक्षक मेरे कार्यो पर ध्यान देते हैं" (मध्यमानः 2.81, मानक विचलनः 1.24) और "हमारे शिक्षण के लिए नवीनतम उपकरण और तकनीकें उपयोग की जाती हैं" (मध्यमानः 2.75, मानक विचलनः 1.15) के उच्च स्कोर दर्शाते हैं कि शिक्षक अपने कार्यो पर ध्यान देने के अलावा आधुनिक उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करते हैं।

"मेरे शिक्षक मुझे मेरी पूरी क्षमता से काम करने के लिए प्रेरित करते हैं" (मध्यमानः 2.68, मानक विचलनः 1.22) और "मेरे शिक्षक स्पष्ट निर्देश देते हैं" (मध्यमानः 2.68, मानक विचलनः 1.16) यह संकेत देते हैं कि शिक्षक छात्रों को बेहतर मार्गदर्शन और प्रेरणा देने में सक्षम हैं। "मेरे शिक्षक की सलाह से मैं उचित–अनुचित का भेद कर पाता हूं" (मध्यमानः 2.91, मानक विचलनः 1.36) और "शिक्षकों के निर्देशन से मैं सहजता से ज्ञान को आत्मसात कर पाता हूं" (मध्यमानः 2. 78, मानक विचलनः 1.18) के परिणाम यह बताते हैं कि शिक्षक छात्रों को नैतिक और शैक्षिक दृष्टि से तैयार कर रहे हैं।

इसके अलावा, "मेरे माता–पिता मुझे भविष्य के

लिए लक्ष्य तय करने में मदद करते हैं" (मध्यमानः 2.75, मानक विचलनः 1.15) और "मेरे माता–पिता मुझे सहायक सलाह देते हैं" (मध्यमानः 2.64, मानक विचलनः 1.12) यह दर्शाते हैं कि माता–पिता भी छात्रों को शिक्षा और भविष्य की दिशा में सहायता प्रदान करते हैं। "मेरे माता–पिता मुझे मेरी रुचियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं" (मध्यमानः 2.92, मानक विचलनः 1.31) के परिणाम से यह पता चलता है कि माता–पिता अपने बच्चों को अपनी इच्छाओं और रुचियों को पूरा करने के लिए प्रेरित करते हैं। कुल मिलाकर, यह डेटा यह सुझाव देता है कि शिक्षक और माता–पिता दोनों ही छात्रों के लिए प्रेरणा, मार्गदर्शन और समर्थन का महत्वपूर्ण स्रोत हैं, जो उनके व्यक्तिगत और शैक्षिक विकास में सहायक होते हैं।

(प•) परिकल्पना : मूक बधिर प्रशिक्षण संस्थानों के दिव्यांग छात्र–छात्राओं की दुश्चिंता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता

**तालिका संख्या 3: दिव्यांग छात्र–छात्राओं की दुश्चिंता**

| विद्यार्थी | मध्यमान | विचलन | अवलोकन | df | t Stat | P(T<=t) two-tail | t Critical two-tail |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 2.229 | 0.624 | 181 | 498 | -0.27 | 0.783 | 1.96 |
| छात्राओं | 2.249 | 0.617 | 319 | | | | |

**व्याख्या :**

छात्रों का मध्यमान 2.229 और छात्राओं का मध्यमान 2.249 है, जो दर्शाता है कि दोनों समूहों के औसत अंकों में बहुत मामूली अंतर है। विचलन छात्रों के लिए 0.624 और छात्राओं के लिए 0.617 है, जो दर्शाता है कि दोनों समूहों के अंकों का बिखराव लगभग समान है। P–मान (0.783) यह दर्शाता है कि दोनों समूहों के औसत अंकों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, क्योंकि यह मान 0.05 से अधिक है। t–सांख्यिकी (–0.27) महत्वपूर्ण मान (1.96) से कम है, और p–मूल्य (0.783) 0.05 के सामान्य महत्वपूर्ण स्तर से अधिक है। इसका मतलब है कि मूक–बधिर संस्थानों में लड़कों और लड़कियों के दुश्चिंता (anxiety) में समायोजन स्तरों में कोई सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**निष्कर्ष** : मूक–बधिर संस्थानों में लड़कों और लड़कियों की दुश्चिंता में समायोजन स्तरों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि छात्रों का लिंग दुश्चिंता में समायोजन स्तरों पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डालता है।

**परिकल्पना** : मूक–बधिर प्रशिक्षण संस्थानों के दिव्यांग छात्र–छात्राओं की निर्देशन आवश्यकताओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता

**तालिका संख्या 4: दिव्यांग छात्र–छात्राओं की निर्देशन**

| विद्यार्थी | मध्यमान | विचलन | अवलोकन | df | t Stat | P(T<=t) two-tail | t Critical two-tail |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 2.78 | 1.08 | 181 | 498 | 0.388 | 0.698 | 1.96 |
| छात्राओं | 2.74 | 0.96 | 319 | | | | |

**व्याख्या :**

छात्रों का मध्यमान 2.78 और छात्राओं का मध्यमान 2.74 है। यह दर्शाता है कि दोनों के औसत अंकों में बहुत ही मामूली अंतर है। विचलन छात्रों के लिए 1.08 और छात्राओं के लिए 0.96 है, जो यह बताता है कि छात्राओं के अंकों का बिखराव छात्रों की तुलना में थोड़ा कम है। P –मान (0.698) यह दर्शाता है कि दोनों समूहों के औसत अंकों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, क्योंकि यह मान 0.05 से अधिक है। t–सांख्यिकी (0.388) महत्वपूर्ण मान (1.96) से कम है, और p–मूल्य (0.698) 0. 05 के सामान्य महत्वपूर्ण स्तर से अधिक है। इसका मतलब है कि मूक–बधिर प्रशिक्षण संस्थानों में लड़कों और लड़कियों की निर्देशन आवश्यकताओं में समायोजन स्तरों में कोई सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**निष्कर्ष** : मूक–बधिर प्रशिक्षण संस्थानों में लड़कों और लड़कियों की निर्देशन आवश्यकताओं में समायोजन स्तरों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि छात्रों का लिंग निर्देशन आवश्यकताओं में समायोजन स्तरों पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डालता है।

**निष्कर्ष :**

इस डेटा के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि छात्रों को विभिन्न परिस्थितियों में दुश्चिंता का सामना करना पड़ता है, जो उनके मानसिक और शैक्षिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। शैक्षिक जिम्मेदारियों, जैसे स्कूल जाना और होमवर्क, के साथ–साथ शिक्षक द्वारा आलोचना, परीक्षा का दबाव, और अचानक बदलाव से जुड़ी दुश्चिंता प्रमुख कारण हैं। इसके अतिरिक्त, व्यक्तिगत और सामाजिक रिश्तों में समस्याएं, जैसे माता–पिता का अनुपस्थिति या

दोस्तों से बातचीत का ना होना, भी दुश्चिंता का कारण बनती हैं।

आवश्यक ध्यान देने वाली बात यह है कि शिक्षक और माता–पिता का प्रभावी मार्गदर्शन छात्रों के मानसिक और शैक्षिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अध्ययन में यह स्पष्ट रूप से पाया गया कि शिक्षक न केवल अपने छात्रों के कार्यो पर ध्यान देते हैं, बल्कि आधुनिक तकनीकों और उपकरणों का उपयोग करके उन्हें प्रेरित और मार्गदर्शन भी करते हैं। छात्रों को उनके शिक्षक से स्पष्ट निर्देश मिलते हैं, जिससे वे शैक्षिक दृष्टि से बेहतर तरीके से तैयार हो पाते हैं। इसके अलावा, शिक्षक छात्रों को नैतिक और शैक्षिक दृष्टि से उचित मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं।

वहीं, माता–पिता का भी महत्वपूर्ण योगदान है। वे न केवल अपने बच्चों को भविष्य के लिए लक्ष्य तय करने में मदद करते हैं, बल्कि उनकी रुचियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित भी करते हैं। माता–पिता द्वारा दी गई सहायक सलाह और मार्गदर्शन छात्रों को उनके शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास में सहायक होते हैं।

कुल मिलाकर, यह डेटा यह संकेत करता है कि शिक्षक और माता–पिता दोनों ही छात्रों के लिए प्रेरणा, मार्गदर्शन और समर्थन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक सफलता में सकारात्मक भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार, छात्रों के समग्र विकास के लिए उनके शिक्षक और माता–पिता दोनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

## ग्रंथ सूची


1. राजस्थान विकलांगता अधिकार समूह(2021), श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए सहायक प्रौद्योगिकियों की जागरूकता, जयपुरः विकलांगता अधिकार समूह।

2. राजस्थान चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री(2020), राजस्थान में श्रवण बाधित वयस्कों के रोजगार के रुझान, जयपुरः RCCI रिपोर्ट।

3. भारत की जनगणना(2011), राजस्थान में विकलांगताओं पर जनगणना डेटा, नई दिल्लीः रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त का कार्यालय।

4. स्मिथ, जे. ए., – कुमार, आर. (2019), श्रवण बाधित छात्रों में भावनात्मक और सामाजिक समायोजनः एक तुलनात्मक अध्ययन, विशेष शिक्षा अनुसंधान पत्रिका, 12(3), 45–58

5. कुमार, ए., – नारुला, जे. (2020), श्रवण बाधित छात्रों के बीच शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाने की रणनीतियाँ, अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान पत्रिका, 8(2), 23–37

6. पटेल, एस. – जैन, एल. (2022), विविध शैक्षणिक सेटिंग्स में व्यवहारिक समायोजनः श्रवण बाधित छात्रों के लिए प्रभाव। शैक्षणिक मनोविज्ञान पत्रिका, 15(1), 89–104

7. रविंद्र, ए., – शर्मा, पी. (2021), राजस्थान में समावेशी शिक्षा के लिए नीतिगत सिफारिशें, शिक्षा और विकास पत्रिका, 10(4), 200–215

8. गुप्ता, आर. – वर्मा, टी. (2020), भावनात्मक स्वास्थ्य और श्रवण बाधित बच्चों का विकास, भारतीय मनोवैज्ञानिक शोध पत्रिका, 5(3), 145–160

9. तिवारी, एस. – कुमारी, नीता. (2019), शिक्षा में सहायक तकनीकों का उपयोगः श्रवण बाधित छात्रों के लिए एक अध्ययन, शैक्षणिक नवाचार पत्रिका, 11(2), 78–95

10. श्रीवास्तव, ए. (2022), समाज में विकलांगता के प्रति जागरूकता और शिक्षा की भूमिका, राजस्थान अध्ययन पत्रिका, 3(1), 50–70

11. कुमार, ल. (2021), "श्रवण बाधित छात्रों के लिए समायोजन की चुनौतियाँः एक समीक्षात्मक अध्ययन" शिक्षा की नई दिशाएँ, 9(4), 123–135

12. सिंह, प्रिया(2022), "सामाजिक समायोजन में बाधाएँः श्रवण बाधित छात्रों का दृष्टिकोण" शैक्षणिक संवाद, 14(2), 67–81

13. जैन, म., – चौधरी, अ. (2021), "शिक्षा में समावेशिता और श्रवण बाधित छात्रों की भलाई" भारतीय शिक्षा प्रणाली की चुनौतियाँ, 6(2), 34–50

14. अंसारी, क. (2023), "सहायक प्रौद्योगिकियों का उपयोगः श्रवण बाधित छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण" प्रौद्योगिकी और शिक्षा, 12(1), 88–102

15. गुलाटी, स. (2020), "विकलांगता और सामाजिक समायोजनः एक अध्ययन की समीक्षा" समाज विज्ञान अनुसंधान पत्रिका, 15(3), 101–115

16. अंसारी, क. (2023) "सहायक प्रौद्योगिकियों का उपयोगः श्रवण बाधित छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण" प्रौद्योगिकी और शिक्षा, 12(1), 88–102

# राजस्थान में नंद घर योजना की चुनौतियों का अध्ययन

**डॉ. हरीश मेनारिया,**
सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय,
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ(डीम्ड–टू–बी)
विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

**वनफूल दाधीच**
शोधकर्त्री, शिक्षा संकाय,
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी)
विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

**प्रस्तावना :**

महात्मा गाँधीजी के शब्दो में ''वास्तविक शिक्षा माँ के गर्भ से ही प्रारम्भ होती है, जब वह बालक की जिम्मेदारी संभालना आरम्भ करती है।''

फ्रायड ने कहा है, ''मनुष्य चार–पाँच वर्ष की आयु में ही जो बनना होता है, बन जाता है।'' इस अवस्था में शारीरिक, संवेगात्मक एवं मानसिक विकास बड़ी द्रूत गति से होता है और अनेक आदतों का निर्माण हो जाता है।

पूर्व–प्राथमिक शिक्षा' शब्द का प्रयोग उस शिशु शिक्षा के लिए किया गया जिसमें बच्चों की मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक, भाषायी और सामाजिक विकास में सहायता की जाये। शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों ने इसे अलग–अलग नाम के विद्यालयो के रूप में प्रस्तुत किया तथा नर्सरी स्कूल, किंडर गार्टन स्कूल शिशु–वाटिका आदि। इन सबका उद्देश्य एक ही था कि बच्चों की देखभाल, पर्यवेक्षण व शिक्षा के प्रति उत्प्रेरणा परिवार के माहौल से बाहर की जाय। इन सभी नामों के विद्यालयों को पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत माना गया जिसे प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश की शिक्षा का आधार माना गया। इन सब के अतिरिक्त तीव्र गति से बढ़ती हुई जीवन शैली में आर्थिक दबाव के कारण अभिभावक पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों को आवश्यक मानते है जहाँ उनके बच्चों की देखभाल हो सके।

बालकों के पूर्व–प्राथमिक वर्षों में सृजनात्मक अपने शीर्ष पर होती है ऐसे में बालकों को जिज्ञासा अभिव्यक्त करने में, प्रश्न पूछने में, खोजने में, प्रयोग करने में आदि सभी के लिए पूर्व–प्राथमिक अवसर एवं समय देती है। पूर्व–प्राथमिक शिक्षा शिशुओं की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक संवेगात्मक, मनोवैाानिक सभी आवश्यकताओं को प्रभावपूर्ण तरीके से पूरा करने में मदद करती है। इस कारण इस शिक्षा ने अभिभावकों के दृष्टिकोण को इस शिक्षा के प्रति सकारात्मक बना दिया है।

नंदघर योजना भारत में ग्रामीण परिवारों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए 2015 में भारत सरकार द्वारा प्रारंभ की गई एक योजना है। इस योजना का उद्देश्य बुनियादी शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के साथ–साथ ग्रामीण परिवारों को सड़क, बिजली और पीने का पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना है। यह योजना आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, झारखंड, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, राजस्थान, तेलंगाना और उत्तर प्रदेश सहित विभिन्न राज्यों में लागू की गई है।

नंदघर योजना की शुरुआत भारत सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों, विशेषकर कृषि क्षेत्र में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। इस योजना के माध्यम से, सरकार का लक्ष्य ग्रामीण परिवारों को बुनियादी सुविधाएँ और सेवाएं प्रदान करना साथ ही उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है। इस योजना का उद्देश्य बुनियादी सुविधाएँ और सेवाएं प्रदान करके ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक से अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध करना है।

नंदघर योजना भारत के विभिन्न राज्यों में लागू की गई है और इसका ग्रामीण आबादी पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। इस योजना ने ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों, बिजली और पेयजल आपूर्ति के निर्माण को सक्षम बनाया है, जिससे बुनियादी सेवाओं तक बेहतर पहुंच और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। इस योजना से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि हुई है, और ग्रामीण परिवारों के आय स्तर पर इसका सकारात्मक प्रभाव पाया गया है।

इसके अलावा, नंदघर योजना का कृषि क्षेत्र पर भी सकारात्मक प्रभाव पाया गया है। इसने किसानों को बेहतर बुनियादी सुविधाएं और सेवाओं तक पहुँचने में सक्षम बनाया है, जिससे बेहतर उत्पादकता और उच्च पैदावार हुई है। इस योजना ने किसानों को .षि इनपुट और मशीनरी खरीदने के लिए ऋण सुविधाओं का उपयोग करने में सक्षम बनाया है, जिससे आर्थिक स्थिरता और उच्च आय हुई है।

हालाँकि, नंदघर योजना के सफल कार्यान्वयन के लिए कुछ चुनौतियाँ हैं जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है। इनमें अपर्याप्त धन, योजना के बारे में जागरूकता की कमी, उचित कार्यान्वयन की कमी और ऋण सुविधाओं तक पहुंच की कमी शामिल है। इन मुद्दों को हल करने के लिए, योजना के लिए पर्याप्त धन सुनिश्चित करना, योजना के बारे में जागरूकता बढ़ाना और योजना का उचित कार्यान्वयन सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।

**पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की भारत में वर्तमान स्थिति :–**

वर्तमान में पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केवल शहरी क्षेत्र तक ही सीमित है। अधिकांश पूर्व–प्राथमिक विद्यालय निजी संस्थाओं द्वारा संचालित है। केवल कुछ ही पूर्व–प्राथमिक शिक्षा केन्द्र राज्य या केन्द द्वारा संचालित है। यद्यपि राज्य उदार अनुदानों की सहायता से पूर्व–प्राथमिक शिक्षा को प्रोत्साहित करता है। तथापि पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान दशा संतोषप्रद नही है।

अधिकांश पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों के पास न तो उपयुक्त भवन है और न ही आवश्यक शिक्षण सामग्री। अप्रशिक्षित अध्यापक इन विद्यालयों की सबसे बड़ी कमी है। अप्रशिक्षित अध्यापक शिशु मनोविज्ञान के मूलभूत सिद्धान्तों के ज्ञान के अभाव में परम्परागत शिक्षण करते है। जो कि शिशुओं के स्वाभाविक विकास में बाधा उत्पन्न करता है।

पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की वांछित प्रगति न होने का एक कारण कुकुरमुत्ते की तरह से उगने वाले विद्यालय भी है। यद्यपि पूर्व–प्राथमिक विद्यालय खोलने के लिए बेसिक शिक्षा अधिकारी की अनुमति आवश्यक है, परन्तु अधिकांश विद्यालय बिना मान्यता प्राप्त किये चलाये जाते है। ऐसे विद्यालयों के संचालन का मुख्य उद्देश्य अधिक से अधिक धन कमाना होता है। विद्यालय में आवयक सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा छात्रों को ठीक ढंग से शिक्षित करने की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। इन सभी कारणों से पूर्व–प्राथमिक शिक्षा वांछित प्रगति नहीं कर पा रही है। अतः आवश्यक है कि सरकार एवं शिक्षाविद् पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के प्रसार की व्यापक योजना बनाये जिससे सभी शिशुओं को पूर्व–प्राथमिक शिक्षा का लाभ मिल सके। राज्य सरकारें निजी संस्थाओं को अनुदान देकर पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में सहायता कर सकती है।

भारत में पूर्व–प्राथमिक शिक्षा निजी विद्यालयों एवं सरकारी आंगनवाड़ी (ICDS) केन्द्रों द्वारा प्रदान की जा रही है। कुछ (ECCE) ई.सी.सी.ई. केन्द्र सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत, कुछ पूर्व–प्राथमिक विद्यालय सरकार के सम्बद्ध होकर और कुछ निजी चल रहे है। (7वीं ऑल इडिया एजूकेशन सर्वे NCERT, 2005) के अनुसार भारत में 493,700 पूर्व–प्राथमिक विद्यालय है। इनमे से 456,994 ग्रामीण क्षेत्रों में है। DISE (District Information System for Education) के आंकड़ें के अनुसार विद्यालयों में 26,453 मिलीयन बच्चों को शिक्षित कर रहे है। जिनमें से 12,829 मिलीयन लड़किया है। इन पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों में पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की सुविधाओं का प्रतिशत नामांकन के साथ कम है।

पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों में सबसे ज्यादा नामांकन (9.6%) मध्य प्रदेश में और सबसे कम (5.0%) बिहार मे हैं राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे के आंकड़े यह दर्शाते है कि लगभग 56 प्रतिशत बच्चे शिशु देखभाल और पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के लिए आंगनवाड़ी केन्द्रों में नामांकित हैं इनमें से केवल 31 प्रतिशत बच्चे (शिशु) ही नियमित रूप से इन केन्द्रों पर उपस्थित होते है।

**पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की राजस्थान में वर्तमान स्थितिः**

राजस्थान पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की स्थिति असंतोषजनक है। निजी संस्थाओं द्वारा जगह–जगह पूर्व–प्राथमिक विद्यालय तो खोल लिये जाते है लेकिन उनमें जो साधन–सुविधाएं होनी चाहिए उसका अभाव है। ऐसे विद्यालय शिशुओं के स्वाभाविक विकास में बाधा उत्पन्न करते है।

अप्रशिक्षित अध्यापक शिशु मनोविज्ञान के सिद्धान्तों से अनभिज्ञ होते है। ऐसे अध्यापकों द्वारा अधिकांश विद्यालयों में शिशुओं को शिक्षण कार्य कराया जाता है जो कि शिशुओं के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह नहीं कर

सकते है।

विद्यालयों में साधन–सुविधाओं का अभाव एवं प्रशिक्षित अध्यापक पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों की सबसे महत्वपूर्ण समस्या है। इस समस्या के कारण शिशुओं का सर्वांगीण विकस– संवेगात्मक, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक आदि विकास बाधित होता है।

भारत में पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की स्थिति का पता लगाने पर मेरे मस्तिष्क में यह प्रश्न आया कि राजस्थान में इसकी क्या स्थिति है? राजस्थान में पूर्व–प्राथमिक शिक्षा की स्थिति का पता लगाने हेतु शोधकार्य हेतु मैंने इस प्रकरण का चयन किया।

**राजस्थान में नंदघर योजना :**

नंद घर योजना राजस्थान राज्य सरकार द्वारा राज्य में बच्चों को प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (म्ब्ब्म्) की एक व्यापक और कुशल प्रणाली प्रदान करने के लिए शुरू की गई एक क्रांतिकारी योजना है। यह योजना यह सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन की गई है कि राज्य के सभी बच्चों को उनके विकास के प्रारंभिक वर्षों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच प्राप्त हो। यह योजना पूरे राज्य में नंद घरों (प्ले स्कूल) की स्थापना के माध्यम से बच्चों को एक व्यापक ECCE (Early Childhood Care and Education) अनुभव प्रदान करती है। यह योजना माता–पिता को आवश्यक संसाधन और मार्गदर्शन प्रदान करके, अपने बच्चों की शिक्षा में उचित अवसर प्रदान करने पर भी ध्यान केंद्रित करती है। यह शोध राजस्थान में नंद घर योजना के कार्यान्वयन और शिक्षक–माता–पिता की राय की जांच करने और योजना से जुड़ी चुनौतियों और सफलताओं की पहचान करने का प्रयास करता है।

यह योजना राजस्थान में कई चरणों में लागू की गई है, प्रथम चरण में अजमेर, अलवर, बाड़मेर, भरतपुर, चूरू, डूंगरपुर, जयपुर, जोधपुर, कोटा, पाली और उदयपुर जिलों में शुरू की गई है। योजना का दूसरा चरण बीकानेर, बूंदी, हनुमानगढ़, जालौर, झालावाड़, नागौर, सिरोही और टोंक जिलों में लागू किया जाएगा। नंद घर योजना वर्तमान में राजस्थान के सभी 33 जिलों में चल रही है।

नंद घर योजना माता–पिता एवं बच्चों की विद्यालय पूर्व शिक्षा स्वास्थ्य एवं पोषण का अवसर प्रदान करती है। यह योजना माता–पिता को आवश्यक संसाधन और मार्गदर्शन प्रदान करती है ताकि वे अपने बच्चों की शिक्षा में प्रभावी ढंग से योगदान कर सकें। माता–पिता को अपने बच्चों की शिक्षा और प्रगति में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, और उन्हें योजना, इसके पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रक्रिया पर विस्तृत जानकारी प्रदान की जाती है। यह योजना माता–पिता को शिक्षकों के साथ सहयोग करने के लिए भी प्रोत्साहित करती है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनके बच्चों के सर्वोत्तम हितों को ध्यान में रखा जाए।

नंद घर योजना के कार्यान्वयन को लेकर शिक्षकों और अभिभावकों से सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की प्रतिक्रियाएं मिली हैं। ECCE (Early Childhood Care and Education) के व्यापक और समग्र .ष्टिकोण के साथ–साथ माता–पिता को अपने बच्चों की शिक्षा में प्रभावी योगदान देने के लिए आवश्यक संसाधन और मार्गदर्शन प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए इस योजना की व्यापक रूप से प्रशंसा की गई है। हालाँकि, इस योजना की लचीलेपन की कमी और खेल–आधारित शिक्षा पर जोर न देने के लिए भी आलोचना की गई है।

कुल मिलाकर राजस्थान में नंद घर योजना का क्रियान्वयन सफल रहा है। हालाँकि, इस योजना को कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा है, जिसमें लचीलेपन की कमी और खेल–आधारित शिक्षा पर जोर की कमी शामिल है। इस योजना को कुछ माता–पिता और शिक्षकों की आलोचना का भी सामना करना पड़ा है, जिन्होंने योजना में माता–पिता की भागीदारी की कमी के बारे में चिंता जताई है।

नंद घर योजना– अनुसन्धान, इसके बाद राजस्थान में योजना के कार्यान्वयन की परीक्षा से गुजरेगा। अनुसंधान तब योजना से जुड़ी चुनौतियों और सफलताओं पर चर्चा करने, योजना के संबंध में शिक्षकों और अभिभावकों की राय जानने के लिए आगे बढ़ेगा। अंत में, नंद घर योजना के भविष्य के कार्यान्वयन के लिए निष्कर्षों के निहितार्थों की चर्चा के साथ शोध समाप्त होगा।

यह कार्यक्रम महिलाओं को उनके स्वास्थ्य के बारे

में शिक्षित करने पर भी जोर देता है। इसके अलावा, यह महिलाओं को सिखाता है कि अपने परिवार और खुद की देखभाल कैसे करें। इसके अतिरिक्त, यह महिलाओं को 1 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा प्रदान करता है। यह कार्यक्रम गम्भीर बीमारियों की स्थिति में महिलाओं को वित्तीय सहायता भी प्रदान करता है ताकि वे आवश्यक चिकित्सा देखभाल प्राप्त कर सकें।

राज्य के बच्चों को उच्च गुणवत्ता वाली बाल देखभाल सेवाएं प्रदान करने के लिए सरकार की ओर से प्रयास–यह कार्यक्रम 0 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए डे केयर, पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा और मनोरंजक गतिविधियों सहित विभिन्न प्रकार की सेवाएं प्रदान करता है।

सरकार कार्यक्रम के चरण के रूप में बच्चों को मुत चिकित्सा सुविधा और टीकाकरण सेवाएं प्रदान करती है। यह  कार्यक्रम बच्चों को पोषण भी प्रदान करता है और यह सुनिश्चित करता है कि उन्हें सामान्य विकास और वृद्धि के लिए सही प्रकार का भोजन और पोषण मिले।

पाली जिला भारतीय राज्य राजस्थान के 33 जिलों में से एक है। यह राज्य के दक्षिण–पश्चिमी भाग में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 8,845 वर्ग किमी है और इसकी सीमा पश्चिम में गुजरात और उत्तर में मध्य प्रदेश से लगती है। यह पूर्व में जालौर और सिरोही जिलों और दक्षिण में बाड़मेर से भी घिरा है। जिले को 6 तहसीलों में विभाजित किया गया है, अर्थात् पाली, मारवाड़ जंक्शन, देसूरी, रोहट, सुमेरपुर और सोजत।

राजस्थान सरकार ने हाल ही में पाली जिले में नंद घर योजना शुरू की है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना है। यह योजना जिले की सभी 6 तहसीलों में लागू की जा रही है, और इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, पेयजल, स्वच्छता और आजीविका के अवसर जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना है।

इस अध्ययन का उद्देश्य नंद घर योजना और उसके कार्यान्वयन के बारे में पाली जिले के शिक्षकों और अभिभावकों की राय का आकलन करना है। यह योजना की प्रभावशीलता, ग्रामीण लोगों के जीवन पर इसके प्रभाव और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार की क्षमता पर उनके विचारों को समझने का प्रयास करता है। जिले के शिक्षकों एवं अभिभावकों के सर्वेक्षण के माध्यम से आँकड़े एकत्रित किये गये हैं। सर्वेक्षण में योजना की प्रभावशीलता, ग्रामीण लोगों पर इसके प्रभाव और ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए योजना की क्षमता से संबंधित प्रश्न शामिल थे।

पाली जिले (75%) की राय थी कि नंद घर योजना ग्रामीण आबादी को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने में प्रभावी थी। उत्तरदाताओं ने महसूस किया कि इस योजना ने ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और पेयजल तक पहुंच में सुधार किया है। उनका यह भी मानना था कि इस योजना ने ग्रामीण लोगों की आजीविका के अवसरों में सुधार किया है, और उन्हें बेहतर नौकरी की संभावनाएं प्रदान की हैं।

अधिकांश उत्तरदाताओं (62%) ने महसूस किया कि नंद घर योजना का पाली जिले के ग्रामीण लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। उन्होंने महसूस किया कि इस योजना ने बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और पीने के पानी तक पहुंच में सुधार किया है, और ग्रामीण लोगों की आजीविका के अवसरों में भी सुधार किया है। उन्होंने यह भी कहा कि इस योजना ने ग्रामीण लोगों को बेहतर नौकरी की संभावनाएं प्रदान की हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया है।

बच्चों के लिए, नंद घर योजना प्री–स्कूल शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य, टीकाकरण और मनोरंजन सहित चाइल्डकैयर सेवाओं की एक पूरी श्रृंखला प्रदान करती है। यह कार्यक्रम क्षेत्र में माताओं और अन्य देखभालकर्ताओं को यह सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षण भी प्रदान करता है कि उनके पास अपने बच्चों को वह देखभाल प्रदान करने के लिए ज्ञान और क्षमताएं हैं जिसके वे हकदार हैं।

इस कार्यक्रम को जिले में लागू किया गया है और चाइल्डकैअर के स्तर को ऊपर उठाने में सफल रहा है। कार्यक्रम ने पाली जिले के बच्चों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और पोषण प्रदान किया है, जिससे वे एक सुरक्षित वातावरण में परिपक्व और विकसित हो सके हैं।

नंद घर योजना से भी जिले की स्थानीय अर्थव्यवस्था

को भी लाभ हुआ है। इसने माताओं और देखभाल करने वालों को नौकरी के विकल्प दिए हैं, जिससे लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। इसके अतिरिक्त, इसने पाली जिले में बच्चों के सामान्य स्वास्थ्य और खुशी को बेहतर बनाने में योगदान दिया है।

नंद घर योजना ने स्थानीय बच्चों को उत्कृष्ट चाइल्डकैअर सेवाएं प्रदान करके पाली जिले को लाभान्वित किया है। इसके अतिरिक्त, इसने जिले की सामान्य भलाई और स्वास्थ्य के साथ–साथ स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ाया है।

**शोध अध्ययन का महत्व**

राजस्थान सरकार द्वारा प्रायोजित नंद घर योजना एवं इसके क्रियान्वयन के सन्दर्भ में शिक्षकों, अभिभावकों की राय का अध्ययन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, यह अंतर्दृष्टि देगा कि राज्य में योजना कैसे लागू की जा रही है और यह अपने इच्छित उद्देश्यों को प्राप्त कर रहा है या नहीं। दूसरे, यह शिक्षकों और अभिभावकों को योजना के साथ अपनी राय और अनुभव साझा करने और सुधार के लिए सुझाव देने के लिए एक मंच प्रदान करेगा। तीसरा, अध्ययन राजस्थान सरकार को मूल्यवान डेटा प्रदान करेगा जिसका उपयोग योजना की सफलता का आकलन करने और आगे सुधार के लिए रणनीति विकसित करने के लिए किया जा सकता है। अंत में, अध्ययन आम जनता के बीच योजना के बारे में जागरूकता पैदा करने और इसके लाभों को बढ़ावा देने में मदद करेगा। इसलिए, राजस्थान सरकार द्वारा प्रायोजित नंद घर योजना और इसके कार्यान्वयन के संदर्भ में शिक्षकों, अभिभावकों के एक राय अध्ययन का अध्ययन आवश्यक है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह योजना अपने इच्छित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रही है।

**शोध विधि :**

इस अध्ययन में प्रयुक्त अनुसंधान उपकरण एक सर्वेक्षण पद्धति प्रश्नावली होगी। सर्वेक्षण पाली जिले में शिक्षकों और माता–पिता के लिए प्रशासित किया जाएगा जहां कार्यक्रम लागू किया जा रहा है। सर्वेक्षण में कार्यक्रम द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता, कार्यक्रम के साथ माता–पिता और शिक्षकों की संतुष्टि का स्तर, और कार्यक्रम को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है, इस बारे में उनके सुझाव जैसे विषयों को शामिल किया गया।

**शोध उपकरण :**

**सर्वेक्षण प्रश्नावली :**

सर्वेक्षण प्रश्नावली का उपयोग राजस्थान सरकार द्वारा प्रायोजित नंद घर योजना और इसके कार्यान्वियन के बारे में शिक्षकों और अभिभावकों से उनकी राय के बारे में डेटा एकत्र करने के लिए किया जाएगा। प्रश्नों को योजना की उनकी समझ, इसके कार्यान्वियन, कार्यान्वयन की प्रभावशीलता और योजना से जुड़े लाभों और चुनौतियों पर केंद्रित है।

शोध अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। इस शोध हेतु ''संचालन हेतु साक्षात्कार (चुनौतियों) अभिमतावली'' का निर्माण किया गया।

**न्यादर्श**

राजस्थान के पाली जिले से यादृच्छिक रूप से 100 संचालकों और 100 अभिभावकों का एक नमूना चुना जाएगा। स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण में जनसंख्या को अलग–अलग स्तरों में विभाजित करना और फिर यादृच्छिक रूप से प्रत्येक स्तर से नमूना लेना शामिल है। यह सुनिश्चित करेगा कि नमूना समग्र रूप से पाली जिले (राजस्थान) की जनसंख्या का प्रतिनिधि है। एक बार स्तर परिभाषित हो जाने के बाद, प्रत्येक स्तर से संचालकों और अभिभावकों का एक यादृच्छिक न्यादर्श तैयार किया जा सकता है। यह नंद घर योजना के कार्यान्वयन के संबंध में जनसंख्या की राय की अधिक सटीक तस्वीर प्रदान करेगा।

**परिसीमन :**

यह अध्ययन राजस्थान राज्य में पाली जिले के 100 नंदघर की वस्तुस्थिति, क्रियान्वयन और चुनोतियों के अध्ययन तक सीमित है।

**अनुसंधान समस्या का औचित्य :–**

**(1) शैक्षिक दृष्टिकोण से :** ऐसा देखा गया है कि पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों में विभिन्न समस्याएं होने के कारण अधिगम हेतु उपयुक्त वातावरण का निर्माण नहीं हो पाता है शिशु के लिए बनाये गये विद्यालय अच्छे एवं स्वास्थ्यवर्धक स्थानों पर निर्मित नहीं किये जाते है। उसके साथ ही

शिशु–शिक्षा केन्द्रों में अध्यापकों की नियुक्ति प्रशिक्षित मानदण्डों को लेकर नहीं की जाती है और अप्रशिक्षित अध्यापकों को कम वेतन तथा अल्प सुविधाओं पर शिक्षण कार्य हेतु रख लिया जाता है। ऐसे अध्यापक मन लगाकर बालकों का मार्गदर्शन कैसे कर सकते है? कई शिशु–शिक्षा विद्यालयों में शिशुओं के लिए शिक्षण सामग्री का पूरी तरह से अभाव है। इन शिक्षण–अधिगम सामग्री का उपयोग शिशुओं की मानसिक योग्यताओं, पारिवारिक स्थितियों एवं शारीरिक क्षमताओं के अनुसार एक सफल अध्यापक को करना चाहिए। लेकिन आज इनका अभाव है। अतः इन समस्याओं का समाधान कर अधिगम को प्रभावी बनाने में तथा बालकों का सर्वांगीण विकास करने में यह शोध महत्वपूर्ण हो सकता है।

**1. परामर्श एवं निर्देशन में महत्व :–**

मनोविज्ञान की दृष्टि हो पूर्व–प्राथमिक शिक्षा को आगे की समस्त शिक्षा का आधार माना जाता है। मानव के विकास की विभिन्न समस्याएं होती है। ये सभी अवस्थाएं एक–दूसरे पर आधारित है तथा एक अवस्था से ही दूसरी अवस्था का विकास होता हैं इस प्रकार विकास की प्रक्रिया में सातत्व दृष्टिगत होता है। यह सातत्व टूटने से सुसंगठित व्यक्तित्व विकसित होने की संभावना कम रहती है। अतः बाल्यावस्था में बालक की शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

शिक्षा के सम्बन्ध में हुई नयी शोधों के आधार पर ही बालक का समुचित विकास नहीं होता है। अपितु जन्म से छः वर्ष तक की आयु का स्वरूप बालक के स्वाभाविक उत्तम गुणों के विकास की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। बालक को तीन से छः वर्ष की आयु तक जो पारिवारिक, सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण मिलता है उसी के अनुरूप उसके गुणों का विकास होता है। यदि इस अवस्था में बालकों को उचित विकास नहीं होता है तो ऐसे बालक किशोर अवस्था में विभिन्न समस्याओं से ग्रसित हो जाते है। अतः इस अवस्था के बालकों को पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के दौरान उचित निर्देशन देने में तथा उनके अभिभावकों को भी परामर्श देने से हो सकता है जिससे भविष्य मे ंकिसी भी तरह की समस्या न होने के लिए प्रेरित किया जा सके।

**2. शिक्षकों की दृष्टि से :–**

शिक्षक समाज का निर्माता होता है क्योंकि वह भावी पीढ़ी को तैयार करने का कार्य करता है। शिक्षा प्रदान करने के कई साधनों में शिक्षक की भूमिका शिक्षण प्रक्रिया मे महत्वपूर्ण होती है। इस शिशु शिक्षा की प्रमुख विशेषता शिक्षक का पूर्णतः बाल–केन्द्रित तथा सामंजस्यपूर्ण व्यवहार से परिपूर्ण होना है।

इस अनुसंधान के माध्यम से शिक्षक यह जान सकेगे कि बालक के जीवन के महत्वपूर्ण 5–6 वर्ष जिसमें बालकों का सामाजिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि विकास होता है, उससे किस प्रकार शिक्षक अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है? क्योंकि एक शिक्षक ही बालक के लिए आदर्श होता हैं अतः शिक्षक का यह दायित्व बन जाता है कि वह बालक के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर तथा बालक के व्यवहार में अच्छी आदतों का संचार करके पूर्ण सहयोगी बन सके।

**3. अभिभावकों की दृष्टि से :–**

आज के युग में व्यक्ति अपने जीविकोपार्जन की व्यवस्था में इतना व्यस्त हो गया है कि वह अपने घर में बच्चों की भली–भांति देखभाल नहीं कर सकता है।

कृषि प्रधान समाज बड़े कुटुम्ब में रहते थे। उनके बालकों की शिक्षा–दीक्षा घर के वृद्ध, प्रौढ़ स्त्री–पुरूष तथा भाई–बहनों द्वारा स्नेहपूर्ण वातावरण में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से होती रहती थी। औद्योगिक क्रांति में एकत्र कुटुम्ब का विघटन किया तथा महिलाएं भी जीविकोपार्जन हेतु घर से बाहर आने लगी। उनके छोटे बालकों की देखभाल, शिक्षण एवं मनोरंजन करने के लिए पूर्व–प्राथमिक विद्यालयों द्वारा अभिभावकों की समस्याओं को दूर किया जा सकता है तथा उन्हें संतुष्ट किया जा सकता है।

**सांख्यिकीय तकनीकी :**

सर्वेक्षण से एकत्र किए गए डेटा का वर्णनात्मक आँकड़ों, जैसे कि प्रतिशत का प्रयोग करके विश्लेषण किया गया।

**सारणी**

नन्द घर सूचना प्रपत्र के आधार पर चुनौतियां

| क्र.सं. | कथन | हाँ | नहीं |
|---|---|---|---|
| 1. | नन्द घर समय पर संचालित होता है। | 100% | 0% |
| 2. | नन्द घर पर बालकों के स्वास्थ्य की समय पर जॉच होती है। | 60% | 40% |
| 3. | नन्द घर में बच्चों को आहार में क्या–क्या दिया जाता है। | 65% | 35% |
| 4. | नन्द घर में बच्चों के खेलने के लिए खिलौने उपलब्ध है। | 100% | 0% |
| 5. | नन्द घर की सफाई एवं स्वच्छता का ध्यान रखा जाता है। | 85% | 15% |
| 6. | नन्द घर में टीकाकरण का कार्य किया जाता है। | 68% | 32% |
| 7. | नन्द घर में गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की जांच होती है। | 55% | 45% |
| 8. | नन्द घर में भोजन समय पर बनता है। | 68% | 32% |
| 9. | नन्द घर में दूध का वितरण किया जाता है। | 45% | 55% |
| 10. | नन्द घर में बालकों की कक्षाओं के लिए उचित सहायक सामग्री है? | 80% | 20% |
| 11. | नन्द घर में बालकों को पुस्तके उपलब्ध कराई जाती है। | 70% | 30% |
| 12. | नन्द घर में शौचालय है। | 90% | 10% |
| 13. | नन्द घर में पेयजल की उचित व्यवस्था है। | 100% | 0% |
| 14. | नन्द घर में सोलर पैनल और ग्रिड कनेक्शन है | 50% | 50% |
| 15. | नन्द घर में सुरक्षित पेयजल व्यवस्था है। | 100 | 0% |
| 16. | नन्द घर में बच्चों की ई–लर्निंग हेतु स्मार्ट टीवी और टेबलेट है। | 80% | 20% |
| 17. | नन्द घर में विभिन्न सामुदायिक सहभागिता गतिविधियां जैसे वीएचएसएनसी बैठके, टीकाकरण, अभिभावक संचालक बैठके आदि को संगठित किया जाता है। | 85% | 15% |
| 18. | नन्द घर में बच्चों और समुदाय के सदस्यों में पशुओं के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए पशु कल्याण और देखभाल सम्बन्धी गतिविधियां होती है। | 100% | 0% |
| 19. | नन्द घर क्षेत्र में वि शेषज्ञ ज्ञान लाने के लिए विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में राष्ट्रीय और स्थानीय ऐजेंसियों के साथ साझेदारी है। | 60% | 40% |
| 20. | नन्द घरों में वैश्विक और स्थानीय स्वयंसेवा कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाता है। | 95% | 5% |

आरेख संख्या–4.3 : नन्द घर सूचना प्रपत्र के आधार पर चुनौतियां

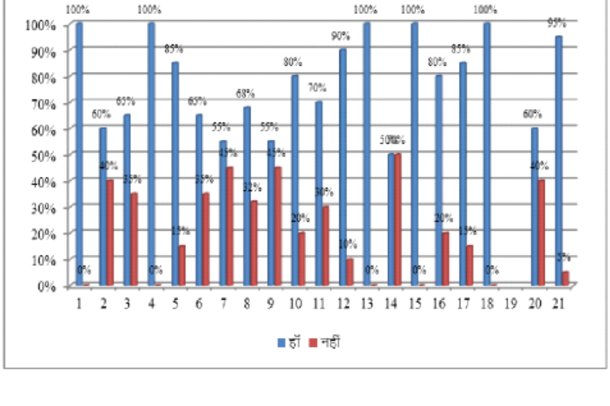


**व्याख्या :**

सारणी एवं आरेख संख्या 4.3 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि–

प्रथम कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत संचालकों ने कहा कि नंद घर में सदस्यों का चयन विभागीय नियमानुसार किया जाता है।

द्वितीय कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 60 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार किया कि नन्द घर पर बालकों के स्वास्थ्य की समय पर जॉच होती है।

तृतीय कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 65 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में बच्चों को आहारं दिया जाता है।

चतुर्थ कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 100 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में बच्चों के खेलने के लिए खिलौने उपलब्ध है।

पंचम कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 85 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर की सफाई एवं स्वच्छता का ध्यान रखा जाता है।

छठे कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 100 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में टीकाकरण का कार्य किया जाता है।

सातवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 75 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की जांच होती है।

आठवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 68 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में भोजन समय पर बनता है।

नवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 45 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में दूध का वितरण किया जाता है।

दसवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 80 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में बालकों की कक्षाओं के लिए उचित सहायक सामग्री है।

ग्यारहवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 70 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में बालकों को पुस्तके उपलब्ध कराई जाती है।

बारहवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 90

प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में षौचालय है।

तेरहवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 90 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में पेयजल की उचित व्यवस्था है।

चोदहवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 50 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में सोलर पैनल और ग्रिड कनेक्शन है।

पन्द्रहवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 100 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में सुरक्षित पेयजल व्यवस्था है।

सोलहवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 80 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में बच्चों की ई–लर्निंग हेतु स्मार्ट टीवी और टेबलेट है।

सत्रहवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 85 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में विभिन्न सामुदायिक सहभागिता गतिविधियां जैसे वीएचएसएनसी बैठके, टीकाकरण, अभिभावक संचालक बैठके आदि को संगठित किया जाता है।

अठारहवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 100 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर में बच्चों और समुदाय के सदस्यों में पशुओं के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए पशु कल्याण और देखभाल सम्बन्धी गतिविधियां होती है।

अठारहवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 100 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर क्षेत्र में विशेषज्ञ ज्ञान लाने के लिए विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में राष्ट्रीय और स्थानीय ऐजेंसियों के साथ साझेदारी है।

उन्नीसवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 60 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार नन्द घर क्षेत्र में विशेषज्ञ ज्ञान लाने के लिए विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में राष्ट्रीय और स्थानीय ऐजेंसियों के साथ साझेदारी है।

बीससवें कथन के पूछे जाने पर शत प्रतिशत 95 प्रतिशत संचालकों ने स्वीकार कि नन्द घरों में वैष्विक और स्थानीय स्वयंसेवा कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाता है।

**शोध निष्कर्श :**

प्रस्तुत शोध के आधार पर नन्द घर योजना में बच्चों की शिक्षा के लिए समय पर संचालित होने के ही बच्चों के स्वास्थ्य का पूरा खयाल रखते हुए टीकाकरण एवं गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की जॉच का कार्य समय पर होता है। उनके आहार के साथ ही खिलौने की व्यवस्था, सफाई तथा स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाता है।

नन्द घर में सुरक्षित पेयजल, भोजन व्यवस्था, शौचालय की व्यवस्था संतोषप्रद है। बच्चों के लिए ई–लर्निंग हेतु स्मार्ट टीवी, टेबलेट व्यवस्था भी पूर्ण रूप सुविधा है। जिससे बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास विकास में पूर्ण सहयोग रहता है।

नन्द घर में सामुदायिक सहभागिता रहती है जैसे वीएचएसएनसी बैठके, टीकाकरण, अभिभावक संचालक बैठके आदि को संगठित किया जाता है। समुदाय के सदस्यों में पषुओं के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए पशु कल्याण और देखभाल सम्बन्धी गतिविधियां होती है। नन्द घरों में वैश्विक और स्थानीय स्वयंसेवा कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाता है।

नन्द घर में पानी, बिजली, इण्टरनेट कनेक्शन, सौर ऊर्जा आदि विभिन्न कार्य किये जा रहे है। बिल्डिंग एज लर्निंग एड डिजाइन और टीवी और स्मार्ट किट, साथ ही टेबलेट पर प्री–लोडेड सामग्री का उपयोग करके इंटरेक्टिव षिक्षण विधियों के माध्यम से बालकों की शिक्षा में विकास किया जा रहा है।

**सन्दर्भ :**

1 जे.सी. अग्रवाल : शिक्षा अनुसंधान, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।

2 Learning and Teaching : राधा प्रकाशन, नई दिल्ली।

3 आर.सी दास : शिक्षण प्रभावशीलता, नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली।

4 गेरेट हेनरी, ई. : ''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी हिन्दी अनुवाद'' कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना।

5 कपिल, एच.के. : ''अनुसंधान विधियाँ'', हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा, 1981

6 Best, J.W. : "Research in Education", New Delhi, Prentice Hall of India Pvt. Ltd. (1978)

7 Borg Walter, R. : "Educational Research an Introduction", New York Longmans, Green & Co. Ltd., 1963.

# भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का विश्लेषणात्मक अध्ययन

**डॉ. विरमा राम देवासी**
मौलाना आजाद विश्वविधालय, जोधपुर

**प्रस्तावना :**

भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी तथा अधिकारों के लिए उनके संघर्ष का 'प्रथम चरण' 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष से प्रारम्भ होता है। महात्मा गाँधी द्वारा प्रोत्साहित महिलाओं ने सर्वप्रथम तो 'गृह शासन' (1916) के आंदोलन में भाग लिया। उन्होंने बाद के नमक सत्याग्रह एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी भाग लिया। इन आंदोलनों में जो महिलाएं अग्रणी रहीं हैं उनमें एनी बेसेंट (जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षा भी बनीं) जैसी यशस्वी महिलाएं थीं जिनके विषय में मार्गरेट कजन्स की सटीक टिप्पणी इस प्रकार हैः 'भारतीय महिलाओं की चैतन्य एकता का प्रादुर्भाव'। अन्य सुविख्यात महिलाएं जैसे सरोजनी नायडू, कमला देवी चट्टोपाध्याय, राजकुमारी अमृत कौर, लेडी फिरोज मेहता, अरूणा आसफ अली, दुर्गाबाई देशमुख इत्यादि ने बाद में स्वतंत्रता संग्राम में बहुत ही सक्रिय भूमिका निभाई।

तीन महिला संगठनों (विमेन्स इन्डियन एसोसियेशन, ऑल इन्डिया विमेन कान्फ्रेंस तथा नैशनल काउन्सिल ऑफ विमेन इन इन्डिया) ने 1932 में द्वितीय गोलमेज कान्फ्रेंस को एक ज्ञापन पेश किया जिसमें कहा गया था कि नए संविधान में व्यस्क मताधिकार तथा सामान्य निर्वाचकों की व्यवस्था की जाये। इन्होंने महिलाओं के लिए आरक्षण, नामांकन या मनोनयन के सुझाव को अस्वीकार करते हुए पूरी समानता की मांग की थी।1 स्वतंत्रता से पहले की अवधि का एक महत्वपूर्ण अभिलेख एक उपसमिति की रिपोर्ट है (श्री नेहरू द्वारा 1939 में नियुक्त) जो 'नियोजित अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका' पर है। इसका मुख्य तर्क यह था कि महिलाओं को व्यक्ति के रूप में देखा जाये तथा उन्हें भी राजनीतिक, नागरिक एवं कानूनी अधिकार, सामाजिक समानता तथा आर्थिक स्वतंत्रता एवं विकास में पुरूषों के समान हिस्सा मिलना चाहिए।

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तथा देश के विभाजन के साथ हुए खून खराबे तथा एक बड़ी जनसंख्या के विस्थापन के बाद 1950 तथा 1960 के दशक में धर्म निरपेक्ष, बहुलवादी, बहुधार्मिक तथा सांस्कृतिक रूप से समन्वित राजनीतिक व्यवस्था को बढ़ावा दिया गया। इस वातावरण तथा संवैधानिक गारंटी से कुछ महिलाएं लाभान्वित हुईं। मध्यम वर्ग की बहुत सी महिलाओं को विभिन्न सेवाओं एवं शैक्षणिक क्षेत्रों में प्रवेश प्राप्त करने के अवसर मिले। सरकार ने 'महिला मंडलों' (महिला समूहों) की व्यवस्था की तथा महिलाओं के उत्थान के लिए कार्यक्रम बनाए, हालांकि ये 'समाज कल्याण' के परिप्रेक्ष्य से बनाए गये थे। इस अवधि में महिला आंदोलन उतना सक्रिय नहीं रह पाया था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अपने वादों को पूरा नहीं कर पाई। महिलाओं का मोहभंग तब हुआ जब सामान्य नागरिक कोड जो सभी महिलाओं को कानूनी समानता प्रदान करता, लागू नहीं किया जा सका। हिन्दू कोड बिल भी अपने प्रारंभिक रूप में नहीं पारित किया जा सका। 1955–56 में इसका बहुत ही कटा छटाँ रूप चार विभिन्न अधिनियमों के रूप में पारित हो पाया जो विवाह, उत्तराधिकार, संरक्षण, दत्तक–ग्रहण तथा भरण–भत्ते से संबंधित है।2

भारत में महिलाओं की स्थिति सम्बन्धी समिति ने कहा है कि राष्ट्रीय आंदोलन और महात्मा गाँधी का नेतृत्व, ये दो ऐसी प्रमुख शक्तियां थीं जिन्होंने महिलाओं के लिए राजनीतिक समानता प्राप्त करने में उत्प्रेरक का काम किया। इन दोनों ने उन्हें अपने राजनीतिक अधिकारों और

उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक बनाया और उन्हें घर की सुरक्षा में परदे के पीछे से मुक्त करके सार्वजनिक क्षेत्र में उतारा। उन्नीसवीं शताब्दी का सुधार आन्दोलन और महिलाओं के बीच शिक्षा का प्रसार परिवार में उनकी स्थिति को सुधारने से और सामाजिक संगठन के आधारभूत एकक के रूप में परिवार को सुदृढ़ करने से ज्यादा संबंधित रहा। महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाने का अर्थ केवल उन्हें सम्पत्ति का अधिकार, विधवा विवाह का अधिकार, बाल–विवाह का उन्मूलन और शिक्षा का अधिकार प्रदान किया जाना समझा गया। इसके अलावा, यह एक अभिजात्य दृष्टिकोण पर आधारित था तथा उच्च और मध्यम वर्गो की महिलाओं की ओर लक्षित था।3

भारत में महिलाओं की स्थिति सम्बन्धी समिति ने महिलाओं की राजनीतिक स्थिति को, महिलाओं को शक्ति के निर्धारण और भागीदारी में प्राप्त समानता और स्वतंत्रता की मात्रा और उनकी इस भूमिका हेतु समाज द्वारा दिये गये महत्व के रूप में परिभाषित किया है। उन्होंने महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की प्रभावकारिता तथा उनके समानता के दर्जे की स्थिति की परख के तीन संकेतक प्रयुक्त किये हैं। ये तीन संकेतक हैं –

1. राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदारी – महिला मतदाताओं का मतदान के लिए आना और प्रत्येक चुनाव में महिला उम्मीदवारों की संख्या।

2. राजनीतिक रूझान – राजनीति में भाग ले रही महिलाओं की जागरूकता, वचनबद्धता और अंतरग्रस्तता का स्तर, विशेषकर राजनीतिक कार्यवाही और व्यवहार में उनकी स्वायतत्ता और स्वतंत्रता।

3. राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं का प्रभाव – राजनीतिक प्रक्रिया में स्वयं अपनी भूमिका और प्रभावकारिता के संबंध में महिलाओं के विचारों का मूल्यांकन और महिलाओं की इन नई भूमिकाओं के प्रति समाज का रवैया। इसका संकेत विभिन्न चुनावों में महिला उम्मीदवारों की सफलता, महिलाओं के दबाव समूहों की कुशलता, नेतृत्व की प्रकृति और दलों तथा सरकार में महिलाओं का विशिष्ट वर्ग और विशेषकर महिलाओं से सीधे संबंध रखने वाले मुद्दों पर उन्हें जुटाने हेतु चलाए गये अभियानों की प्रभावकारिता से मिलता है।

**अध्ययन के उद्देश्य :**

1. उन सामाजिक मान्यताओं का पता लगाना जो महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में बाधक हैं, एवं महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के आंकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के संबंध में ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन एवं महिलाओं के राजनैतिक अधिकारों के संबंध में पिछड़ेपन के कारणों की पहचान करना।

3. पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी का तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं उनकी सहभागिता में आने वाली समस्याओं का पता लगाना।

4. महिलाओं की राजनीतिक निर्णय–निर्माण प्रक्रिया में सहभागिता के स्तर का पता लगाना एवं उनका चुनावों में सफलता का स्तर तथा राजनीतिक दलों द्वारा महिलाओं को दी जाने वाली प्राथमिकताओं का तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

5. विषय–क्षेत्र का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए संदर्भित सुझावों की पहचान करना।

**शोध प्रविधि :**

शोध नियमों के अनुसार प्रस्तुत शोध सैद्धांतिक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं नवीन व्यवहारिक पद्धतियों को अपनाते हुये शोध लेख को मौलिकता प्रदान करने का प्रयास किया गया है। इस शोध कार्य हेतु आवश्यक सामग्री विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकालयों इंटरनेट एवं शोध संस्थानों आदि में उपलब्ध साधनों के अलावा प्राचीन संदर्भ ग्रन्थों से एकत्र किया जाना अनुमन्य है। इन संदर्भ आधारित पुस्तकों के अलावा विभिन्न आयोगों के प्रकाशनों, आत्मलेखों, समाचार पत्र–पत्रिकाओं, राजनैतिक दलों के घोषणा पत्रों एवं राजनेताओं के भाषण इत्यादि से लेखन सामग्री संग्रहित कर विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

**राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी :**

राजनीतिक प्रक्रिया में मतदाताओं के रूप में महिलाओं की भागीदारी का मूल्यांकन एक सकारात्मक सुझाव प्रस्तुत करता है। 1952 से उपलब्ध ऑकड़े तालिका में प्रस्तुत किये गये हैं।

सारणी

### आम चुनावों में महिलाओं की भागीदारी का प्रतिशत

| आम चुनाव | वर्ष | पुरूष | महिला | कुल | पुरूष और महिला भागीदारी के बीच अंतर |
|---|---|---|---|---|---|
| पहला | 1952 | - | - | 61.2* | - |
| दूसरा | 1957 | - | - | 62.2* | - |
| तीसरा | 1962 | 62.0 | 46.6 | 55.0 | 15.4 |
| चौथा | 1967 | 66.7 | 55.5 | 61.3 | 11.2 |
| पांचवा | 1971 | 60.9# | 49.1# | 55.3 | 11.8 |
| छठा | 1977 | 66.6 | 54.9 | 60.5 | 11.7 |
| सातवां | 1980 | 62.2 | 51.2 | 56.9 | 11.0 |
| आठवां | 1984 | 68.4 | 59.2 | 64.0 | 9.2 |
| नौवां | 1989 | 66.1 | 56.9 | 62.0 | 9.2 |
| दसवां | 1991 | 61.6 | 51.4 | 61.0 | 10.2 |
| ग्यारहवा | 1996 | 62.1 | 53.4 | 57.9 | 8.7 |
| बारहवां | 1998 | 62.1 | 53.4 | 57.9 | 8.7 |
| तेरहवां | 1999 | 64.0 | 55.6 | 60.4 | 8.4 |
| चौहदवां | 2004 | 62.15 | 53.64 | 58.07 | 8.5 |
| पन्द्रहवां/ | 2009 | 60.0 | 56.0 | - | 4.0 |

स्रोतः भारत का चुनाव आयोग।

* डाले गये वैध मतों के आधार पर आकलित

\# सी.एस.डब्ल्यू.आई. रिपोर्ट, 1974

@ दैनिक भास्कर, 29 मई 2009, प्रकाशित फरिदाबाद

नोट : चुनाव आयोग ने पहले, दूसरे और पॉचवे आम चुनावों के संबंध में स्त्री–पुरूष मतदाताओं का अलग–अलग ब्यौरा नहीं रखा है।

### चुनावी आंकड़ों का मूल्यांकन :

कुछ आम चुनावों, जैसे 1984 के आठवें आम चुनाव में कुल मतदाता भागीदारी 64 प्रतिशत के उच्चतम पर रही है। अन्य चुनावों में कुल मतदाता भागीदारी 55 से 62 प्रतिशत के बीच रही है। 1984 को छोड़कर, पुरूष भागीदारी, पुरूष मतदाताओं के 60 से 66 प्रतिशत के बीच रही है। (1984 में यह 68.4 प्रतिशत थी)। महिला भागीदारी सभी चुनावों में अपेक्षाकृत कम रही है। तथापि, इन सभी वर्षो में महिला मतदाताओं की भागीदारी निरन्तर बढ़ते हुए 1962 में 46.6 प्रतिशत (1984 में 59.2 प्रतिशत) 1998 में लगभग 57. 86 प्रतिशत हो गई। महिला भागीदारी में वृद्धि दर ने लगातार बढ़ते हुए, पुरूष और महिला भागीदारी के बीच के अन्तर को घटा दिया है। यह अन्तर 15 से घटकर 4 प्रतिशत बिन्दुओं पर पहुंच गया है।

### संसद एवं राज्य विधानमंडलों में महिलाओं का प्रतिनिधित्वः

भारत में महिलाओं की स्थिति संबंधी समिति ने यह टिप्पणी की है कि उसे अनेक विधायकों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने बताया है कि राजनीति में सक्रिय भागीदारी से अनेक महिलाओं को रोकने वाले कारकों में हिंसा और चरित्र–हनन की धमकियां थीं। ''उनमें से कुछ का राजनीति सक्रियता का लम्बा रिकार्ड है, लेकिन फिर भी वे चुनावों में उम्मीदवारी का सामना करने से हिचकती हैं।'' यह टिप्पणी अभी भी सटीक बैठती है।4 पिछले पचास वर्षो में महिलाओं का राजनीति के क्षेत्र में प्रतिनिधित्व पुरूषों के मुकाबले न के बराबर रहा है। जहां वर्ष 1957 में लोकसभा चुनाव में लड़ने वाली महिलाओं का प्रतिशत 2.97 था, वहीं वर्ष 2009 में यह बढ़कर केवल 8.65 प्रतिशत तक ही पहुंचा। 1957 से लेकर 2009 तक हुए चुनावों में काफी कम सीटों पर चुनाव लड़ने के बावजूद महिलाऐं, पुरूषों के मुकाबले हर बार ज्यादा संख्या में जीतीं।

### सारणी
### लोकसभा में महिलाओं की चुनावों में भागीदारी एवं सफलता का प्रतिशत

| वर्ष | सीटों की कुल संख्या | कुल उम्मीदवारों की संख्या | पुरूष | | | महिला | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | उम्मीदवार | निर्वाचित | सफलता प्रतिशत | उम्मीदवार | निर्वाचित | सफलता प्रतिशत |
| 1952 | 489 | 1,874 | – | – | – | – | – | – |
| 1957 | 494 | 1,519 | 1,474 | 472 | 32.0 | 45 | 22 | 48.9 |
| 1962 | 494 | 1,985 | 1,919 | 463 | 24.1 | 66 | 31 | 47.0 |
| 1967 | 520 | 2,369 | 2,302 | 491 | 21.3 | 67 | 29 | 43.3 |
| 1971 | 518 | 2,734 | 2,698 | 497 | 18.4 | 86 | 21 | 24.4 |
| 1977 | 542 | 2,439 | 2,369 | 523 | 22,1 | 70 | 19 | 27.1 |
| 1980 | 542 | 4,629 | 4,486 | 514 | 11,5 | 143 | 28 | 19.6 |
| 1984 | 542 | 5,312 | 5,150 | 500 | 9.7 | 162 | 42 | 25.9 |
| 1989 | 543 | 6,160 | 5,962 | 514 | 8.6 | 198 | 29 | 14.7 |
| 1991 | 543 | 8,658 | 8,342 | 506 | 6.1 | 326 | 37 | 11.4 |
| 1996 | 543 | 13,952 | 13,353 | 503 | 3.8 | 599 | 40 | 6.7 |
| 1998 | 543 | 4,750 | 4,476 | 500 | 11.2 | 274 | 43 | 15.7 |
| 1999 | 543 | 4,648 | 4,364 | 494 | 11.3 | 284 | 49 | 17.3 |
| 2004 | 543 | 5,435 | 5,080 | 498 | 9.8 | 355 | 45 | 12.7 |
| 2009* | 543 | 5,110 | 4,668 | 485 | 10.4 | 442 | 58 | 13.2 |

स्रोतः भारत का चुनाव आयोग। चुनाव आयोग ने 1952 के लोकसभा चुनाव के संबंध में स्त्री–पुरूष उम्मीदवारों का अलग–अलग ब्यौरा नहीं रखा है।

' प्रशांत जैन, हिन्दुस्तान, हैला दिल्ली, 21 मई, 2009 प्रकाशित दिल्ली, पृ.1पिछले 57 वर्षो में लोकसभा में महिलाओं का

प्रतिशत 4.4 से बढ़कर केवल 10.7 तक ही पहुंचा है। 22 से 58 सदस्य, 4.4 प्रतिशत से 2009 में 107 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। दूसरे और तीसरे चुनावों में महिला सदस्य संख्या बढने के बाद यह संख्या चौथे और पांचवें चुनावों के दौरान घटनी आरंभ हुई और 1977 में 3.4 प्रतिशत के निम्न स्तर को छुआ। अनुच्छेद 331 के अन्तर्गत, लोक सभा में राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किये जाने वाले दो में से एक सदस्य 11 वीं, 12 वीं और 13 वीं लोक सभा में महिला रही हैं।5 उत्तरोत्तर वृद्धि के बावजूद लोक सभा में महिलाओं का प्रतिशत 18.4 के विश्व औसत6 तक नहीं पहुंचा है, और निर्णयों को प्रभावित करने हेतु अपेक्षित ''महत्वपूर्ण समूह'' नहीं बनाती है।

**सारणी**

**लोकसभा 2009 के चुनावों में विभिन्न राज्यों में महिला प्रतिनिधित्व**

| राज्य | सीटों की संख्या | महिला सदस्यों की संख्या | महिला सदस्यों का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| उत्तर प्रदेश | 80 | 12 | 15.0 |
| पश्चिम बंगाल | 42 | 7 | 16.7 |
| मध्य प्रदेश | 29 | 6 | 20.7 |
| बिहार | 40 | 4 | 10.0 |
| आन्ध्र प्रदेश | 42 | 5 | 11.9 |
| गुजरात | 26 | 4 | 15.4 |
| राजस्थान | 25 | 3 | 12.0 |
| पंजाब | 13 | 4 | 30.8 |
| महाराष्ट्र | 48 | 3 | 6.25 |
| छत्तीसगढ़ | 11 | 2 | 18.19 |
| हरियाणा | 10 | 2 | 20.0 |
| कर्नाटक | 28 | 1 | 3.58 |
| असम | 14 | 2 | 14.29 |
| दिल्ली | 7 | 1 | 14.29 |
| मेघालय | 2 | 1 | 50.0 |
| तमिलनाडू | 39 | 1 | 2.57 |
| अन्य | 126 | 0 | 0 |
| **कुल** | **543** | **58** | **10.7** |

स्रोतः भारत का चुनाव आयोग।

**सारणी 7**

**राज्य सभा में महिला प्रतिनिधित्व**

| वर्ष | राज्य सभा की सदस्य संख्या | महिला सदस्यों की संख्या | महिला सदस्यों का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1960 | 236 | 24 | 10.17 |
| 1980 | 244 | 29 | 11.89 |
| 1990 | 245 | 24 | 9.30 |
| 1996 | 245 | 19 | 7.76 |
| 1999 | 235 | 20 | 8.51 |
| 2009* | 243 | 23 | 9.5 |

* अमर उजाला, जून 6, 2009, नई दिल्ली,

राज्य सभा में महिला प्रतिनिधित्व 1960 में 10 प्रतिशत से कुछ ऊपर से शुरू हुआ। लेकिन 1980 को छोड़कर (11.89 प्रतिशत) बाद के वर्षो के दौरान यह घटता रहा और 1996 में घटकर 7.76 हो गया। यद्यपि यह 1999 में थोड़ा बढ़कर 8.5 प्रतिशत तथा 2009 तक 9.5 प्रतिशत हो गया। नब्बे के दशक में महिलाओं का प्रतिनिधित्व, अन्य बातों के साथ–साथ, राजनीतिक दलों में लोकप्रिय चुनावी प्रतिस्पर्धाओं में सफल न रहने वाले लोगों को जो प्रायः पुरूष होते हैं, खपाने की संरक्षणवादी प्रथाओं के कारण घटता गया है। पहले के वर्षो में अधिक महिलाओं को दी गई सुविधा अधिक पुरूषों को हस्तान्तरित हो गई। जिससे राज्य सभा में महिला सदस्यों की संख्या घट गई। समीक्षात्मक रूप से यह देखा गया है कि राज्य सभा की सदस्यता को राजनीतिक दलों में एक विशेष सुरक्षित स्थान के रूप में समझा जाता है जिससे वे अपनी पसंद के ऐसे महत्वपूर्ण उम्मीदवारों को लाना चाहते हैं जो लोक सभा के लोकप्रिय चुनावी प्रतिस्पर्धाओं में सफल न होसके। लोक सभा में महिलाओं की कम संख्या, सभा में वित्तीय, विधायी और अन्य मामलों से संबंधित महत्वपूर्ण कामकाज में उनकी भागीदारी के स्तर से प्रकट हो जाती है।

राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव के दौरान की चर्चाएं, आम बजट और रेलवे बजट, कम अवधि की चर्चाएं, विश्वास प्रस्ताव इत्यादि सामान्यतः कामकाज के महत्वपूर्ण मद हैं। ग्यारहवीं लोकसभा में उदाहरणार्थ, अनुदानों संबंधी सामान्य मांगों और रेलवे के लिए अनुदानों संबंधी मांगों पर चर्चाओं में भाग लेने वाले सदस्यों की कुल संख्या में महिलाओं का भाग केवल 6.23 प्रतिशत था। उसी सभा में, दो विश्वास प्रस्तावों पर महिलाओं की भागीदारी से संबंधित आंकड़े क्रमशः 6 प्रतिशत और 4 प्रतिशत थे।

महिलाएं सभा के कार्य संचालन नियमों के नियम 193 के अन्तर्गत सार्वजनिक महत्व के अति महत्वपूर्ण मामलों, जैसे आवश्यक वस्तुओं की कीमत में वृद्धि, सार्वजनिक वितरण प्रणाली का निष्पादन, प्राकृतिक आपदाओं, महिलाओं पर अत्याचार इत्यादि पर कम अवधि की चर्चाओं में कुछ ज्यादा गहनता से भाग लेती हैं। स्पष्टतः ये वे मुद्दे हैं जो सामान्यतः महिलाओं से सरोकार रखते हैं। यह भी स्पष्ट है कि राजनीतिक दल अधिक गम्भीर मुद्दों पर महिलाओं के लिए समय के आवंटन हेतु पर्याप्त ध्यान नहीं देते। बारहवीं लोक सभा में भी सभा के महत्वपूर्ण कामकाज में महिलाओं की भागीदारी का प्रतिरूप काफी भिन्न नहीं था।8

संसद सदस्य विशिष्ट मुद्दों पर बोलने हेतु अपने दलों द्वारा मनोनीत किये जाते हैं। उनके भाषणों के लिए उन्हें आवंटित किया गया समय प्रायः दल हेतु आवंटित समय का एक भाग होता है। राजनीतिक दल वाद–विवाद में भागीदारी हेतु अपने सदस्यों में से अपेक्षाकृत वरिष्ठ, मुखर और अनुभवी सदस्य को प्राथमिकता देते हैं। प्रायः अधिक प्रसिद्ध और सुपरिचित चेहरे विपक्ष को प्रभावी रूप से दबाने के अतिरिक्त दल को अपनी पहचान देते हैं। नए प्रवेश करने वाले और दल के पदानुक्रम में कनिष्ठ सदस्य–पुरूष और महिला दोनों – भाषण देने का अवसर पाने से वंचित हो जाते हैं। महिला सदस्य विशेष रूप से, संसद के वाद–विवादों में अपने दष्टिकोण प्रभावी रूप से रखने का अवसर पाने को एक बड़ी चुनौती पाती हैं।

**संसद/राज्य विधानमंडलों में महिलाओं के लिए स्थानों का आरक्षण :**

विश्व में महिला सांसदों की औसत संख्या 18.4 प्रतिशत है। भारतीय संसद में महिला सदस्यों की संख्या 10. 7 प्रतिशत है, जो 33 प्रतिशत महिलाओं के उस 33 प्रतिशत संख्या से कहीं दूर है, जिसे कोई भी सार्थक निर्णय लेने के लिए आवश्यक माना गया है।9 महिलाओं को लोक सभा तथा राज्य विधान सभाओं में सदनों की सदस्य संख्या का एक–तिहाई आरक्षण देने वाला '81 वां संविधान संशोधन विधेयक' 12 सितम्बर 1996 को लोक सभा में प्रस्तुत किया गया था। इस विधेयक में यह भी प्रावधान था कि अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के लिए संविधान में जो आम आरक्षण पहले ही दिया हुआ है, उसमें भी इन समुदायों की महिलाओं के लिए उसी प्रकार स्थान आरक्षित किये जाए। यह विधेयक एक संयुक्त संसदीय समिति को सौंपा गया जिसने विस्तृत सलाह के बाद 9 दिसम्बर 1996 को रिपोर्ट प्रस्तुत की।

किन्तु इस विधेयक का विचारार्थ किये जाने से पूर्व ग्यारहवीं लोक सभा भंग हो गयी और परिणामस्वरूप यह विधेयक व्यंगत हो गया। विधेयक को 12 वीं लोक सभा में 14 दिसम्बर, 1998 को पुनः '84 वें संविधान संशोधन विधेयक' के रूप में प्रस्तुत किया गया। कुछ राजनीतिक दलों द्वारा कुछ कथित शंकाओं के आधार पर इसका विरोध किया गया। इस विधेयक की नियति भी 81 वां संविधान संशोधन विधेयक जैसी हुई और 12 वीं लोक सभा के भंग होने के साथ यह भी व्यंगत हो गया। 13 वीं एवं 14 वीं लोक सभा में यह विधेयक फिर प्रस्तुत किया गया, किन्तु आज तक यह विधेयक पास नहीं हो सका।

**महिला आरक्षण में बाधाएँ :**

कुछ राजनीतिक दलों का मानना है कि आरक्षण के भीतर पिछड़ी, दलित और अल्पसंख्यक महिलाओं के लिए आरक्षण मांगने की बात किसी तर्क की कसौटी पर सही नहीं उतरती है। अगर संसद की संरचना पर नजर डालें तो साफ हो जायेगा कि इस समय संसद में सबसे ज्यादा संख्या पिछड़ी जातियों के सांसदों की है। अगर महिला आरक्षण विधेयक के मौजूदा प्रारूप को स्वीकार किया जाता है तो सहज ही एक–तिहाई महिलाओं को आरक्षण मिलने लगेगा और ऐसे में बहुसंख्यक पिछड़े समुदाय की भी महिलाओं को प्रतिनिधित्व संसद में अपने–आप बढ़ जायेगा। जहाँ तक 20 फीसदी सीटों की दोहरी सदस्यता वाली सीट बढ़ाने का प्रस्ताव लागू करने की बात है तो इस प्रस्ताव को लागू करने के बाद भी महिलाओं के साथ भेदभाव बना रहेगा क्योंकि इसमें सभी सीटों को नहीं, सिर्फ 20 फीसदी सीटों पर दोहरी सदस्यता करने का प्रस्ताव है।

इससे सांसदों के बीच भी गैरबराबरी बढ़ेगी और एक तरह का वर्ग भेद पैदा होगा और विशेषाधिकार संपन्न होगा जबकि आरक्षित सीट पर दो–दो सांसद होंगे। मतदाता भी दो–खेमों में विभाजित होंगे। विभिन्न कमेटियों की सदस्यता से लेकर फंड के बंटवारे तक दोनों में हमेशा टकराव की स्थिति बनी रहेगी। जाहिर है कि जब इस तरह

की आरक्षण व्यवस्था होगी तो ज्यादातर महिलाएँ इसी तरह की सीटों से चुनकर आयेंगी, जिससे उनके प्रति भेदभाव बढ़ जायेगा। इस स्थिति में ज्यादा महिला सांसदों की स्थिति सिर्फ संख्या बढ़ाने वाली होगी। इससे यह तथ्य उभर कर आता है कि महिला सांसद अकेले अपने दम पर अपने क्षेत्र को नहीं संभाल पायेगी इसलिए उसे किसी पुरूष सांसद के साथ जोड़ दिया जाये।10 हालाँकि अब 14 वर्षो के इन्तजार के बाद 9 मार्च 2010 को महिला आरक्षण विधेयक (लोकसभा एवं राज्यों की विधान सभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण हेतु) राज्य सभा से 1 के विरूद्ध 186 मतों से सदन में कॉफी हंगामें के बाद पारित हो चुका है।11 अतः अब यह लोक सभा में अगले सत्र हेतु लम्बित है। इसमें आर.जे.डी., जद–यू. एवं सपा ने सदन से वाल्कॅ–आउट किया।

**पंचायती राज एवं महिलाएँ :**

ऐतिहासिक रूप से पंचायतों में महिलाओं की भूमिका के विषय में कोई विशेष जानकारी नहीं है क्योंकि इनमें मुख्यतः पुरूषों का आधिपत्य था। 1952 के सामुदायिक विकास कार्यक्रमों की समीक्षा करने वाली, बलवंतराय मेहता समिति ने 1957 में पहली बार महिलाओं को प्रतिनिधित्व देने के लिए दो महिला सदस्यों के चयन की अनुशंसा की। उपरोक्त सांकेतिकता को ध्यान में रखते हुए महिलाओं की स्थिति पर गठित एक समिति ने अपनी रिपोर्ट में (सी.एस. डब्ल्यू.आई. 1974) स्थानीय स्तर पर महिला पंचायतों की अनुशंसा की जो ग्राम पंचायतों के अभिन्न अंग होते। इस समिति ने यह भी टिप्पणी की कि विकास से सम्बन्धित नीतियों एवं योजनाओं में ग्रामीण महिलाओं के जीवन, योगदान तथा परिप्रेक्ष्य को कभी भी महत्व नहीं दिया गया है। यह आशा की गई कि इससे स्थानीय स्तर का नेतृत्व उभरेगा तथा राजनीतिक प्रक्रिया में उन्हें भागीदारी के अवसर प्राप्त होंगे। इस समिति की अनुशंसाए महिलाओं की आवश्यकताओं की ओर अधिक ध्यान देने की चिंता पर आधारित थी ताकि पंचायते ग्रामीण महिलाओं की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। ये आवश्यकतायें साक्षरता, शिक्षा, कानूनी अधिकार, स्वास्थ्य सेवाएँ, आय के नये अवसर तथा वेतन में पक्षपात इत्यादि से संबंधित है।

समिति ने यह महसूस किया कि ऐसा कदम महिलाओं के हितों की रक्षा करने के साथ–साथ ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक बाधाओं को कम करेगा तथा स्थानीय स्तर पर सशक्त महिला नेतृत्व को पनपने का अवसर प्रदान करेगा (मजुमदार, वीः 1974)। इन अनुशंसाओं को क्रियान्वित नहीं किया गया तथा अशोक मेहता समिति की रिपोर्ट जैसी महत्वपूर्ण रिपोर्टो ने न तो इन पर विचार विमर्श किया और न इन्हें लागू करने की जिम्मेदारी ली (भारत सरकारः 1978)12। ये तो महिला आन्दोलन की एजेंसी तथा इन विषयों पर चल रहे वाद–विवाद के सम्मिलित परिणाम हैं कि संविधान में 73 वें एवं 74 वें संशोधन हुए जिनके द्वारा महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सीटों का आरक्षण किया गया।

**73 वां एवं 74 वां संशोधन तथा राज्य अधिनियम :**

अप्रैल 1993 में 73 वां संशोधन लागू हुआ, जिसके लिए संविधान में नया अध्याय 9 जोड़ा गया एवं 74 वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 द्वारा संविधान में भाग 9–क जोड़ा गया, जिससे स्थानीय स्वशासन, उसका ढॉचा, उसकी शक्तियां तथा कार्यो का सुदृढ़िकरण किया गया और उन्हें संवैधानिक बताया गया, तथा महिलाओं के लिए एक तिहाई स्थान आरक्षित किये गये। लोकतंत्र के त्रिस्तरीय सशक्तिकरण से भारत में प्रजातान्त्रिक पद्धति को बल मिला और इस तरफ विश्व का ध्यान आकर्षित हुआ। संशोधनों द्वारा पंचायतों की कार्य विधियों को भी कारगर बनाया गया। इस सम्बन्ध में इसमें एक राज्य चुनाव आयोग, एक वित आयोग की नियुक्ति का प्रावधान किया गया और पंचायतों की अवधि उनके यथा समय चुनाव और उनके निलम्बन की शर्ते निर्धारित की गई। शक्तियों तथा कार्यो के स्थानांतरण की बात कही गयी है और राज्यों से कहा गया कि 29 क्षेत्रों को स्थानीय निकायों को हस्तांतरित करके धीरे–धीरे विकेन्द्रियकरण करे। इसके अतिरिक्त, 74 वें संशोधन के तहत शहरी स्थानीय शासन अधिनियम, जिसे नगर पालिका अधिनियम कहा जाता है, के तहत एक जिला योजना समिति का प्रावधान है। यह समिति पंचायत तथा म्युनिसिपल क्षेत्र, दोनों के लिए मिली–जुली योजना समिति है, प्रत्येक जिला योजना समिति जिले के लिए विकास योजना का मसौदा तैयार करेगी और उसे राज्य सरकार को भेजेगी। राज्य के विधानमण्डल को इन समितियों के गठन की विधि और इनके पदों को भरने, अध्यक्षों के कार्यो और

उनके निर्वाचन के लिए कानून बनाने का अधिकार है। 73 वें एवं 74 वें संशोधन के बाद स्थानीय निकायों में महिलाओं की भागीदारी निश्चित रूप से बढ़ी है, लेकिन बहुत कम महिलाएँ सक्रिय व स्वतंत्र रूप से कार्य करती हैं। बिहार व उत्तर प्रदेश जैसे कुछ अन्य राज्यों में निर्वाचित महिलाओं के पति ही उनके कार्यो का संचालन करते हैं। महिला पंचायती सदस्यों का उनके परिवार के पुरूषों द्वारा रबड़ की मोहर की तरह इस्तेमाल किया जाता है। महिलाएँ पुरूषों के लिए पिछले दरवाजे से राजनीति में प्रवेश करने का एक जरिया बन गई हैं। अन्य संदर्भ में अधिकतर महिलाओं ने आज की राजनीति के बारे में अपनी चिन्ता जताई है, उच्चतर तथा निचले स्तरों पर अधिकारी तंत्र के विरूद्ध अपना आक्रोश प्रकट किया है13 और पुरूषों के निर्णय करने के ''शराब और डिनर'' कमीशन एवं भ्रष्टाचार के तौर–तरीकों को मानने की अनिच्छा से पता चलता है कि निर्वाचित महिलाएँ राजनीति में अपने ही सिद्धान्त अपनाना चाहती हैं।

**आलोचनात्मक विवरण :**

जहॉ तक नेतृत्व का प्रश्न है, महिलाओं की भूमिका नगण्य है, विभिन्न राजनीतिक दबावों का प्रतिकार करने का परिणाम चरित्र हनन होता है तथा महिलाओं को यह विश्वास करने के लिए बाध्य होना पड़ता है कि वर्तमान राजनीतिक संस्कृति ही ऐसी है कि समझौता करना अपरिहार्य है। मेरठ में जहॉ एक महिला ने राजनीतिज्ञों का विरोध करने का प्रयास किया बदले में उसे और उसके परिवार के सदस्यों को बलात्कार, हत्या तथा अन्य धमकियों का सामना करना पड़ा।14 आज राजनीतिक दल वोट बैंकों के रूप में महिलाओं के महत्व को समझते हैं। अतः महिला सदस्यों का उपयोग महिलाओं के वोट प्राप्त करने के लिए करते हैं। यह सही है कि वर्तमान नजरिया उस पहले नजरिये से बेहतर है जो महिला मतदाताओं की अवहेलना इस आधार पर करता था कि उनकी अपनी स्वतंत्र पहचान या पसंद नहीं है। परन्तु राजनीतिक दलों का रूख अब भी महिलाओं को अपने अन्य उद्‌देश्यों की प्राप्ति के लिए काम में लाने का है। महिलाओं की स्थिति संबंधी समिति ने कहा है कि ''अधिकतर महिला उम्मीदवार अपेक्षाकृत समृद्ध परिवारों से आती हैं जिनमें पुराने राजघरानों के सदस्यों का भी समावेश है। केवल एक दल ने कभी–कभी अनुसूचित जातियों, जनजातियों और मुसलमानों के महिला उम्मीदवारों को समर्थन दिया है।

अधिकांश महिला उम्मीदवार शिक्षित हैं, हालॉकि उनके स्तरों में अन्तर है। तथापि, लगभग 70 प्रतिशत – 80 प्रतिशत महिला संसद सदस्य अपेक्षाकृत बेहतर शिक्षित हैं। समिति ने यह भी टिप्पणी की, कि उम्मीदवारों के रूप में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी में सबसे बड़ा अवरोध चुनावों में बढता खर्च है। महिलाओं ने इस बात पर बल दिया कि परिवार अभी भी पारिवारिक धन से अपनी महिलाओं का चुनाव खर्च उठाने को तैयार नहीं है, यद्यपि वे ऐसा पुरूषों के लिए करते हैं। चूंकि अधिकांश महिलाओं के पास अपने आर्थिक संसाधन नहीं है, अतः उनकी आकाक्षाएं केवल तभी पूरी हो सकती हैं यदि उन्हें किसी राजनीतिक दल द्वारा पूरी तरह सहारा दिया जाये। इस कारण आज अधिकतर महिला उम्मीदवार वे हैं जिनके पास कुछ स्वतंत्र साधन हैं।15 स्थानीय निकायों के लिए निर्वाचित महिलाओं की एक बड़ी संख्या शिक्षकों, वकीलों और अन्य जमीनी कार्यकर्ताओं की हैं। चाहे साक्षर हो या उतनी साक्षर न हो, महिला सदस्यों को अपने समकक्षों तथा नौकरशाही से पहचान प्राप्त करने की समस्या का सामना करना पड़ता है।16 अधिकारी तंत्र, विशेषकर स्थानीय स्तर पर सबसे बड़ा बाधक है, समाज तथा पंचायत के पुरूषों से कहीं अधिक। पितृसत्ता तथा अधिकारी तंत्र, दोनों को महिलाएं बर्दाश्त नहीं कर सकतीं।

**निष्कर्ष :**

औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी 'महिलाओं की वर्तमान शक्ति एवं स्थिति की शर्त ही नहीं बल्कि सूचक भी है, तथा महिलाओं के अधिकारों एवं विकास को बढावा देने के लिए आवश्यक भी है।' महिलाओं के लिए निर्वाचन या राजनीतिक दलों, सामाजिक आंदोलनों या प्रदर्शनों जैसे औपचारिक राजनीतिक कार्यकलापों में सिर्फ भाग लेना पर्याप्त नहीं है। निर्वाचन प्रक्रिया, प्रशासन, कार्यपालिका, न्यायपालिका या स्थानीय सरकारी संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि यह सत्य नहीं है कि महिलाएँ हमेशा अन्य महिलाओं की समस्या के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करेंगी।17 सिर्फ संख्या ही पर्याप्त नहीं है और न बहुत बड़ी संख्या में औपचारिक या अनौपचारिक दृष्टि से राजनीति में भागीदारी

ही उद्‌देश्य है एवं यह भी जानना आवश्यक है कि महिलाएँ यदि राजनीतिक हस्तक्षेप करना चाहती हैं तो उसका उद्‌देश्य क्या है ? क्या यह महिलाओं को मात्र प्रारंभिक स्थान मानकर चलना है या शक्ति की विद्यमान श्रंखला में व्यवस्थित रूप से प्रवेश पाना है ? महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के सही मूल्यांकन के लिए जिन महत्त्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देना जरूरी है, उनमें से कुछ हैं महिलाओं की भागीदारी की सीमा, स्तर तथा स्वरूप, महिलाओं के अधिकारों एवं जीवन पर उनका प्रभाव एवं महत्व और उनके द्वारा उठाई गई नारीवादी समस्याएँ इत्यादि।

**संदर्भ ग्रन्थ –**


1. महिलाएं तथा शासन राज्य की पुनर्कल्पना एक रिपोर्ट (एकत्र) सोसाइटी फॉर डेवलपमेंट आल्टरनेटिव्स फॉर विमेन, नई दिल्ली, 2002, पृ. 9.

2. वही, पृ. 10.

3. डॉ. सरला गोपालन, समानता की ओर अपूर्ण कार्य, भारत में महिलाओं की स्थिति – 2001, राष्ट्रीय महिला आयोग, 2002, पृ. 281.

4. डॉ. सरला गोपालन, समानता की ओर अपूर्ण कार्य, भारत में महिलाओं की स्थिति – 2001, राष्ट्रीय महिला आयोग, 2002, पृ. 283.

5. गोपालन सरला, पूर्वांक, पृ. 283.

6. अलका आर्य, जनसत्ता, 18 अक्टूबर, 2008, प्रकाशित दिल्ली, पृ. 6.

7. राज्य सभा में 1960–99 में सदस्यों का परिचय लार्डिस, सचिवालय के संदर्भ विभाग द्वारा संकलित.

8. डॉ. सरला गोपालन, जेन्डर एंड गवर्नेंस, महबूब उल हक मानव विकास केन्द्र, दक्षिण एशिया में मानव विकास, 2000 के लिए तैयार पत्रक.

9. गोपालन सरला, समानता की ओर, पूर्वांक, पृ. 294.

10. वृंदा करात, हिन्दुस्तान, 20 जुलाई, 2002, प्रकाशित दिल्ली.

11. द टाइम्स ऑफ इण्डिया, 10 अक्टूबर, 2010, पृ. 1.

12. महिलाऍं तथा शासन, राज्य की पुनर्कल्पना, एक रपट, एकत्र, सोसायटी फॉर डेवलपमेंट आल्टरनेटिव्स फॉर विमेन, नई दिल्ली, पृ. 32–33.

13. भारत में पंचायती राज में महिलाओं की सहभागिता, राष्ट्रीय महिला आयोग, 2001, पृ. 101.

14. महिलाऍं तथा शासन, राज्य की पुनर्कल्पना, पूर्वांक, पृ. 5515. डॉ. सरला गोपालन, समानता की ओर अपूर्ण कार्य, पूर्वांक, पृ. 289.

15. वही, पृ. 292.

16. महिलाओं तथा शासन, राज्य की पुनर्कल्पना, पूर्वांक, पृ. 24.

17. वही, पृ. 25.

# प्राचीन दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता

**रानी ओझा**
(शोधकर्त्री)
कैरियर पॉईन्ट युनिवर्सिटी, कोटा

**डॉ. जितेन्द्र कुमार तिवारी**
(निदेशक)
कैरियर पॉईन्ट युनिवर्सिटी, कोटा

**डॉ. सावित्री सिंगवाल**
(सह–निदेशिका)
कैरियर पॉईन्ट युनिवर्सिटी, कोटा

**प्रस्तावना –**

शिक्षा दर्शन शैक्षिक क्षेत्र के गहनतर समस्याओं का सम्पूर्ण अध्ययन करता है और शिक्षा विज्ञान के लिए उन समस्याओं का अध्ययन छोड़ देता है जो तात्कालिक है और जिनका सर्वोत्कृष्ट अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से किया जा सकता है, जैसे छात्रों की सम्पन्नता या योग्यता के मापन की समस्या आदि। विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं के सिद्धान्तों का प्रयोग करके वह शिक्षा की समस्याओं की खोज करने के लिए मार्गदर्षन ग्रहण करता है। इस प्रकार शिक्षा दर्शन का कार्य शुद्ध दर्शन द्वारा प्रतिपादित संघों एवं सिद्धान्तों को शैक्षिक प्रकिया के संचालन में प्रयोग करना है।

शिक्षा एवं दर्शन का सम्बन्ध शरीर एवं चेतना के समान है। जिस प्रकार शरीर के बिना चैतन्य प्रकट नहीं होता और चेतना के बिना शरीर का कोई अर्थ नहीं रह जाता उसी प्रकार दर्शन शिक्षा के माध्यम से ही अपने आप को प्रकट करता है तथा शिक्षा दर्शन के बिना निष्प्राण है। षिक्षा एवं दर्शन के बीच एक गहरा सम्बन्ध है इसलिए इन दोनो ही विषयों के संयोजन से शिक्षा दर्शन नामक विषय का विकास हुआ। दर्शन मानव जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है और शिक्षा उस लक्ष्य प्राप्ति का साधन है।

शिक्षा अधिगम के मार्गदर्शन तथा नियंत्रण द्वारा अनुभव करने का सुविचारित प्रयास है। मनुष्य का व्यक्तित्व उसके सज्ञानमूलक, भावमूलक तथा प्रयत्नमूलक व्यवहार और उनके सम्बद्ध समस्त समान गुणों का एकीकृत प्रतिबिम्ब है। व्यक्तित्व के इन पक्षों की सकारात्मक विकास स्वतः नहीं होता, इसके लिए शिक्षा ही बालक या व्यक्ति की व्य–क्षमताओं के अनुरूप उच्चतम प्रशिक्षण प्रदान करती है। इसके द्वारा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी का विकास होता है। शिक्षा मनुष्य को वह सब प्राप्त करने में सहायता करती है। दार्शनिकों की दृष्टि से वह मनुष्य को अपने जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने योग्य बनाती है। समाजशास्त्रियों की दृष्टि से शिक्षा मनुष्य का सामाजीकरण करती है। सामाजिक नियंत्रण रखती है और सामाजिक परिवर्तन करती है। राजनीतिशास्त्रियों की दृष्टि से शिक्षा मनुष्य को श्रेष्ठ नागरिक बनाती है। अर्थशास्त्रियों अर्थशास्त्रियों की दृष्टि से मनुष्य में संगठन एवं उत्पादन कौशल का विकास करती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास तथा वैज्ञानिक दृष्टि से अन्तर्शक्तियों का बाह्य जीवन से सामंजस्य स्थापित करती है।

दर्शन का अर्थ है ज्ञान या बुद्धि। यह एक ऐसा विषय है जिसमें हम जीवन, सत्य, ज्ञान, और वास्तविकता के बारे में गहराई से सोचते हैं और समझने की कोशिश करते हैं। दर्शन की कई शाखाएँ हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं:

**1. मेटाफ़िज़िक्स (अधिभौतिकी)**

यह दर्शन की वह शाखा है जिसमें हम वास्तविकता, सत्ता, और जीवन के मूल सिद्धांतों के बारे में सोचते हैं। इसमें हम यह पूछते हैं कि क्या है और कैसे यह हुआ?

**2. एपिस्टेमोलॉजी (ज्ञान मीमांसा)**

यह दर्शन की वह शाखा है जिसमें हम ज्ञान की प्रकृति और सीमाओं के बारे में सोचते हैं। इसमें हम यह पूछते हैं कि हम कैसे जानते हैं और क्या हम जानते हैं?

**3. नैतिकशास्त्र (नीतिशास्त्र)**

यह दर्शन की वह शाखा है जिसमें हम नैतिकता और नैतिक मूल्यों के बारे में सोचते हैं। इसमें हम यह पूछते हैं कि क्या सही है और क्या गलत है?

**4. तर्कशास्त्र (तर्क विज्ञान)**

यह दर्शन की वह शाखा है जिसमें हम तर्क और तर्कसंगतता के बारे में सोचते हैं। इसमें हम यह पूछते हैं कि कैसे हम तर्कसंगत रूप से सोचते हैं और कैसे हम अपने तर्कों को मजबूत बनाते हैं?

**5. सौंदर्यशास्त्र (कला और सौंदर्य)**

यह दर्शन की वह शाखा है जिसमें हम कला और सौंदर्य के बारे में सोचते हैं। इसमें हम यह पूछते हैं कि क्या है सौंदर्य और कैसे हम इसे समझते हैं?

दर्शन की इन शाखाओं में से प्रत्येक हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करती है। दर्शन हमें सोचने, तर्क करने, और जीवन के बारे में गहराई से समझने में मदद करता है।

**दर्शन में निहित शैक्षिक तत्व**

दर्शन और शिक्षा का घनिष्ठ संबंध है। दर्शन शिक्षा को एक नया दृष्टिकोण प्रदान करता है और शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करता है। दर्शन में निहित शैक्षिक तत्व निम्नलिखित हैंः

**1. सोच और तर्कः** दर्शन हमें सोचने और तर्क करने की क्षमता विकसित करने में मदद करता है। यह हमें जटिल समस्याओं का विश्लेषण करने और उन्हें हल करने के लिए तैयार करता है।

**2. ज्ञान और समझः** दर्शन हमें ज्ञान और समझ की प्रकृति को समझने में मदद करता है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि ज्ञान कैसे प्राप्त किया जाता है और यह कैसे हमारे जीवन को प्रभावित करता है।

**3. नैतिकता और मूल्यः** दर्शन हमें नैतिकता और मूल्यों के बारे में सोचने में मदद करता है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि क्या सही है और क्या गलत है, और हमें नैतिक निर्णय लेने में मदद करता है।

**4. व्यक्तिगत विकासः** दर्शन हमें व्यक्तिगत विकास के लिए प्रेरित करता है। यह हमें अपने जीवन के उद्देश्यों और मूल्यों को समझने में मदद करता है, और हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए काम करने में मदद करता है।

**5. सामाजिक और राजनीतिक जागरूकताः** दर्शन हमें सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों के बारे में सोचने में मदद करता है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे समाज और राजनीति हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं, और हमें इन मुद्दों पर अपने विचारों को विकसित करने में मदद करता है।

इन शैक्षिक तत्वों के माध्यम से, दर्शन हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करता है और हमें एक जिम्मेदार, सोच–समझकर निर्णय लेने वाले, और व्यक्तिगत रूप से विकसित व्यक्ति बनने में मदद करता है।

**निष्कर्ष –**

शिक्षा का दर्शन शिक्षा सम्बन्धी अनेक प्रश्नों का उत्तर खोजता है। इस सम्बन्ध में डॉ. एस.एस. माथुर का कथन समीचीन है कि ''शिक्षा का दर्शन, शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का दर्शन की दृष्टि से विवेचन करता है।'' शिक्षा–दर्शन प्रायः जीवन दर्शन होता है। जीवन दर्शन और शिक्षा दर्शन के मध्य कोई पार्थक्य नहीं किया जा सकता है। किसी शिक्षा–दर्शन का मूलत जीवन के आदर्शों एवं लक्ष्यों के संदर्भ में शिक्षा के उद्देश्यों के प्राप्तार्थ शैक्षिक कार्यक्रम और परीक्षा एवं शैक्षिक संगठनों का मूल्याकन, विषय–वस्तु विधियों, अध्यापक निर्माण, मापन इत्यादि से सम्बन्ध होता है। प्राचीन भारतीय दर्शन में जीवन का सच्चा सुख, सुच्चा ज्ञान, श्रेष्ठ आचरण, जीवन के प्रति निर्मल दृष्टि एवं उच्च आदर्श निहित है। अतः भारतीय प्राचीन दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिक हैं।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


– गुप्त सुरेन्द्र दास (1972) : भारतीय दर्शन का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।

– जैन हीरा लाल (1975) : भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिसर।

– नानेश आचार्य (1985) : विशेष के लिए द्रष्टव्य क्षमता दर्शन और व्यवहार, बीकानेर।

– कमल के.एल. (1996) : गांधी चिन्तन जयपुर पब्लिशिंग, जयपुर।

– सागर आचार्य सुनील (2005) : मानवता के आठ सूत्र, संस्कृति शोध संस्थान इन्दौर।

–श्री कनक नन्दी (1996) : सर्वोदयी शिक्षा मानो विज्ञान, धर्म दर्शन सेवा संस्थान उदयपुर।

–शर्मा रामचन्द्र (1985) : प्रमाणिक हिन्दीकोश, लोक भारती प्रकाशन।

– तुलसी आचार्य (1945) : आचार्य तुलसी का अमर संदेश, कोलकत्ता।

# किशोर विद्यार्थियों के शारीरिक क्षमता का अध्ययन

**डॉ. ममता कुमावत,**
सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय,
जनार्दन राय नागर राजस्थान
विद्यापीठ(डीम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

**आशा जैन**
शोधकर्त्री, शिक्षा संकाय,
जनार्दन राय नागर राजस्थान
विद्यापीठ(डीम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

**प्रस्तावना :**

शिक्षा एक सतत् और जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। देश में आज कई नई दिशाएं और नये दृष्टिकोण उभरे है। आज बदलते हुए लक्ष्यों के साथ शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण और उसके कार्यक्रम भी इस परिवर्तन की प्रक्रिया से अछूते नहीं रहे हैं। अतः शिक्षा का सही स्वरूप सरकार के शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग जनप्रतिनिधियों की भागीदारी शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों मुख्य रूप से शिक्षकों के प्रयत्नों एवं अभिभावकों की जागरूकता से ही प्राप्त हो सकता है।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य किशोरों के सर्वांगीण विकास करना है। योग भी शिक्षा का एक अभिन्न अंग है। योग में छात्रों की शारीरिक क्षमता एवं मानसिक विकास सम्पूर्ण एवं सही दिशा में होता है। शारीरिक क्षमता एवं मानसिक स्वास्थ्य एक–दूसरे के पूरक है। शारीरिक रूप से स्वास्थ्य किशोर ही मानसिक रूप से स्वस्थ हो सकता है।

योग शारीरिक क्षमता एवं मानसिक स्वास्थ्य का सबसे उत्तम साधन है। योग से शरीर आन्दोलित हो जाता है। इससे शरीर में तथा अवयवों में गति आती है तथा शरीर के तन्त्र, तंत्रिका तथा मांसपेषिया सबल होती है। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने, मनोबल एवं आत्मविश्वास बढ़ाने में योग की भूमिका रहती है।

आज प्रतिस्पर्धा की अधिकता के कारण किशोरों का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य निखर गया है।

अस्वस्थ शरीर एवं क्षमता वाले व्यक्ति को अनेक अधिव्याधियों ने घेर लिया है। अतः आज आवष्यकता है कि उचित दिशा–निर्देश देने, अंधकार में भटकने से बचाने की। यह सम्भव है कि शरीर की क्रियात्मकता से और क्रियाशीलता को बनाये रखने के लिए योग शिक्षा की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता है।

योग से किशोरों की मस्तिष्क में एवं शरीर में एक समुचित ऊर्जा का विकास किया जा सकता है। योग से किशोरों के तनाव को दूर किया जा सकता है। योग से किशोरों में सहनशीलता, विनम्रता, संयोगिता से अनुशासित जीवन का निर्माण होता है।

किशोरों में आज मीडिया व टेलीविजन के कारण पुनः योग के प्रति रूझान बढ़ा है।

**शोध परिकल्पना :**

विषय की प्रकृति को देखते हुए शोधकर्त्री द्वारा निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है :–

1. किशोरों के शारीरिक क्षमता पर योग पैकेज के पूर्व व पश्च परीक्षणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**शोध का परिसीमन :**

प्रस्तुत शोध कार्य के अध्ययन हेतु शोधकर्त्री द्वारा निम्नलिखित सीमाओं तक सीमित रखा रखा गया–

1. प्रस्तुत शोध कार्य राजस्थान राज्य के उदयपुर जिले तक सीमित रखा गया।
2. प्रस्तुत शोध कार्य किशोर छात्र–छात्राओं तक सीमित रखा गया।
3. प्रस्तुत शोध कार्य में 16 वर्ष की उम्र से 20 वर्ष तक की उम्र तक के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

**समस्या का औचित्य :**

आज योग शिक्षा व्यक्ति का केवल शारीरिक विकास ही नहीं करती है। अपितु मानसिक सामाजिक संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक विकास भी करती है। अर्थात् सर्वांगीण विकास करता है। योग करते समय स्वाभाविक रूप से

प्रतियोगिता की भावना जागृत होती है। इसी भावना से वह योग करने उत्सुकता से भाग लेता है।

वर्तमान में किशोरों के मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम एवं प्रदर्शन हेतु योग एवं अभ्यास की आवश्यकता है। योग के माध्यम से किशोर शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सुदृढ़ कर सकते है और अपने भावी जीवन में उन्नति करे और राष्ट्र के लिए उपयोगी नागरिक बन सके। योग के माध्यम से किशोरों का मानसिक एवं शारीरिक विकास सम्भव है। जिससे राष्ट्र निर्माण एवं विकास में अपनी भूमिका निभा सकेंगे।

**शोध विधि :**

उपर्युक्त शोध का विषय अपने आप में प्रायोगिक है अतः इस शोध में प्रायोगिक विधि का उपयोग किया जाएगा।

**शोध उपकरण :**

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु दत्त संकलन के लिए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा।

1. शारीरिक क्षमता हेतु : ऑपहर यूथ फिटनेस टेस्ट

**न्यादर्श का चयन :**

किसी भी शोध कार्य के लिए न्यादर्श का चुनाव आवश्यक होता है वर्तमान समय में समस्याओं का क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति से व्यक्तिगत सम्पर्क करना सम्भव नहीं है। अतः जिन समस्याओं का अध्ययन हमने किया है उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों में से एक (जनसंख्या से) प्रतिनिधि न्यादर्श का चुनाव करके उस पर किये गये अध्ययन से सम्पूर्ण जनसंख्या के विषय में निष्कर्ष निकाले गये है। जिससे शोधकर्त्री के समय, शक्ति व धन का अपव्यय नहीं हुआ और व्यापक क्षेत्र की समस्या का अध्ययन सम्भव हुआ। न्यादर्श एक बड़े समूह में चयनित एक छोटा प्रतिनिधि समूह जिस पर अनुसंधान कार्य किया जाता है।

**डॉ. ढ़ोढियाल एवं फाटक के अनुसार** –''न्यादर्श किसी भी अनुसंधान कार्य की आधारशिला होती है। यह आधार शिला जितनी सुदृढ़ होगी अनुसंधान के परिणाम उतने ही परिशुद्ध होंगे। न्यादर्श तभी उपयुक्त माना जाता है जब वह सम्पूर्ण का प्रतिनिधित्व करता है।''

**गुड एवं हॉट के अनुसार** – ''एक न्यादर्श जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट होता है, सम्पूर्ण समूह का एक निम्नतम प्रतिनिधित्व है।''

''किसी जनसंख्या या समष्टि से उसके प्रतिनिधि स्वरूप एक अंश चुन लेने को न्यादर्श कहते है।''

शोधकर्त्री द्वारा शोध के लिए उदयपुर जिले के कक्षा 11वीं एवं 12वीं में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से करते हुए कुल 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें से 30 छात्र व 30 छात्राओं का चयन किया गया है।

**शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :**

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा।

1. मध्यमान 2. प्रमाप विचलन 3. टी–परीक्षण

**दत्त विश्लेषण एवं व्याख्या :**

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्त्री ने समंकों के संकलन के पश्चात् परिकल्पना की जाँच हेतु उनका विश्लेषण किया।

**किशोर छात्रों के शारीरिक क्षमता का पूर्व परीक्षण :**

**सारणी संख्या–1**

**किशोर छात्रों के शारीरिक क्षमता का पूर्व परीक्षण**

| क्र.सं. | शारीरिक क्षमता के क्षेत्र | मध्यमान | वरीयता क्रम |
|---|---|---|---|
| 1 | गति | 8.50 | II |
| 2 | मांस पेशीय क्षमता | 9.50 | I |
| 3 | सहनशीलता | 7.00 | III |
| 4 | शक्ति | 6.00 | IV |
| 5 | स्फूर्ति | 4.00 | V |

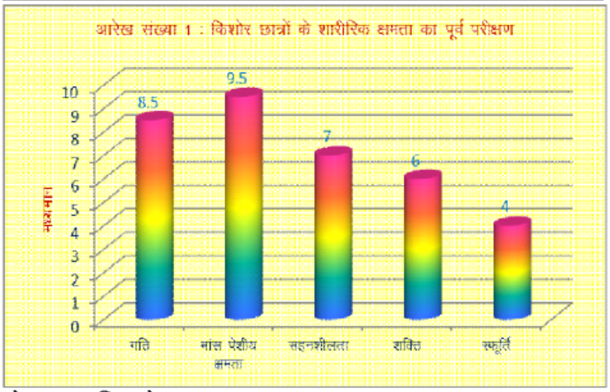


**क्षेत्रवार विश्लेषण :**

उपरोक्त सारणी एवं आरेख संख्या 1 के अवलोकन से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं –

(1) गति : किशोर छात्रों के शारीरिक क्षमता के अध्ययन हेतु

ऑपहर यूथ शारीरिक क्षमता परीक्षण का प्रयोग करते हुए शारीरिक क्षमता के क्षेत्र गति पर किशोर छात्रों के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 8.50 प्राप्त हुआ जो कि परीक्षण क्रम के अनुसार द्वितीय स्थान पर है।

अतः किशोर छात्रों की मांसपेशीय क्षमता की तुलना में उनकी गति कम पायी गयी।

**(2) मांसपेशीय क्षमता** : किशोर छात्रों के शारीरिक क्षमता के अध्ययन हेतु ऑपहर यूथ शारीरिक क्षमता परीक्षण का प्रयोग करते हुए शारीरिक क्षमता के क्षेत्र मांसपेषीय क्षमता पर किशोर छात्रों के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 7.50 प्राप्त हुआ जो कि परीक्षण क्रम के अनुसार प्रथम स्थान पर है।

अतः किशोर छात्रों की मांसपेशीय क्षमता उच्च पायी गयी।

**(3) सहनशीलता** : किशोर छात्रों के शारीरिक क्षमता के अध्ययन हेतु ऑपहर यूथ शारीरिक क्षमता परीक्षण का प्रयोग करते हुए शारीरिक क्षमता के क्षेत्र सहनशीलता पर किशोर छात्रों के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 7.00 प्राप्त हुआ जो कि परीक्षण क्रम के अनुसार तृतीय स्थान पर है।

अतः किशोर छात्रों की मांसपेशीय क्षमता की तुलना में सहनशीलता कम पायी गयी।

**(4) शक्ति** : किशोर छात्रों के शारीरिक क्षमता के अध्ययन हेतु ऑपहर यूथ शारीरिक क्षमता परीक्षण का प्रयोग करते हुए शारीरिक क्षमता के क्षेत्र शक्ति पर किशोर छात्रों के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 6.00 प्राप्त हुआ जो कि परीक्षण क्रम के अनुसार चतुर्थ स्थान पर है।

अतः किशोर छात्रों की मांसपेशीय क्षमता की तुलना में उनकी शक्ति कम पायी गयी।

**(5) स्फूर्ति** : किशोर छात्रों के शारीरिक क्षमता के अध्ययन हेतु ऑपहर यूथ शारीरिक क्षमता परीक्षण का प्रयोग करते हुए शारीरिक क्षमता के क्षेत्र स्फूर्ति पर किशोर छात्रों के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 4.00 प्राप्त हुआ जो कि वरीयता क्रम के अनुसार पंचम स्थान पर है।

अतः किशोर छात्रों की मांसपेशीय क्षमता की तुलना में उनकी स्फूर्ति कम पायी गयी।

**किशोर छात्राओं के शारीरिक क्षमता का पूर्व परीक्षणः**

**सारणी संख्या–2**

**किशोर छात्राओं के शारीरिक क्षमता का पूर्व परीक्षण**

| **क्र.सं.** | **शारीरिक क्षमता के क्षेत्र** | **मध्यमान** | **वरीयता क्रम** |
|---|---|---|---|
| 1 | गति | 9.00 | II |
| 2 | मांसपेशीय क्षमता | 7.50 | III |
| 3 | सहनशीलता | 10.00 | I |
| 4 | शक्ति | 6.50 | IV |
| 5 | स्फूर्ति | 5.00 | V |

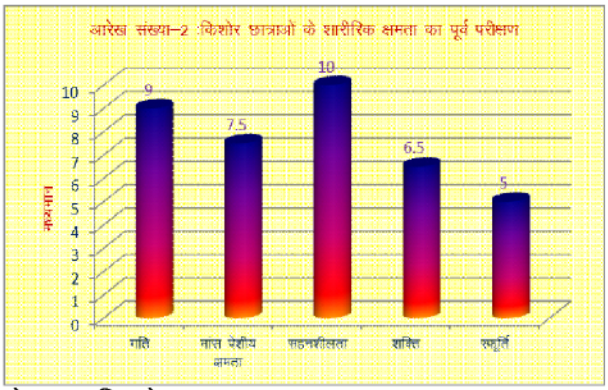


**क्षेत्रवार विश्लेषण :**

उपरोक्त सारणी एवं आरेख संख्या 2 के अवलोकन से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं –

**(1) गति** : किशोर छात्राओं के शारीरिक क्षमता के अध्ययन हेतु ऑपहर यूथ शारीरिक क्षमता परीक्षण का प्रयोग करते हुए शारीरिक क्षमता के क्षेत्र गति पर किशोर छात्राओं के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 9.00 प्राप्त हुआ जो कि परीक्षण क्रम के अनुसार द्वितीय स्थान पर है।

अतः किशोर छात्राओं की सहनशीलता की तुलना में उनकी गति कम पायी गयी।

**(2) मांसपेशीय क्षमता** : किशोर छात्राओं के शारीरिक क्षमता के अध्ययन हेतु ऑपहर यूथ शारीरिक क्षमता परीक्षण का प्रयोग करते हुए शारीरिक क्षमता के क्षेत्र मांसपेशीय क्षमता पर किशोर छात्राओं के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 7.50 प्राप्त हुआ जो कि वरीयता क्रमांक के अनुसार तृतीय स्थान पर है।

अतः किशोर छात्राओं की मांसपेशीय क्षमता सहनशीलता से निम्न पायी गयी।

**(3) सहनशीलता** : किशोर छात्राओं के शारीरिक क्षमता के अध्ययन हेतु ऑपहर यूथ शारीरिक क्षमता परीक्षण का प्रयोग करते हुए शारीरिक क्षमता के क्षेत्र सहनशीलता पर किशोर छात्राओं के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 10.00 प्राप्त हुआ

जो कि वरीयता क्रमांक के अनुसार प्रथम स्थान पर है।

अतः किशोर छात्राओं की सहनशीलता उच्च स्तर की पायी गयी।

**(4) शक्ति** : किशोर छात्राओं के शारीरिक क्षमता के अध्ययन हेतु ऑपहर यूथ शारीरिक क्षमता परीक्षण का प्रयोग करते हुए शारीरिक क्षमता के क्षेत्र शक्ति पर किशोर छात्राओं के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 6.50 प्राप्त हुआ जो कि परीक्षण क्रम के अनुसार चतुर्थ स्थान पर है।

अतः किशोर छात्राओं की सहनशीलता की तुलना में उनकी शक्ति कम पायी गयी।

**(5) स्फूर्ति** : किशोर छात्राओं के शारीरिक क्षमता के अध्ययन हेतु ऑपहर यूथ शारीरिक क्षमता परीक्षण का प्रयोग करते हुए शारीरिक क्षमता के क्षेत्र स्फूर्ति पर किशोर छात्राओं के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 5.00 प्राप्त हुआ जो कि वरीयता क्रम के अनुसार पंचम स्थान पर है।

अतः किशोर छात्राओं की स्फूर्ति निम्न स्तर की पायी गयी।

**शोध निष्कर्ष :**

**(1) किशोर छात्रों के शारीरिक क्षमता का पूर्व परीक्षण** — किशोर छात्रों के शारीरिक क्षमता के अध्ययन हेतु ऑपहर यूथ शारीरिक क्षमता परीक्षण का प्रयोग करते हुए शारीरिक क्षमता के क्षेत्र मांसपेशीय क्षमता पर किशोर छात्रों के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 7.50 प्राप्त हुआ जो कि परीक्षण क्रम के अनुसार प्रथम स्थान पर है। जबकि शारीरिक क्षमता के क्षेत्र स्फूर्ति पर किशोर छात्रों के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 4.00 प्राप्त हुआ जो कि वरीयता क्रम के अनुसार पंचम स्थान पर है।

**(2) किशोर छात्राओं के शारीरिक क्षमता का पूर्व परीक्षण** —किशोर छात्राओं के शारीरिक क्षमता के अध्ययन हेतु ऑपहर यूथ शारीरिक क्षमता परीक्षण का प्रयोग करते हुए शारीरिक क्षमता के क्षेत्र सहनशीलता पर किशोर छात्राओं के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 10.00 प्राप्त हुआ जो कि वरीयता क्रमांक के अनुसार प्रथम स्थान पर है। जबकि शारीरिक क्षमता के क्षेत्र स्फूर्ति पर किशोर छात्राओं के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 5.00 प्राप्त हुआ जो कि वरीयता क्रम के अनुसार पंचम स्थान पर है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :**


1. बुच, एम.बी. — शिक्षा में शोध का तृतीय निरीक्षण 1978–82, नई दिल्ली, एनसीआईआरटी (1983)

2. बुच, एम.बी. : शिक्षा में शोध का चतुर्थ निरीक्षण, 1983–88 नई दिल्ली, एनसीईआरटी (1989)

3. बुच, एम.बी. : शिक्षा में शोध का पंचम निरीक्षण 1988–92, नई दिल्ली, एनसीईआरटी (1993)

4. ढौढियाल, सच्चिदानन्द फाटक ए. : शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्रा, राजस्थान हिन्दी अकादमी

5. डॉ. कपिल, एच.के. : अनुसंधान विधियां (1994–95), कचहरी, घाट, आगरा

6. लाल, रगन बिहारी : शिक्षा सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन, शिवाजी रोड, मेरठ

7. मित्तल, एम.एल. : शिक्षा सिद्धान्त, लायल बुक डिपो, मेरठ (1993)

8. राय, पारसनाथ : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा (1993)

9. शर्मा, आर.ए. : शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

10. सुखिया, एस.पी., मेहरोत्रा, पी.वी., मेहरोत्रा, आर.एन. : शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व विनोद पुस्तक मन्दिरा, आगरा (1990)

11. Clark, H. Harrison, Physical Fitness News Letters, 5 March, 1959.

12. Corbin, Charles B. and Lindsey, Ruth, Concept of Physical Fitness with Laboratories, Sixth Ed., Dubach, Ayova: W. M. C. Brown Publishers.

13. Gopal, Usha, Yoga and Health, New Delhi: Sports Publication, 2006.

14. Gujarat Vyayam Pracharak Mandal, Philosophy, Health and Fitness Science Kosh - 9, 1st Ed., Rajpipala: Gujarat Vyayam Pracharak Mandal, November, 2003.

15. Sarin, N., Yoga Education and Therapy by Yoga, Delhi: Sports Literature Center, Ashok Vihar. Shah, Chinubhai P., Vyayam Vigyan Kosh - 5, Rajpipala: Gujarat Vyayam Pracharak Mandal, September, 1982.

16. Swami Rajarshi Muni, Yogadarshika, 11th Ed., Vadodara: Gujarat Samachar, 2005.

17. Vyas, Sushilkumar, Yoga Education, New Delhi: Sports Literature Center, Dariya Ganj.

CHHAVI National Journal of Higher Education (ISSN : 2319-9679)


## OUR REVIEWER BOARD

**DR. SHWETA GUPTA**
Educationist, Jaipur

**DIMPLE JYOTIYANA**
Educationist, Ajmer

**DR. MADHU CHOUDHARY**
Educationist, Jodhpur

**DR. GEETA CHOUDHARY**
Educationist, Bikaner

**MADHU BALA**
Educationist, Hanumangarh

**DR. SUMAN SHARMA**
Educationist, Malsisar, Jhunjhunu

**DR. SHIVANI BHARGAV**
Educationist, Shri Ganganagar

**DR. SARJEET SINGH**
Educationist, Behror, Alwar


राज. के पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री एवं वर्तमान वर्तमान ऊर्जा मंत्री श्रीमान भंवरसिंह भाटी छवि पत्रिका के वेबसाईट का लोकार्पण व त्रैमासिक अंक का विमोचन करते हुए

## शुभम एज्युकेशन, रिसर्च एवं इन्फोरमेशन सेन्टर के तत्वावधान में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां

महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय परिसर, बीकानेर

एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

डॉ. अतुल कोठारी के साथ

संसदीय कार्य एवं संस्कृति राज्य मंत्री के साथ

शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला के साथ

### DISCLAIMER

The accountability of the research matter articulated in this journal is entirely of the author(s) concerned. The view expressed in the research papers/articles in this journal does not essentially correspond to the views of the publisher/editor, The publisher/editor of the journal is not liable for errors or any consequence arising from the exercise of information contained in it.

**-Chief Editor**

## ACADEMIC EDITOR

**PROF. SHREESH PAL SINGH**
Chief Academic Editor

**DR. RAJENDRA SHRIMALI**
Chief Editor

**DR. PRIYANKA SHRIMALI**
Associate Editor


## ABOUT THE JOURNAL


CHHAVI National Journal of Higher Education is a reviewed periodical published in January, April, July and October in every year by the Shubham Education, Research & Information Centre, Bikaner, Raj.

Journal registered by National Institute of Science Communication and Information resources, New Delhi's Letter NSL/ISSN/INF/2012/2816 Dated December 04, 2012 and assigned ISSN (Print) 2319-9679. Bilingual journal's broad subject is Psychology, Philosophy and Sociology is the special reference of focus subject is Education.

| | | |
|---|---|---|
| Journal Title | : | CHHAVI : National Journal of Higher Education |
| Publication Language | : | Bilingual Hindi & English both. |
| Publication Frequency | : | Quarterly |
| Publication Nature | : | Print & Online |
| ISSN | : | 2319-9679 |
| Broad Subject | : | Psychology, Philosophy, Sociology |
| Focus Subject | : | Education |
| Published by | : | Shubham Educational, Research and Information Centre |
| E-mail | : | shrimalidrrajendra@gmail.com |
| website | : | www.chhavinjhe.in |
| Contact No. | : | 9414742973, 9413471252 |


## GUIDELINES FOR CONTRIBUTORS

Membership registration fees can be sent in the shape of at per cheque / cash or online transfer. Cheque shall be prepared in favour of Shubham Shrimali and Online Deposit Phone-Pay Number. - 9352628093.

| | | |
|---|---|---|
| Name of Bank | : | State Bank of India |
| Branch | : | Dauji Road, Bikaner |
| Account Name | : | Shubham Shrimali |
| Account No. | : | 37051542804 |
| IFSC Code | : | SBIN0031447 |
| MICR Code | : | 334002039 |
| PIN | : | 31447 |

The subscription rates are as under :

| | |
|---|---|
| Single Copy | ₹ 350 |
| Annual Subscription | ₹ 1000 |


**Communication Address : DR. RAJENDRA SHRIMALI**
Behind Karni Mata Temple, Outside Jassusar Gate, Bikaner-334004 (Raj.)
Mobile: 9413471252, 9413471252
Google Scholar Profile : https://scholar.google.com/citations?user=kNxjU_8AAAAJ&hl=en
Social Science Research Network ID : 4556183



Print at : Rajasthan Computger & Printers, Bikaner M. : 9352999951